स्तालिन

एक जीवनी

राहुल सांकृत्यायन

राहुल सांकृत्यायन लिखित
स्तालिन एक जीवनी

यह पुस्तक राहुल फ़ाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित की गई है व प्रगतिशील साहित्य के वितरक जनचेतना द्वारा कम से कम दामों में जनता तक पहुँचाई जा रही है। अगर आप पीडीएफ की बजाय प्रिण्ट कॉपी से पढ़ना चाहते हैं तो जनचेतना से सम्पर्क कर सकते हैं या फिर अमेजन से खरीद सकते हैं।

अमेजन लिंक : https://www.amazon.in/dp/8187728256

जनचेतना सम्पर्क : D-68, Niralanagar, Lucknow-226020
0522-4108495; 09721481546
janchetna.books@gmail.com
Website - http://janchetnabooks.org

इस पीडीएफ फाइल के अंत में जनचेतना द्वारा वितरित किये जा रहे प्रगतिशील, मानवतावादी व क्रान्तिकारी साहित्य की सूची भी दी गयी है। जनचेतना द्वारा वितरित किया जा रहा प्रगतिशील, मानवतावादी साहित्य दिये गये अमेजन लिंक से भी खरीद सकते हैं।

अमेजन लिंक : https://goo.gl/bxmZR5

हर दिन प्रगतिशील, मानवतावादी साहित्य पाने के लिए

- सुबह-सुबह प्रगतिशील कविताएं, कहानियां, उपन्यास, गीत-संगीत
- देश के महान क्रान्तिकारियों भगतसिंह, राहुल, गणेश शंकर विद्यार्थी आदि का साहित्य पीडीएफ में
- देश-दुनिया की हर महत्वपूर्ण घटना पर मजदूर वर्गीय दृष्टिकोण से लेख
- हर रविवार किसी महत्वपूर्ण पुस्तक की पीडीएफ

बिगुल

मजदूर बिगुल व्हाटसएप्प चैनल से जुड़ने के लिए इस लिंक का इस्तेमाल करें

www.mazdoorbigul.net/whatsapp

जुड़ने में समस्या आने पर अपना नाम और जिला लिखकर इस नम्बर पर भेज दें – 9892808704

वैकल्पिक नम्बर : 9619039793

फेसबुक पेज : fb.com/unitingworkingclass

टेलीग्राम चैनल : www.t.me/mazdoorbigul

स्तालिन : एक जीवनी

स्तालिन

एक जीवनी

राहुल सांकृत्यायन

राहुल फ़ाउण्डेशन
लखनऊ

ISBN 978-81-87728-25-2

मूल्य : रु. 150.00

प्रथम संस्करण : जनवरी, 2002
संशोधित संस्करण : जुलाई, 2017

प्रकाशक **: राहुल फ़ाउण्डेशन**
69 ए–1, बाबा का पुरवा, पेपरमिल रोड, निशातगंज,
लखनऊ–226 006 द्वारा प्रकाशित

आवरण **: रामबाबू**

टाइपसेटिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फ़ाउण्डेशन

मुद्रक : लक्ष्मी ऑफ़सेट प्रेस, इन्दिरानगर, लखनऊ

मुख्य वितरक **: जनचेतना**, डी–68, निरालानगर, लखनऊ 226020
फ़ोन : 0522–4108495 ईमेल : info@janchetnabooks.org
वेबसाइट : janchetnabooks.org

Stalin: Ek Jeevani *by* ***Rahul Sankrityayan***

भूमिका

दुनिया की अनेकों भाषाओं में स्तालिन की जीवनी या जीवनियों का अभाव नहीं, यद्यपि उनमें कितनी ही बातों की कमियाँ देखी जाती हैं। पर, हिन्दी में तो प्रायः उनका अभाव ही है। वैसे स्तालिन के ऐतिहासिक जीवन ही नहीं, बल्कि भावी संसार के पथ-प्रदर्शक के रूप के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करना भी एक उद्देश्य हो सकता था, जिसके कारण मुझे लेखनी उठानी पड़ती। मैं यह मानता हूँ कि इस जीवनी में भी एक त्रुटि दिखायी पड़ेगी, जो त्रुटि दूसरी भाषाओं की जीवनियों में भी देखी जाती है। वह है – वैयक्तिक जीवन की घटनाओं की कमी। मैं उनकी खोज में हूँ, लेकिन उनके प्राप्त करने तक पुस्तक लिखने या उसे प्रकाशित करने से रोक रखना, इसे अनिश्चित काल के लिए स्थगित करना होगा। दूसरे संस्करण में, मुझे आशा है, उस दिशा में भी मैं कुछ और चीजें पाठक को दे सकूँगा। स्तालिन का जीवन केवल ज्ञानवर्द्धन का साधन ही नहीं है, बल्कि वह पग-पग पर गहन कर्म-पथ पर प्रकाश डालता है।

स्तालिन की जीवनी लिखते समय, मेरे मन में ख़याल आया कि जैसे नये संसार के इस महान निर्माता की जीवनी को हिन्दी के पाठकों के सामने रख रहा हूँ, वैसे ही अच्छा होगा, यदि इसी तरह की मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और माओ की चारों जीवनियाँ भी लिख डालूँ। इन पाँचों महापुरुषों की जीवनियाँ लिखने का संकल्प करके, मैंने मार्क्स की जीवनी में हाथ लगा भी दिया है। आशा, है बाकी तीन जीवनियों को भी सन 1953 में ही लिखकर समाप्त कर सकूँगा। वैसे तो यह भी सोच रहा हूँ कि 'नये संसार के निर्माता' के नाम से नयी दुनिया के बनाने वाले तीस पुरुषों की जीवनियाँ लिखूँ, जिनमें एशिया और यूरोप के बहुत से देशों के नेता होंगे; लेकिन, बहुतों के बारे में अंग्रेजी और रूसी भाषा में भी सामग्री उपलब्ध नहीं है। इसलिए, नहीं कह सकता, कब तक वह संकल्प पूरा हो सकेगा।

मसूरी, 1 नवम्बर '53 **राहुल सांकृत्यायन**

विषयानुक्रम

अध्याय - एक	**बालपन (सन 1879-85)**	9
अध्याय - दो	**विद्यार्थी जीवन (सन 1885-98)**	13
अध्याय - तीन	**क्रान्तिकारी जीवन (सन 1899-1905)**	27
अध्याय - चार	**बोल्शेविक क्रान्ति से पहिले**	47
अध्याय - पाँच	**क्रान्ति और प्रतिक्रान्ति (सन 1917-21)**	74
अध्याय - छः	**उपनेता (सन 1921-23)**	111
अध्याय - सात	**पुनर्निर्माण (सन 1924-37)**	122
अध्याय - आठ	**पंचवार्षिक योजनाएँ (सन 1927-41)**	135
अध्याय - नौ	**मानवता का त्राता (सन 1941-45)**	172
अध्याय - दस	**महामानव (सन 1945-53)**	191
अध्याय - ग्यारह	**महाप्रयाण (सन 1953)**	241
परिशिष्ट		284

अध्याय - एक

बालपन (सन 1879–85)

1. जन्मभूमि

कोहकाफ का नाम हम बचपन से सुनते आये हैं। यह अद्‌भुत पहाड़ परियों का देश माना जाता था। उर्दू और फारसी की पुस्तकों में यहाँ की अनिन्द्य सुन्दर परियों की न जाने कितनी कहानियाँ हम पढ़ते–सुनते आये हैं। लेकिन, परियों और देवताओं का जमाना अब बीत चुका है, उन पर कोई विश्वास करने के लिए तैयार नहीं। इसी कोहकाफ को रूसी में 'कफकाश' और अंग्रेजी में 'काकेशस' कहते हैं। किसी समय सभी ने पाठशाला के भूगोल में पढ़ा होगा कि यहाँ के स्त्री–पुरुष दुनिया में सबसे सुन्दर होते हैं लेकिन, इसकी सच्चाई के बारे में कुछ कहना मुश्किल है, तो भी यह मान लेने में कोई हर्ज नहीं कि काकेशस के लोग अपेक्षाकृत अधिक सुन्दर होते हैं। और, सुन्दरता के साथ वीर भी अधिक होते हैं, यह इतिहास बतलाता है।

काकेशस पर्वतमाला वस्तुत: उसी विशाल पर्वत–श्रेणी का एक अंग है, जो पश्चिमी चीन से स्विट्‌जरलैण्ड और स्पेन तक, अर्थात लगभग प्रशान्त महासागर से अटलाण्टिक महासागर तक यूरेशिया महाद्वीप की कटि–मेखला बनी हुई है। चीन के पर्वतों के बाद, आसाम से कश्मीर तक हमारा हिमालय उसी का एक अंग है; फिर पामीर, हिन्दूकुश और ईरान की उत्तरी पर्वत–श्रेणी (कोपेतदाग) को लेते हुए वह कास्पियन समुद्र के दक्षिणी पूर्वी कोने पर पहुँचती है। इसी स्थल पर, समुद्र के पश्चिमी तट से काला सागर के पूर्वी तट तक काकेशस पर्वत श्रेणी फैली हुई है। यह पूर्व–पश्चिम जितनी चौड़ी है, उत्तर–दक्षिण में भी उसका विस्तार प्राय: उतना ही है। हिमालय की तरह, यहाँ भी सनातन हिम से आच्छादित बहुत से पर्वत शिखर हैं और सचमुच ही कास्पियन में सामुद्रिक यात्रा

करने वाले उन्हें देख भूलकर कह सकते हैं कि हम हिमालय के पास आ गये हैं। हिमालय की भाँति, इस भूमि में भी प्रकृति की अद्‌भुत शोभा चारों तरफ बिखरी हुई है। कहीं देवदारों के घने जंगल हैं, नीचे बंज और दूसरे हिमालीय वृक्षों की हरियाली दिखलाई पड़ती है। हिमालय की तरह, काकेशस पर्वतमाला में भी भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी जातियों का अद्‌भुत जमावड़ा है। यहाँ की लड़ाकू जातियों ने अपने पहाड़ों को किला बनाकर हमेशा अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा की है – विदेशियों से भी, और पड़ोसियों से भी। कुर्द, ओसेत् (प्राचीन अलान) जैसी इन्दो-ईरानी भाषाएँ बोलने वाली जातियाँ जहाँ काकेशस की गोद में आज भी मिलती हैं, वहाँ आजुर्बाइजानी जैसे तुर्की-भाषी लोग भी यहाँ के बहुत से भागों में रहते हैं; आज आजुर्बाइजान की राजधानी बाकू दुनिया का प्रसिद्ध तेल-क्षेत्र है। दागिस्तान के तुर्की भाषा-भाषी लोगों से मिलकर, कास्पियन के पश्चिमी तट के काफी भाग में तुर्कवंशी जातियाँ रहती हैं। ओसेती और अबखाजी काकेशस के सबसे ऊँचे भागों में रहते हैं। इनके अतिरिक्त, काकेशस के पश्चिमी भाग में इन्दो-यूरोपीय भाषा की पुरानी शाखाओं – अर्मनी और गुर्जी (जार्जियन) बोलने वाले रहते हैं। विद्वानों का मत है कि ये दोनों जातियाँ अपनी भाषा के रूप में एक बहुत पुरानी भाषा के अवशेष को कायम रखे हुए हैं। इस प्रकार, मालूम होगा कि क्षेत्र में छोटा होने पर भी, इस भू-भाग में अनेकों जातियाँ एकत्रित हैं। तुर्की और तद्‌भाषा-भाषी जातियों की तरह यद्यपि ऐतिहासिक काल में बहुत सी भाषाएँ और जातियाँ यहाँ आपस में मिलकर एक हो गयीं, लेकिन दुर्गम पर्वतों और लोगों की वीरता के कारण अब भी बहुत-सी जातियाँ और भाषाएँ मिलती हैं।

काकेशस यूरोप का नहीं, बल्कि हमेशा से एशिया का अभिन्न अंग रहा है। एशिया और यूरोप की वर्तमान सीमा कालासागर से शुरू हो, काकेशस के उत्तर-उत्तर कास्पियन पहुँच, फिर उसमें गिरने वाली उराल नदी से होती हुई, उराल पर्वत-श्रेणी से मिल जाती है। गुर्जी (जार्जी) और अर्मनी लोग बहुत पहले ईसाई हो गये थे, जिसमें उनकी वीरता से फायदा उठाते हुए उन्हें अपने प्रतिद्वन्द्वी ईरानियों के विरुद्ध खड़ा करने का, रोमन साम्राज्य का प्रयत्न भी एक कारण था। सासानी ईरानियों के शासन को जब अरबों ने खत्म किया, तब भी कितने ही समय तक अर्मनी और गुर्जी बहादुर वहीं काम करते रहे, जो कि भारत के पश्चिमोत्तर में अरबों और तुर्कों के विरुद्ध पठान करते रहे। उन्होंने कितनी सफलता के साथ मुकाबला किया, यह इसी से मालूम होगा कि इस्लामी विजेताओं ने गुर्जियों और अर्मनियों को मुसलमान बनाने में सफलता नहीं पायी। अर्मनी और गुर्जी जहाँ ईसाई होने से पश्चिम की शक्तियों की ओर आशा लगाये रहते थे, वहाँ कुर्द और तुर्क आदि मुसलमान हो जाने के बाद इस्लामी जगत से

अपनी घनिष्टता मानते थे। शायद आज जैसा भाव उनमें कभी भी पैदा नहीं हुआ, जब कि सभी काकेशस का पुत्र मानते हुए अपने को भाई-भाई समझते हों। आज काकेशस की भिन्न-भिन्न जातियों का आपसी संघर्ष अतीत की बात हो गयी है, सभी जातियों की भाषा और संस्कृति के अनुसार अपने स्वतन्त्र या स्वायत्त गणराज्य हैं, जहाँ वह अपनी जातीय इकाई को अक्षुण्ण बनाये, अपने को सोवियत की विशाल महाजाति का अंग मानती हैं। उनके ऐसे परिवर्तन तथा सुख-समृद्धिपूर्ण सांस्कृतिक जीवन के निर्माण में जिस पुरुष का सबसे बड़ा हाथ है, वह इसी काकेशस भूमि में पैदा हुआ था।

2. जन्म

काला सागर के नातिदूर काकेशस के पश्चिमी भाग में गुर्जी लोगों का प्राचीन नगर तिफलिस (त्विलिसी) है, जिसके पास गोरी कस्बा है। इसी कस्बे के पास दिदिलियों नामक छोटा सा गाँव है, जहाँ पिछली शताब्दी के मध्य बिसारियोन नामक एक गरीब चमार रहता था। उसके वंश का नाम जुगशविली था। बिसारियोन जूते बनाने के साथ-साथ कुछ खेती भी कर लिया करता था, लेकिन दोनों से भी उसका गुजारा मुश्किल से होता था। बिसारियोन ने गम्बरयोली गाँव के अर्धदास, गुर्जी गेलाद्जे की लड़की एकातेरिना (केथरिन) से ब्याह किया, जिसके बारे में मालूम है कि वह बड़ी सुन्दर, काली बड़ी आँखों तथा गम्भीर मुखमुद्रा वाली स्त्री थी। बिसारियोन को अपना काम दिदिलियों में ठीक चलता नहीं दिखायी पड़ा; क्योंकि अब कुटीर-उद्योग की तरह जूते बनाने वालों की भी प्रतिद्वन्द्विता जूते के कारखानों से थी। अब दूसरे देशों के सहकर्मियों की तरह, बिसारियोन ने भी पराजय स्वीकार करते हुए गाँव छोड़कर, पहले गोरी फिर तिफलिस की अदिल-खानोफ फैक्टरी में जाकर काम किया।

एशिया की एक इतनी उत्पीड़ित श्रेणी में पैदा हुए बालक के लिए कोई ज्योतिषी भी कब ऐसे पद की, जिस पर इस बालक को पहुँचना था, भविष्यवाणी कर सकता था? एक एशियाई चमार का लड़का दुनिया का अद्वितीय नेता और अमर पूज्यनीय शिक्षक होगा, इसकी आशा एकातेरिना और बिसारियोन भी कब कर सकते थे? बिसारियोन जार्जिया की तत्कालीन राजधानी तिफलिस की बूट-फैक्टरी में काम करता था। गोरी कस्बे के उपनगर में, वही छोटा सा पैतृक घर था, जिसके बारे में स्तालिन के सहपाठशालीय द. गागोखिया ने अपने संस्मरण में लिखा है : "जिस घर में परिवार रहता था, वह पाँच वर्ग गज से ज्यादा बड़ा नहीं था। घर के साथ रसोई की कोठरी भी थी। दरवाजे से सीधे आँगन में पहुँचते

थे, वहाँ कोई दहलीज नहीं थी। फर्श ईंटों का था। एक छोटा सा झरोखा था, जिससे छनकर रोशनी आती थी। घर में सारा फर्नीचर यह था : एक छोटी सी मेज, एक स्टूल, एक लम्बा सोफा, जो पुआल भरकर मामूली कपड़े से ढाँककर बनाया गया था।" बिसारियोन जुगशविली के काम के हथियार थे – एक पुराना सड़ा-सा मोढ़ा, हथौड़ा और चमड़ा सीने की सुई, जो संग्रहालय में आज भी मौजूद है। इसी घर में 18 दिसम्बर 1879 को बिसारियोन और एकातेरिना के घर में एक पुत्र पैदा हुआ। रात-दिन घर का काम करके भी गुजारा होना मुश्किल देख, एकातेरिना दूसरों के कपड़े धोने का काम करती थी। इस प्रकार स्तालिन को अपने शैशव से ही अनुभव था कि गरीबी क्या चीज है।

माँ-बाप ने लड़के का नाम सोसो रखा, जो रूसी योसेफ और अंग्रेजी जोजफ का रूपान्तर है। बिसारियोन ने सात वर्ष की उम्र में ही सोसो का अक्षरारम्भ कराया। एक वर्ष में ही वह पहले गुर्जी और फिर रूसी पढ़ने लग गया। लेकिन, पिता बहुत दिनों तक न जी सका, इसलिए सोसो के पालन-पोषण का भार एकातेरिना के ऊपर पड़ा (एकातेरिना जून सन 1937 में मरी) सोसो के बाल्य जीवन पर किसी ने प्रकाश डालने की कोशिश नहीं की। उसका बाद का जीवन इतनी बहुलता और भारी सफलताओं से भरा है कि इस ओर किसी का ध्यान ही नहीं गया।

अध्याय - दो

विद्यार्थी जीवन (सन 1885-98)

1. गोरी में

सोसो का जन्म गोरी में हुआ था और उसका अक्षरारम्भ भी वहीं हुआ। यद्यपि माता-पिता शिक्षा से वंचित थे, लेकिन वह उसके महत्व को भली प्रकार जानते थे। कुछ दिनों तक सोसो साधारण पाठशाला में पढ़ता रहा। उनकी स्थिति के माता-पिता अपने लड़के को अधिक खर्चीली शिक्षा नहीं दे सकते थे। उस समय सारा काकेशस रूसी जार के अधीन था, जिसका धर्म ईसाई था, और ईसाई पादरियों का बहुत सम्मान था। माता-पिता ने सोचा कि पादरी बनाने में पुत्र का भविष्य उज्ज्वल हो सकता है, इसीलिए सन 1888 में, जब कि सोसो अभी नौ वर्ष का ही था, उसे गोरी के पुरोहित स्कूल में दाखिल करा दिया। छः वर्ष तक सोसो वहीं पढ़ता रहा।

गोरी के पुरोहित स्कूल में सोसो बड़ा ही मेहनती और बुद्धिमान विद्यार्थी था। उसे सबसे अधिक अंक मिला करते थे। वह पढ़ने में जितना तेज था, उतना ही खेल-कूद में भी, इसीलिए सभी खेलों में वह अपने सहपाठियों का नेता बना करता था। अपने सहपाठियों के साथ उसका बड़ा प्रेम था। पढ़ने के अलावा उसे ड्राइंग तथा गाने का भी शौक था।

वह साधारण लोगों के साथ कितना मिलनसार था, यह उसके सहपाठी ग. एलिजाबेदेश्विली द्वारा उल्लिखित निम्न घटना से मालूम होगा :

"एक दिन गाँव में गये। एक खेत में हमने हलवाहों को विश्राम करते देखा। उनमें से एक को आनन्दविभोर हो रोटी और दाल खाते देख, साथी स्तालिन (सोसो) ने उससे पूछा : 'तुम क्यों ऐसा खराब खाना खाते हो!'...

"...'तुम जोतते हो, बोते हो और स्वयं फसल काटकर जमा करते हो। तुम्हें तो अच्छी तरह रहना चाहिए।'

"'हाँ, यह बिल्कुल ठीक है। हम स्वयं फसल काटते हैं', किसान ने कहा,

'लेकिन पुलिस इंस्पेक्टर को उसका भाग मिलना चाहिए, और पुरोहित को उसका। इस प्रकार तुम देखते हो, हमारे लिए बहुत कम बच रहता है।'

"इस भूमिका से बातचीत शुरू हो गयी। उसके दौरान में साथी सोसो ने समझाना शुरू किया कि किसान क्यों इतनी गरीबी का जीवन बिताते हैं, कौन उनका शोषण करता है, कौन उनके मित्र हैं और कौन शत्रु। वह इतने सीधे-सादे शब्दों में और दिलचस्प ढंग से बातें करता रहा कि किसानों ने उससे फिर आकर बातें करने के लिए प्रार्थना की।"

सोसो के दूसरे लंगोटिया यार ग. ग्लुरजिद्जे की निम्न बातें बतलाती हैं कि गोरी के जीवन में ही सोसो धर्म के बारे में कहाँ तक पहुँच गया था :

"मैं भगवान के बारे में कहने लगा। सोसो मेरी बातें सुनता रहा और फिर जरा-सा चुप रहकर, उसने कहा : 'तुम जानते हो, वह (पादरी) हमें बेवकूफ बना रहे हैं, कोई भगवान नहीं है।'

"इन शब्दों को सुनकर, मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। पहले मैंने उसके मुँह से कभी ऐसी बातें नहीं सुनी थीं।

"'तुम कैसे ऐसी बातें करते हो सोसो?' - मैंने आश्चर्य से पूछा।

"मैं तुम्हें पढ़ने के लिए किताब दूँगा, जो बतलायेगी कि दुनिया और सभी सजीव चीजें उससे बिल्कुल दूसरी हैं, जैसा कि तुम मान रहे हो, और ईश्वर के बारे में कही जाने वाली सारी बातें केवल बेवकूफी हैं।' सोसो ने कहा।

"'कौन सी किताब?' - मैंने पूछा।

"'डारविन की। तुम उसे जरूर पढ़ना' - सोसो ने बहुत जोर देकर मुझसे कहा।" गोरी के सहपाठी वानो केच्खोवेली ने अपने संस्मरण में लिखा है :

"वसन्त और शरद में इतवार के दिन, हम अक्सर देहात में घूमने जाया करते थे। गोरी के ज्वरी पर्वत की ढलान में एक छोटी सी खुली जगह थी, जो हमें बहुत पसन्द थी। दिन बीतते गये और अपने साथ हमारे शैशव की आशाओं और स्वप्नों को भी लेते गये। गोरी स्कूल के ऊपर के दर्जा में हमने गुर्जी साहित्य से परिचय प्राप्त किया, लेकिन वहाँ हमें रास्ता बताने वाला, और हमारे विचारों को एक निश्चित दिशा देने वाला कोई भी नहीं था। चोचवाद्जे की कविता 'डाकू काको' से हम बहुत प्रभावित थे। कज्बेगी की कविता के नायकों ने हमारे तरुण हृदय को जगाकर, अपने देश के प्रति प्रेम पैदा कर दिया, और स्कूल छोड़ते समय हमें उससे अपने देश की सेवा के लिए प्रेरणा मिली थी। लेकिन हममें से कोई नहीं जानता था कि यह सेवा किस रूप में होगी।

2. तिफलिस सेमिनरी

पादरी बनने की उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए, सोसो पन्द्रह वर्ष की उम्र में गोरी से जाकर तिफलिस की सेमिनरी में दाखिल हो गया। सेमिनरी में दाखिल होने के साथ ही साथ, सोसो अपने ही शब्दों में :

"मैं क्रान्तिकारी आन्दोलन में पन्द्रह वर्ष की उम्र में शामिल हो गया, जब कि उस समय काकेशिया में रहने वाले कुछ फरार (अण्डरग्राउण्ड) रूसी मार्क्सवादी समुदायों के साथ मैंने सम्बन्ध स्थापित किया। इन टुकड़ियों ने मेरे ऊपर भारी प्रभाव डाला और मुझमें गैर कानूनी मार्क्सीय साहित्य की चाह पैदा कर दी।"

जब सोसो को वर्जित फल खाने की चाट लग गयी, तो कहने की आवश्यकता नहीं कि तिफलिस की इस सेमिनरी में दाखिल होने के बाद, उसका जीवन वह नहीं रह गया, जो एक भावी पादरी का होना चाहिए था। सोसो अपनी शिक्षा को अपनी पाठ्य-पुस्तकों तक ही सीमित नहीं रख सकता था। सन 1894 से 1899 तक पाँच वर्षों का जीवन, जब सोसो पन्द्रह वर्ष से बीस वर्ष का हो गया, उसके गम्भीर अध्ययन का समय था।

3. राजनीतिक अवस्था

उस समय अर्मीनिया और अजुर्बाइजान के साथ गुर्जी, (जार्जिया) काकेशिया या 'काकेशस-पार' नामक रूसी सूबे का एक भाग था। तुर्की जैसे शक्तिशाली शत्रु से लड़ते-लड़ते अन्त में 19वीं सदी के आरम्भ में गुर्जी के रूसी साम्राज्य का अंग बनना स्वीकार कर लिया। रूस के शासकों की इच्छा रहती थी कि अपनी प्रजा को रूसी साँचे में ढाला जाये, जिसके लिए गुर्जी सामन्त पहले से ही तैयार थे। साम्राज्यवादी अंग्रेज़ों की तरह, जारशाही भी फूट डालकर शासन करने की नीति का खूब पालन करती, और जरा भी सिर उठाते देख गुर्जियों, अर्मीनियों, तुर्कों, कुर्दों को आपस में लड़ा देती। वह इस बात की पूरी कोशिश करती थी कि इन पहाड़ी जातियों के छूरे हमेशा एक-दूसरे की गर्दन पर तने रहें। सन 1854-56 में रूस को क्रीमिया के युद्ध में पड़ना पड़ा, जिसमें तुर्की की पीठ ठोकते हुए अंग्रेज़ों और फ्रांसीसियों ने स्वयं युद्ध में उतरकर जार को भयंकर हार दी। पश्चिमी यूरोप के सम्पर्क के कारण, रूस में इससे तीस साल पहले ही, उच्च वर्ग ने जार की निरंकुशता को हटाने का प्रयास किया था। उस समय कितने ही 'दिसम्बरियों' को प्राणों से हाथ धोना पड़ा था। क्रीमिया पराजय के बाद, फिर जारशाही के विरुद्ध रूसियों की भावना जाग उठी। जार ने छोटे-छोटे सुधारों के द्वारा बहलाना चाहा। सन 1860 और 1869 के कुछ सुधारों द्वारा किसानों के खून

की एक-एक बूँद निचोड़कर, जमींदारों को भारी रकम दे, किसानी अर्द्धदासता को खत्म किया गया। जेम्स्त्वो (म्युनिसिपैलिटी, जिला बोर्ड जैसी संस्थाओं) तथा न्यायालयों में कुछ सुधार करके क्रान्ति की लहर को दबाने की कोशिश की गयी। जब नरोद्निकी ('जनतावादी') क्रान्तिकारी बमों और पिस्तौलों को लेकर, उसी तरह जार के खिलाफ हो गये थे, जिस तरह कि उससे चालीस वर्ष बाद भारत में अंग्रेज़ों के खिलाफ हमारे क्रान्तिकारी। सन 1870 से 1881 तक 'जनतावादी' क्रान्तिकारियों का युग रहा। ये स्वतन्त्रता के दीवाने समझते थे कि जार या उसके बड़े कर्मचारियों की इक्की-दुक्की हत्या करके, जनता की सहायता के बिना ही मुट्ठी-भर वीर नया युग लाने में सफल हो सकते हैं। सन 1881 में, उन्होंने जार अलेक्सान्द्र द्वितीय को मार डाला, जिसके 'अपराध' में ही लेनिन के बड़े भाई अलेक्सान्द्र को फाँसी पर चढ़ना पड़ा था। लेकिन, धीरे-धीरे मालूम हो गया कि यह मुक्ति का रास्ता नहीं है; जैसा कि अपने बड़े भाई के फाँसी पर चढ़ने की खबर सुनकर तरुण व्लादिमिर इलिच (लेनिन) ने कहा था : "नहीं, हमें दूसरा रास्ता अपनाना है। यह वह रास्ता नहीं है, जिसे हमें अपनाना होगा।"

और, यह दूसरा रास्ता था – कार्ल मार्क्स का कम्युनिज्म, जिसका अनुसन्धान इस महान मनीषी ने 19वीं सदी के पूर्वार्ध में करके, उसे सन 1848 में प्रकाशित 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' के नाम से दुनिया के सामने रखा था।

जारशाही साम्राज्य में भी रूस और उसके अधीन दो प्रकार के देश और दो प्रकार की प्रजाएँ उसी तरह थीं, जैसे कि इंग्लैण्ड में। लेकिन, दोनों में एक भेद था : जार का राज्य स्थल द्वारा एक-दूसरे से सम्बद्ध था; और बड़ी भारी संख्या में रूसी किसान और मजदूर भी परतन्त्र एशियाई जातियों के बीच रहते थे। जारशाही ने अपने शासन को मजबूत करने के लिए ही इन किसानों और मजदूरों को दूसरी जातियों में ले जाकर बसाया था, लेकिन उनके कारण परतन्त्र जातियों को रूस के घनिष्ट सम्पर्क में आने तथा वहाँ की सब तरह की हलचलों को जानने का सुभीता था : जब कि सात समुन्दर पार के इंग्लैण्ड को परतन्त्र भारतीय किसी दूर के स्वप्नलोक जैसा समझते थे। 'जनजातियों' के बाद अब रूस में मार्क्सवादी क्रान्तिकारियों का युग आरम्भ हुआ। लोगों में मार्क्सवाद का प्रचार होने लगा। लेनिन कार्यक्षेत्र में उतर चुके थे। जारशाही इस नये खतरे को और भयंकर समझकर उसे दबाने की कोशिश करती थी। उन्हें पकड़कर जेल या निर्वासन की कठोर सजाएँ दी जातीं। निर्वासित हुए लोग, रूसी लोगों से अलग रखने के लिए, दूर-दूर भेजे जाते; लेकिन वे वहाँ जाकर भी लोगों में मार्क्सवाद का सन्देश पहुँचाते।

19वीं शताब्दी के अन्त में, अब रूस के अधीन दूसरे देशों में भी पूँजीवाद का प्रसार होने लगा था। काकेशस में बाकू का महान तेल-क्षेत्र थे, जहाँ पर तेल निकालने और साफ करने के कई कारखाने खुल गये थे। इन कारखानों में विदेशी पूँजी लगी हुई थी। अक्टूबर क्रान्ति के पहले रूसी पूँजीवाद बराबर इंग्लैण्ड और फ्रांस की पूँजी और सहायता के बल पर जीता रहा। तेल के अलावा तम्बाकू और धातु के कारखाने भी काकेशस में जहाँ-तहाँ खुल गये। इन कारखानों ने नये तरह के सर्वहारा मजदूरों को पैदा किया। मजदूर श्रेणी के अस्तित्व में आने के साथ-साथ, मार्क्सवाद भी वहाँ पहुँचा।

सन 1896 में, सत्रह की उम्र में सोसो ने अपनी सेमिनरी में मार्क्सवादी अध्ययन कक्षा चलानी शुरू कर दी। उस समय तक रूस में 'रूसी समाजवादी जनतान्त्रिक मजदूर पार्टी' के नाम से मार्क्सवादियों का दल कायम हो चुका था, जिसकी शाखा 'मेस्सामेह दास्सी' के नाम से गुर्जी में भी स्थापित हो गयी थी। अगस्त सन 1898 में सोसो तिफलिस के इस दल का सदस्य बन गया। इस दल ने सन 1893-98 में मार्क्सवाद का प्रचार करने में बहुत काम किया था। 'मेस्सामेह दास्सी' वस्तुतः एक एकताबद्ध दल नहीं था बल्कि उसमें मतभेद रखनेवाले बहुत से दल शामिल थे। मेस्सामेह दासी का अर्थ है - तृतीय दल। एक गुर्जी लेखक ग. चेरेतेली ने साहित्यकार नेनोश्विली की श्मशान यात्रा के समय गुरिया में, अपने व्याख्यान में इस दल को यह नाम दिया था; जब कि मार्क्सवादी तरुणों का प्रोग्राम सार्वजनिक तौर से लोगों के सामने रखा गया था। तृतीय दल होने का मतलब ही है कि इससे पहले दो और राजनीतिक दल गुर्जी में पैदा हो चुके थे। 'मेस्सामेह दास्सी' में भी कई दल थे, जिनमें नोआ यारदानिया के दल (सन 1893-98) का स्थान प्रमुख था। उसकी ओर से 'क्वाली' और 'मोअम्बेह' नाम के पत्र भी निकलते थे। यारदानिया के विचार कैसे थे, यह उसके निम्न वाक्यों से मालूम होगा :

"गुर्जी संस्कृति के आधार पर गुर्जी भूमि में यूरोपीकरण आगे बढ़ रहा है। हमारा देश और दूसरे देश - गुर्जी और यूरोप हैं, लेकिन हमारे सामने नया लक्ष्य है, गुर्जी और यूरोपीय दोनों ही बनना। इस समय का यह ऐतिहासिक कर्तव्य है कि हम इस तत्व को समझें और लोगों को इसके प्रति सचेत बनायें।"

यारदानिया का मार्क्सवाद अभी यूरोपीकरण और यूरोप के उदारवाद से बहुत आगे नहीं गया था। ब्रिटिश साम्राज्य उसके लिए एक आदर्श राज्य था, इसीलिए उसने लिखा था :

"बोअर (दक्षिणी अफ्रीका के गोरों) के साथ हमारी सहानुभूति का यह मतलब नहीं कि हम अंग्रेज़ों के प्रति घृणा करें। हम बोअरों के साथ इसलिए

सहानुभूति रखते हैं कि वह एक छोटी सी जाति है, जो अपने देश और स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए लड़ रही है। और इंग्लैण्ड? हमें इंग्लैण्ड के साथ प्रेम करना होगा और बहुत बातों में उसके साथ सहानुभूति दिखलानी होगी। इंग्लैण्ड ऐसी सभी चीजों का गहवारा है, जिन पर आज की सभ्य मानव जाति अभिमान करती है। बोअरों को अपने छोटे राष्ट्र की रक्षा के लिए लड़ने दो।... लेकिन, साथ ही ब्रिटेन, जन–जीवन का अग्रदूत, नयी ध्वजा का वाहक, एक महान ब्रिटेन बना रहे, वह सभ्यता का नेता और झण्डाबरदार बना रहे।"

'मेस्सामेह दास्सी' (तृतीय दल) में सोसो 1898 में शामिल हुआ, जब कि शास चुलुकिद्जे 1895 में, और लादो केच्खोवेली 1897 में उसके सदस्य हुए थे।

मेस्सामेह दास्सी में चाहे कितनी ही त्रुटियाँ रही हों, लेकिन मार्क्स और एंगेल्स की रचनाओं को गुर्जी में फैलाने का आरम्भिक काम इसी ने किया था। सोसो के सदस्य होते ही उसी साल इस दल में एक क्रान्तिकारी मार्क्सवादी दल तैयार हो गया, जिसमें सोसो के अतिरिक्त, अ. चुलूकिद्जे और लादो केच्खोवेली भी शामिल थे। मतभेद का पहला कारण तब पैदा हुआ, जब सोसो और उसके साथियों ने कानूनी अखबारों पर सन्तोष न कर, मार्क्सवाद की क्रान्तिकारी विचारधारा का स्पष्ट रूप से प्रचार करने के लिए गैरकानूनी प्रेस तैयार करने का प्रस्ताव रखा।

एक क्रान्तिकारी के लिए सेमिनरी का जीवन असह्य हुए बिना कैसे रह सकता था? वहाँ के शिक्षक और प्रबन्धक जारशाही के कठपुतले और खुफियों से कुछ कम नहीं थे। स्तालिन (सोसो) ने स्वयं लिखा था :

"एक अत्यन्त अपमानजनक शासन तथा भारी स्वेच्छाचारी व्यवस्था से हमारा पाला पड़ा था। वहाँ बड़े जोर की खुफियागीरी चल रही थी। 9 बजे नाश्ते की घण्टी बजी। हम भोजनशाला में गये और लौटकर आने पर देखा कि जब हम भोजन कर रहे थे, उसी समय हमारी सभी आलमारियाँ और सन्दूकें एक–एक कर खोलकर देख ली गयीं और सब चीजों को उलट–पलट दिया गया।"

जारशाही के अत्याचारों को चिरस्थायित्व देने के लिए, सेमिनरी के कर्ता–धर्ता तरुणों को तैयार करने में लगे हुए थे। उन्हें यह कब पसन्द हो सकता था कि वहाँ जारशाही को उखाड़ फेंकने वाले क्रान्तिकारी पैदा हों। लेकिन, दुनिया विरोधी समागमों से भरी पड़ी है। पादरियों के इस विद्यालय के विद्यार्थियों में कई राजनीतिक विचार वालों के अपने–अपने दल थे। राष्ट्रवादी तरुण स्वतन्त्र गुर्जी देश का स्वप्न देख रहे थे, जनतन्त्रवादी 'स्वेच्छाचार, क्रूरता – मुर्दाबाद' का नारा लगा रहे थे। इसके साथ, तीसरा दल सोसो जैसे मार्क्सीय अन्तरराष्ट्रीयतावादियों का था।

सोसो बालपन में दुबला–पतला सा लड़का था। लेकिन, उस वक्त भी उसके चेहरे पर सदा निर्भयता की छाप देखी जाती थी और वह हमेशा सिर ऊपर उठाकर चलता था। बढ़कर जब वह और लम्बा हुआ, तब वह देखने में बहुत पतला–दुबला मालूम होता था। उसके रूप–रंग में आवश्यकता से अधिक कोमलता थी, यद्यपि उनके चेहरे से प्रतिभा साफ झलकती थी। उस वक्त भी कोयले जैसे काले, घने केश सोसो के सिर पर थे। उसके वर्तुलाकार चेहरे और बादामी काली–काली आँखों में गुर्जी लोगों की जातीय आकृति का पूरा आभास मिलता था। उसके एक सहपाठी एनोकिद्जे के कथनानुसार, अपने आरम्भिक क्रान्तिकारी जीवन में तरुण सोसो बुद्धिजीवी और मजदूर दोनों के गुणों का एक अद्भुत सम्मिश्रण था। वह बहुत लम्बा नहीं था। उसके कन्धे कुछ अधिक पतले, चेहरा कुछ अधिक लम्बा, दाढ़ी अभी छोटी–छोटी निकल रही थी, आँखें भारी और नाक लम्बी तथा सीधी। वह अपनी चौरस टोपी जरा एक ओर तिरछी लगाता था, जिससे एक ओर बहुत सारे घने काले केश दिखलाई पड़ते थे।

काकेशस में एनोकिद्जे क्रान्ति का सबसे पुराना कार्यकर्ता था, जो बाद में वहाँ का एक बड़ा नेता बना। उस समय सोसो जुगशविली के साथ उसका बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध था। एनोकिद्जे के अनुसार, मजदूरों से बातचीत करने में सोसो बहुत दक्ष था। हर वक्त मजदूर उसके पास आसानी से पहुँच, दिल खोलकर बात कर सकते थे, उसी प्रकार जैसे कि उस समय सोसो से दस साल बड़े लेनिन के पास रूसी समाजवादी आन्दोलन के मुख्य केन्द्रों के कमकर। सोसो में एक स्वाभाविक ढंग की सादगी थी। वह अपने शरीर के बारे में बिल्कुल उपेक्षा रखता था। अपने ज्ञान और नैतिक बल के कारण, वह तब भी लोगों पर अपना भारी प्रभाव रखता था। लोग खिंचकर उसके साथ हो जाते थे। तिफलिस के कमकर उसे 'हमारा सोसो' कहते थे।

सोसो में एक और भी चमत्कारिक गुण था, जिसके कारण वह कमकरों को मोह लेता था। वह बात करते वक्त, क्लास लेते वक्त या व्याख्यान देते वक्त, अपने को उसी स्तर पर लाकर रखता था, जो कि उसके श्रोताओं का होता था। इस कारण, वह जो भी कहता, श्रोता उसकी एक–एक बात को हृदयंगम कर सकते थे। सोसो के उस समय के साथी ओरेखेलश्विली का कहना था : 'न वह पण्डितमन्य था, और न गँवार।' वह समाजवाद और राजनीति के गम्भीर सिद्धान्तों और विचारों को लोगों के सामने रखता, लेकिन उनकी व्याख्या इतने सरल और सीधे तौर से करता कि उसके श्रोताओं को समझने में जरा भी दिक्कत न होती। इसे दिखलाते हुए ओरेखेलश्विली ने कहा है :

"उसके साथ प्रचारकों के एक दल में हम भी थे। लेकिन, हम कुछ

परिभाषाओं को नहीं छोड़ पाते थे। वाद, प्रतिवाद तथा संवाद इसी तरह के दूसरे तर्कशास्त्रीय शब्द हमारे पीछे पड़े रहते थे। जब हम मजदूरों और किसानों के सामने बोलते, तब भी ये परिभाषाएँ हमारे मुँह से निकलती रहतीं। लेकिन, सोसो के भाषणों में ऐसा नहीं होता। वह विषय को एक दूसरे ही ढंग से जीवन के दृष्टिकोण से उठाता। उदाहरणार्थ, यदि मध्यवर्गीय जनतन्त्रता के विचार को लेता, तो वह उसे दिन की तरह स्पष्ट करके दिखला देता। जारशाही की अपेक्षा यह क्यों अच्छा है, क्यों समाजवाद की अपेक्षा अच्छा नहीं। फिर तो सभी समझ जाते कि जनतन्त्रता यद्यपि साम्राज्य को उखाड़ फेंकने में बिल्कुल समर्थ है, लेकिन एक दिन वह समाजवाद के विरुद्ध बाधा के रूप में उपस्थित होगी, और उसे तोड़ फेंकना ही पड़ेगा।..."

सोसो बड़ा खुशमिजाज और मिलनसार था। ओरेखलश्विली ने लिखा है :

"एक दिन हम लोग एक काकेशीय मुखिया साथी के घर में जमा हुए। हम सदा किसी के घर में जमा होते थे, क्योंकि दूसरी जगह मिलना प्राय: असम्भव-सा था। भोजन के समय घर के मालिक का बच्चा आकर अपने बाप की जाँघ पर बैठकर ठमकने लगा। बाप पीठ ठोककर उसे चुप करने की कोशिश कर रहा था। जो गम्भीर बातचीत वहाँ चल रही थी, लड़का उसे समझने की आयु का नहीं था। बाप को असफल होते देख, सोसो अपनी जगह से उठा, बड़ी नरमी के साथ लड़के को हाथ में पकड़ उसे दरवाजे के पास ले जाकर बोला : 'मेरे छोटे दोस्त, आज के प्रोग्राम में तुम्हें शामिल नहीं किया गया है।'

ओरेखेलश्विली ने सोसो के स्वभाव के बारे में यह भी लिखा है :

"वह अपने विरोधियों को कभी बुरा-भला नहीं कहता था। मेंशेविक हमें उस समय इतना सता रहे थे कि जब कभी हम अपने भाषण में उन्हें बैठे देखते, तो अपने को उनके ऊपर तीक्ष्ण वाक्-बाण चलाने से नहीं रोक सकते थे। सोसो इस तरह के आक्रमण को कभी पसन्द नहीं करता, कटु वाणी उसके लिए वर्जित हथियार थी। जब वह अपने तर्कों और युक्तियों से अपने विरोधी को चुप करा देता, विरोधी मौन हो बच निकलने की कोशिश करता, तो उस समय वह चुटकी लेते हुए इतना भर कहता : 'आप इतने भद्र पुरुष हैं, यह देखकर मुझे आश्चर्य होता है कि आप हमारे जैसे नगण्य आदमी से भय खाते हैं।'"

गोरी स्कूल के अन्तिम दिनों में ही, सोसो डार्विन की पुस्तकों और मार्क्स के विचारों से परिचित हो चुका था। सन 1894 में, वह बहुत अधिक अंकों के साथ वहाँ की परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ। तिफलिस की सेमिनरी में, दाखिल होने पर वहाँ का जीवन उसे बड़ा गलाघोंटू मालूम हुआ। यह बड़ा ही दकियानूसी स्कूली था। लड़के दुनिया से अलग-थलग करके कोठरियों में रखे गये थे। सब अध्यापक

ईसाई साधू थे, जो विद्यार्थियों में ईश्वर, जार और ईसाई चर्च के प्रति सम्मान के भाव को जबर्दस्ती भरने की कोशिश करते थे। मठों की तरह, विद्यार्थियों को प्रार्थना में आने के लिए गिरजे का घण्टा निश्चित समय पर बजाया जाता। पाठ्य-विषयों में ईसाई धर्मशास्त्र का विशेष स्थान था। विद्यार्थियों पर खुफियावालों की हर वक्त निगाह रहती थी। इस तरह की धार्मिक शिक्षा और खुफियावाालों की निगरानी लड़कों पर बड़ा बुरा प्रभाव डालती थी। लेकिन उससे क्या? सेमिनरी का तो काम ही था - जार के भक्त अनुचर, और धर्मान्ध प्रतिगामियों को पैदा करना। पर, सेमिनरी अपने उद्देश्य में सफल हुई नहीं दीख पड़ती थी, क्योंकि हम देखते हैं कि उसी से निकोलाई चेर्नीशेव्स्की, लादो केच्खोवेली, मिखा छकाया और सोसो जुगशविली जैसी क्रान्तिकारी पैदा हुए।

सेमिनरी के संकीर्ण वातावरण के बारे में स्तालिन ने स्वयं जर्मन लेखक एमिल लुडविग से कहा था :

"सेमिनरी में जिस प्रकार का अपमानजनक शासन और धर्मान्धिर्तापूर्ण व्यवहार सर्वत्र फैला हुआ था, उसके विरोध के लिए मैं तैयार था और वैसा ही हुआ भी, जब कि मैं एक क्रान्तिकारी और मार्क्सवाद - जो कि एकमात्र असली क्रान्तिकारी सिद्धान्त है - का अनुयाई बना।"

तिफलिस में उन दिनों मार्क्सवादी साहित्य प्राप्त करना आसान नहीं था। सन 1938 में स्तालिन ने अपने पुराने जीवन की बातें बतलाते हुए कहा था कि कैसे तिफलिस के तरुण मार्क्सवादी पुस्तकों के लिए एक-एक पैसा जमा करते, और मार्क्स की 'कैपिटल' (पूँजी) की एक ही कापी होने से हाथ से लिखकर उसकी कापियाँ तैयार करते, इसी हस्तलिखित पुस्तक से अपने गुप्त अध्ययन केन्द्रों में मार्क्स के ग्रन्थ का अध्ययन करते। इन्हीं केन्द्रों में, पुस्तकों को बड़ी मुश्किल से प्राप्त करके उन्होंने मार्क्स, प्लेखानोफ, चेर्नीशेव्स्की, पिसारेफ, बेलिन्स्की, दोब्रोल्युबोफ और हर्जेन की कृतियाँ पढ़ीं। सोसो के लिए रूसी पढ़ना-लिखना अब आसान हो गया था, इसलिए गुर्जी भाषा में न रहने पर भी रूसी लेखकों को उसने ध्यान से पढ़ा। उसके कारण उसके ज्ञान का क्षेत्र बहुत बढ़ गया और वह ज्ञान की भिन्न-भिन्न शाखाओं में खुलकर विचरने लगा। सेमिनरी के विद्यार्थियों के लिए वर्जित होने पर भी, वह तिफलिस के एक घुमन्तू पुस्तकालय का सदस्य हो गया था। उसे वहाँ से सस्ते में बहुत तरह की पुस्तकें पढ़ने को मिल जाया करती थीं। शेक्सपियर, शिलर, तोल्सतोय, सल्तीकोफ श्चेद्रिन, गोगोल और चेखोव जैसे महान लेखकों के प्रति उसका बहुत प्रेम था। साथ ही, वह अपनी मातृभाषा के लेखकों का भी प्रेमी था। शोता रुस्थवेली, एरिस्तावी, चौचवाद्जे आदि के काव्यों और ग्रन्थों को उसने बड़े ध्यान से पढ़ा

था। केवल साहित्य ही उसका प्रिय विषय नहीं था। इतिहास और समाजशास्त्र के अतिरिक्त उसे रसायन और भूगर्भशास्त्र जैसे विषयों में भी बड़ी दिलचस्पी थी। कविता के साथ तो अधिक प्रेम होना जरूरी ही था, क्योंकि तरुणाई में सोसो ने कविताएँ भी की थीं, जो मामूली नहीं थीं। यह इसी से मालूम होगा कि राफेल एरिस्तवी की जुबली को समर्पित किये गये एक कविता संग्रह में तरुण सोसो जुगशविली की एक कविता भी सम्मिलित की गयी थी। सोलह वर्ष की उम्र (सन 1895) में सोसो ने 'सोसेलो' के नाम से 'इबेरिया' में अपनी एक कविता छपवाई थी ('इबेरिया' गुर्जी देश का पुराना नाम है) जो इस प्रकार है :

"जिसकी कमर अन्तहीन मेहनत से टेढ़ी हो गयी,
जो अभी तक दासता के सामने नताशिर था,
मैं कहता हूँ, वह उठेगा पर्वतों का ईर्ष्यापात्र हो,
आशा के पंखों पर, सबसे ऊँचे, ऊपर।"

ग. परकाद्जे ने अपने सहपाठी तरुण सोसो के विद्यार्थी जीवन के बारे में लिखा है :

"हम तरुणों को ज्ञान की हद से अधिक पिपासा थी; इसीलिए सेमिनरी के विद्यार्थियों के दिमाग से छः दिन में दुनिया पैदा करने की पौराणिक गप्प हो हटाने के लिए, हमने भूगोलशास्त्रीय सृष्टि सम्बन्धी विचार, तथा पृथ्वी की आयु के बारे में पढ़ा। इसीलिए, हमने डार्विन की शिक्षाओं से परिचय प्राप्त किया। हमारे इस काम में गैलीलियो, कॉपर्निकस तथा कामिल फ्लामोरियोन की दिलचस्प पुस्तकों ने मदद की। हमने लायल की 'मनुष्य की प्राचीनता' और डार्विन की 'मनुष्य की उत्पत्ति' भी पढ़ी। डार्विन की इस पुस्तक का अनुवाद शेचेनोफ ने किया था। साथी स्तालिन शेचेनोफ की वैज्ञानिक कृतियों को बड़े चाव से पढ़ते थे।

क्रमशः हम वर्ग–समाज के अध्ययन की ओर बढ़े, और मार्क्स, एंगेल्स और लेनिन के ग्रन्थों पर पहुँचे। उन दिनों मार्क्सीय साहित्य पढ़ने को क्रान्तिकारी काम कहकर दण्डनीय अपराध माना जाता था। सेमिनरी में तो वह और भी निषिद्ध था। वहाँ डार्विन का नाम हमेशा गालियों के साथ लिया जाता था।

"सामाजिक शास्त्र और अर्थशास्त्र सम्बन्धी साहित्य के परिचय के साथ हम तरुणों की दिलचस्पी ज्योतिष, भौतिकशास्त्र, और रसानशास्त्र की ओर बढ़ी। लुडविग फायरबाख की पुस्तक 'ईसाइयत–सार' पढ़ने से हमें बड़ा फायदा हुआ।

"इन सब पुस्तकों से हमारा परिचय साथी स्तालिन (सोसो) ने कराया। वह कहा करते थे कि जो सबसे पहले करना है, वह है अनीश्वरवादी बनना। इसका फल यह हुआ कि हमसे से बहुत से बाइबल के विचारों की उपेक्षा करके,

भौतिकवादी दृष्टिकोण स्वीकार करने लगे।

"विज्ञान की भिन्न-भिन्न शाखाओं के अध्ययन ने हम तरुणों को सेमिनरी के धर्मान्ध और कूपमण्डूकतापूर्ण वातावरण से मुक्त होने में सहायता ही नहीं दी, बल्कि उसके कारण, मार्क्सीय विचारों को स्वीकार करने के लिए भी हमारे दिमाग तैयार हो गये। पुरातत्व, भूगर्भशास्त्र, ज्योतिष या आदिम सभ्यता के बारे में हम जो भी पुस्तक पढ़ते, वह मार्क्सवाद की सत्यता को हमारे हृदय में और दृढ़ कर देती।

"आज की तरुण पीढ़ी के लिए यह समझना भी मुश्किल है, कि उन दिनों किताबों को प्राप्त करना ही नहीं, बल्कि उन्हे पढ़ना भी बहुत मुश्किल था। उदाहरणार्थ, सेमिनरी के अधिकारियों ने सहायक निरीक्षक की सूचना पर विक्तर ह्यूगो की पुस्तक 'समुद्र के मेहनतकश' को साथी स्तालिन से लेकर जब्त कर लिया था। वही बात ह्यूगो की दूसरी पुस्तक 'तिरानवे' के साथ हुई।

"तिफलिस की किरोचया स्ट्रीट के एक घुमन्तू पुस्तकालय से हम पुस्तकें लिया करते थे। इस पुस्तकालय में अध्यापक और दूसरे बुद्धिजीवी अक्सर जाया करते थे। सन 1920 के आस-पास मैक्सिम गोर्की ने भी इससे फायदा उठाया था। पुस्तकालय की स्थापना साधारण शिक्षण के उपयोग के लिए की गयी थी, लेकिन किसी को क्या पता था कि बिल्कुल साधारण-सी पुस्तकों के रूप में वहाँ कितनी बारूद जमा की जा रही है।

"साथी स्तालिन हमें बतलाते थे कि कैसे किताबों के अर्थ को हृदयंगम करना चाहिए और कैसे किसी विशेष विषय पर पुस्तकों के न होने पर मासिक पत्रिकाओं के लेखों, आलोचनाओं, यहाँ तक कि जब-तब की टिप्पणियों का इस्तेमाल करना चाहिए। इस कारण, हम जो कुछ पढ़ते उसे संक्षिप्त करके उतार लेने की हमें आदत पड़ गयी। पढ़ने के लिए किसी विषय का सुझाव रखते समय, स्तालिन पहले आसान पुस्तकों को चुनते फिर कुछ अधिक कठिन। साहित्य को पढ़ने-समझने में जहाँ भी कठिनाई आती, उसे स्तालिन (सोसो) हमें बड़ी मेहनत से समझाते।

"एक दिन मुझे मेन्देलयेफ का 'रसायन' हाथ लगा। यह पुस्तक मुझे अब भी अच्छी तरह याद है। स्तालिन उसमें बहुत दिलचस्पी रखते थे।

"सेमिनरी के कागज पत्रों से हमें आज मालूम है कि उसके सुपरवाइजर साधू गेरमोगन ने रिपोर्ट दी थी : 'जुगशविली (स्तालिन) एक सस्ते पुस्तकालय का सदस्य है, जिससे वह पुस्तकें लेता है।'

"साथी स्तालिन की इतिहास के साहित्य के प्रति भारी आसक्ति थी। हमें अक्सर अचरज होता था कि वह इन पुस्तकों को कहाँ से पाते हैं। मुझे याद है,

उनके पास महान फ्रेंच-क्रान्ति, सन 1848 की क्रान्ति, पेरिस कम्यून, रूसी इतिहास आदि पर पुस्तकें थीं।

"साथी स्तालिन सत्रह वर्ष के थे, जब कि सन 1896 में सेमिनरी के भीतर प्रथम गैर-कानूनी मार्क्सीय अध्ययन चक्र कायम कर, वह मार्क्सवाद के प्रचारक बन गये। उसके बाद, एक दूसरा चक्र कायम हुआ। मेरा सम्बन्ध प्रथम चक्र से था। इन दिनों जिन पुस्तकों को स्तालिन और उनके साथी पढ़ते थे, उनमें थीं – 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र', एंगेल्स की 'इंग्लैण्ड के मजदूरों की स्थिति', लेनिन की 'जनता के मित्र कौन हैं और वह कैसे समाजवादी जनतन्त्रियों से लड़ते हैं।' ऐडम स्मिथ और रिकार्डो की राजनीतिक अर्थशास्त्र की पुस्तकें, स्पिनोजा का 'आचारशास्त्र', बर्कले का 'इंग्लैण्ड में सभ्यता का इतिहास', लू-तूर्चो का 'सम्पत्ति का विकास', जीबर का 'डेविड रिकार्डो' और कार्ल मार्क्स की सामाजिक और आर्थिक शोध और दर्शन पर भी पुस्तकें थीं।

"साथी स्तालिन को उपन्यास साहित्य से भी प्रेम था। उन्होंने सल्तिकोफ श्चेद्रिन के 'गोलोव्ल्योफ परिवार', गोगल की 'मृत आत्माएँ', येर्कमानचरित्रमान की 'एक किसान की कहानी', थेकरे की 'वैनिटी फेअर' और दूसरी पुस्तकें पढ़ डाली थीं। बचपन से ही वह गुर्जी साहित्यकारों से परिचित थे, और रुस्तावेली, इलिया चौचवाद्जे और वाजा प्शावेली को बड़े चाव से पढ़ते थे। साहित्य के प्रति उनका बहुत अनुराग था। तिफलिस सेमिनरी में रहते वक्त, उन्होंने कितनी ही कविताएँ लिखी थीं, जिनकी प्रशंसा इलिया चौचवाद्जे ने की थी। चौचवाद्जे ने अपने सम्पादित पत्र में विशेष स्थान देते हुए, इन कविताओं को मुखपृष्ठ पर छापा था; यद्यपि सेमिनरी के विद्यार्थियों के लिए पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखने की सख्त मनाही थी।"

तिफलिस सेमिनरी के जीवन के बारे में सोसो के दूसरे सहपाठी ग. ग्लुरजिद्जे ने अपने संस्मरण में लिखा।

"कभी-कभी गिरजाघर में, हम उपासना के समय बेंचों के पीछे छिपाकर पुस्तकें पढ़ते। हमें बहुत सावधानी रखती पड़ती थी कि मास्टर देख न ले। पुस्तकें सोसो की अभिन्न मित्र थीं, भोजन के समय भी वह उनको नहीं छोड़ता था।...

"सेमिनरी के असह्य गलाघोंटू वातावरण में हमारे आनन्द की एक सबसे बड़ी चीज थी – गाना। हम फूले नहीं समाते, जब सोसो हमारे लिए जैसे-तैसे एक संगीत-मण्डली जमा करता, और अपने स्पष्ट और मधुर कण्ठ से हमारे किसी प्रिय लोकगीत को गाने लगता था।"

स्तालिन को सेमिनरी में रहते समय ही पहले-पहल लेनिन की सबसे पहली लिखी कृतियाँ पढ़ने को मिलीं। सेमिनरी में स्तालिन के साथी पपानाद्जे ने लिखा है :

"मुझे सन 1898 की एक दिलचस्प बात विशेष तौर से याद आती है। एक दिन पूर्वाह्न में नाश्ते के बाद, मैं पुश्किन-चौरस्ते पर टहलने लगा। वहाँ मैंने अपने विद्यार्थियों के एक झुण्ड से सोसो को भिड़े देखा। वह उनके साथ गर्मागर्म बहस करते हुए यारदानिया के विचारों की आलोचना कर रहा था। सभी बहस में भाग ले रहे थे। यहीं पर मैंने सबसे पहले लेनिन के बारे में सुना। इसी समय घण्टी बजी और हम सभी जल्दी-जल्दी अपनी क्लासों में दौड़ गये। मुझे यारदानिया के विचारों की सोसो द्वारा इतनी सख्त आलोचना सुनकर आश्चर्य हुआ। मैंने उससे इसके बारे में कहा। उसने बतलाया कि उसने अभी-अभी तूलिन (लेनिन) का लेख पढ़ा है, जो उसे बहुत पसन्द आया। उसने यह भी कहा : चाहे जैसे भी हो, मुझे इस (लेनिन) से मिलना है।'

* * *

सेमिनरी के अधिकारियों को यह पता लगते देर नहीं लगी कि उनके कुछ अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि विद्यार्थी सोसो को अगुवा मानते और उसकी बातों पर चलते हैं। यह जानकर, वह सोसो पर सावधानी से निगाह रखने और उसके बारे में रिपोर्ट देने लगे। 29 सितम्बर 1898 को सेमिनरी के रेक्टर को यह रिपोर्ट दी गयी :

"9 बजे शाम को भोजनशाला में विद्यार्थियों का एक समूह सोसो जुगशविली के पास बैठा था। सोसो उन्हें ऐसी पुस्तकें पढ़कर सुना रहा था जिनकी सेमिनरी के अधिकारियों ने स्वीकृति नहीं दी थी। इसके लिए विद्यार्थियों की तलाशी ली गयी।" सेमिनरी के चाल-चलन सम्बन्धी रजिस्टर में सोसो के बारे में कुछ बड़ी दिलचस्प बातें लिखी हुई मिलीं :

"मालूम होता है कि जुगशविली के पास सस्ते पुस्तकालय की सदस्यता का टिकट है। वह वहाँ से किताबें लिया करता है। आज मैंने विक्तर ह्यूगो की पुस्तक 'समुद्र के मेहनतकश' को छीन लिया, जिसमें उक्त पुस्तकालय का टिकट पाया! - स. मुराखोव्स्की, सहायक सुपरवाइजर, फादर गेरमोगेन, सुपरवाइजर।"

रिपोर्ट में दण्ड के तौर पर निम्न पंक्तियाँ लिखी हैं : "दण्ड वाली कोठरी में उसे लम्बे अर्से के लिए बन्द कर दो। मैं उसे एक बार पहले भी एक असम्मत पुस्तक - विक्तर ह्यूगो की 'तिरानवे' के बारे में सावधान कर चुका हूँ। (नवम्बर 1896)"

"11 बजे रात को मैंने सोसो जुगशविली से ल-तूरनो की पुस्तक 'राष्ट्रों का साहित्यिक विकास' छीन ली, जिसे वह सस्ते पुस्तकालय से लाया था। पुस्तकालय का टिकट किताब के भीतर मिला। जुगशविली इस पुस्तक को गिरजे

की सीढ़ियों पर बैठा पढ़ रहा था। यह तेरहवीं बार है, जब इस विद्यार्थी को सस्ते पुस्तकालय से उधार ली गयी पुस्तकों को पढ़ते पाया गया। मैंने पुस्तक फादर सुपरवाइजर के हाथ में दे दी। – सं. मुराखोव्स्की, सहायक सुपरवाइजर।"

इस पर दण्ड के लिए निम्न नोट लिखा गया : "फादर रेक्टर की आज्ञानुसार कड़ी चेतावनी देकर, उसे कालकोठरी में लम्बे अर्से के लिए बन्द कर दो – (मार्च 1897)।"

"निरीक्षण बोर्ड के सदस्य जब पाँचवीं श्रेणी के विद्यार्थियों की तलाशी ले रहे थे, तो सोसो जुगशविली ने कई बार उनके साथ बहस करनी चाही, और विद्यार्थियों की बार–बार तलाशी लेने के बारे में असन्तोष प्रकट करते हुए घोषित किया कि दूसरी सेमिनरियों में इस तरह की तलाशियाँ कभी नहीं ली गयीं। जुगशविली आमतौर से अधिकारस्थ व्यक्तियों के प्रति बड़ा ही असम्मानपूर्ण और रूखा बर्ताव करता है। एक मास्टर स. अ. मुराखोव्स्की को प्रणाम करने से बराबर इन्कार करता है, क्योंकि उसने बार–बार उसके बारे में निरीक्षण बोर्ड के पास शिकायत की है। – अ. र. जावेनस्की, सहायक सुपरवाइजर।"

इस पर नोट है : "उसे फटकारा गया। फादर रेक्टर की आज्ञानुसार उसे पाँच घण्टे के लिए कालकोठरी में बन्द कर दिया गया। फादर (साधू) दिमित्रि – (16 दिसम्बर 1898)।"

ऐसी ही एक तलाशी के समय सेमिनरी सुपरवाइजर फादर दिमित्रि सोसो के कमरे में दाखिल हुआ। उस समय वह अपनी किताब पढ़ता रहा, माना उसने फादर को देखा ही नहीं। इस पर फादर ने पूछा : "देखते नहीं हो, तुम्हारे सामने कौन खड़ा है?" सोसो अपनी आँखें मलते हुए खड़ा हो बोला : "मुझे कुछ नहीं दिखायी पड़ता, सिवाय इसके कि मेरी आँखों के सामने एक काला दाग है।"

27 मई 1899 को इसी 'काले दाग' ने सेमिनरी परिषद के सामने प्रस्ताव किया : "सोसो जुगशविली को राजनीतिक तौर से अविश्वसनीय समझकर सेमिनरी से निकाल दिया जाये।"

यद्यपि बाहर से यह लिखा गया कि सोसो को फीस न दे सकने तथा 'अज्ञात कारणों से' परीक्षा में उपस्थित न होने के लिए निकाला गया, लेकिन असली कारण था – सोसो का राजनीतिक कार्य।

स्तालिन ने सन 1931 में एक प्रश्न के उत्तर में लिखा था : "(मैं) मार्क्सवाद का प्रचार करने के कारण सेमिनरी से निकाला गया।"

जिस वक्त सोसो ने सेमिनरी छोड़ी, उस समय तक उसका मार्क्सवादी दृष्टिकोण पक्का और पूरा हो चुका था।

अध्याय - तीन

क्रान्तिकारी जीवन (सन 1899-1905)

सेमिनरी से सोसो जुगशविली को अपने कैदखाने से मुक्त करके बाहर खुलकर काम करने का मौका दे दिया, इसलिए उन्हें उसका जरा भी अफसोस नहीं हुआ। 19वीं सदी का अन्त होते-होते काकेशस के पिछड़े प्रदेश में भी पूँजीवाद अपने पैर फैलाने लगा था। अब वहाँ भी रूसी पूँजीपति अपने कल-कारखाने बढ़ा रहे थे। तिफलिस और बातूम पूँजीवाद के केन्द्र बनते जा रहे थे। हमें इस नयी प्रगति का पता नगरों की जन-वृद्धि से भी मालूम होता है। सन 1863 में जहाँ काकेशस के नगरों में साढ़े तीन लाख आदमी बसते थे, वहाँ सन 1897 में उनकी संख्या नौ लाख हो गयी थी। काकेशस का और भी महत्वपूर्ण स्थान इसलिए था कि दुनिया का एक सबसे बड़ा तेल-क्षेत्र बाकू भी वहीं था, जहाँ नोबेल और राथचाइल्ड जैसे विदेशी पूँजीपतियों ने भी करोड़ों की पूँजी लगाकर, एक विशाल उद्योग खड़ा कर दिया था। एक ओर रूसी और विदेशी पूँजीपति काकेशस के लोगों के शोषण में लगे थे, दूसरी ओर जारशाही इन पहाड़ी जातियों का घोर उत्पीड़न कर रही थी। वह पग-पग पर उनकी राष्ट्रीय भावना को कुचलने का प्रयत्न करती थी। अगर स्कूल के विद्यार्थियों में कोई अपनी भाषा बोलता, तो उसकी गर्दन में जीभ निकाले हुए एक कुत्ते के सिर की तस्वीर लटका दी जाती थी।

सोसो जुगशविली, लादो केच्खोवेली, और सोसो चुलुकिद्जे जैसे तरुण इस तरह के अपमान और शोषण को कैसे बर्दाश्त कर सकते थे? उन्होंने अपने जीवन को जन-मुक्ति के लिए अर्पित कर दिया, लेकिन सोसो के दोनों तरुण साथी बहुत दिनों तक इस काम को नहीं चला पाये। लादो सोसो और सासा के साथ, काकेशस में क्रान्तिकारियों के काम और गुप्त प्रेस के संगठन में दिलोजान से लग गया था। लेनिन ने गुप्त संगठन सम्बन्धी कई जिम्मेवारियाँ सौंपी थीं, जिन्हें उसने बड़ी योग्यता से पूरा किया। जारशाही ने उसे पकड़कर जेल में ही बन्द नहीं कर

दिया, बल्कि परहेदार सैनिक ने 17 अगस्त 1903 को उसे कालकोठरी में गोली भी मार दी। सोसो के दूसरे साथी, सासा चुलुकिद्जे का स्वास्थ्य पहले से ही बहुत कमजोर था, लेकिन वह अपने आदर्श और लक्ष्य के सामने उनकी परवाह नहीं करता था। तरुण सोसो अपने प्रतिद्वन्द्वियों के साथ बहस–मुबाहिसा करने में बहुत भाग लिया करते थे। मार्क्सवादी विचारधारा के प्रचार के लिए यह शास्त्रार्थ अच्छे साधन थे। उनमें कमकर जनता देखती थी कि मार्क्सवादी विचारधारा कितनी दृढ़ और सत्य है। सासा भी इस काम में सोसो का सहायक होता था। उसने गैरकानूनी पत्रों में बहुत से लेख लिखे थे। अन्त में तपेदिक ने सन 1905 में उसके तरुण जीवन को खत्म कर दिया।

यूक्रेनी बोल्शेविक जूबेनली मेल्नीकोफ ने कहा था : "जनता को एक इंच ऊपर उठाना उससे कहीं अधिक अच्छा है कि एक आदमी को पूर एक मंजिले तक उठाया जाये।" सोसो जुगशविली की भी यही धारणा थी। गम्भीर विचारक और अध्ययनशील होते हुए भी, वह दूसरे प्रचारकों की तरह, लोगों के सामने अपनी पण्डिताई दिखाना बिल्कुल पसन्द नहीं करते थे। हम यह बतला चुके हैं कि वह कैसे गम्भीर तत्वों को श्रोताओं के तल पर उतरकर, बहुत सरल करके, उनकी ही भाषा में रख देते थे। फिजूल की बातें बघारने के लिए उनके पास फुर्सत नहीं थी। उनके एक पुराने साथी तोद्रिया ने लिखा है :

"मैंने सोसो से कहा – 'वह हमें बतलाते हैं, सूर्य कैसे घूमता है।' इस पर उन्होंने मुस्कराते हुए, जवाब दिया – 'सुनो दोस्त, सूर्य के बारे में तुम चिन्ता मत करो, वह अपनी कक्षा से नहीं हटेगा। तुम्हारे लिए यह सीखना बेहतर है कि क्रान्तिकारी कैसे आगे बढ़ता है और इसके लिए एक छोटा सा गैरकानूनी प्रेस स्थापित करने में मेरी सहायता करो।'"

ज्यार्जी निनुवा नामक कमकर ने सोसो के आरम्भिक प्रचार कार्यों के बारे में बतलाया :

"साथी सोसो ने दो वर्षों से अधिक समय तक हमारी क्लास चलायी। जिस विषय पर भी उन्हें बोलना होता, वह उसे पहले भिन्न–भिन्न प्रकरणों में बाँट लेते। उन्हें पश्चिम के मजदूर आन्दोलन के इतिहास और क्रान्तिकारी समाजवादी जनतान्त्रिक सिद्धान्तों का अद्भुत ज्ञान था। मजदूरों का ध्यान तुरन्त उनकी बातों की ओर खिंच जाता। वह अपने भाषणों में उपन्यासों और कहानियों से लेकर वैज्ञानिक ग्रन्थों तक के उद्धरण देते। कहावतें तो उनकी जीभ पर नाचती रहती थीं। हमारे सामने बोलते समय, उनके सामने एक नोटबुक या बारीक अक्षरों में लिखा हुआ कोई कागज का टुकड़ा होता। वह पहले से तैयारी करके बोलते, इससे यह स्पष्ट है। हम अधिकतर शाम को, गोधूलि के समय इकट्ठे होते और

इतवार की छुट्टी के दिन पाँच-दस आदमियों के गिरोह में देहात चले जाते, जहाँ समय का बिल्कुल ख़याल किये बिना वार्तालाप और बहस करते रहते।

"साथी स्तालिन के उस समय के भाषण अधिकतर मामूली बातचीत के ढंग पर होते थे। उनका नियम था कि जब तक एक विषय को अच्छी तरह न समझा लें, तब तक दूसरे विषय को हाथ न लगायें। उनके प्रश्नों का जवाब देते वक्त, हम मजदूरों के जीवन की घटनाएँ पेश करते और बतलाते कि फैक्ट्रियों में क्या हो रहा है, प्रबन्ध विभाग, ठेकेदार और फोरमैन किस तरह हमारा शोषण कर रहे हैं जब कभी इस विषय पर बात होती, तो साथी स्तालिन उसे बड़े ध्यान से सुनते। वह हमसे बहुत से प्रश्न करते और अन्त में निष्कर्ष निकालते।... साथी स्तालिन हमारे अध्यापक थे, लेकिन वह अक्सर कहते कि मैं स्वयं मजदूरों से सीख रहा हूँ। स्तालिन की यह धारणा बराबर बनी रही और वह हमेशा इस बात की हिदायत करते थे कि आदमी को जनता से सीखना चाहिए : 'सबसे बड़ी बीमारी जो एक नेता पर आक्रमण कर सकती है, वह है – जनता का भय।'

"नेता की जनता को जितनी आवश्यकता है, उससे कहीं अधिक नेता को जनता की आवश्यकता है। जनता उससे जितना सीखेगी, नेता उसकी अपेक्षा जनता से कहीं अधिक सीख सकता है। जैसे ही कोई नेता जनता पर विश्वास किये बिना अपनी योजनाएँ बनाना शुरू करता है, वह अपनी विजय और उद्देश्य दोनों की सफलता को बर्बाद कर देता है।"

सेमिनरी से निकलकर, कार्यक्षेत्र में प्रवेश करना फूलों की शय्या नहीं, बल्कि बड़ी ही कंटकाकीर्ण राह थी। सोसो ने उसे अपनाया। अपने क्रान्तिकारी जीवन में जारशाही पुलिस के बचने के लिए सोसो को बहुत से नाम बदलने पड़े, कभी वह 'दाविद' थे, कभी 'कोबा' (कोंबी), कभी 'नियोराद्ज़े' तो कभी 'श्चिइकोफ', 'इवानोविच' और कभी 'स्तालिन'।

सोसो मजदूरों की हड़तालों में सबसे पहले तिफलिस में पड़े, जब सन 1898 में रेलवे मिस्त्रीखाने और कुछ दूसरे कारखानों के मजदूरों ने हड़ताल की। सोसो और लादो ने इन हड़तालों के संगठन में बहुत काम किया था। पहले-पहले सन 1899 में तिफलिस के मजदूरों ने मई दिवस को क्रान्तिकारी तरीके से मनाया। इस महोत्सव के उपलक्ष्य में पाँच सौ मजदूरों की एक सभा हुई, जिसमें सोसो ने भाषण दिया था। उसी साल के अन्त में तिफलिस में ट्रामवाले मजदूरों ने हड़ताल की, जिसमें उनकी विजय हुई।

विद्यार्थी जीवन ही में सोसो का पिता बिसारियोन मर चुका था। विधवा मजदूरिन माँ अपने क्रान्तिकारी बेटे की क्या सहायता कर सकती थी? इसलिए, सोसो को अपनी रोटी का भी कोई प्रबन्ध करना जरूरी था। काम ढूँढ़ने पर, उन्हें

तिफलिस की वेधशाला में नौकरी मिल गयी। सोसो के पीछे पुलिस इतनी हाथ धोकर पड़ी थी कि रोटी कमाने के अतिरिक्त, छिपने की भी कोई जगह चाहिए थी। वानो केच्खोवेली वेधशाला की नौकरी के बारे में लिखता है :

"दिसम्बर सन 1899 के अन्त में, वेधशाला में, एक वेधक की जगह खाली थी। लादो के कहने पर, सोसो ने उसके लिए अर्जी भेज दी। वेधशाला में सारी रात जागकर, निश्चित समय के अन्दर से बारीक यन्त्रों द्वारा वेध लेना पड़ता था। काम में बड़े धैर्य और दिमाग थकाने वाली एकाग्रता की आवश्यकता थी, इसीलिए वेधक की जगह सदा खाली हो जाया करती थी। यही कारण था, जो सेमिनरी छोड़ने के बाद पहले मैंने, फिर साथी स्तालिन ने, फिर म. दवितशविली और अन्त में वासो बेईजनिशविली ने वेधशाला में बहुत आसानी से काम पाया।"

बातूम में (सन 1901-02)

सोसो बहुत दिनों तक तिफलिस में नहीं रह सके। इसमें गिरफ्तार होने का डर ही एक कारण नहीं था, बातूम अब काला सागर का एक बहुत महत्वपूर्ण बन्दरगाह बन चुका था, जिसके कारण वहाँ मजदूरों की संख्या बहुत बढ़ गयी थी। 11 नवम्बर 1901 को तिफलिस के समाजवादी-क्रान्तिकारी संगठन की पहली कांफ्रेंस हुई। इसमें 25 प्रतिनिधि शामिल हुए थे। इसी में एक कमेटी का चुनाव किया गया, जिसके एक सदस्य सोसो भी बनाये गये। कमेटी ने नवम्बर के अन्त में ही सोसो को बातूम भेज दिया। बाकू और तिफलिस के बाद, काकेशस में यह तीसरा सबसे बड़ा मजदूरों का केन्द्र था। वहाँ पहुँचते ही, सोसो ने बड़े जोरों से अपना काम शुरू किया। सजग मजदूरों से सम्बन्ध स्थापित करने में देर नहीं लगी, और जल्दी ही उन्होंने वहाँ भी अपने अध्ययन-चक्र स्थापित कर लिए, जिनमें से कुछ में वह स्वयं भाग लेते थे। बातूम से तिफलिस नजदीक ही है, इसलिए सोसो का सम्बन्ध दोनों जगहों के संगठनों से था, इसे कहने की आवश्यकता नहीं। साथ ही, सोसो का ध्यान बाकू पर भी था। सोसो की प्रेरणा से लादो केच्खोवेली ने एक गैरकानूनी प्रेस कायम किया, और सितम्बर सन 1901 में तिफलिस से गुर्जी भाषा का प्रथम गैरकानूनी पत्र बरद्जोला (संघर्ष) क्रान्तिकारी समाजवादी-जनतन्त्रियों की ओर से निकलना शुरू हुआ। पत्र का लक्ष्य था कमकरों को जार, जमींदारों और पूँजीपतियों के खिलाफ संघर्ष करने के लिए तैयार करना। बरद्जोला सारे रूस के मजदूरों की अटूट एकता का पक्षपाती था। वह उत्पीड़ितों को समाजवाद के लिए लड़ने को प्रेरित करता था। बरद्जोला ने अपने पहले ही अंक में घोषित किया था : "गुर्जी समाजवादी जनतान्त्रिक आन्दोलन... सम्पूर्ण रूसी आन्दोलन के साथ हाथ में हाथ मिलाए

चलेगा, इसलिए वह अपने को रूसी समाजवादी जनतान्त्रिक दल के अधीन मानता है।" पत्र खुल्लमखुल्ला कमकरों की अधिनायकता का समर्थन करता था और जारशाही से डरने वाले 'कानूनी मार्क्सवादियों' और गैरकानूनी संगठनों से अलग रहने वाले 'अर्थशास्त्रियों के विचारों की धज्जियाँ उड़ाता था। वह कमकर वर्ग के खुलकर क्रान्तिकारी संघर्ष करने पर जोर देता था।

सेमिनरी से निकलने के साथ ही अब, पुलिस हाथ धोकर सोसो के पीछे पड़ गयी। सोसो उस समय बेर्दजेनिशविली के साथ जिस मकान में रहते थे, पुलिस ने 21 मार्च 1901 को उसकी तलाशी ली। सोसो उस वक्त वहाँ नहीं थे। बेर्दजेनिशविली ने इस तलाशी के बारे में लिखा है :

"पुलिस ने एकाएक कमरे के भीतर घुसकर पूछा कि मैं कौन हूँ और उस घर में दूसरा कौन रहता है। इसके बाद तलाशी शुरू की। उन्होंने पहले मेरी कोठरी को एक-एक करके ढूँढ़ मारा और मार्क्सवादी विचारधारा के कुछ कानूनी प्रकाशनों को मुहरबन्द कर, सूची बनाकर मुझसे उस पर हस्ताक्षर कराया। फिर, वह साथी स्तालिन (सोसो) की कोठरी में गये। वहाँ की एक-एक चीज को उन्होंने उलट पलट दिया, कोने-कोने को देख डाला, बिस्तरे को झाड़ा; - लेकिन कोई भी चीज उनके हाथ नहीं आयी। साथी स्तालिन की आदत थी कि पढ़कर समाप्त करते ही वह पुस्तक को लौटा देते, उसे कभी घर में नहीं रखते थे। जहाँ तक गैर-कानूनी पुस्तकों का सबन्ध था, वह उन्हें कुरा नदी के किनारे एक ईंटों के ढेर के भीतर छिपाकर रखते थे। इन बातों में साथी स्तालिन बहुत सावधान रहते थे। दूसरी कोठरी की तलाशी के बाद, पुलिसवाले एक सूची बनाकर खाली हाथ लौट गये।"

सोसो के बातूम जाने से पहले, कार्लो चूखेइद्जे और दूसरे कानूनी मार्क्सवादी बातूम में काम कर रहे थे। चूखेइद्जे ने सोसो को यह कहकर मना करने की कोशिश की कि बातूम में किसी काम का भी संगठन करना बिल्कुल असम्भव है। उसने बहुत चाहा कि सोसो बातूम से निराश होकर चले जायें, लेकिन जहाँ एक साधारण जनता और विशेषतः मजदूरों का सम्बन्ध था, सोसो उन्हें कहीं अधिक जानते थे। सोसो ने चौबा मुहल्ले में जाकर अपना डेरा डाला और बड़े जोर-शोर के साथ अपना काम शुरू किया। बातूम में मजदूरों की बहुत भारी संख्या थी, जो मन्ताशेफ सीदेरिन्दी, राथचाइल्ड और नोबेल की बड़ी-बड़ी तेल शोधनियों में काम करते थे। राजनीतिक क्लासों के अतिरिक्त सोसो ने गुप्त छापाखाने की भी व्यवस्था की। वह स्वयं पुस्तिकाएँ लिखते और उनके छापने में मजदूर उनकी सहायता करते। बातूम की खुफिया पुलिस ने उस वक्त रिपोर्ट दी थी कि वहाँ के कमकर सोसो जुगशविली का बड़ा सम्मान करते तथा उसे

अपना गुरु समझते हैं :

"समाजवादी जनतान्त्रिक आन्दोलन ने सन 1901 की शरद से बहुत प्रगति की है, जब से रूसी समाजवादी जनतान्त्रिक दल ने सासो जुगशविली नामक अपने सदस्य को यहाँ भेजा है। सोसो तिफलिस धर्मशास्त्रीय सेमिनरी के छठे दर्जे का विद्यार्थी था... जुगशविली की तत्परताओं के कारण, बातूम के सभी कारखानों में समाजवादी जनतान्त्रिक संगठन बनने लगे हैं।..."

31 दिसम्बर 1901 की रात को सोसो ने नव वर्ष के उत्सव के बहाने कमकरों के अध्ययन-चक्रों की एक कांफ्रेंस बुलायी, जिसमें करीब तीस आदमी शामिल हुए। इसी कांफ्रेंस में रूसी समाजवादी जनतान्त्रिक दल की बातूम कमेटी का संगठन हुआ। बातूम में स्थापित होने वाला यह पहला लेनिनवादी संगठन था। इस कांफ्रेंस के बारे में सोसो के सहकारी रोदियोन कोर्किया ने लिखा है :

"सोसो ने अपना भाषण समाप्त करते हुए कहा - 'देखो, प्रभात हो चुका है। जल्दी ही सूर्य उगेगा। सूर्य हमारे लिए प्रकाशित होगा। मेरी बातों पर विश्वास करो, साथियो!'"

बातूम की कमेटी ने सन 1902 के आरम्भ में वहाँ कई बड़ी हड़तालें करायीं। कारखानों की हड़ताल कमेटियों का संचालन सोसो स्वयं करते थे। जारशाही के अधिकारी इतने घबड़ा गये कि उन्होंने बातूम के लिए एक सैनिक राज्यपाल नियुक्त किया। राज्यपाल ने धमकाकर हड़ताल खत्म करने का प्रयत्न किया, लेकिन उसका कोई भी फल नहीं हुआ। 7 मार्च की रात में लोगों को भारी संख्या में गिरफ्तार किया, तो भी कोई फायदा नहीं हुआ। गिरफ्तारी के विरुद्ध 8 मार्च 1902 को सोसो ने मजदूरों का एक सामूहिक प्रदर्शन संगठित किया, जिसने गिरफ्तार साथियों को छोड़ने की माँग की। पुलिस ने इसका जवाब तीन सौ प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार करके दिया। अगले दिन सोसो ने एक और भी जबर्दस्त प्रदर्शन संगठित किया, जिसमें राथचाइलड और मन्ताशेफ के कारखाने के मजदूर ही नहीं, बल्कि जहाजघाट, रेलवे और दूसरे स्थानों के मजदूर भी शामिल हुए। प्रदर्शन बड़ी ही सुव्यवस्थित रीति से सड़कों पर घूमा। हाथों में लाल झण्डे लिये, लोग क्रान्तिकारी गीत गा रहे थे। वह उस बैरिक तक गये, जिसमें उनके गिरफ्तार साथी बन्द थे। छोड़ने की माँग करने पर, अबकी बार पुलिस ने गोली चलायी। पन्द्रह मजदूर वहीं मर गये और चौवन घायल हुए। उस दिन के प्रदर्शन क बारे में ई. दरख्वेलिद्जे नामक कमकर कहता है :

"साथी सोसो कमकरों के तूफानी समुद्र के बीच खड़े, स्वयं प्रदर्शन का संचालन कर रहे थे। कलन्दाद्जे नामक मजदूर का जब बाँह घायल हो गया, तो साथी सोसो ने उसे भीड़ से बाहर निकालकर स्वयं घर तक पहुँचाया।"

12 मार्च को, साथी सोसो ने 9 मार्च के दिन मारे गये मजदूर शहीदों की क्रान्तिकारी शमशान-यात्रा का प्रबन्ध किया। लोग पुलिस की गोलियों और खून से अभिषेक से भयभीत नहीं हुए और वे भारी संख्या में शहीदों की शमशान यात्रा में शामिल हुए। इस अवसर पर सोसो ने एक क्रान्तिकारी भावों से ओत-प्रोत पुस्तिका छपाकर बातूम और दूसरे नगरों में बँटवायी थी, जिसके कुछ वाक्य थे :

"हम सम्पूर्ण हृदय से तुम्हारा सम्मान करते हैं, जिन्होंने सत्य के लिए अपने प्राणों को अर्पण किया। जिस स्तन ने तुम्हें दूध पिलाया, हम उसकी पूरी इज्जत करते हैं! जिनकी पेशानी शहीदी मुकुट से शोभित हुई और जिन्होंने मृत्यु के अन्तिम घण्टे में अपने पीले और काँपते होंठों से संघर्ष के नारों को दोहराया, उनके लिए पूरा सम्मान! उस छाया (आत्मा) के लिए पूरा सम्मान जो हमारे कानों में आशा का सन्देश संचार करती हुई कहती है – हमारे खून का बदला लो!"

सोसो पहले मते रुसिद्जे के घर में रहे। वहाँ से कासिम स्मिरबा नामक एक किसान के घर चले गये। स्तालिन के इस समय के जीवन के बारे में निनुस्सा मोदेबाद्जे ने 'जारया वस्तोका' में प्रकाशित अपने लेख में कहा है :

"साथी स्तालिन मते रुसिद्जे के घर में रहते थे, जिसकी दो कोठरियों में दख्वेलिद्जे माई और कोत्सिया कन्देलाकी रहते थे। पास की एक छोटी कोठरी में साथी स्तालिन रहते थे। इस कोठरी में कोई खिड़की या रोशनदान नहीं था। इसका बाहर का दरवाजा हमेशा बन्द रहता, जिसके कारण किसी का भी ध्यान उधर नहीं जा सकता था। बाहरी और भीतरी दरवाजों के बीच की जगह में कपड़े लटकते थे, जिनके देखने से मालूम होता था कि द्वार में कोई आलमारी है।

"घर के दूसरे आधे भाग में इविलियान और देस्पिने श्फ्तवा रहते थे। सोसो की कोठरी में छापे का प्रेस रखा था, यहीं वह काम करते थे और यहीं उनके पैम्फलेट छपते थे। काफी रात बीतने पर, यहीं अग्रगामी कमकरों की बैठकें होतीं।"

"मेरी बहन देस्पिने अक्सर इन पुस्तिकाओं को विश्वसनीय साथियों के पास ले जाती थी। साथी स्तालिन स्त्रियों को क्रान्तिकारी कामों की ओर खींचते और उन्हें क्रान्ति के सम्बन्ध में बातें बतलाते थे।"

सोसो जब अपनी जगह बदलकर कासिम के घर चले गये, तो गुप्त छापाखाना अब वहीं काम करने लगा। यह अबखासी मुसलमान किसान बिल्कुल सीधा-सादा, अनपढ़ था, लेकिन सोसो के सम्पर्क ने उसके दिल में भी क्रान्ति की आग जला दी थी। वह अपने सोसो की लिखी और छापी पुस्तिकाओं को फलों की टोकरी में छिपाकर बाहर ले जाता। कासिम की तरह ही, सैकड़ों सीधे-सादे किसान और मजदूर सोसो के काम में सहायता कर रहे थे। भावी स्तालिन के साथ उनकी

इतनी आत्मीयता और विश्वास था कि वह उनके लिए सब कुछ करने को तैयार थे। बातूम के कमकर उन्हें 'कमकरों का गुरु' कहते थे। इन कमकरों में स्तालिन की अपनी जाति के गुर्जी ही नहीं थे, बल्कि कासिम की तरह के अबखासी, आजुबाईजानी, कुर्द, अर्मनी और रूसी भी थे। स्तालिन को इस प्रकार अपने क्रान्तिकारी जीवन के आरम्भ में ही अन्तरराष्ट्रीय मजदूरों और किसानों के घनिष्ठ सम्पर्क में आने का मौका मिला। राष्ट्रीय समस्याओं के अध्ययन का इससे अच्छा मौका और कहाँ मिल सकता था?

2. प्रथम गिरफ्तारी

5 अप्रैल 1902 को पार्टी के मुख्य सदस्यों की एक बैठक हो रही थी। उसी समय पुलिस ने छापा मार, सोसो को पकड़कर बातूम जेल में बन्द कर दिया, फिर कुछ समय बाद कुतैस के जेल में भेज दिया। लेकिन, जेल में बन्द करके सोसो को अपने क्रान्तिकारी कामों से नहीं रोका जा सकता था। आखिर सभी जगह मनुष्य रहते थे, जिनमें अधिकांश शोषित और पीड़ित ही थे, जिनके लिए ही सोसो ने अपना जीवन अर्पण किया था और जिनके प्रति उनके हृदय में अगाध प्रेम था। जेल के इन आदमियों द्वारा सोसो ने अपने बाहर के साथियों से सम्बन्ध स्थापित किया। साथ ही, जेल में बन्द राजनीतिक बन्दियों में तत्परता से काम करना शुरू किया। उन्हें मार्क्स, एंगेल्स और लेनिन के विचारों को समझने में मदद दी। जारशाही ने सोसो जुगशविली पर बातूम के मजदूरों के क्रान्तिकारी आन्दोलन का मुख्य नेता और शिक्षक, एवं तिफलिस समाजवादी जनतान्त्रिक संगठन का सदस्य होने के अपराध लगाये थे। फरवरी, सन 1903 में काकेशीय समाजवादी जनतान्त्रिक संगठन की प्रथम कांग्रेस हुई, जिसमें काकेशीय फेडरल कमेटी का संगठन हुआ था। सोसो यद्यपि 5 अप्रैल 1902 से ही जेल में बन्द थे, लेकिन उनकी अनुपस्थिति में ही उन्हें कमेटी का सदस्य चुना गया। प्रायः सवा वर्ष जेल में बन्द रखने के बाद, 5 जुलाई 1903 को परम महाभट्टारक (जार) का निर्णय घोषित करते हुए, सोसो को तीन वर्ष के लिए पुलिस की खुली देख-रेख में पूर्वी साईबेरिया में निर्वासित करने की सजा दी गयी। साइबेरिया भेजने से पहले ही, नवम्बर सन 1903 के अन्त में सोसो को बातूम के जेल में लाया गया, जहाँ से उन्हें इर्कुत्स्क प्रदेश के बलगान्स्क जिले के नोवयथाउदा नामक गाँव में भेज दिया गया।

इस प्रथम निर्वासन के समय तक सोसो एक प्रमुख संगठनकर्ता और जनता के बड़े नेता हो चुके थे। काकेशस की भूमि में उनका नाम सभी जगह बड़े सम्मान के साथ लिया जाने लगा था। यही नहीं, सन 1903 तक, अब रूस के

क्रान्तिकारी भी इस गुर्जी तरुण को सम्मान की दृष्टि से देखने लगे थे। सोसो आतंकवाद को माननेवाले नहीं थे, मार्क्सवाद ने उन्हें सिखाया था कि क्रान्ति के लिए काम आने वाली सारी शक्तियों का स्रोत जनता ही है। उसी जनता को जगाना सबसे जरूरी काम है, जिसके लिए छापेखाने की सबसे अधिक आवश्यकता थी। सोसो ने अपने मित्रों – लादो केच्खोवेली, साशा चुलुकिद्‌जे, मिखा च्वाकया और दूसरे साथियों से मिलकर, गुप्त प्रेस स्थापित करने की व्यवस्था की थी, जिनके बारे में हम आगे देखेंगे कि वह कुछ ही वर्षों में कितना विशाल रूप ले चुका था।

इसी प्रथम निर्वासन के समय से सोसो का लेनिन से पत्र व्यवहार होने लगा। 28 जनवरी 1904 को क्रैमलिन सैनिक स्कूल की लेनिन संस्मरण सभा में बोलते हुए, स्तालिन ने इसके बारे में कहा था :

“पहले-पहल सन 1903 में मैंने लेनिन का परिचय प्राप्त किया। यह सच है कि वह परिचय अभी साक्षात्कार के रूप में नहीं था। तो भी पत्र व्यवहार द्वारा यह परिचय लगातार जारी रहा। उन्होंने मेरे हृदय पर एक ऐसी अमिट छाप छोड़ी, जो मेरे पार्टी के सारे कामों पर अपना प्रभाव डाले बिना नहीं रही। उस समय मैं साइबेरिया में निर्वासित था। लेनिन के क्रान्तिकारी कामों के बारे में 1890 वाली दशाब्दी के बाद, विशेषकर 1901 से जब कि ‘इस्का’ (चिनगारी) का प्रकाशन शुरू हुआ, जो बातें मुझे मालूम हुईं, उन्होंने मेरे मन में पक्की तरह से बैठा दिया कि लेनिन एक असाधारण प्रतिभा के धनी पुरुष हैं। मैं उन्हें दल के केवल एक नेता ही नहीं, बल्कि उसका वास्तविक संस्थापक समझता था; क्योंकि केवल वहीं ऐसे पुरुष थे जो हमारी पार्टी की अत्यावश्यक जरूरतों और आन्तरिक तत्वों को समझते थे। जब मैं पार्टी के दूसरे नेताओं से उनकी तुलना करता, तो मुझे सदा मालूम होता कि प्लेखानोफ, मार्तोव, अक्सेलरोद और दूसरे नेता उनके कन्धों तक भी नहीं पहुँचते थे। लेनिन बहुत से नेताओ में से केवल एक नहीं थे, बल्कि वह सर्वोच्च नेता, एक शाहबाज थे; जो संघर्ष में भय क्या चीज है इसे नहीं जानते थे। उन्होंने बड़ी हिम्मत और निर्भीकता के साथ, क्रान्तिकारी आन्दोलन के अपरिचित मार्ग से पार्टी को आगे बढ़ाया। यह प्रभाव मेरे ऊपर इतना जबर्दस्त था कि मैं इसके बारे में उस समय विदेश में निर्वासित अपने एक घनिष्ठ मित्र को लिखे बिना नहीं रहा; और उससे इसके बारे में पूछा भी। कुछ समय बाद सन 1903 के अन्त में, जब मैं साइबेरिया में निर्वासित हो चुका था, मुझे अपने मित्र का एक बड़ा ही उत्साहवर्धक पत्र मिला, जिसके साथ एक सीधा-सादा, लेकिन बहुत ही भावपूर्ण पत्र लेनिन का भी था, जिससे मालूम हुआ कि मेरे मित्र ने मेरे पत्र को उन्हें दिखा दिया था। लेनिन का पत्र अपेक्षाकृत

बहुत छोटा था। इस सीधे-सादे, किन्तु निर्भीक पत्र ने लेनिन के बारे में मेरी राय को और भी दृढ़ कर दिया कि वह हमारी पार्टी के शाहबाज हैं। मैं इसके लिए अपने को क्षमा नहीं कर सकता, कि मैंने पुराने गुप्त कार्यकर्ताओं की आदत के अनुसार, और बहुत से पत्रों की तरह लेनिन के इस पत्र को भी आग में डाल दिया। लेनिन से मेरा परिचय उसी समय से शुरू होता है।"

नोवयाउदा में सोसो 27 नवम्बर 1903 को पहुँचे और 1804 की वसन्त तक, साइबेरिया का यही ग्राम उनका निवास स्थान रहा। क्रान्तिकारियों को साइबेरिया के इन सुदूरस्थ स्थानों में भेजकर जारशाही चाहती थी कि क्रान्ति के कीटाणु जनता के भीतर न पड़ने पायें, लेकिन उसमें उसे सफलता कहाँ मिल सकती थी, जब कि इन कीटाणुओं से वातावरण ही भरा हुआ था और जोर जारशाही के अपने शोषण और उत्पीड़न से पैदा होते थे। जारशाही के दुर्भाग्य से, सोसो का यह निर्वासित जीवन डेढ़ महीने से भी कम का रहा। 5 जनवरी 1904 को एक दिन आँख बचाकर, वह गुर्जी तरुण नोवयाउदा से गायब हो, छिपते-बचते अपने केन्द्र बातूम में पहुँच गया। अपने संस्मरण में नतालिया किरतार्द्जे बतलाती है कि स्तालिन उसके घर कैसे पहुँचे :

"सन 1904 के आरम्भिक भाग में, एक रात मेरे दरवाजे पर खट-खट की आवाज हुई। आधी रात बीत चुकी थी। मैंने पूछा : 'कौन है?'

"'मैं हूँ, भीतर आने दो।'

"'तुम कौन हो?'

"'मैं हूँ, सोसो।'

"मेरे लिए यह विश्वास करने वाली बात नहीं थी; और मैंने तब तक दरवाजा नहीं खोला, जब तक कि उन्होंने अपना संकेत-वाक्य – 'हजार बाद दीर्घजीवी' – नहीं बात दिया। मैंने पूछा : 'तुम बातूम में कैसे चले आये?' सोसो ने जवाब दिया : 'मैं निकल भागा' इसके बाद ही वह तिफलिस के लिए रवाना हो गये, जहाँ से उन्होंने कई बाद हमें चिट्ठियाँ लिखीं। साथी सोसो उस समय काकेशीय फेडरल कमेटी के कामों का संचालन कर रहे थे। सन 1904 की वसन्त में, एक बार फिर सोसो बातूम आये। अबकी बार उन्होंने बर्तजखाना में इलिको शरशिद्जे के घर में मेंशेविकों के साथ कई शास्त्रार्थ किये।"

अब सोसो को नाम 'कोबा' था। साथी कोबा का न कोई घर था, न परिवार। उनका सारा समय मजदूरों के संगठन और क्रान्ति के काम में बीतता था। उनके पास एक भी पैसा नहीं था। निनुवा और दूसरे साथी जैसे चार वर्ष पहले उनके लिए भोजन आदि का प्रबन्ध करते थे, उनकी वही हालत अब भी थी। जलावतन से भागकर आये आदमी के पीछे जारशाही पुलिस का पड़ा रहना स्वाभाविक था

इसलिए साथी कोबा को बहुत सावधानी से रहने की जरूरत थी। सभाओं में वह एकाएक पहुँचते, चुपचाप कहीं बैठ जाते और सिर्फ बोलने के समय ही प्रकट होते। दो-तीन साथी हमेशा उनके साथ रहकर दरवाजे पर रखवाली किया करते। कोबा लम्बे भाषण कैसे दे सकते थे? उनका काम था भाषण दिया और लुप्त हुए। कोबा को बराबर एक जगह से दूसरी जगह घूमते रहना पड़ता था। क्योंकि उनके लिए अपने को छिपाना नहीं, बल्कि असली काम प्रचार और संगठन था। रेलवे लाइन सन 1883 में ही काकेशस पार करके, बाकू से तिफलिस और बातूम जा चुकी थी। सन 1900 में बाकू का तेल पाइप द्वारा बातूम पहुँचने लगा था, जिसके कारण वहाँ कई बड़ी-बड़ी तेल-शोधनियाँ स्थापित हुई थीं, जहाँ से जहाजों द्वारा तेल काला सागर से दरे दानियाल होते हुए दुनिया के दूसरे देशों में जाता था। कोबा को यात्रा में ट्रेन का भी सहारा लेना पड़ता, लेकिन उन्हें इस बात का बहुत ही ध्यान रखना पड़ता कि खुफिया पुलिस वाले पीछा न कर सकें। कोबा की सावधानी का एक उदाहरण लीजिये : एक गुप्त बैठक हो रही थी। स्थान नाट्यशाला का एक ऐसा भाग चुना गया था कि यदि पुलिस इमारत को घेर ले, तो एक दरवाजा तोड़कर प्रेक्षणशाला के लोगों में मिलकर अपने को छिपाया जा सकता था। एक बार वह विशाल पपोक पुस्तकालय में गये। वहाँ रूसी लेखक बेलिन्सकी की पुस्तक माँगकर उसे ध्यान से पढ़ने लगे, लेकिन साथ ही वह हमेशा कनखियों से पुस्तकालय के एक सहायक की ओर देखते रहे, जिसको उन्होंने बिना दूसरे के देखे-जाने दो झूठे पासपोर्ट दे दिये थे। यह पासपोर्ट दो साथियों को देश से बारह निकालने के लिए बनाये गये थे, जिन्हें पुलिस थोड़ी ही देर बाद गिरफ्तार करनेवाली थी। पपोफ एक राजवादी पुस्तकाध्यक्ष था, इसीलिए स्तुरोना रुइकोफ, तोंदरिया, एनोकिद्जे जैस क्रान्तिकारी वहाँ आपस में मिला करते थे।

पुलिस बड़े ध्यान से कोबा का हुलिया लिये फिरती थी : "जुगशविली योसेफ बिसारियोनोविच, मोआ-तगड़ा...। गम्भीर स्वर... बायें कान पर छोटा-सा चिन्ह... सिर की आकृति साधारण... देखने में एक साधारण-सा आदमी" बाकू की ओखराना (पुलिस) खुफिया-विभाग के मुखिया को रिपोर्ट देती थी : "किसान योसेफ जुगशविली यहाँ की (गुप्त) सभाओं का प्रधान संचालन है, जिनका उद्देश्य है - एक गुप्त छापाखाना स्थापित करना।" दूसरे समय एक खुफिया पुलिस का आदमी खबर देता है कि इस समय जेल भेजा जानेवाला केसोम नीयेराद्जे नाम वाला आदमी और कोई नहीं, किसान जुगशविली ही है।

किसान जुगशविली या कोबा गुप्त प्रेस को पहले भी संगठित कर चुके थे; क्योंकि वह जानते थे कि सबसे बड़ा हथियार ज्ञान का प्रसार ही है - राजनीतिक

ज्ञान, वर्ग चेतना और वर्ग संघर्ष के ज्ञान का प्रसार ही है। इसलिए, जिस तरह आतंकवादियों का ध्यान बमों और रिवाल्वरों की तरफ जाता, उसी तरह कोबा का ध्यान प्रेस की तरफ था। अपने साथियों से मिलकर, उन्होंने अरम्बार में एक गुप्त प्रेस संगठित किया, जिससे बहुत-सी पुस्तिकाएँ और गैरकानूनी पत्र-पत्रिकाएँ निकलती थीं। इस प्रेस के बारे में हम आगे लिखनेवाले हैं।

कोबा और उसके बोल्शेविक साथी काकेशस के नगरों और कस्बों में बराबर घूमा करते थे। यह वह समय था जब कि कोबा शास्त्रार्थ के मैदान में अपने प्रतिद्वन्द्वी मेंशेविकों, समाजवादी क्रान्तिकारियों, और क्रोपात्किन के अनुयायी अराजकतावादियों से बराबर लोहा लेते रहते थे। तरुण कोबा की प्रतिभा का चमत्कार इस समय इन बहस की सभाओं में अच्छी तरह दिखायी पड़ता था। कभी वह तिफलिस में जाते, कभी बाकू में, कभी कुतैस, गोरी, चियातुरी खोनी, बोर्चालो, बातूम या अन्य जगहों में। इन जगहों में जाकर कोबा ने शास्त्रार्थ ही नहीं किये बल्कि पार्टी के संगठनों को बनाकर मजबूत करना भी उनका काम था। चियातुरी में उन्होंने एक बोल्शेविक इलाका कमेटी स्थापित की। उसी की प्रेरणा से कुतैस में भी भूतपूर्व कुतैस प्रदेश के लिए पार्टी की कमेटी बनी। खोनी में मेंशेविकों के साथ जो शास्त्रार्थ हुआ था, उसके बाद ही वहाँ भी एक बोल्शेविक कमेटी स्थापित हो गयी। इन शास्त्रार्थों में तर्कों और युक्तियों के द्वारा क्रान्तिकारी मार्क्सवाद के पक्ष का समर्थन करते हुए, कोबा ने श्रोताओं को मुग्ध कर दिया था। सन 1905 में दो हजार कमकरों की सभा में अराजकतावादी गोगेलिया, चेरेतेली और दूसरों से एक बड़ा शास्त्रार्थ हुआ। उसके एक प्रत्यक्षदर्शी ने इस सभा के बारे में बतलाया है :

"सभा आरम्भ हुई। कोबा पहले बोले। इस पर बहस शुरू हुई। विरोधियों ने बहुत जोर लगाकर उनके पक्ष का खण्डन किया। साथी कोबा ने जरा भी घबराहट या उतावलापन न दिखलाते हुए, विरोधियों के एक-एक तर्क के चिथड़े-चिथड़े उड़ा दिये। इस प्रकार यहाँ भी बोल्शेविक विजयी हुए। मजदूर एक राय से साथी कोबा के समर्थक हो गये।"

शास्त्रार्थों के अतिरिक्त, कमकरों में जागृति पैदा करने के लिए उनके कष्टों को दूर करने का रास्ता हड़ताल का था। दिसम्बर 1904 में बाकू तेल-क्षेत्र में एक जबर्दस्त हड़ताल हुई, जिसके लिए कहा जा सकता है कि अगले साल होने वाले रूसी क्रान्ति की वह पूर्व-सूचना थी। हड़ताल में बाकू के मजदूरों की जीत हुई और रूसी 88 कमकर-आन्दोलन के इतिहास में पहली बार यहाँ मालिकों ने मजदूरों के सामूहिक बातचीत के अधिकार को स्वीकार किया। इसका फल यह हुआ कि मेंशेविकों, समाजवादी क्रान्तिकारी, अराजकतावादियों, कादेतों और

दशनकों की जय-जय होने लगी।

कोबा इस समय प्रतिवादी-भयंकर के रूप में शास्त्रार्थ-सभाओं में दिखायी पड़ते थे। सुधारवादी राजनीतिक दलों के मंतव्यों का भण्डाफोड़ करने के लिए इससे अच्छा साधन और क्या हो सकता था। तिफलिस बूट फैक्ट्री में भी कोबा ने शास्त्रार्थ किया था। यह वही फैक्टरी थी, जिसमें उनका पिता जूते बनाया करता था। नोवा योरदानिया, ई, चेरेतली, न, रामेशविली जैसे मेंशेविक नेताओं को तरुण कोबा ने शास्त्रार्थों में परास्त कर दिया। बातूम के एक बड़े शास्त्रार्थ में वह न. रामेशविली और र. अर्सेनिद्जे आदि मेंशेविक नेताओं के सामने बोले थे। पेरेविस्सी और शुकुर्ती आदि की मैंगानीज की खानों में भी जाकर कोबा ने शास्त्रार्थ किया। उनके विरोधी मेंशेविक नेता न. लोर्दकीपानिद्जे ग. खोमेरिकी, क. नीनेद्जे, ज. गुरुली आदि थे। कुतेसे के शास्त्रार्थ ने वहाँ मेंशेविकों का प्रभाव कम किया। खोनी जिले के खोनी और कुखी आदि स्थानों में कोबा, मिला च्खराकया, फ. मखाद्जे आदि ने मेंशेविकों के साथ शास्त्रार्थ जीता। पोती में भी साथी कोबा ने सफलतापूर्वक शास्त्रार्थ करके, वहाँ बोल्शेविक संगठन स्थापित किया। खिसियाकर योरदारनिया, न. रामेशविली आदि मेंशेविक नेताओं ने बोल्शेविकों पर झूठे लाँछन लगाने के नाम देकर बदनाम करने लगे।

भाषण-शैली - साथी कोबा के बोलने का ढंग बड़ा सरल और आकर्षक था। कोबा जानते थे कि वह उन मजदूरों के सामने हैं, जो क्रान्ति के सबसे बड़े सैनिक हैं। इसलिए, उनका सारा ध्यान इस ओर रहता था कि मार्क्सवाद के क्रान्तिकारी विचारों को किस तरह उनके हृदयों में बैठाया जाये। एक भाषण में वह इस सिद्धान्त को समझाने लगे कि जीवन की भौतिक स्थितियों के बदल जाने पर भी विचारधाराएँ उसी गति से नहीं बदलती। इसे उन्होंने इस तरह पेश किया-जैसे एक मोची को ले लो (यह मोची शायद कोबा का अपना पिता बिसारियोन की उनके ध्यान में रहा होगा)। वह पहले अपनी छोटी-सी झोपड़ी में काम करता था। उसके अपने छोटे-छोटे हथियार थे और किसी से कुछ लेना-देना नहीं था। लेकिन, एक बड़ा आदमी अदिलखानोफ जूते के बाजार में आया। वह सस्ते जूते बेचने लगा। मोची बेचारा उसके सामने कैसे ठहर सकता था? उसने अपनी झोपड़ी और दुकान छोड़ी और वह अदिलखानोफ की फैक्ट्री में भर्ती हो गया। भर्ती होते वक्त, उसको ख़्याल नहीं था कि मैं हमेशा के लिए मजदूरी करनेवाला मोची बन जाऊँगा। उसका ध्यान था कि कौड़ी-कौड़ी करके कुछ पैसा जमा कर मैं अपना एक छोटा-सा कारखाना खोल लूँगा। मोची कारखाने में भर्ती होकर, अब सर्वहारा हो चुका है। इस जीवन से बचने का उसके पास कोई उपाय नहीं है, लेकिन अब भी वह अपने सर्वहारापन को स्वीकार करने के

लिए तैयार नहीं है औ स्वतन्त्र कारीगर होने का स्वप्न देख रहा है। स्वतन्त्र करीगरी या असर्वहारापन उसके लिए अब बीती कहानी है, लेकिन तब भी वह उसी मनोभाव को पकड़े हुए है। अपनी नयी सामाजिक स्थिति को स्वीकार करने के लिए वह तैयार नहीं है। इस तरह साफ है कि मनुष्य के जीवन की बाहरी स्थितियाँ पहले ही बदल जाती हैं, लेकिन उसके मनोभावों के बदलने में देर लगती है। इसे बतलाते हुए, साथी कोबा ने अपने श्रोताओं के मन में यह भी बैठा दिया कि भौतिक स्थिति जब पहले ही बदल जाती है, तो इसी बदली हुई स्थिति के सहारे हमें अपने मनोभावों को बदलकर आगे बढ़ना चाहिए। हवाई विचारधाराएँ कोई क्रान्ति नहीं कर सकतीं, न उनसे कोई सफलता प्राप्त हो सकती है। आर्थिक स्थितियों पर निर्भर विचारधारा ही सफलता की ओर ले जाती है। इसके साथ ही, साथी कोबा ने यह भी समझाया कि मनुष्य के मनोभाव, आचार-विचार या आदतें उसकी बाहरी भौतिक स्थिति से ही पैदा होती हैं। अगर कानूनी और राजनीतिक रूप अपनी बाहरी आर्थिक या भौतिक स्थितियों के प्रतिकूल है। तो इसका प्रभाव लोगों के सदाचार, आदतों आदि पर भी पड़े बिना नहीं रहेगा। भौतिक स्थिति या आर्थिक स्थिति ने जो अवसर दिया है, उससे लाभ उठाकर हमें लोगों के आर्थिक सम्बन्धों में मौलिक परिवर्तन करने का प्रयत्न करना चाहिए, और मोची को बतलाना चाहिए कि तुम्हारी बीती हुई स्थिति फिर नहीं लौट सकती, अब तुम सर्वहारा हो; अब तो सर्वहारों की विजय अर्थात पूँजीपतियों की समाप्ति पर ही तुम्हारे लिए भले दिनों की आशा है।

एक भाषण में कोबा अर्थशास्त्रीय भौतिकवाद की आलोचना कर रहे थे। अपने सिद्धान्त के लिए मार्क्स की दुहाई देनेवाले, इस फूहड़ भौतिकवाद के समर्थकों से कोबा ने पूछा : "किस ग्रन्थ में, कौन से मार्क्स ने कहा है कि आदमी की विचारधारा उस रोटी पर निर्भर है जिसे वह खाता है?" उन्होंने विरोधियों को चुनौती दी कि अपनी बातों के समर्थन में मार्क्स की किताबों में से एक भी वाक्य निकाल कर दिखलायें, "यह सच है कि मार्क्स कहते थे कि मनुष्य के मनोभाव – उसकी विचारधारा की निर्णायक उसकी आर्थिक स्थितियाँ हैं, लेकिन उन्होंने यह कहाँ कहा है कि आर्थिक स्थितियाँ और रोटी एक ही चीज है? क्या यह स्पष्ट नहीं है कि रोटी जैसा एक शरीरोपयोगी पदार्थ समाज-शास्त्रीय पदार्थ से बिल्कुल भिन्न है?"

उस वक्त का उनका फरारी जीवन ही इसका कारण नहीं था, बल्कि वैसे भी वह छोटे-छोटे भाषण दिया करते थे, लेकिन वह होता था गागर में सागर। ओरखेलशाबिली कहता है – **स्लालिन के भाषणों में पानी की एक बूँद भी नहीं रहती?** पानी की बूँद से यहाँ मतलब बेकार की बातों से है। वह उतने

ही शब्द बोलते थे जिनकी आवश्यकता श्रोताओं के मन में किसी बात के बैठाने के लिए जरूरी होती थी। भाषण में वक्तृत्व कला के लिए आवश्यक स्वर का आरोह-अवरोह और नाटकीय ढंग लेनिन की तरह ही कोबा में भी नहीं था। उनका ध्यान अपने सारे तर्कों और युक्तियों से उसी एक बात के समझाने की ओर होता, जिस पर कि वह उस समय बोलते थे, मानो वह सुन्दर इमारत की एकएक ईंटें चुनकर अपने तर्कों औ युक्तियों द्वारा रख रहे हैं। सीधी-सादी भाषा अपनी एक अलग ही कला रखती है। इस प्रकार हम नहीं कह सकते कि कोबा अर्थात भावी स्तालिन के भाषण में कला का अभाव था।

कोबा को मालूम हो रहा था कि सशस्त्र संघर्ष का समय दूर नहीं है। वह आतंकवाद के पक्षपाती नहीं थे कि दो-चार तरुणों को बम और रिवाल्वर चलाने के लिए तैयार करके सफलता की आशा रखते। उन्हें कमकरों को हथियारबन्द कर, संघर्ष के लिए तैयार करना था। उन्होंने इसके लिए काकेशीय वीर कामो पेत्रोस्यान की सहायता से हथियार इकट्ठे करने का काम शुरू किया। तृतीय पार्टी कांग्रेस इसी साल, सन 1904 में हुई थी, जिसमें साथी कोबा नहीं जा सके और काकेशीय बोल्शेविकों की ओर से मिखा चूखाकया प्रतिनिधि बनकर गये। काकेशस की घटनाओं पर कांग्रेस ने यह विशेष प्रस्ताव पास किया था :

"जबकि,

"1. काकेशस की आज की विशेष सामाजिक और राजनीतिक स्थितियाँ इसके अनुकूल हैं कि वहाँ हमारी पार्टी के अत्यन्त लड़ाकू संगठन कायम किये जा सकें?

"2. काकेशस के नगर और देहात - दोनों के अधिकांश लोगों में क्रान्तिकारी आन्दोलन उस अवस्था तक पहुँच गया है, जब कि स्वेच्छाचारिता के विरुद्ध सारे देश में विद्रोह किया जा सके;

"3. निरंकुश सरकार अपनी सेनाओं और तोपखानों को इसीलिए गुरिया में भेज रही है कि विद्रोह के सभी महत्वपूर्ण केन्द्रों को बड़ी निष्ठुरतापूर्वक दबा दिया जाये :

"4. अगर निरंकुश शासन काकेशस के लोगों के विद्रोह को दबाने में सफल हुआ, जिसमें वहाँ की गैर-जातियों के अधिक होने से सुभीता भी है, तो यह रूस में विद्रोह की सफलता के लिए आम तौर से हानिकारक होगा।

"इसलिए, रूसी समाजवादी जनतान्त्रिक दल की तृतीय कांग्रेस रूस के वर्ग चेतना वाले सर्वहाराओं के नाम से बोलते हुए काकेशस के बहादुर सर्वहाराओं और किसानों के पास अपना हार्दिक अभिन्दन भेजती है, और केन्द्रीय समिति तथा पार्टी की स्थानीय समितियों को हिदायत कहती है कि काकेशस की स्थिति के

सम्बन्ध की सूचनाएँ पुस्तिकाओं, सभाओं, कमकरों की बैठकों और सामूहिक वाद-विवाद आदि के द्वारा बड़े व्यापक पैमाने पर सब जगह फैलायें, और अपने पास जितने भी साधन हैं, उनसे ठीक समय पर काकेशस की मदद करें।"

इसी समय काकेशस में आन्दोलन को और आगे बढ़ाने के लिए कोबा ने 'पोलेतारियातिम बरद्ज़ोला' (सर्वहारा-संघर्ष) की स्थापना की, जो आबलाबार के गुप्त प्रेस से निकलता था। लेनिन द्वारा सम्पादित 'प्रोलेतारी' (सर्वहारा) के भी कितने ही लेख इसमें उद्धृत किये जाते थे।

'बरद्ज़ोला' का सातवाँ अंक 1 सितम्बर 1904 को निकला था, जिसमें साथी कोबा ने सबसे पहले जातियों की समस्या का प्रश्न छेड़ा था। लेख का नाम था – 'जातीय प्रश्न के बारे में समाजवादी जनतान्त्रिक दृष्टिकोण'। इस समस्या को समय-समय पर और भी विकसित करके, अन्त में व्यावहारिक रूप से उसका हल निकालने का काम कोबा ने ही स्तालिन के रूप में किया। अपने इस लेख में कोबा ने मध्यवर्ग के राष्ट्रीयतावादी तथा मेंशेविकों के इस विचार का खण्डन किया कि मजदूरों के संगठन जातीयता पर निर्भर होने चाहिए और ऊपर से उनका फैडरेशन (संघ) भर होना चाहिए। कोबा ने कहा कि सर्वहारा की विजय के लिए, जातीयता का कोई भी ख़याल किये बिना सभी कमकरों की एकता आवश्यक है, और जहाँ तक कमकरों के संगठन का सवाल है – रूसी, गुर्जी, अर्मनी, पोल यहूदी आदि का कोई भी भेद न रख, सबका एक ही संगठन होना चाहिए। इसके बिना, सारे रूप में सर्वहाराओं की जीत नहीं हो सकती। काकेशस इस विचार की परीक्षा का सबसे उपयुक्त स्थान था, जहाँ बाकू तिफलिस, बातूम आदि में सभी जातियों के कमकर इकट्ठा काम करते थे। लेकिन साथ ही, सन 1905 में कोबा ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि जातियों को आत्म-निर्णय का अधिकार होना चाहिए। गुर्जी पत्र 'सकरत्वेलो' में जो वाद-विवाद चल रहा था, उसमें भाग लेते हुए कोबा ने अपने ये विचार रखे थे।

कोबा के सम्पादकत्व में निकलनेवाला 'प्रोलेतारियातिस बरद्ज़ोला' उस समय लेनिन के 'प्रोलेतारी' के बाद बोल्शेविकों का सबसे प्रभावशाली पत्र था।

इसी गुप्त जीवन में 4 जनवरी 1904 को कोबा की शादी एकातेरिना स्वानिद्ज नाम एक गुर्जी तरुणी से हुई, जिससे सन 1904 को याकोब नामक पुत्र हुआ। क्रान्तिकारी कोबा को परिवार सँभालने की फुर्सत कहाँ थी? बीवी कुछ समय बाद तपेदिक से मर गयी और याकोब के पालन-पोषण का भार नाना-नानी ने अपने ऊपर ले लिया।

सन 1905 में, कोबा का घनिष्ठ मित्र सहकारी शाशा चुलुकिद्जे 29 वर्ष की छोटी उम्र में मर गया। कोबा ने अपने मृत साथी की अन्त्येष्ठि-क्रिया के समय

बड़ा मार्मिक व्याख्यान दिया था। शाशा को खोनी में दफनाया गया।

3. विद्रोह की तैयारी

सन 1904 से 1907 तक, काकेशस में बोल्शेविक आन्दोलन का संचालन कोबा के हाथ में था। इस सारे समय में उन्होंने जहाँ कमकरों में वर्ग चेतना फैलाने, उनके संगठन को मजबूत करके उनकी रोज-रोज की शिकायतों के लिए लड़ने का प्रबन्ध किया था, वहाँ अब सशस्त्र विद्रोह के लिए तैयारी करना भी जरूरी समझा। काकेशस की अवस्था के बारे में लेनिन ले उसी समय लिखा था : "इस बारे में हम (रूसी) काकेशस, पोलैण्ड और बाल्तिक प्रदेशों से पीछे रह गये हैं। यही वह केन्द्र है, जहाँ हमारा आन्दोलन पुराने आतंकवादी ढंग से बहुत ही आगे बढ़ चुका है, जहाँ पर विद्रोह की सबसे अच्छी तैयारी हुई है, जहाँ सर्वहारा संघर्ष का सामूहिक रूप अत्यन्त सपष्ट और शक्तिशाली दिखायी पड़ता है।" – 'बरद्जोला' के 15 जुलाई 1905 वाले अंक में 'हथियारबन्द विद्रोह और हमारे दाँव-पेंच' के नाम से एक लेख प्रकाशित हुआ, जिसमें यह घोषित किया गया था कि क्रान्ति दूर-दूर तक फैलती जा रही थी। और वह समय दूर नहीं जब कि सारे रूस में वह एक ऐसे विशाल तूफान के तौर पर फूट पड़ेगी और सामने जारशाही स्वेच्छाचारिता की सारी गन्दगी बह जायेगी। 'बरद्जोला' ने इस बात पर भी जोर दिया कि प्रत्येक जिले में विद्रोह की एक योजना बननी चाहिए और शत्रु के रक्षा-कवच के उस सबसे निर्बल स्थान का पता लगाना चाहिए, जहाँ से विद्रोह आरम्भ करना है। पहले से ही उस स्थान का निश्चय कर लेना चाहिए। अपनी सेनाओं को ठीक अनुपात से सारे जिले में बाँटकर रखना चाहिए और जिले की भूमि के नक्शे का सैनिक दृष्टि से अध्ययन करना चाहिए। ऐसा होने पर ही विजय निश्चित हो सकती है। 'बरद्जोला' के प्रथम अंक में ही इस तरह का लेख निकला था। उस समय काकेशस के मेंशेविक 'सोत्सियल-देमोक्रात' (समाजवादी जनतन्त्री) के नाम से अपना एक पत्र निकालते थे। 'बरद्जोला' उससे लोहा लेकर मेंशेविकों के विचारों की धज्जियाँ उड़ाता था।

अभी रूस में प्रथम क्रान्ति का सूत्रपात नहीं हुआ था। इसी समय 5 अक्टूबर 1905 के अंक में 'बरद्जोला' में 'प्रतिगामिता फैल रही है' के नाम से एक लेख निकला, जिसमें बतलाया गया कि जनता की क्रान्ति को दबा देने के लिए जारशाही सरकार हर तरह के प्रयत्न कर रही है। सर्वहारा के लिए गोलियाँ, किसानों के लिए झूठे वादे, बड़े बुर्जुवाओं को अधिकार – ये वे हथियार हैं, जिनमें कि प्रतिगामिता अपने को हथियारबन्द कर रही है।

जार ने 17 अक्टूबर 1905 को जो सुधारों की घोषणा प्रकाशित की थी, उसे

मेंशेविक एक भारी विजय समझते थे। कोबा ने तिफलिस में नद्जलादेवी की सभा में उसका मुँहतोड़ जवाब दिया था। सभा में उपस्थित एक लेखक ने सन 1929 के 'कम्युनिस्ट' में, अपने संस्मरण के तौर पर इसका वर्णन किया है :

"साथी कोबा भाषण-मंच पर आये और उन्होंने लोगों से कहा - 'तुम्हारी एक बुरी आदत है, जिसे मैं तुम्हारे सामने साफ-साफ कहना चाहता हूँ। चाहे कोई भी सामने आये और चाहे कुछ भी कहे, तुम बराबर दिल खोलकर ताली बजाकर उसका अभिनन्दन करते हो। अगर वह कहता है स्वतन्त्रता चिरंजीव, तो तुम ताली पीटते हो; और यह बिल्कुल ठीक है। लेकिन अगर जब कोई आकर कहता है - हथियार मुर्दाबाद, तब भी तुम ताली पीट देते हो! बिना हथियारों के क्रान्ति को सफल होने का अवसर कब मिल सकता है? वह किस तरह का क्रान्तिकारी है, जो चिल्लाता है - हथियार मुर्दाबाद? जो वक्ता ऐसा कहता है, वह शायद तालस्ताय का अनुयायी हो सकता है, किन्तु क्रान्तिकारी हर्गिज नहीं। चाहे वह जो भी हो, वह क्रान्ति का शत्रु है, लोगों की स्वतन्त्रता का शुत्र है! वह लोगों की स्वतन्त्रता - सभा के लोगों में खलबली-सी मच गयी। लोग एक-दूसरे से पूछने लगे - 'कौन है यह? कितना कड़ा बोल रहा है! जैसे किसी याकोबीय (पेरिस के क्रान्तिकारी) की जबान हो!' कोबा आगे बोल रहे थे - विजय प्राप्त करने के लिए वस्तुतः हमें किस चीज की जरूरत है? हमें तीन चीजों की जरूरत है। अच्छी तरह गाँठ बाँध लो। पहली चीज है - हथियार, दूसरी चीज है - हथियार, और तीसरी हथियार और फिर हथियार! - चारों ओर से तालियों की गड़गड़ाहट सुनाई देने लगी, लेकिन तब तक वक्ता भाषण-मंच से जा चुका था।"

नवम्बर 1905 में काकेशीय पार्टी संगठन का चतुर्थ बोल्शेविक सम्मेलन साथी कोबा के नेतृत्व में हुआ। उसमें बाकू, तिफलिस, गुरिया आदि के प्रतिनिधि आये थे। सम्मेलन ने हथियारबन्द विद्रोह की जबर्दस्त तैयारी का प्रस्ताव पास किया और उसके लिए संगठन की कई बातें निश्चित कीं।

दिसम्बर 1905 में प्रथम रूसी इन्कलाब हुआ। यह महीनों से चलनेवाले सर्वहारों के संघर्षों का ही चरम रूप था। कोबा पहले से ही उसके लिए तैयारी कर थे, यह हम बतला आये हैं। मेंशेविक जगह-जगह होनेवाले कमकरों के संघर्ष को स्वतःस्फूर्त संघर्ष बतलाते थे। इसका जवाब कोबा ने **9 जनवरी** 1905 के अपने एक लेख द्वारा इस प्रकार दिया था :

"नहीं, भद्रपुरुषो, तुम्हारा यह सारा प्रयत्न व्यर्थ है! रूसी क्रान्ति अनिवार्य है, इतनी ही अनिवार्य है, जैसे सूर्य का उगना। क्या तुम सूर्य को उगने से रोक सकते हो? इस क्रान्ति की मुख्य सेना है - शहर और देहात के सर्वहारा; इसका झण्डाबरदार समाजवादी जनतान्त्रिक मजदूर दल है, तुम नहीं!..."

सन 1905 में ही, जारशाही के विरुद्ध दो तरह के संघर्षों को लोगों ने देखा। एक था – जनवरी के आरम्भ वाले खूनी इतवार का वह जुलूस, जिसमें लोग ईसा मसीह और सन्तों की मूर्तियाँ तथा जार की तस्वीरें लिये हुए, धार्मिक भजन गाते, 'भगवान जार की रक्षा करें' कहते हुए पादरी गैपन के नेतृत्व में जार के पास अपने दु:खों की गाथा लिखकर पेश करने जा रहे थे, जिनका स्वागत जार ने गोली चलवाकर सैकड़ों निहत्थे स्त्री–पुरुषों, बाल–बच्चों का खून करके दिया। लेकिन, दिसम्बर में जारशाही के सामने दूसरी तरह के लोग आये, इनके हाथों में न मूर्तियाँ थीं और न जार के चित्र। इनके हाथों में लाल झण्डे और मार्क्स तथा एंगेल्स की तस्वीरें थीं। भजन और जार की मंगल–कामना की जगह, वह 'मार्सेइयेज' – वीरतापूर्ण गान तथा दूसरे क्रातिकारी गीत गा रहे थे। वे निहत्थे नहीं थे। उनके हाथों में हथियार थे, यद्यपि अभी उनकी संख्या बहुत नहीं थी। पादरी गैपन नहीं, बल्कि बोल्शेविक इस संघर्ष का संचालन कर रहे थे। मास्को की इस प्रथम क्रान्ति के असफल होने का एक कारण था – कमकरों में पूर्ण एकता का अभाव, और दूसरा कारण था – आक्रमण की नीति छोड़कर, रक्षात्मक दाँव–पेंच स्वीकार करना। साथी कोबा ने भविष्य के लिए सजग करते हुए कहा था : "विद्रोह की विजय के लिए, यह जरूरी है कि दल एकताबद्ध हो, उसके द्वारा विद्रोह का हथियारबन्द संगठन किया जाये और लड़ने में आक्रमण की नीति को अपनाया जाये।"

दिसम्बर की क्रान्ति को मेंशेविक तटस्थ होकर देखते ही नहीं रहे, बल्कि उन्होंने उसे असफल करने की भी कोशिश की थी। क्रान्ति के विफल होने पर, वह हँसी उड़ा रहे थे। कोबा ने इस पर लिखा था : "नहीं साथियो! सर्वहारा पराजित नहीं हुए, बल्कि कुछ समय के लिए पीछे हट आये हैं। अब वह एक नये और यशस्वी आक्रमण के लिए तैयार हो रहे हैं। रूसी सर्वहारा अपने खून से रँगे झण्डे को गिरने नहीं देंगे। वही महान रूसी क्रान्ति के नेता हैं, और वही योग्य नेता बनेंगे।"

तमरफोर्स (दिसम्बर, सन 1905)

क्रान्ति विफल होने के बाद, फिनलैण्ड के तमरफोर्स नामक स्थान पर दिसम्बर में अखिल रूसी बोल्शेविक कांफ्रेंस हुई, जिसमें साथी कोबा काकेशस के प्रतिनिधि बनकर गये थे। यहीं पर, उनकी लेनिन से पहले–पहल मुलाकात हुई। पहले ही दोनों एक–दूसरे से काफी परिचित हो चुके थे, इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं यदि कोबा को पार्टी के एक प्रमुख नेता के तौर पर लेनिन के साथ विषय निर्धारिणी में काम करने का मौका मिला। लेनिन के साथ इस

पहली मुलाकात के बारे में, बाद में स्तालिन ने अपने एक भाषण में कहा था :

"सन 1905 के दिसम्बर में तमरफोर्स (फिनलैण्ड) की बोल्शेविक कांफ्रेंस में, मैं पहले-पहल लेनिन से मिला। मैं आशा करता था कि हमारी पार्टी के पहाड़ी गरुड़, महान पुरुष को राजनीतिक तौर से ही महान नहीं, बल्कि शारीरिक तौर से भी महान देखूँगा। मैंने अपनी कल्पना में लेनिन को एक विशालकाय, प्रभावशाली, भव्य रूप में चित्रित किया था, लेकिन मुझे निराशा हुई, जब देखा कि वह एक साधारण सा दिखायी देने वाला आदमी है, जो कद में भी औसत से कम है और मामूली आदमियों से किसी बात में भिन्नता नहीं रखता।

"एक महान पुरुष के बारे में यह सामान्य धारणा है कि वह सभा में देर से आये, जिसमें लोग साँस रोके उसके प्रकट होने की प्रतीक्षा करें। फिर महान पुरुष के प्रवेश करने से पहले तुरन्त सजग कर दिया जाये : 'हुश! चुप! वह आ रहा है।' मुझे यह प्रक्रिया बेकार सी नहीं जान पड़ती थी; क्योंकि इससे प्रभाव पड़ता है, लोगों में सम्मान का भाव आता है। लेकिन, मुझे उस वक्त यह जानकर निराश होना पड़ा कि लेनिन प्रतिनिधियों के आने से पहले ही कांफ्रेंस में पहुँचकर, किसी एक कोने में बैठ, बिना किसी दिखावे के बातचीत कर रहे थे। बिल्कुल मामूली-सी बातचीत थी, और सो भी कांफ्रेंस के अत्यन्त मामूली प्रतिनिधियों के साथ। मैं आप लोगों से छिपाना नहीं चाहता कि उस समय लेनिन की यह बात मुझे कुछ आवश्यक नियमों के उल्लंघन जैसी मालूम हुई थी।

"कुछ समय बाद ही, मुझे पता लगा कि लेनिन की यह सादगी, यह शालीनता, दिखावा न करने का प्रयत्न या कम-से-कम अपने को विशेषता न देना, अपने ऊँचे पद का प्रकाशन न करना नयी जनता, सीधी-सादी और साधारण जनता, बिल्कुल मामूली मानवों के नये नेता के लिए सबसे महत्व की चीज थी।

"लेनिन ने कांफ्रेंस में जो भाषण दिये थे, वे भी उल्लेखनीय थे। उनमें से एक राजनीतिक परिस्थिति के बारे में था, दूसरा किसानों की समस्या के बारे में। दुर्भाग्य से उनको लिखकर सुरक्षित नहीं रखा गया। सारी कांफ्रेंस में उन्होंने भारी उत्साह का संचार कर दिया था।"

दिसम्बर की क्रान्ति के असफल होने से, लेनिन और बोल्शेविकों के निश्चय में कोई कमजोरी नहीं आयीं। कोबा ने भी इसको उसी रूप में लिया। फिर, आगे की तैयारी होने लगी।

अध्याय - चार

बोल्शेविक क्रान्ति से पहिले

1. गुप्त प्रेस (सन 1906–17)

हम यह बतला चुके हैं कि क्रान्तिकारी प्रचार के लिए साथी कोबा ने तिफलिस के अवलाबार मुहल्ले में एक गुप्त प्रेस स्थापित किया था। तीन वर्ष से अधिक समय तक, इससे तरह–तरह का क्रान्तिकारी साहित्य रूसी, गुर्जी, अर्मनी, आजुर्बाइजानी आदि भाषाओं में निकलकर काकेशस में ही नहीं, बल्कि रूस के और स्थानों में भी फैलता रहा। पुलिस बराबर खोज करती रही, लेकिन उसका पता न पा सकी। भारतीय क्रान्तिकारियों के बारे में, यशपाल ने अपने संस्मरण में एक जगह लिखा है कि पहले पूर्ण एकाग्रता और उत्साह के साथ किसी बड़े काम को करने के लिए क्रान्तिकारियों का उत्साह दो हफ्ते से ज्यादा नहीं रहता था, पीछे भगतसिंह और उनके साथी जब केवल आतंकवाद को अपर्याप्त समझ उसमें कुछ समाजवादी भावनाओं को भी लाने लगे, तो भी उसकी आयु दो महीने से ज्यादा नहीं हुई। लेकिन, बोल्शेविकों को केवल विचारों के आधार पर क्रान्ति नहीं लानी थी, उनका आधार था – सब तरह से शोषित उत्पीड़ित सर्वहारा वर्ग, जो नये आर्थिक सम्बन्धों के साथ कल–कारखानों में संगठित हो रहा था। वहाँ दिन–दिन के संघर्ष उनमें स्फूर्ति और साहस पैदा कर रहे थे। कासिम जैसा अनपढ़ किसान भी बोल्शेविकों के प्रभाव में आकर, खतरे की कोई परवाह न कर उनकी सहायता के लिए तैयार था। कासिम अपने सोसो पर कितना विश्वास करता था, यह हम देख आये हैं। एक दिन उसने सोसो से कहा था : "मैं बहुत ही अकिंचन और बहुत ही सताया हुआ आदमी हूँ। मैं कभी किसी मुखिया के सामने नहीं बोला, लेकिन मैं तुम्हें पहचानता हूँ...। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम कौन हो, तुम 'नपि अफिर कात्जा' (एक अबखासी वीर) हो। मालूम होता है कि तुम कड़क और बिजली से पैदा हुए हो; तुम बड़े सूक्ष्म

हो; तुम्हारे पास एक महान हृदय और एक महान आत्मा है।"

कासिम और उसके बेटे स्वयं सोसो और उसके गुप्त प्रेस को अपने घर में लिवा ले गये थे, और पीछे लम्बा बुर्का ओढ़कर कई भारी-भरकम औरतों को भी वह अपने गाँव में ले गये। ये सोसो के साथी थे, जो छापने का काम करने आये थे। गाँव के लोग प्रेस चलने की आवाज सुनकर तरह-तरह की कल्पनाएँ करते। बेचारे प्रेस और क्रान्तिकारी साहित्य के बारे में क्या समझें? एक शाम को, उनमें से कुछ ने सोसो से आकर कहा : "तुम जाली सिक्का बना रहे हो, न? और यह शायद हमारे लिए कोई उतना बुरा पेशा भी नहीं है; क्योंकि हम गरीब हैं; तुम अपने सिक्कों को कब चलाओगे?" सोसो ने इसका जवाब देते हुए कहा : "मैं जाली सिक्का नहीं बना रहा हूँ, बल्कि तुम्हारी तकलीफों को छापकर दुनिया को बतला रहा हूँ।" इस पर गाँव के किसान सन्तुष्ट हो, सहायता करने का वचन देकर चले गये। सोसो के इस प्रेस को जमीन में गाड़े कई साल हो गये थे, जब सन 1917 में कासिम के उसी बगीचे में क्रान्तिकारी सैनिक आकर ठहरे, तब कासिम ने खोदकर प्रेस के अलग-अलग पुर्जों को निकाल, उन्हें जोड़ दिया। फिर, उसने अपने लड़के से कहा : "देख, यह वही चीज है, जिससे इन्कलाब बनाया गया था।"

लेकिन, अवलाबार का प्रेस अधिक छोटा और खिलौना जैसा प्रेस नहीं था। जारशाही को बड़ी प्रसन्नता हुई, जब अवलाबार के प्रेस का पता लग गया। पुलिस ने छापा मारकर, उसे अपने हाथ में कर लिया। उसी समय 16 अप्रैल 1906 को काकेशस के पूँजीवादी पत्र कफकाज ने लिखा था :

"गुप्त छापाखाना - 15 अप्रैल, शनिवार को अवलाबार मुहल्ले में द. रोश्तोमशविली के एक अलग-थलग निर्जन घर के हाते में, छूत की बीमारियों के नगर-अस्पताल से डेढ़ दो सौ कदम पर एक सत्तर फुट गहरे कुएँ का पता लगा, जिसके भीतर रस्सी और गराड़ी की सहायता से उतरा जा सकता था। पचास फुट नीचे उतर, एक गलियारा दूसरे कुएँ की ओर जाता था, जिसमें पैंतीस फुट ऊँची एक सीढ़ी लगी हुई थी, जिसके द्वारा घर के तहखाने के नीचे एक मकान में पहुँचा जा सकता था। इस मकान में सब सामान सहित एक पूरा छापाखाना निकला, जिसमें रूसी, गुर्जी, अर्मनी अक्षरों के बीस केस थे; हैण्ड-प्रेस था, जिसका मूल्य डेढ़-दो हजार रूबल हो सकता है। साथ ही, वहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के एसिड, भड़कने वाले गैलातिन तथा बम बनाने की दूसरी चीजें भी थीं। गैरकानूनी साहित्य, भिन्न-भिन्न पलटनों और सरकारी संस्थाओं की मुहरें तो भारी मात्रा में थीं ही, साथ ही साढ़े सात सेर डायनामाइट वाली एक भयंकर मशीन भी थी। वहाँ रोशनी एसिटिलेन वाली लालटेनों से होती थी और

बिजली के सिग्नल का भी प्रबन्ध था। घर के हाते के एक झोंपड़े में तीन सजीव बम, कितने ही बमों के खोल और उसी तरह की दूसरी चीजें पायी गयी। 'एलवा' (बिजली) पत्र के सम्पादकीय आफिस में मीटिंग करते हुए चौबीस आदमियों को पकड़कर उन पर इस काण्ड में शामिल होने का दोष लगाया गया। 'एलवा' के आफिस की तलाशी लेने पर गैरकानूनी साहित्य और पुस्तिकाओं के भारी परिमाण में प्राप्त होने के अतिरिक्त बीस के करीब सादे पासपोर्ट के फार्म भी मिले। सम्पादकीय आफिस को बन्द करके, मुहर लगा दी गयी। गुप्त छापाखाने से भिन्न-भिन्न दिशाओं में जाने वाले बिजली के तार प्राप्त हुए हैं, इसलिए घर के नीचे की भूमि से और चीजों का पता लगाने के लिए खुदाई की गयी। छापाखाने से निकली चीजों को पाँच गाड़ियों पर लादकर हटाया गया। इसी काण्ड के सम्बन्ध में, उसी शाम को तीन और आदमी गिरफ्तार हुए। गिरफ्तार किये हुए आदमी जब जेल की ओर ले जाये जा रहे थे, तो वह मार्सेइयेज गा रहे थे।"

अवलाबार प्रेस का यह रूप बतलाता है कि सोसो या कोबा जारशाही पुलिस से आँख बचाकर काम करने में कितने चतुर और सफल थे।

2. चौथी पार्टी कांफ्रेंस (सन 1906)

सन 1906 के अप्रैल महीने में, स्टॉकहोम (स्वीडन) में पार्टी की चौथी कांफ्रेंस हुई, जिसमें कोबा, इवानोविच के नाम से काकेशीय प्रतिनिधि के तौर पर शामिल हुए। लेनिन ने इस कांफ्रेंस में मेंशेविकों के खिलाफ युद्ध घोषित कर दिया था। इवानोविच ने अपने भाषण में मेंशेविकों को लक्ष्य कर कहा : "चाहे तो सर्वहारा का नायकत्व स्वीकार करो, या जनतान्त्रिक पूँजीवादियों का पार्टी के सामने यह सीधा प्रश्न है, जिसके सम्बन्ध में हमारा मतभेद है।" इस कांग्रेस में प्लेखानोफ, अक्सेलरोद, मर्तोफ जैसे चोटी के मेंशेविक नेता भाग ले रहे थे। लेनिन ने उनकी युक्तियों में से एक-एक की धज्जी उड़ाई थी। लेनिन भी नाटकीय ढंग की भाषण-कला पसन्द नहीं करते थे। वह भाषण नहीं अपनी बातों की सच्चाई को हृदयगंम कराते थे। स्टॉकहोम कांफ्रेंस में बोल्शेविकों को सफलता नहीं मिली और बहुमत मेंशेविकों के पक्ष में रहा। इस समय के लेनिन के मनोभाव के बारे में, स्तालिन ने बाद में एक बार कहा था :

"... इस समय पहली बार, मैंने लेनिन को पराजित के रूप के देखा था। लेकिन, वह हताश नहीं थे। वह भविष्य की विजय की बात सोच रहे थे। दूसरे बोल्शेविक कुछ हतोत्साहित से हो गये थे। लेनिन ने उन्हें प्रोत्साहन देते हुए कहा : 'साथियो, मत घबराओ, हम अवश्य विजयी होंगे; क्योंकि हम ही ठीक रास्ते पर

हैं।' लेनिन ने उस समय कुड़बुड़ाते हुए बुद्धिजीवियों के प्रति घृणा, अपनी शक्ति और विजय में विश्वास ने हमारे अन्दर विश्वास पैदा किया। हम सोच रहे थे, बोल्शेविकों की पराजय केवल क्षणिक है। अन्त में हम अवश्य विजयी रहेंगे।"

चौथी कांफ्रेंस एकता की कांफ्रेंस कही जाती थी, क्योंकि स्टॉकहोम में बोल्शेविक और मेंशेविक दोनों ही उसमें सम्मिलित हुए थे और दोनों पक्षों को एक करने का प्रयत्न भी किया गया था। एकता की कांफ्रेंस कही जाने पर भी, वह एकता लाने में सफल नहीं हुई। मेंशेविक क्रान्तिकारी नहीं, बल्कि सुधारवादी थे। वे अपने विचारों पर दृढ़ थे। उन्होंने अपने स्वतन्त्र संगठनों को भी बरकरार रखा। अवसरवादी मेंशेविकों से क्रान्तिकारी बोल्शेविकों की कैसे पट सकती थी? इसलिए, रूसी समाजवादी जनतान्त्रिक मजदूर दल की एकता केवल कागजी ही रह गयी।

कोबा कांफ्रेंस से काकेशस लौट आये। वहाँ बोल्शेविकों के संगठन को मजबूत करने के लिए उन्होंने एक बोल्शेविक क्षेत्रीय ब्यूरो की स्थापना की। इस ब्यूरो के द्वारा इस बात के लिए जबर्दस्त आन्दोलन शुरू किया गया कि पार्टी की एक नयी कांग्रेस बुलायी जाये, जिसमें क्रान्तिकारी मार्क्सवाद के आधार पर वास्तविक एकता कायम की जाये। इसका फल जहाँ काकेशस में पार्टी का प्रचार और संगठन मजबूत करने के रूप में हुआ, वहीं पाँचवीं कांग्रेस का आयोजन भी निश्चित हुआ।

3. पाँचवीं (लन्दन) कांग्रेस (सन 1907)

सन 1907 की अप्रैल और मई में होने वाली इस कांग्रेस में, साथी कोबा ने काकेशस के प्रतिनिधि के तौर पर भाग लिया। कोबा के अनुसार, इस कांग्रेस का सबसे महत्वपूर्ण काम यह हुआ कि इसने फूट नहीं बल्कि पार्टी की अटूट एकता का काम किया। सारे रूस के प्रमुख कार्यकर्ताओं को एक अटूट पार्टी में लाकर एक कर दिया। यह सच्चे अर्थों में अखिल रूस की एकता कांग्रेस थी। लन्दन कांग्रेस उस समय हुई थी, जबकि जारशाही जनता के अधिकारों पर भारी प्रहार करने के लिए तैयार हो रही थी। इसके बाद ही, 3 जून को जारशाही ने द्वितीय राज्य-दूमा (संसद) तो तोड़ दिया और अब वह बोल्शेविक संगठनों को चूर्ण-विचूर्ण करने में लगी हुई थी। सन 1905 की क्रान्ति विफल होने के बाद, जो निर्बलता और निराशा कमकरों में आयी थीं, उनसे फायदा उठाकर जारशाही अपने विरोधियों का नामोनिशान मिटा देना चाहती थी। चारों तरफ आतंक का राज्य था। लेकिन यही समय था, जब साथी कोबा ने लन्दन से लौटकर बाकू को अड्डा बनाया, मजदूरों में जोर-शोर से काम करना शुरू किया।

इस कठिन परिस्थिति में, बाकू में सफलतापूर्वक काम करना कोबा जैसे योग्य संगठक और प्रचारक का ही काम था। कोबा ने अपने कामों से बाकू के कमकरों को बोल्शेविकों की ओर करने में सफलता पायी। बाकू का तेल-क्षेत्र बहुत दूर तक फैला हुआ था और दुनिया का एक सबसे बड़ा तेल क्षेत्र होने से, उसका औद्योगिक महत्व भी बहुत था। बालाखानी, बीबीऐबत, चोर्नीगोरद और बेलीगोरद के तेल-क्षेत्रों में यहाँ के मजदूर बिखरे हुए थे। मेंशेविकों का उन पर काफी प्रभाव था। लेकिन, उन्हें कोबा जैसे विरोधी का सामना करना पड़ रहा था, जो हर तरह से मेंशेविकों के रास्ते को गलत साबित कर मजदूरों को अपनी ओर खींच रहे थे। कोबा ने 'बाकिन्स्की प्रोलेतारी', 'गुदांक' और 'बाकिन्स्की रबोची' नाम के गैरकानूनी पत्र निकाले। इसी समय, तृतीय राज्यदूमा (पार्लामेण्ट) का निर्वाचन हो रहा था। निर्वाचन में भाग लेते हुए कोबा ने 'तृतीय राज्य दूमा के समाजवादी जनतान्त्रिक डेपुटियों का कर्तव्य पत्र' के नाम से एक लेख लिखा, जिसे 22 सितम्बर को बाकू में मजदूर प्रतिनिधियों की सभा ने स्वीकार किया। कोबा के सहायक उस समय सेर्गो ओर्जोनीकिद्जे, क्लिमेन्त वारोशिलोफ (वर्तमान राष्ट्रपति), अल्योशा जापरिद्जे, स्त्वोपानौ, सुरेन सपन्दरान, स्तेपन शैम्यान, बान्या फयोलेतोफ, व. प. नोगिन (मकर), वत्सक, अलीलयेफ, ग्वंचलाद्जे अपोसतोल, रादुस जैकोविच (ईगर) जैसे लगन वाले कर्मी थे। बोरोशिलोफ उस समय बीबीऐबत जिले के तेल मजदूर संघ का मन्त्री था और ओलियम कम्पनी में ब्वाइलर बनाने का काम करता था। बाकू में मन्ताशेफ, लियानोजोफ जैसे रूसी और राथचाइल्ड तथा नोबल जैसे विदेशी करोड़पति पूँजीपतियों से मुकाबला था। बाकू के अलग-अलग तेल क्षेत्रों की अलग-अलग कमेटियाँ थीं, जिनके ऊपर बाकू कमेटी तथा उसके कार्यकारिणी ब्यूरो को कोबा की अध्यक्षता में कायम किया गया था। बाकू के मुसलमान मजदूर सबसे पिछड़े हुए थे, जिनको बहकाने के लिए पूँजीपति और जारशाही मुल्लों और प्रतिगामी शक्तियों की सहायता लेती थी। उनमें काम करने के लिए, उम्मत (गुर्म्मेत) के नाम से एक नया संगठन कायम किया गया, जिसका काम था मुसलमान कमकरों में तत्परता के साथ काम करना, उन्हें मुल्लों और सामन्तों के पंजे से निकालना। बीबीऐबत जिले को मेंशेविकों का गढ़ समझा जाता था, इसलिए कोबा ने उसकी ओर विशेष तौर से ध्यान दिया। उन्होंने अपने एक लेख 'कांफ्रेंस और कमकर' में बाकू के काम के बारे में लिखा था :

"सन 1903 की वसन्त में, बाकू की पहली साधारण हड़ताल ने जुलाई की हड़तालों के आरम्भ और रूस के दक्षिणी नगरों के प्रदर्शनों की सूचना दी। सन 1904 के नवम्बर-दिसम्बर की आम हड़ताल ने सारे रूस में होनेवाले

जनवरी-फरवरी के यशस्वी संघर्षों का सिग्नल दिया। सन 1905 में बाकू के सर्वहारा अर्मनी तुर्क हत्याकाण्ड के प्रभाव से जल्दी मुक्त हो, अब संघर्ष में भाग लेने लगे, जिसका प्रभाव सारे काकेशस में एक भारी जोश के रूप में देखा जा रहा था। 1905 की क्रान्ति असफल होने के बाद भी, सन 1906 में बाकू का जोश कम नहीं हुआ, मई-दिवस का उत्सव यहाँ रूस की और सभी जगहों से अच्छी तरह प्रति वर्ष मनाया जाता था, जिसे देखकर दूसरे नगरों को डाह हो सकती थी।"

लन्दन कांग्रेस के बाद ही, मेंशेविक जारशाही के अत्याचार से घबराकर बाकू के कमकरों के सभी लड़ाकू संगठनों को ठप्प करने लगे, जिसका बोल्शेविकों ने जबर्दस्त विरोध किया और उन संगठनों को फिर से स्थापित किया। अगस्त सन 1907 में, कोबा ने एक पुस्तक प्रकाशित की, जिस पर संगठन-कमीशन का हस्ताक्षर था। इस संगठन-कमीशन में बालाखान, बीबीऐबत, चोनीगोरद, बेलीगोरद, मॉस्कोइ जिलों के संगठन ही नहीं, बल्कि रूसी समाजवादी जनतान्त्रिक मजदूर पार्टी के बाकू संगठनों वाला मुस्लिम उम्मत गुट भी शामिल था। इस लेख में मजदूरों से मेंशेविक केन्द्र के नेतृत्व को छोड़ देने की अपील की गयी थी, जिसका जनता से कोई सम्बन्ध नहीं था और जो अवसरवादी नीति का अनुसरण करता था और बाकू के सर्वहारा के विचारों और भावों का प्रतिनिधित्व नहीं करता था। मेंशेविकों का यह केन्द्र सचमुच ही बाकू के सर्वहाराओं का विश्वासपात्र नहीं हो सकता था; क्योंकि वह उनके संघर्षों में नेतृत्व करने के लिए तैयार न हो, उन्हें पीछे खींचना चाहता था। जार ने राज्य दूमा को तोड़ दिया, तो उसके विरुद्ध भी बाकू में कुछ करना जरूरी समझा गया। वहाँ के रेलवे कमकरों तथा बाकू के चार तेल क्षेत्रों के मजदूरों का सम्मेलन किया गया। आपस में विचार-विनिमय के लिए भिन्न-भिन्न पार्टियों के प्रतिनिधियों का एक और भी सम्मेलन हुआ। तृतीय राज्य दूमा के चुनावों का प्रश्न था। अतः इसके लिए आजुर्बाइजानी (तुर्की) और अर्मनी भाषाओं में भी पुस्तिकाएँ निकाली गयीं, जिनमें दशनकों (अर्मनी राष्ट्रवादियों), बन्द (यहूदी मजदूर सभा) और मेंशेविकों की अवसरवादिता की पोल खोली गयी। इसी समय, मॉस्को और पीटर्सबर्ग की तरह, बाकू में भी एक बोल्शेविक केन्द्र स्थापित करने का सवाल उठा, जिसका सभी जगह से समर्थन हुआ; और बोल्शेविक केन्द्र स्थापित हो गया; इस केन्द्र ने बाकू के मजदूर आन्दोलन को बढ़ाने में बड़ा काम किया।

अगस्त सन 1907 में, दूमा के निर्वाचन के सम्बन्ध में कई जिला-कमेटियों की तरफ से एक पुस्तिका प्रकाशित की गयी, जिसमें बतलाया गया - यद्यपि जारशाही दूमा में सच्च जनप्रतिनिधियों का पहुँचना असम्भव है, लेकिन तो भी

कमकरों को वोट की पेटियों से फायदा उठा, जारशाही सरकार की चालाकियों का भण्डाफोड़ करना चाहिए, जिसमें वह मजदूरों को धोखा देने के अपने लक्ष्य में सफल न हो सके। निर्वाचन में बोल्शेविक इसलिए भाग ले रहे हैं कि जारशाही सरकार को हटाकर, जनतान्त्रिक गणराज्य स्थापित करने के लिए, एक नये संघर्ष का आरम्भ किया जाये। यद्यपि प्रथम क्रान्ति के बाद, दूसरे स्थानों में आन्दोलन का जोर बहुत घट गया था, लेकिन जहाँ तक बाकू का सम्बन्ध था, वहाँ के कमकर अक्टूबर की महान क्रान्ति तक बोल्शेविकों के पथ प्रदर्शन में उसी तरह डटे रहे।

22 अगस्त 1907 को 'गुदांक' में साथी कोबा का एक लेख 'समाजवादी जनतान्त्रियों में' छपा। अवसाद और निराशा के समय अराजकतावाद बुद्धिजीवियों पर काफी प्रभाव डालने लगा था और यह बीमारी घटने की जगह बढ़ती ही जा रही थी। चोर-डाकू भी इससे लाभ उठाने के लिए तैयार थे। कोबा ने अपने लेख में कमकरों और किसानों से कहा कि अपने आदर्श के लिए, श्रमिक जनता की मुक्ति के लिए अपने को संगठित करो और अराजकतावाद के दलदल में मत फँसो।

कोबा जाति के गुर्जी थे, जो धर्मतः ईसाई होते थे; और बाकू आजुर्बाइजान के मुस्लिम इलाके में हैं। भारतीय पाठकों को यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि निरक्षर और पिछड़ी जनता कितनी आसानी से उन मुल्लों के हाथ में फँस जाती है, जो हाकिमों के इशारों पर नाचते हैं। यह साथी कोबा के अनुकरणीय कार्य का चमत्कार ही था कि एशियाई और रूसी, मुसलमान और ईसाई, सब एक ही तरह से उन्हें अपना नेता मानते थे। बीबीऐबत जिले में नैफ्थलन कम्पनी के तेल के कुएँ थे। वहाँ खानलार नामक एक आजुर्बाइजानी मजदूर कर्मठ कार्यकर्ता था। उसके कारण मुसलमानों में प्रतिगामियों की नहीं चलती थी। मालिक भयभीत थे। इसलिए उनके इशारे पर, जाफर और अबजरबेक दो गुण्डों ने खानलार को मार डाला। कोबा ने सितम्बर सन 1907 में 'खानलार पर जो बीती, वह हम पर बीती' के नाम से एक पर्चा निकला, जिसमें लिखा था :

"हत्यारों ने खानलार के ऊपर गोली नहीं चलायी, बल्कि हमारे ऊपर, आगे बढ़े हुए कार्यकर्ताओं के ऊपर चलायी है। हमारे ऊपर गोली चलाकर, पूँजीपतियों के गुर्गे हमारे अग्रगामी साथियों की पाँति को छिन्न-भिन्न करना चाहते हैं, जिसमें आगे चलकर वह बाकू के सर्वहाराओं की गर्दनें और कड़ाई के साथ रस्सी से कस सकें।"

पर्चे में हड़ताल करने तथा खानलार के हत्यारों को काम से निकाल देने की माँग पेश की गयी थी। दो हफ्ते की हड़ताल घोषित कर दी गयी, और उसके

बारे में एक पर्चा निकालकर कहा गया : हम सारी दुनिया को दिखला देंगे कि खानलार अकेला नहीं था, और हर एक आगे बढ़े हुए कार्यकर्ता के पीछे हजारों की सेना तैयार है, जो अपने साथियों और नेताओं की रक्षा करने के लिए मजबूती से खड़ी है।'

'गुदांक' के पाँचवें अंक (14 अक्टूबर 1907) में साथी कोबा ने खानलार की शहादत पर एक टिप्पणी लिखी थी, जिसमें शहीद के प्रति श्रद्धांजलि देते हुए कहा था : 'उसके हृदय में सर्वहारा की आत्मा की आग और भाव-प्रवणता थी; उसके दिल में किसानों का दुख और कष्ट भरा हुआ था।' खानलार के अतिरिक्त दुश्मनों ने रेलवे और दूसरे कारखानों में काम करने वाले तुछकिन, लीसैनिन और दूसरे कितने ही सजग मजदूरों की हत्या करवाई थी। इस पर बोल्शेविक बाकू कमेटी ने कमकरों को आत्मरक्षा के लिए संगठित होने तथा जरूरी सामान जमा करने के लिए आदेश दिया।

तीसरी राज्य दूमा तोड़ देने के बाद, चौथी राज्य दूमा निर्वाचित हुई, जिसके पथ प्रदर्शन के लिए भी साथी कोबा ने एक निर्देश-पत्र तैयार किया। इस पत्र में लन्दन कांग्रेस की कार्रवाइयों के बारे में भी बतलाया गया था। 22 सितम्बर 1907 को बाकू में कमकर प्रतिनिधियों ने इस पत्र का समर्थन किया। इसमें कहा गया था कि राज्य दूमा में समाजवादी जनतान्त्रिक डेपुटियों को अपना अलग गुट कायम करना चाहिए और एक खास पार्टी के प्रतिनिधि होने के कारण उन्हें अपनी पार्टी और उसके नेतृत्व के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रखना चाहिए। इस गुट को सर्वहारा वर्ग के हित के लिए एक विशेष कार्यक्रम पर चलना; पार्लामेण्ट का उपयोग कादेतों (राजवादियों) और मेंशेविकों से भिन्न तौर पर करना है। कमकरों के प्रतिनिधि दूमा में विधान बनाने के अभिप्राय से नहीं जा रहे हैं, बल्कि अपने विचारों के प्रचार और क्रान्तिकारी शक्तियों को मजबूत करने के लिए, उसे मंच के तौर पर इस्तेमाल करने जा रहे हैं। ये बातें तृतीय दूमा के डेपुटियों के पथ-प्रदर्शन के लिए कही गयी थीं। तृतीय राज्य दूमा के उद्‌घाटन के समय, नवम्बर सन 1907 में एक पर्चा निकालकर कहा गया कि कमकरों का गुट दूमा में तभी सफलतापूर्वक काम कर सकता है, जब कि वह लोगों को यह सूचित करता रहे कि दूमा में क्या हो रहा है और साथ-साथ, पार्टी संगठन लोगों को समझाते रहें कि शान्तिपूर्ण, अहिंसात्मक ढंग और पार्लामेण्ट्री तरीके से अपनी माँगें पूरी कराने की आशा केवल दुराशा मात्र है।

सन 1908 के आरम्भ में, मिस्त्रीखानों के फोरमैनों की परिषद और तेल-उद्योग के कमकरों तथा आफिस के नौकरों की परिषद के प्रतिनिधियों की प्रथम मीटिंग, मालिकों के साथ होने वाली कांफ्रेंस में अपने प्रतिनिधि चुनने के

लिए हुई। इस कांफ्रेंस ने बतला दिया कि बाकू के कमकरों में बोल्शेविक पार्टी का कितना अधिक प्रभाव है। जब मालिकों ने देखा कि ऐसे प्रतिनिधियों के साथ बातचीत करके वह अपना मतलब पूरा नहीं कर सकते, तो उन्होंने दूसरा रुख लिया और मजदूरों पर आक्रमण करने एवं कारखानों के फोरमैनों को जो कमकरों पर बहुत प्रभाव रखते थे – नौकरी से निकालना शुरू किया; और कमकरों में जातीय वैमनस्य पैदा करने के लिए भी अपने गुर्गों को भेजा। इस पर गुदांक के 22वें अंक, (9 मार्च 1908) में साथी कोबा ने 'तेल के मालिक पैंतरा बदल रहे हैं' के नाम से एक लेख लिखा, जिसें कमकरों को तेल-कमकर-संघ के साथ जुट जाने और छुट-पुट हड़ताल करके अपनी शक्ति को व्यर्थ ही बरबाद न करने के लिए कहा गया। बाकू कमेटी ने पहले पूँजीपतियों द्वारा प्रस्तावित कांफ्रेंस में सम्मिलित होने का विरोध किया और इसके लिए 29 सितम्बर 1907 के 'गुदांक' में कोबा के नाम से एक लेख 'कांफ्रेंस का बायकाट करो' निकाला, जिसमें साथी कोबा ने कहा था :

"कांफ्रेंस में शामिल होने या बायकाट करने का प्रश्न हमारे लिए कोई सिद्धान्त का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह व्यावहारिक उपयोगिता की बात है। हम एक ही बार, सदा के लिए कांफ्रेंस में सम्मिलित होने का निर्णय ही कर सकते हैं, जैसा कि कादेत-मनोभाव रखने वाले लोग कर लेते हैं, हमें सम्मिलित होने या बायकाट करने पर, यथार्थ घटनाओं और केवल घटनाओं की दृष्टि से ही विचार करना होगा।"

मार्क्सवाद का अत्यन्त शीघ्रता से दुनिया, उसकी चीजों और घटनाओं के क्षण-क्षण बदलते रहने का सिद्धान्त केवल दार्शनिक उड़ान भरने के लिए नहीं है, बल्कि हर क्षण सजग रहकर, घटनाओं के अनुसार व्यवहार के परिवर्तन के लिए नये रास्ते ढूँढ़ निकालने में उसकी मदद लेनी जरूरी है। लेनिन और स्तालिन हवाई विचारक नहीं थे। वे दार्शनिकों और वेदान्तियों की तरह, दुनिया की व्याख्या नहीं करते फिरे, बल्कि दुखों और अत्याचारों की मारी दुनिया को बदलने के लिए, उन्होंने उसका इस्तेमाल किया। इसी पर आरूढ़ रहकर, स्तालिन ने अपने जीवन के अन्त तक भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में सफलता पायी। प्रतिभा के साथ, क्रान्तिकारी दर्शन का व्यवहार में ठीक से उपयोग करना उनकी सफलता का गुर था।

मालिकों ने कमकरों पर हल्ला बोल दिया। उनके आक्रमणों को मेंशेविक और अराजकतावादी ही अनेदखा कर सकते थे। बोल्शेविकों ने सन 1908 की जनवरी और फरवरी में कितनी ही हड़तालों से इसका मुँहतोड़ जवाब दिया, जिनमें से कई बहुत सफल रहीं। इनके कारण, बोल्शेविकों का प्रभाव और भी बढ़ा। इससे पहले सन 1907 की शरद में, कांफ्रेंस में सम्मिलित होने के लिए बोल्शेविकों

ने निम्न शर्तें पेश की थीं :

1. अपनी माँगों पर बहस करने का अधिकार हो,
2. अपनी भावी फोरमैन परिषद की मीटिंगें करने का अधिकार हो,
3. अपनी मजदूर सभाओं की सेवाओं से लाभ उठाने का अधिकार हो,
4. कांफ्रेंस की तारीख चुनने का अधिकार हो।

'समाजवादी-क्रान्तिकारी', मेंशेविक और 'दशनक' (अर्मनी राष्ट्रवादी) बोल्शेविकों के प्रस्ताव का विरोध करते थे। मेंशेविकों ने तो यह भी कहा था कि बिना किसी गारण्टी या शर्त के कांफ्रेंस में शामिल होना चाहिए। उनका नारा था – 'चाहे जिस मूल्य पर भी – कांफ्रेंस!' समाजवादी क्रान्तिकारियों और दशनकों को मजदूरों से कोई आशा नहीं थी, इसलिए उन्होंने नारा लगाया – 'चाहे जिस मूल्य पर भी बायकाट!' इसके लिए कमकरों में प्रचार और मत-संग्रह किया गया, जिसका परिणाम निम्न प्रकार का हुआ : "पैंतीस हजार कमकरों के पास कनवैसिंग की गयी, जिनमें से आठ हजार ने समाजवादी क्रान्तिकारी और दशनकों (बिना शर्त बायकाट) के पक्ष में वोट दिया, आठ हजार ने मेंशेविकों (बिना शर्त कांफ्रेंस) का समर्थन किया, जब कि उन्नीस हजार कमकरों ने बोल्शेविकों की माँग (गारण्टी के साथ कांफ्रेंस) का समर्थन किया।"

साथी कोबा के नेतृत्व में सन 1907 के अन्त में ये सब घटनाएँ बाकू में उस वक्त घटित हो रही थीं, जब राजनीतिक अवसाद से लाभ उठाकर, जारशाह कसाई स्तोलिपिन सारे देश में आतंक फैलाये हुए था और लोग सहमे-सहमे से मालूम होते थे।

बाकू के कमकर और उनके नेता देशव्यापी क्रूर अत्याचारों से आँखें नहीं मूँद सकते थे। इसीलिए 15 अप्रैल 1908 के 'बाकिन्स्की प्रोलेतारी' (बाकू सर्वहारा) में 'वर्तमान प्रतिगामिता और हमारा कर्तव्य' के नाम से एक लेख निकाला, जिसमें स्तोलिपिनीय अत्याचारों की काली छाया के सिर पर मँडराने से सजग करते हुए कहा गया कि मजदूरों ने भारी विजय प्राप्त की है, लेकिन वह उसके फल को अपने हाथों में नहीं रख सके। इसका कारण यही था कि किसान अपने सर्वहारा भाइयों की सहायता के लिए आगे नहीं बढ़े। जालिम सरकार ने इससे फायदा उठाकर, सर्वहारा के ऊपर आक्रमण कर दिया। पिछले अक्टूबर में जो अधिकार मजदूरों ने प्राप्त किये थे, उन्हें वह एक-एक करके छीन रही थी। छापे की स्वतन्त्रता और संगठन की स्वतन्त्रता को छीनती जा रही थी। साथी कोबा ने बतलाया कि यह स्थिति अधिक समय तक नहीं रह सकती। जागरूक शक्तियाँ जारशाही को मनमानी करने के लिए बहुत दिनों तक नहीं रख सकतीं। पुराने और नये रूस का निर्णायक संघर्ष अवश्य होकर रहेगा। क्रान्ति अनिवार्य है। इससे

मालूम होगा कि बोल्शेविक सर्वहारा वर्ग के अन्तिम संघर्ष में, किसानों के सहयोग की कितनी आवश्यकता समझते थे। 'बाकिन्स्की प्रोलेतारी' ने इसीलिए गाँवों के सर्वहाराओं तथा अर्ध-सर्वहाराओं, गरीब किसानों में भी आन्दोलन और संगठन करने पर जोर दिया।

कमकरों का यह रुख देखकर, कांफ्रेंस को रोक दिया गया। इस पर जुलाई सन 1908 में 'बाकिन्स्की प्रोलेतारी' के पाँचवें अंक के परिशिष्ट के रूप में कोबा के नाम से 'कांफ्रेंस और कमकर' लेख निकला। इस लेख में कहा गया था : "मिस्टर जुंकोव्स्की, तिफलिस का पुराना भाण्ड घोषित कर रहा है कि तमाशा खत्म हो गया। पूँजीपतियों का खुशामदी कुत्ता, मिस्टर करामुर्जा उस पर ताली पीट रहा है। पर्दा गिरता है और हम पुराना परिचित दृश्य देखते हैं – तेल मालिक और कमकर नये संघर्ष के लिए, नये तूफान के लिए, अपनी पुरानी जगह पर खड़े प्रतीक्षा कर रहे हैं।" लेख में कांफ्रेंस के इतिहास का वर्णन करते हुए बतलाया गया, कि मालिक इसीलिए कांफ्रेंस नहीं करना चाहते, क्योंकि वे जानते हैं कि मजदूर उनकी बात नहीं मानेंगे, बल्कि बोल्शेविकों के कहने पर चलेंगे।

हम देख चुके हैं कि सन 1907 के बाद, कोबा और उसके बोल्शेविक साथी बाकू के कमकरों को कितना संगठित किये हुए थे और किस तरह पूँजीपतियों और जारशाही की एक भी नहीं चलने देते थे। जारशाही परेशान थी और वह साथी कोबा को पकड़ने के लिए बेकरार थी। साथी कोबा को जिस तरह अपने बाकू के काम में बरोशिलोफ, ओर्योनिकिद्जे जैसे बोल्शेविक क्रान्तिकारियों का सहयोग मिला था, उसी तरह खानलार, महमदेफ, अजीजबेक्रोफ, क्चाजीमामेत और दूसरे वर्गचेतन कमकरों का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त था। इसी कारण, बाकू बोल्शेविकों का गढ़ बन गया। अपने इस जीवन पर दृष्टिपात करते हुए, स्तालिन ने बाद में कहा था :

"तेल-उद्योग के कमकरों में तीन वर्ष के क्रान्तिकारी काम ने मुझे व्यावहारिक योद्धा, व्यावहारिक स्थानीय नेता के रूप में फौलादी (दृढ़) बना दिया। बाकू के वत्सैक, सरातो वेत्सक और फयेलेतोफ जैसे आगे बढ़े हुए मजदूरों तथा तेल स्वामियों और कमकरों के बीच चलने वाले कठोर संघर्ष के तूफान ने मुझे पहले-पहले सिखलाया कि मजदूरों के एक भारी समूह के नेतृत्व करने का क्या मतलब होता है। यह बाकू ही था, जहाँ इस प्रकार मैंने द्वितीय क्रान्तिकारी अग्नि अभिषेक प्राप्त किया।"

4. द्वितीय गिरफ्तारी (सन 1908)

अन्त में 25 मार्च 1908 को पुलिस साथी कोबा को गिरफ्तार करने में सफल

हुई। वह उन्हें बेलोफ जेल ले गयी। वहाँ भी बोल्शेविक कोबा विश्राम करने नहीं गये थे। उन्होंने बाहर के साथियों से सम्बन्ध स्थापित किया। उनके लेख बराबर जेल से बाहर जाकर, कमकरों के पत्रों में छपते रहे। 'बाकिन्स्की प्रोलेतारी' के द्वितीय अंक की प्रायः सारी लेख सामग्री उन्होंने जेल से तैयार करके भेजी थी। राजनीतिक बन्दी इस तरुण बोल्शेविक का बड़ा सम्मान करते थे। उन्होंने वहाँ पर भी समाजवादी क्रान्तिकारियों और मेंशेविकों के साथ क्रान्तिकारी संघर्ष के सिद्धान्त और व्यवहार पर कई शास्त्रार्थ किये। स्तोलिपिन काल रात्रि की काली छाया जेलों पर भी पूरी तरह पड़ रही थी। जेल के अधिकारी राजबन्दियों के साथ और भी कठोरता का व्यवहार करते थे। जेल में कोबा की कलम ही नहीं चल रही थी, न वह केवल बहस-मुबाहिसों में ही भाग लेते थे, बल्कि वहाँ भी वह जारशाही के साथ संघर्ष कर रहे थे। जेल के अधिकारियों ने राजनीतिक बन्दियों को पाठ पढ़ाने का निश्चय कर लिया था। उन्हें दबाने के लिए 'साल्यान्स्क' पलटन बुलायी गयी। दो पाँति में सैनिक खड़े कर दिये गये और राजनीतिक बन्दियों को उनके बीच से जाने के लिए मजबूर किया गया। बीच से गुजरते समय सैनिक बन्दूकों के कुन्दों से उनको खूब पीटते थे। कोबा कुन्दों की वर्षा के बीच से सिर को सीधा किये हुए निकले। उनके सिर पर मार्क्स की पोथी थी। मार्क्स की पोथी के साथ सिर को सीधा रखना भी कोबा की दृढ़ता और मार्क्सवाद की अन्तिम विजय पर उनके विश्वास को प्रकट कर रहा था।

आठ महीने जेल में रखने के बाद, मुकदमे का फैसला हुआ और कोबा को सोल्वीचेगोदस्क (बोलोग्दा) में दो वर्ष निर्वासन का दण्ड मिला। लेकिन, तरुण गुर्जी बोल्शेविक कोबा अपनी सारी मियाद पूरी करने के लिए कब तैयार थे। उन्हें चुपचाप निर्वासित जीवन बिताने के लिए फुर्सत कहाँ थी? 24 जून 1909 को वह सोल्वीचेगोदस्क से गायब हो, बाकू पहुँच गये। अपने निर्भीक और निःस्वार्थ नेता को छिपाने के लिए, बाकू के सारे कमकर तैयार थे। नरमदली मेंशेविक और दूसरे भी जारशाही के अत्याचार से परास्त हो, अपना सब काम छोड़कर मुँह छिपाते थे और लेनिन का कड़ा विरोध कर रहे थे। इसी समय, लेनिन के समर्थन में ओगनेस तोतोम्यान्त्स ने 'काकेशस के पत्र' के नाम से कई महत्वपूर्ण पत्र बोल्शेविक पार्टी के केन्द्रीय पत्रों में, साथ ही कई लेख 'बाकिन्स्की प्रोलेतारी' में भी लिखे। लौटकर, ओगनेस के नाम से कोबा ने फिर गुप्त छापाखाने को संगठित किया। छापाखाना उनका तोपखाना था। यद्यपि इस समय तक जारशाही के अत्याचारों के कारण शिथिलता आ गयी थी, लेकिन ओगनेस ने बाकू कमेटी को फिर कर्मशील बनाया, फिर प्रचारकों की टुकड़ियाँ तैयार हुईं। इसी टुकड़ी में ओगनेस भी सम्मिलित थे। वह बाकू से बाहर भी जाते रहते थे। बाकू के

तेल-मजदूरों के अतिरिक्त रेलवे मजदूरों, चेरनीगोरद और बेलीगोरद के कमकरों में ही नहीं, बल्कि जहाजी मजदूरों में भी उन्होंने काम शुरू कर दिया। बाकू कास्पियन समुद्र के किनारे एक महत्वपूर्ण बन्दरगाह है, जहाँ काम करने वाले मल्लाहों और दूसरे कमकरों को ओगनेस कैसे छोड़ सकते थे? ओगनेस, कोबा या सोसो ने जिस क्षेत्र में भी कदम रखा, उसी में अपना कमाल दिखाया।

ओगनेस के कामों ने फिर जागृति पैदा कर दी। जनवरी सन 1910 में, फिर जागृति के लक्षण दिखलाई पड़ने लगे। इसी समय, 'तिफलिसिकी प्रोलेतारी' पत्र के प्रथम अंक में ओगनेस ने 'हम नये संघर्ष के आरम्भ में हैं' आदि लेख लिखे। ओगनेस बुद्धिजीवियों के मुरझाये चेहरों से भविष्य की परख नहीं किया करते थे, इसके लिए वह कमकरों और साधारण जनता को, उनकी दिन पर दिन खराब होती भौतिक-आर्थिक परिस्थिति को, जो उग्र होकर सर्वहाराओं को कभी चुप नहीं रहने दे सकती थी - देखते थे। ओगनेस के 'काकेशस के पत्र', केन्द्रीय पत्र 'सोत्सियल देमोक्रात' (समाजवादी जनतन्त्री) के 26 फरवरी 1910 के अंक तथा 'बहस का पर्चा' के 24 जून 1910 के अंक में निकले; जिनमें काकेशस में क्या हो रहा है, इसका सजीव वर्णन किया गया था। इनमें मेंशेविकों और दूसरे अवसरवादियों का भी पर्दाफाश किया गया था, जिसके कारण वह बहुत चिढ़ गये थे। इस समय, पत्र व्यवहार द्वारा ओगनेस कालेनिन के साथ बराबर सम्बन्ध था।

5. तृतीय गिरफ्तारी (सन 1910)

इस बार बाहर आकर, उन्हें बहुत समय तक काम करने का मौका नहीं मिला। आठ महीने के बाद बाकू में ही, 23 मार्च 1910 को ओगनेस को फिर गिरफ्तार कर लिया गया। 23 सितम्बर 1910 तक जेल में रखकर उन्हें फिर सोलविचेगोदस्क में निर्वासित कर दिया गया, जहाँ 6 जुलाई 1911 तक रहना पड़ा।

इस निर्वासित जीवन को ओगनेस जिस घर में बिता रहे थे, वहाँ दूसरे राजनीतिक निर्वासित बराबर आया करते थे। पुलिस ने रिपोर्ट दी थी कि यहाँ बराबर क्रान्तिकारी प्रचार और व्याख्यान होते रहते हैं। पुलिस की आँख बचाकर यहाँ से भी ओगनेस लेनिन के पास पत्र लिखते रहे, जिसमें प्लेखानोफ के समर्थकों के रवैये का खण्डन करते हुए, वह त्रात्स्की के सिद्धान्तहीन गुट पर भी छींटे करते थे। इसी समय, उन्होंने राय दी कि एक कानूनी समाचार पत्र निकालने की बड़ी आवश्यकता है। थोड़े ही दिनों बाद, 'ज्येज्दा' (तारा) के नाम से ऐसा पत्र निकलने भी लगा। उन्होंने रूस में प्रमुख सदस्यों की एक केन्द्रीय समिति तथा उसके ब्यूरो को स्थापित करने के लिए कहा, जिससे देश में पार्टी

का काम ठीक से संचालित किया जा सके। अपने बारे में लिखते हुए, उन्होंने कहा था : "अभी मुझे छः महीने और बिताने हैं। इस मियाद के खत्म होते ही, मैं आपकी सेवा के लिए बिल्कुल तैयार हूँ। अगर लोगों ने बहुत जरूरत समझी, तो मैं तुरन्त केंचुल छोड़ सकता हूँ।" – स्तालिन केंचुल छोड़ने में कितने उस्ताद थे, हम यह देख चुके हैं।

जून, सन 1911 में बोल्शेविक केन्द्रीय समिति की जो कांफ्रेंस हुई थी, उसमें स्तालिन को अखिल रूसी कांफ्रेंस के बुलाने के लिए बनायी गयी संगठन कमेटी का सदस्य चुना गया था।

यह हम बतला चुके हैं कि योरदानिया जैसे तरुण एक समय मार्क्सवाद के वाहक रह चुके थे। उनके द्वारा काकेशस में नये विचारों का काफी प्रचार हुआ था। लेकिन, बाद में वह फिसल गये। योरदानिया जैसे आदमियों की किसी देश में भी कमी नहीं है। हमारे देश में भी ऐसे चेहरे दिखायी पड़ते हैं, जो समाजवाद के नाम की रटन इसीलिए लगाया करते हैं कि देश में समाजवाद न आने पाये, जिसमें पूँजीवादी जोंकें अपने काम को निर्द्वन्द्वतापूर्वक करती रहें। यदि कुछ पूँजीपति इन योरदानियों को हाथों पर उठाये फिरें, उनके पत्र उनकी तारीफ करते न थकें, तो आश्चर्य की बात है! पंजाबी कहावत के अनुसार, वह जानते ही हैं कि यह 'साड्डा बन्दा' है। एक बड़ा गुर्जी पूँजीपति द. सर्जिशविली मर गया। उसको दफन करने के लिए 26 जून 1911 को मेंशेविक नेता उसके गुणों का बखान करते नहीं अघाते थे। गुर्जी मेंशेविकों के जयप्रकाश योरदानियों ने इस यूरोपीय कारखाने के शिक्षित मालिक के भव्य संस्मरण में एक लेख लिखा था :

"हाल ही में, निष्ठुर मृत्यु ने हमें दुर्लभ गुर्जी – द. ज. सर्जिशविली से वंचित कर दिया।... स्वर्गीय पुरुष एक उद्योगपति के नाम से विख्यात था, लेकिन यह बहुत कम लोग जानते हैं कि यूरोपीय ढंग का वह प्रथम उद्योगपति था। उसने एक बार मुझसे कहा था : 'हमारे देश में भौतिक तौर पर अपने पैरों पर खड़ा होना, आर्थिक सफलता प्राप्त करना मुश्किल है, जैसे ही कोई आदमी कुछ जखीरा जमा कर पाता है, वैसे ही सैकड़ों भूखे नंगे उसके पीछे पड़ जाते हैं और तब तक चैन नहीं लेने देते, जब तक कि उसका सफाया नहीं कर देते।' ऐसी स्थिति में भूखों की पलटन से अपने को बचाये रख, अपनी सम्पत्ति का ठीक तौर से इस्तेमाल वही कर सकता है, जिसमें दुर्लभ प्रतिभा और बड़ी व्यावहारिक बुद्धि हो। अगर स्वर्गीय दाविद सच्चा गुर्जी उद्योगपति होता, तो गुर्जी तरीके से वह कभी का अपने को खत्म कर चुका होता और उसकी सम्पत्ति का कुछ भी बाकी न रहता। एक यूरोपियन ही इस तरह की व्यवस्था कर सकता है, जिससे वह हर एक को सन्तुष्ट भी रखे और साथ ही अपने धन को बरबाद न करे।... एक बार

हम ठण्डी सड़क पर एक-दूसरे के सामने से गुजर रहे थे। उसने मुझे दूर से पुकारकर कहा : 'देखो तो तुम्हारा बर्नस्टाइन (एक अवसरवादी समाजवादी) क्या लिख रहा है? घर चलो और इसे लेकर पढ़ो' पुस्तक अभी-अभी जर्मनी में प्रकाशित हुई थी और तिफलिस में नहीं मिल सकती थी। दूसरे दिन, मैंने दाविद के पास जाकर उस पुस्तक को लिया। 'इसके बारे में तुम्हारी क्या राय है?' मैंने उससे पूछा। 'मेरी क्या राय है? जर्मनी से यह भयंकर बम है। सारी किताब में, मैं एक स्थल को पसन्द करता हूँ, जिसमें वह कहता है कि आन्दोलन सब कुछ है, अन्तिम लक्ष्य कुछ भी नहीं है।'

"एक बार मैंने स्वर्गीय पुरुष को उसके आफिस में बहुत ही चिन्तित देखा। वह निराशावादी नहीं था। मैंने पूछा : 'क्या बात है?' उसने कहना शुरू किया : 'हमारा कोई भविष्य नहीं है। तुम दावा करते हो, और कहते हो कि निम्न मध्य बड़े मध्य वर्ग को पैदा करेगा, लेकिन मैं उसे नहीं देख पा रहा हूँ। ऐसा होने के लिए भी, हमें नागरिक भावों और संस्कृति की आवश्यकता है, किन्तु हम मामूली योकेल हैं।... स्वर्गीय दाविद चकाचौंध में पड़े बच्चे की तरह, क्रान्ति में बह नहीं गया था, लेकिन साथ ही वह प्रतिगामिता का दास भी नहीं बना था। आज हम इस अद्वितीय पुरुष को कब्र में रख रहे हैं। वह उसी खुले दिल और दिमाग के साथ मरा, जिस तरह कि जीता रहा। विदा, प्रिय दाविद! तुम्हारी महान स्मृति सदा हमारे साथ रहेगी।"

यह एक समाजवादी द्वारा गुर्जी के एक बड़े सेठ की स्तुति थी, एक करुणापूर्ण मर्सिया था। सेठ सर्जिशविली के पास तिफलिस, किजलयर, एरिवान (अर्मनी), कलाराश (बेसराबिया) और ग्योकचे में शराब के अच्छे-अच्छे कारखाने थे, जहाँ अँगूरी तथा दूसरी मदिराएँ बनती थीं। जारशाही सरकार ने अपने परम भक्त सेठ को 1 जनवरी 1902 को 'व्यापार कॉन्सलर' की उपाधि दी थी, जो हमारे यहाँ के 'सर' के आसपास की थी; क्योंकि वह देश के उद्योग और व्यापार के क्षेत्र में उपयोगी काम कर रहा था! यह कोई आश्चर्य नहीं था कि योरदानिया बोल्शेविक क्रान्ति के बाद भी, पश्चिमी साम्राज्यवादियों का परम विश्वासपात्र बना रहा और जब गुर्जी में मेंशेविकों की सरकार नहीं टिक सकी, तो उसे बड़े सम्मान के साथ उन्होंने अपने यहाँ बुलाकर रखा।

पार्टी की कांफ्रेंस प्राग में होने जा रही थी। ऐसे समय में, स्तालिन बलोग्दा में रहना कैसे पसन्द करते! उन्होंने 6 सितम्बर 1911 को चुपचाप वहाँ से निकलकर, रूस की राजधानी पीटर्सबर्ग का रास्ता लिया और वहाँ पहुँचकर, वह पार्टी के संगठन को मजबूत करने के काम में लग गये। अब काकेशस नहीं, रूस की राजधानी में उनका काम करना यही बतलाता है कि स्तालिन प्रादेशिक नेता

न रहकर, सारे देश के नेताओं में से थे और उसी के अनुरूप उन्हें अपनी प्रतिभा और अनुभव का प्रयोग करना था। इसी से, स्तालिन के जीवन का पीटर्सबर्ग वाला अध्याय शुरू हुआ। लेकिन, जान पड़ता है कि पीटर्सबर्ग में अभी उनके लिए काकेशस जैसे सुरक्षित स्थान तैयार नहीं हो पाये थे। साथ ही, वह मेंशेविकों की अकर्मण्यता फैलानेवाली नीति के जबर्दस्त आलोचक थे, जिससे वह भी पुलिस की तरह ही, उनके पीछे पड़े हुए थे।

6. चतुर्थ गिरफ्तारी (सन 1911)

9 सितम्बर 1911 को पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर, फिर बोलोग्दा भेज दिया, लेकिन फरवरी सन 1912 में स्तालिन ने फिर केंचुल छोड़ दी।

पुलिस स्तालिन के बारे में कैसे विचार रखती थी, इसके कुछ उदाहरण उसके रिकार्डों से लीजिए :

क. "30 सितम्बर की पुलिस-विभाग की माँग के अनुसार, काकेशीय जिला खुफिया पुलिस विभाग के अध्यक्ष की सूचना के अनुसार, साइबेरिया से भागनेवाला सोसो वही है, जो कोबा के नाम से संगठन कर रहा है; और ओगनेस वर्तानोफ, तातोम्यन्तस भी उसी का नाम है। वह तिफलिस नगर का निवासी है, जिसके नाम से इस साल 12 मई को तिफलिस पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट द्वारा एक साल के लिए दिया गया 982 नम्बर का पासपोर्ट उसके पास है।... तातोम्यन्तस, कोबा तथा मलोच्नी नाम का आदमी रूसी समाजवादी जनतान्त्रिक मजदूर पार्टी के बाकू संगठन का मुखिया है, बीबीऐबत जिले के दो दूसरे सदस्य भी उसी संगठन से सम्बन्धित हैं। उन पर गुप्त रूप से लगातार और कभी-कभी खुले तौर से भी निगाह रखी जाती है। संगठन तोड़ने के लिए जो कदम उठाया जाये, उसमें यह भी आयेंगे।"

ख. "जुगशविली रूसी समाजवादी जनतान्त्रिक मजदूर पार्टी की बाकू कमेटी का एक मेम्बर है। उसे पार्टी संगठन में कोबा के नाम से पुकारा जाता है। शासकीय दण्डों के होते हुए भी, वह अपने कामों में बड़ी दृढ़ता से लगा हुआ है और क्रान्तिकारी संगठनों में सदा उसका प्रमुख स्थान रहा है। वह अपने निर्वासन स्थान से दो बार भाग चुका है और उसे राज्य की ओर से जो दण्ड दिये गये थे, उनमें से उसने एक को भी पूरा नहीं किया। इसलिए मैं और कड़ा दण्ड देने की सिफारिश करूँगा। उसे पाँच वर्ष के लिए साइबेरिया के सबसे दूर वाले जिले में निर्वासित कर देना चाहिए। - 24 मार्च 1910 कप्तान गलिम्तोव्स्की।"

ग. "24 मार्च 1910 को कप्तान मर्तिनोफ रिपोर्ट देता है कि रूसी समाजवादी जनतान्त्रिक मजदूर पार्टी की बाकू कमेटी के संगठन में कोबा के नाम से ज्ञात

तथा पार्टी का अत्यन्त कर्मठ नेता गिरफ्तार कर लिया गया।"

घ. "17 मई 1912 को काकेशीय जिला खुफिया पुलिस विभाग ने पीटर्सबर्ग के पुलिस विभाग के डायरेक्टर को लिखा था : 'सोसो बिसारियोनोविच जुगशविली नाम के, तिफलिस प्रदेश के दीदीलियों गाँव के एक किसान का नकली नाम है, जिसे पार्टी में कोबा कहा जाता है, सन 1902 से ही, एक समाजवादी जनतान्त्रिक कर्मठ कार्यकर्ता के नाम से प्रसिद्ध है। सन 1902 में, तिफलिस के रू.स.ज.म. पार्टी के गुप्त चक्र के मुकदमे में अभियुक्त के तौर पर पूछताछ के लिए, उसे तिफलिस प्रदेश के पुलिस विभाग के सामने लाया गया। इस अपराध में उसे पुलिस की खुली निगरानी में तीन वर्ष के लिए पूर्वी साइबेरिया में निर्वासित कर दिया गया, जहाँ से वह भाग निकला। पुलिस विभाग ने उसकी गिरफ्तारी के लिए विज्ञापन निकाला। बाद में, जुगशविली भिन्न-भिन्न समयों में बातूम, तिफलिस और बाकू के समाजवादी जनतान्त्रिक संगठनों का नेता होकर, काम करता रहा। कई बार उसकी तलाशी और गिरफ्तारी हुई, लेकिन वह हवालात से निकलकर निर्वासन से बचता-छिपता फिरा; इस समय, पुलिस विभाग के 15 अप्रैल 1912 के सुर्कलर के अनुसार, गिरफ्तारी के लिए उसकी माँग है। 6 तारीख को जिले के अफसर ने जो सूचना दी है, उससे पता लगता है कि जुगशविली हाल ही में तिफलिस नगर में था। इसी समय, बाकू के गुप्त खुफिया विभाग के मुखिया ने गुप्त रूप से सूचना दी है कि कोबा रूसी केन्द्रीय समिति में नियुक्त किया गया है और, 30 मार्च को पीटर्सबर्ग के लिए रवाना हो गया है। इसके बारे में लेफ्टिनेण्ट कर्नल मर्तिनोफ ने 6 अप्रैल को तत्रभवान राज्यपाल तथा पीटर्सबर्ग खुफिया पुलिस विभाग के मुखिया को भी उसी दिन सूचित किया।"

जारशाही पुलिस की इन रिपोर्टों से भी स्तालिन का एक विशेष रूप प्रकट होता है।

जनवरी, सन 1912 में बोल्शेविक पार्टी की एक बड़ी कांफ्रेंस प्राग में होने वाली थी। स्तालिन उसके महत्व को अच्छी तरह समझते थे। मेंशेविकों और दूसरे अवसरवादियों से सम्बन्ध रखने से अब कोई फायदा नहीं था। पीछे स्तालिन ने अपने व्याख्यान में इस कांग्रेस के बारे में कहा था :

"सबको पता है कि यह कांफ्रेंस हमारी पार्टी के इतिहास में भारी महत्व रखती है, क्योंकि इसी ने बोल्शेविकों और मेंशेविकों के बीच सीमा-रेखा खींची और सारे देश के बोल्शेविक संगठनों को एक संयुक्त बोल्शेविक पार्टी के रूप में परिणत कर दिया था।"

लेनिन को यह देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि पार्टी से मेंशेविक निकाल दिये

गये। उन्होंने गोर्की को लिखा था :

"आखिर दिवालियों, कमीनों की सारी कोशिशों पर भी हमें पार्टी और उसकी केन्द्रीय समिति को फिर से मजबूत करने में सफलता मिली। मुझे आशा है कि तुम इस पर हमारी ही तरह प्रसन्न होगे।"

इस कांफ्रेंस में स्तालिन उपस्थित नहीं हो सके, लेकिन तब भी उन्हें पार्टी के रूसी ब्यूरो का सदस्य बनाया गया। केन्द्रीय कमेटी में निर्वाचित हो जाने के बाद, अब निर्वासित की स्थिति में और रहना उनके लिए ठीक नहीं था, और स्तालिन को तुरन्त केंचुल छोड़ने की आवश्यकता थी। वह सेर्गी ओर्योनिछीद्ज के साथ बलोग्दा से 26 फरवरी 1912 को भाग निकले। कितने ही जिलों में पार्टी संगठन को मजबूत करते हुए, अन्त में वह पीटर्सबर्ग में उसी समय लौटे, जब कि साइबेरिया की लेना सुवर्ण खान में जारशाही ने मजदूरों के साथ खून की होली खेली थी। 'ज्वेज्दा' ने इसी समय लेना काण्ड पर स्तालिन का एक लेख छापा था, जिसकी कुछ पंक्तियाँ थीं :

"लेना हत्याकाण्ड ने अकर्मण्यता के बर्फ को तोड़ दिया और जन आन्दोलन की भागीरथी बह निकली; बर्फ टूट गयी।... वर्तमान शासन के सारे पाप, दुराचार तथा चिरकाल से उत्पीड़ित रूस के सारे दुर्भाग्य जिस एक बात पर केन्द्रित हो गये हैं, वह है लेना काण्ड। इसीलिए यह लेना गोलीकाण्ड ही था, जिसने हड़तालों और प्रदर्शनों के एक संकेत का काम किया।"

7. पाँचवीं गिरफ्तारी (अप्रैल सन 1912)

स्तालिन और लेनिन काफी समय से पार्टी के एक केन्द्रीय मुखपत्र की बड़ी आवश्यकता अनुभव कर रहे थे। बोल्शेविक देपुती जहाँ दूमा को अपने विचारों के प्रचार के लिए एक भाषण-मंच के तौर पर इस्तेमाल कर रहे थे, वहाँ एक ऐसे शक्तिशाली दैनिक पत्र की भी आवश्यकता थी। यह काम 'ज्वेज्दा' नहीं कर सकता था। स्तालिन ने अब केंचुल बदलकर, ऐसे पत्र के निकालने की तैयारी में अपनी पूरी शक्ति का उपयोग किया। 22 अप्रैल 1912 को 'प्राव्दा' (सत्य) का प्रथम अंक निकला। लेकिन, उसी दिन किसी भेदिये ने पुलिस को खबर कर दी और फिर जारशाही स्तालिन को गिरफ्तार करने में सफल हो गयी। 'प्राव्दा' का प्रकाशन क्रान्तिकारी आन्दोलन के नये उत्थान के साथ-साथ हुआ। पुराने पंचाँग के अनुसार यद्यपि प्रकाशन का दिन 22 अप्रैल था, लेकिन जब क्रान्ति के बाद, दुनिया के और भागों में प्रचलित पंचाँग को सोवियत सरकार ने स्वीकार कर लिया, तो प्राव्दा का प्रकाशन दिवस 5 मई हो गया। आज भी 5 मई को कमकर प्रेस दिवस के नाम से मनाया जाता है। साथी स्तालिन ने प्राव्दा

की दसवीं वर्षगाँठ के समय लिखा था : "सन 1912 में 'प्राव्दा' का निकालना, सन 1917 में बोल्शेविक विजय की आधारशिला का रखना था।"

अबकी बार उन्हें गिरफ्तार कर, जारशाही ने कई महीनों तक जेल में बन्द रखकर तीन वर्ष के लिए एक बहुत दूर के स्थान नरिम में निर्वासित कर दिया। नरिम पश्चिमी साइबेरिया में बहुत ठण्डे स्थान पर अवस्थित था। लेकिन ठण्डा हो या गरम, स्तालिन को इतनी फुर्सत कहाँ थी कि वहाँ पड़े रहते। लेना गोलीकाण्ड ने बर्फ तोड़ दी थी, क्रान्ति धारा बह निकली थी, और उस धारा को गम्भीर और शक्तिशाली बनाने में इस गुर्जी तरुण को योग देना था। इसीलिए, 2 जुलाई 1912 को तीन वर्ष का निर्वासन दण्ड पाकर भी वह नरिम में दो ही महीने रहे। 1 सितम्बर 1912 को नरिम से लुप्त हो वह फिर अपने कार्यक्षेत्र में पहुँच गये। लेनिन विदेश में थे, पर मानो बेतार के सम्बन्ध द्वारा वह रूस के भीतर होने वाली हर एक घटना को जानते हुए वहाँ की क्रान्ति की धारा का संचालन कर रहे थे। स्तालिन को लेनिन की ओर से रूस के भीतर रहकर काम करना था। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है, और इसे ठकुरसुहाती कहना सिर्फ अपने को धोखा देना है कि स्तालिन का लेनिन से कभी भी मतभेद नहीं हुआ। वस्तुत: मतभेद वहाँ होता है, जहाँ पुस्तकी ज्ञान और केवल दिमागी कसरत काम करती है, लेकिन जहाँ घटना और वास्तविकता की व्यावहारिक कसौटी पर कसकर एक-एक कदम आगे रखना हो, वहाँ मतभेद उसी तरह आवश्यक नहीं होते, जैसे कि सच्चे वैज्ञानिक आविष्कारों में। एक प्रयोगशाला में एक वैज्ञानिक जो कोई नयी खोज करता है, उसी को जब दूसरे वैज्ञानिक अपनी-अपनी प्रयोगशालाओं में भी पाते हैं, तभी तो उसे वैज्ञानिक सत्य कहा जाता है। मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन ने साम्यवादी विचारधारा और क्रान्तिकारी सिद्धान्तों को कोरे दिमाग से नहीं निकाला था, बल्कि यथार्थ की कसौटी पर कसा जाकर ही, उनका वाद वैज्ञानिक सत्य बना।

ध्रुवकक्षीय रेखा के बहुत भीतर सुदूर साइबेरिया के बादाइबो (लेना) स्थान में जारशाही ने गोलियाँ चलायीं, जिसने सारे रूस को हिला दिया। इसके विरोध में देश में हड़तालों की बाढ़ आ गयी। पीटर्सबर्ग के सर्वहारा अपने क्षोभ प्रदर्शन के लिए सड़कों पर निकल आये। 'ज्वेज्दा' ने इस समय की स्थिति के बारे में लिखा था : "हम सजीव हैं, अटूट शक्ति भरी आग हमारे लाल खून को खोला रही है।"

ऐसी परिस्थिति में, स्तालिन का साइबेरिया से भागकर पीटर्सबर्ग पहुँचना, बड़े काम की बात थी। बोल्शेविक पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के एक मेम्बर तथा केन्द्रीय मुखपत्र प्राव्दा के सम्पादक के तौर पर अब वह बड़ी लगन के साथ काम

करने लगे। इसी समय तीसरी राज्य दूमा का चुनाव होने वाला था, जिसमें स्तालिन ने पीटर्सबर्ग के कमकरों के संघर्षों का संचालन करते हुए पूरी तौर से भाग लिया। लेनिन इस समय रूस से बाहर क्राकोओ में रहते थे, जहाँ उस समय बोल्शेविक पार्टी का केन्द्रीय कार्यालय था। वह गुप्त रीति से अपने सन्देश और पथ निर्देश भेजते रहते थे; और मौके पर स्तालिन के होने से निश्चिन्त थे कि अब काम ठीक से होगा।

स्तालिन 'प्राव्दा' के लिए लेख लिखते थे और उसके चलाने में उन्हीं का सबसे बड़ा हाथ था। कुछ ही समय बाद, बोल्शेविक पत्रिका 'प्रोस्बेश्चेनिये' (उद्‌बोधन) निकली। प्रथम अंक से ही स्तालिन उसमें हाथ बँटाने लगे। सन 1913 के उसके तीसरे, चौथे और पाँचवें अंकों में स्तालिन का एक महत्वपूर्ण लेख जातीय समस्या और समाजवादी जनतन्त्रता के नाम से प्रकाशित हुआ, जो पीछे मार्क्सवाद और जातीय प्रश्न के रूप में अलग प्रकाशित हुआ। इसी पत्रिका में स्तालिन ने यह भी बताया कि क्यों राजकीय दूमा का बायकाट नहीं करना चाहिए। पुलिस जिस तरह से इस खतरनाक क्रान्तिकारी के पीछे हाथ धोकर पड़ी थी, उसमें कमकरों की भक्ति और दृढ़ता ही ऐसी चीज थी, जिसने स्तालिन को पुलिस के हाथों में पड़ने से बचाये रखा। अक्टूबर में, दूमा निर्वाचन के सम्बन्ध में निर्वाचक प्रतिनिधियों की एक कांफ्रेंस हुई, जिसमें अपने कमकर देपुतियों के लिए पीटर्सबर्ग के कमकरों का आदेशपत्र (मेण्डेट) पास किया गया। आज भी मॉस्को के केन्द्रीय लेनिन म्यूजियम में लेनिन के हाथों के नोट के साथ, इस पत्र को देखा जा सकता है। आदेशपत्र को स्तालिन ने लिखा था, लेकिन लेनिन ने उसे इतना महत्वपूर्ण समझा कि उसके हाशिये पर नोट लिखा – 'इसे अत्यन्त सावधानी से सुरक्षित रखो।' अभी बोल्शेविक क्रान्ति के होने में चार वर्षों की देर थी। आदेशपत्र में मजदूरों और किसानों की शोचनीय स्थिति का वर्णन करते हुए बतलाया गया था :

"क्रान्ति की हरावल सेना मजदूर वर्ग है और किसान क्रान्ति में उसके सहायक हैं। जो संघर्ष हमारे सामने आने वाला है, उसमें दोनों मोर्चों पर लड़ाई लड़नी होगी – सामन्तवादी नौकरशाही व्यवस्था से भी और पुराणपन्थी शासन की सहायता चाहने वाले उदार पूँजीवाद से भी।... हम चाहते हैं कि दूमा के मंच से समाजवादी जनतान्त्रिक मण्डली के सदस्यों की आवाज जोर से सुनाई दे, जो सर्वहारा के अन्तिम लक्ष्य की घोषणा करे, सन 1905 की सारी माँगें पूर्ण करने की घोषणा करे, रूसी मजदूर वर्ग को जन आन्दोलन का नेता घोषित करे, किसानों को मजदूर वर्ग का अत्यन्त विश्वसनीय सहायक घोषित करे और उदार मध्यवर्ग को जन स्वतन्त्रता के विश्वासघाती के तौर पर घोषित करे।

"चतुर्थ दूमा में समाजवादी जनतान्त्रिक गुट ऊपर के नारों के आधार पर अपने कामों में एकताबद्ध और घनिष्ठता से सम्बद्ध हो।

"विशाल जनता के साथ लगातार सम्बन्ध रखकर, शक्ति प्राप्त करे।

"वह रूस के मजदूर वर्ग के राजनीतिक संगठन के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर आगे बढ़ता चले।"

निस्सन्देह, आदेशपत्र ने भारी काम किया। निर्वाचन के परिणाम और आदेशपत्र के महत्व के बारे में 19 अक्टूबर 1912 के 'प्राव्दा' में 'क. स्त.' के हस्ताक्षर से स्तालिन ने लिखा था : "आदेशपत्र देपुतियों के लिए हिदायत है। आदेशपत्र देपुती को बनाता है। आदेशपत्र के गुणों पर देपुतियों के गुण निर्भर करते हैं।"

15 नवम्बर 1912 को चतुर्थ दूमा का उद्घाटन हुआ। राजधानी की बोल्शेविक कमेटी ने इस समय जारशाही और उसके पिट्ठओं की बातें बनाने और उत्सव मनाने के मुकाबले में, राजनीति प्रदर्शन संगठित किया। यह स्तालिन की सूझ का परिणाम था। पता लगने पर लेनिन ने लिखा : "प्रदर्शन के लिए बहुत ही अनुकूल समय चुना गया! काली दूमा (पार्लामेण्ट) के उद्घाटन के मुकाबले में राजधानी की सड़कों पर लाल झण्डों के प्रदर्शन करके सर्वहारा की एक अद्भुत सूझ का परिचय दिया गया!"

इस समय (सन 1912 में) स्तालिन का लेनिन के साथ पत्र-व्यवहार द्वारा लगातार सम्बन्ध था, लेकिन लेनिन उनसे मिलना चाहते थे। उन्होंने बाहर आने के लिए जोर दिया। स्तालिन जैसे क्रान्तिकारी के लिए जारशाही पुलिस से बचकर विदेश जाना आसान काम नहीं था। लेकिन, खुफियों की पाँत को चीरकर नवम्बर सन 1912 में वासिली (स्तालिन) ने क्राकाओं में जाकर, लेनिन से मुलाकात की। भावी कार्यक्रम के बारे में इतनी बातें और इतने निर्णय करने थे कि वह सभी पत्र-व्यवहार से नहीं हो सकते थे। सब काम कर लेने के बाद, जब दिसम्बर में स्तालिन रूस की ओर लौटने लगे, तो अपने अद्भुत शिष्य के जीवन को हर वक्त खतरे में देखकर लेनिन ने कोशिश की कि वह कुछ दिन और बाहर रहें। लेकिन वासिली को काम पुकार रहा था, उन्हें खतरे का भय कब रोक सकता था! भय क्या है इसे उन्होंने कभी जाना ही नहीं। लेनिन ने दूमा के छः बोल्शेविक देपुतियों को भी लेकर आने के लिए 23 दिसम्बर 1912 के पत्र में वासिली को लिखा था : "आओ हमें बड़ी चिन्ता हो रही है।" कुछ ही समय बाद, वासिली फिर क्राकाओं में भाग लिया। कांफ्रेंस ने वासिली को रूस की केन्द्रीय कमेटी के ब्यूरो का मेम्बर चुना। यद्यपि यह कांफ्रेंस सन 1912 में हुई थी, लेकिन इसे छिपाने के लिए फरवरी सन 1913 की कांफ्रेंस कहा गया।

जनवरी और फरवरी सन 1913 में वासिली रूस से बाहर रहे। इसी समय, उन्होंने जातीय प्रश्न पर बहुत सामग्री जमा करके लेख लिखना शुरू किया। लेनिन ने उनके इस काम के बारे में, एक पत्र में गोर्की को लिखा था : "एक अद्‌भुत गुर्जी जो यहाँ बैठा एक 'प्रोस्वेश्चेनिये' के लिए लेख लिख रहा है, उसने आस्ट्रियन तथा दूसरी सभी सामग्रियों को इकट्‌ठा कर लिया है।"

इसी अध्ययन और परिश्रम का परिणाम था – स्तालिन की पुस्तक 'मार्क्सवाद और जातीय समस्या', जो सदा सामन्तवाद और पूँजीवाद के लिए भयंकर सिरदर्द रही है। पिछले हजारों वर्षों के अपने इतिहास में, वे कोई हल नहीं निकाल पाये। उसी असम्भव काम को अब मार्क्सवाद सम्भव करने जा रहा था। मार्क्सवाद ने दिशा–निर्देशन किया। स्तालिन ने अपनी प्रतिभा और उनके जातियों के सम्मिलन स्थान – काकेशस की अपनी मातृभूमि के लम्बे तजर्बे से समस्या की रग को पहचाना, और उसका हल निकाला। दुनिया में कहीं भी यदि जातीय समस्या को हल करना होगा, तो स्तालिन के बतलाये हुए रास्ते से ही करना पड़ेगा। साठ–साठ, सत्तर–सत्तर जातियों का रूस क्यों एक ठोस पत्थर की चट्‌टान जैसा देश बन गया, जिससे टकराकर हिटलर और दूसरे साम्राज्यवादियों ने सिर्फ अपना सर–भर फोड़ा? इस हल का आधार था – जातीय शोषण का अन्त, पिछड़ी हुई जातियों को आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक तौर से अपने बराबर लाकर खड़ा करना, और उन पर पूर्ण विश्वास करते हुए, उनका अलग होने तक के अधिकार को स्वीकार करना।

अपने इस ग्रन्थ को समाप्त करने के बाद, वासिली पीटर्सबर्ग लौट आये। कितने ही दिनों तक लेनिन को जब उनका कुछ पता नहीं लगा, तो 8 मार्च 1913 के अपने एक पत्र में उन्होंने पूछा : "वासिली की क्यों कोई खबर नहीं मिल रही है? उसे क्या हुआ है? हमें बड़ी चिन्ता हो रही है।" दो ही दिन बाद, फिर लेनिन ने लिखा : "उसका बहुत ध्यान रखना। वह बहुत बीमार है।"

8. छठी गिरफ्तारी (फरवरी 1913)

मालीनोव्स्की पार्टी की केन्द्रीय समिति का सदस्य और दूमा में बोल्शेविक देपुती था, जो पुलिस से मिल गया था। दूसरी पार्टियों के लिए यह उतनी आश्चर्य की बात नही थी; लोभ के कारण खुफिया पुलिस और विदेशी शक्तियों के हाथ में खेलनेवाले पाये ही जाते हैं। लेकिन बोल्शेविक पार्टी उन पार्टियों की तरह नहीं थी। उसमें कड़ा अनुशासन था। तो भी, जारशाही मलीनोव्स्की को कुछ चाँदी के टुकड़ों पर विश्वासघाती बनाने में सफल हुई। 'प्राव्दा' में स्तालिन के अतिरिक्त, याकोफ (स्वेर्दलोफ) और मोतों (मोलोतोफ) भी सम्पादन का कार्य करते थे।

मालीनोव्स्की ने पहले भेद बतलाकर स्वेर्दलोफ को गिरफ्तार करवा दिया – यही स्वेर्दलोफ पीछे बोल्शेविक रूस का प्रथम राष्ट्रपति बना। मालीनोव्स्की ने थोड़े ही दिनों बाद, उस गुप्त स्थान का भी पता बतला दिया, जहाँ वासिली छिपकर काम करते थे। इस प्रकार 23 फरवरी 1913 को पुलिस पीटर्सबर्ग में उन्हें गिरफ्तार करने में सफल हुई। इस गिरफ्तारी के बारे में बद्येफ ने लिखा है :

"पुलिस बड़ी व्यग्रता के साथ गिरफ्तारी के लिए प्रतीक्षा कर रही थी कि कब वह सड़क पर आयें। जल्दी ही उसे ऐसा मौका मिल गया। 'प्राव्दा' और दूसरे क्रान्तिकारी कामों की सहायता के लिए, क्लशनिकोफ – हाल में एक संगीत मण्डली का अनुष्ठान किया गया था। ऐसी संगीत मण्डलियों में बड़ी संख्या में मजदूर और सहानुभूति रखने वाले बुद्धिजीवी उपस्थित हुआ करते थे। उनमें गुप्त रीति से काम करने वाले, पार्टी मेम्बर भी आते थे, क्योंकि ऐसी भीड़ में उन लोगों से मिलकर बातचीत की जा सकती थी, जिनके साथ खुले में मिलना खतरे से खाली नहीं था। स्तालिन ने क्लशनिकोफ हाल की संगीत मण्डली में ऐसे ही काम के लिए आने का निश्चय कर लिया था, जिसका पता मालीनोव्स्की को था। उस विश्वासघाती ने पुलिस विभाग को इसकी सूचना दे दी। हमारी आँखों के सामने ही, उसी साँझ को हाल के कमरे में स्तालिन गिरफ्तार कर लिये गये।"

इस प्रकार, छठी बार पुलिस ने स्तालिन को गिरफ्तार कर चार साल के लिए साइबेरिया के सुदूर स्थान तुरूखान्स्क में निर्वासित कर दिया। पहले उन्हें कोस्तिने की छोटी-सी बस्ती में रखा गया। लेकिन, फिर डर लगा कि वह कहीं केंचुल न बदल दें, इसलिए उन्हें वहाँ से हटाकर और उत्तर में कूरेइका बस्ती में रख दिया गया, जो कि ध्रुवकक्षीय रेखा के बिल्कुल किनारे पर थी। इस समय पुलिस की कड़ाई बहुत अधिक थी। जारशाही और दूसरी साम्राज्यवादी शक्तियाँ प्रथम महायुद्ध की तैयारियाँ कर रही थीं। इसके कारण, पुलिस ऐसा मौका नहीं देना चाहती थी कि स्तालिन फिर ऐसे मौके से लाभ उठाकर क्रान्ति की आग भड़काने के लिए मुक्त हो जायें।

साथी स्तालिन 2 जुलाई 1913 को निर्वासित हुए थे, और तब से 8 मार्च 1917 तक उन्हें तुर्खन के इलाके में ही निर्वासित बन्दी का जीवन बिताना पड़ा। लेकिन, ध्रुवकक्षा के इस सुदूर स्थान में रहते हुए भी, स्तालिन चुपचाप नहीं रह सकते थे। अगले ही साल सितम्बर सन 1914 में, प्रथम महायुद्ध घोषित हो गया और घमासान लड़ाई शुरू हो गयी। द्वितीय इण्टरनेशनल (सुधारवादी समाजवादियों की अन्तरराष्ट्रीय संस्था) के धनी-धोरियों ने तुरन्त अपने देश के पूँजीवादियों का साथ देते हुए युद्ध का समर्थन किया, लेकिन लेनिन साम्राज्यवादियों के बाजारों

और उपनिवेशों की नोच-खसोट के लिए होने वाली इस लड़ाई में शामिल होना, सर्वहारा वर्ग के साथ विश्वासघात समझते थे। उन्होंने तुरन्त बिना कुछ आगा-पीछा सोचे, साम्राज्यवादी युद्ध के विरुद्ध संघर्ष करने की घोषणा की। अभी स्तालिन का लेनिन के साथ पत्र-व्यवहार द्वारा सम्बन्ध स्थापित नहीं हो पाया था, और न पार्टी केन्द्र से ही कोई सम्बन्ध था, लेकिन सच्ची मार्क्सवादी अन्तरराष्ट्रीय दृष्टि होने के कारण कूरेइका में रहते हुए भी स्तालिन को अपना कर्तव्य वही सूझा, जिसे कि लेनिन ने दुनिया के सर्वहारा के सामने रखा था। उनका मार्क्सवाद का ज्ञान उथला होता, तो द्वितीय इण्टरनेशनल वालों की तरह पथ-भ्रष्ट होने की सम्भावना होती।

कूरेइका में भी आखिर मनुष्य रहते ही थे और सभी बन्दी या निर्वासित नहीं थे। उनमें भी गरीबों और सर्वहाराओं की संख्या अधिक थी, जिनकी श्रद्धा और सहानुभूति स्तालिन को हमेशा मिला करती थी। उन्होंने बाहरी दुनिया से फिर सम्बन्ध स्थापित कर लिया। लेनिन के साथ चिट्ठी-पत्री होने लगी। सन 1915 में मोनास्तिर्स्कोये गाँव में बोल्शेविकों की एक सभा में उन्होंने व्याख्यान दिया। गुप्तचर मालीनोव्स्की के अतिरिक्त, पाँच और बोल्शेविक देपुती चतुर्थ राज्य दूमा के सदस्य थे, जिन पर जारशाही ने राजद्रोह का मुकदमा चलाया था। कामेनेफ ने उस समय उनके साथ विश्वासघात किया, जिसकी स्तालिन ने इस मीटिंग में बड़ी कड़ी आलोचना की थी।

बोल्शेविकों ने इसी समय 'वोप्रोसिस्त्रखोवानिया' (बीमा के प्रश्न) के नाम से एक पत्रिका निकाली, जो वैधानिक तौर से खुलेआम प्रकाशित होती थी। बोल्शेविक वैधानिक और अवैधानिक दोनों ही तरह के पत्रों का होना उसी तरह आवश्यक समझते थे, जिस तरह कि गुप्त क्रान्तिकारी संस्थाओं को रखते हुए वह साथ-साथ पार्लामेण्ट में भी अपने प्रतिनिधि भेजते थे। वह अपने कार्य और प्रचार के सुभीते के किसी भी साधन को हाथ से जाने देने के लिए तैयार नहीं थे। इस पत्रिका का उद्देश्य था : 'पेतरेस्सोफ, लेवेच्की और प्लेखानोफ जैसे 'भद्रपुरुषों के अन्तरराष्ट्रीयतावादी सिद्धान्तों के विरुद्ध विचारों को फैलाना, देश के मजदूर वर्ग के खिलाफ भ्रष्टाचारपूर्ण वक्तव्यों व अन्तरराष्ट्रीयतावादी सिद्धान्तों के विरुद्ध कही जाने वाली बातों के खिलाफ देश के मजदूर वर्ग के विचार-सम्बन्धी बीमा को सुरक्षित रखने के लिए अपने सारे प्रयत्नों और शक्तियों को लगाना।

अपने सम्पादकों की गिरफ्तारी के बाद, फरवरी सन 1915 में यह पत्रिका कुछ दिनों बन्द रहकर फिर से निकलने लगी। पत्रिका जहाँ अपने को कानूनी प्रहार से बचाते हुए बोल्शेविकों की विचारधारा और कार्यनीति का प्रचार करती थी तथा विरोधियों का मुँहतोड़ जवाब देती थी, वहाँ इसके सम्पादकीय विभाग

ने मोलोतोफ के नेतृत्व में पार्टी के एक खुले केन्द्र का काम करना शुरू किया था। सरकारी सेंसर पत्रिका की एक-एक लाइन को देखता, लेकिन जितने अंश को वह काट देता था, उसे पत्रिका में सादा ही छोड़ दिया जाता था। जब स्तालिन को इसका पहला अंक मिला, तो उन्होंने तुरन्त निर्वासितों से चन्दा करके छह रूबल पचासी कोपेक सम्पादक के पास भेजते हुए, तुरखान्स्क के बोल्शेविकों की तरफ से एक पत्र लिखा था, जिस पर स्तालिन, अ. मस्लेन्निकोफ (जिसे पीछे कोलचक ने गोली मरवा दी), स्पन्दर्यान बेरा, श्वाहजैर आदि के हस्ताक्षर थे। उसकी कुछ पंक्तियाँ थीं :

"प्रिय साथियो, तुरखान्स्क के निर्वासितों की एक टुकड़ी 'वोप्रोसिस्त्रखोवानिया' के फिर से प्रकाशन का बड़ी प्रसन्नता के साथ स्वागत करती है। आज के समय में जब कि रूस में कमकर समूह की सार्वजनिक राय को इस तरह जान-बूझकर गलत समझाया जाता है, और जब कि अ. गुच्कोफ और प. रयाबुशिन्स्की की सक्रिय सहायता से सच्चे कमकर प्रतिनिधियों को सामने नहीं आने दिया जाता, इस तरह की एक सच्ची मजदूर पत्रिका को देखना और पढ़ना आनन्द की बात है।"

स्तालिन इसको बड़ा आवश्यक समझते थे कि मैदान खाली देखकर मेंशेविक अपने झूठे समाजवाद की आड़ में कमकरों को बहकाने में सफल न हो सकें।

स्तालिन का कूरेइका का जीवन किस तरह का था, यह एक दूसरी निर्वासिता वेरा श्वाइजेर के संस्मरणों से मालूम होता है। वेरा ने लिखा था :

"जाड़ों (सन 1913) के दिनों में, पुलिस को जानने का मौका दिये बिना सूरेन स्पन्दयोन के साथ मैंने कूरेइका गाँव में स्तालिन से मिलने के लिए यात्रा की। दूमा के बोल्शेविक सदस्यों पर उस समय मुकदमा चल रहा था और कई दूसरी भी पार्टी-सम्बन्धी बातें थीं, जिनके बारे में फैसला करने के लिए हमने स्तालिन से मिलना आवश्यक समझा था। जाड़े के दिनों में यहाँ कितने ही हफ्तों तक रात और दिन एक हो जाते थे, और हद दर्जे की जाड़े-पाले वाली रात में यह सफर करना था। हम बिना पहियेवाली, कुत्ते की गाड़ी लेकर रास्ते में बिना रुके, जमी हुई येनिसेई नदी के नीचे की ओर चलते हुए मोनास्तिस्कोंये और कूरेइका के बीच के दो सौ किलोमीटर की हिमाच्छादित निर्जन भूमि को ऐसे समय पार कर रहे थे, जबकि भेड़ियों की गुर्राहट बराबर हमारा पीछा कर रही थी।

"हम कूरेइका में पहुँचे और उस झोपड़ी को खोजने लगे, जिसमें साथी स्तालिन रहते थे, गाँव में पन्द्रह झोंपड़े थे, जिसमें वह सबसे अधिक गरीबी का था - एक बाहरी कोठरी, एक रसोईघर, जिसमें अपने परिवार के साथ घर का

मालिक रहता था – इन दोनों के अतिरिक्त एक और कोठरी थी, जिसमें साथी स्तालिन थे। और बस!

"हमारे अप्रत्याशित आगमन के साथी स्तालिन बहुत प्रसन्न हुए और ध्रुवकक्षीय यात्रियों को आराम देने के लिए जो कुछ हो सकता था, वह उन्होंने किया। पहला काम जो उन्होंने किया, वह था येनिसेइ की ओर दौड़ जाना, जहाँ पर कि उन्होंने बर्फ में छेद करके मछलियों के लिए बंसी लगा रखी थी। कुछ ही मिनटों के बाद, अपने कन्धे पर एक विशाल मछली उठाये हुए वह लौट आये। उस 'सिद्धहस्त मछुए' की देख-रेख में, हमने बहुत जल्दी मछली काट-कूटकर तैयार की और उसके कुछ भाग को निकालकर शोरबा तैयार किया। जिस वक्त यह पाकशास्त्र का चमत्कार दिखलाया जा रहा था, उसी समय हम पार्टी के कामों के बारे में गम्भीरतापूर्वक वार्तालाप करते रहे। स्तालिन के कर्मठ दिमाग की गन्ध उस कोठरी के सारे वातावरण से आ रही है। साथ ही अपने चारों ओर की वास्तविकता से उस दिमाग को क्षण-भर के लिए भी अलग नहीं किया जा सकता था। उनकी मेज पर पुस्तकों और अखबारों के बड़े-बड़े बण्डलों का ढेर लगा हुआ था। एक कोने में मछुवे और शिकारी के सामान रखे थे, जिन्हें स्तालिन ने स्वयं बनाया था।"

महायुद्ध के समय लेनिन और स्तालिन एक-दूसरे से हजारों मील दूर थे और दुनिया के एक छोर पर बसे, इस गाँव में अखबार मुश्किल से पहुँचते थे। डाक कभी-कभी दो-तीन महीनों की एक ही साथ आती थी। लेनिन के पास पत्रों के जाने में इतना पेचीदा रास्ता और साधन इस्तेमाल करना पड़ता था कि स्तालिन के बहुत कम पत्र पहुँच पाते थे। सन 1914 के अन्त में ही, स्तालिन को महायुद्ध के बारे में लेनिन के निबन्ध के पहले मसौदे से परिचय प्राप्त करने का मौका मिल सका। वेरा ने अपने संस्मरण में लिखा है :

"हमारे निर्वासित जीवन में यह बड़ा ही उत्तेजक क्षण था, जब कि लेनिन की हिदायतें हमारे पास पहुँची। तुरखान्स्क के लिए निर्वासित होकर जाते समय कास्नोयार्स्क में, युद्ध पर लेनिन के निबन्ध का पहला मसौदा मुझे मिला। वह एक गुप्त पते पर पहुँचकर मेरे पास आया था, जिस पते पर कि नादेज्दा कान्स्तान्तिनोव्ना (क्रुप्सकाया) लेनिन के पत्रों को भेजा करती थी। मैंने इन निबन्धों को साथी स्तालिन को दिया, जो उस समय सूरेन स्पन्दर्यान के साथ मोनास्तिर्स्कोये गाँव में रहते थे। लेनिन के युद्ध पर लिखे सात निबन्धों ने हमें बतलाया कि साथी स्तालिन इस जाटिल ऐतिहासिक स्थिति के मूल्यांकन में ठीक लेनिनीय निर्णय पर पहुँचे थे। साथी स्तालिन लेनिन के निबन्धों को पढ़ते समय जिस आनन्द, दृढ़विश्वास और सफलता की भावना का अनुभव कर रहे

थे, उसका वर्णन करना मुश्किल है।"

स्तालिन और स्पन्दयोन ने उस समय जो पत्र लेनिन के पास भेजे थे, उनमें से एक अब भी सुरक्षित है। इस पत्र में उन्होंने प्लेखानोफ, क्रोपोत्किन और फ्रेंच समाजवादी मन्त्री सर्वत को उनके रवैये पर बहुत फटकारा है। तुरूखान्स्क इलाके में ही याकोब स्वेर्दलोफ को भी निर्वासित किया गया था और वहाँ के सभी बोल्शेविक निर्वासित बहुधा आपस में मिला करते थे। यहाँ स्तालिन का जीवन अधिकतर पुस्तकों के अध्ययन तथा पार्टी के कामों पर विचार-विनिमय करने आदि में ही बीतता था। इसके अतिरिक्त, जीविका को थोड़ा और बहुविध बनाने के लिए वह मछली मारने और शिकार करने भी जाया करते थे।

लड़ाई चलते दो साल से अधिक हो गये थे। सन 1916 के दिसम्बर में, जारशाही ने अनिवार्य सैनिक सेवा का नियम सैनिक आयु के निर्वासितों पर भी लागू किया और उसके लिए स्तालिन को क्रास्नोयार्स्क भेज दिया गया। लेकिन, ऊपर के अधिकारियों को अपनी गलती तुरन्त मालूम हो गयी कि ऐसे खतरनाक क्रान्तिकारियों की सेना में भेजना भारी मूढ़ता होगी। इसीलिए, उन्होंने स्तालिन को सेना में न भेजकर अपने बाकी निर्वासन के समय को काटने के लिए अचिन्स्क में भेज दिया।

जब युद्ध घोषित हुआ, उस समय लेनिन गलीसिया में थे। पकड़े जाने के डर से, वह वहाँ से तटस्थ देश स्विट्जरलैण्ड में चले गये, जहाँ उन्होंने 'सोत्सियल देमोक्रात' (समाजवादी जनतन्त्री) के नाम से रूसी बोल्शेविक पार्टी का मुखपत्र निकालना शुरू किया। इसी पत्र में लेनिन ने 'धारा के विरुद्ध' के नाम से कई लेख लिखे, जिनमें युद्ध के बारे में अपने विचार रखे थे और हासे, कॉत्सकी, प्लेखानोफ जैसे युद्ध - समर्थक नामधारी समाजवादियों की खूब खबर ली थी। आस्ट्रिया और जर्मनी में भी प्रथम विश्वयुद्ध के समय समाजवादी क्रान्ति के लिए वैसा ही अवसर मिला था, जैसा रूस में, लेनिन नकली समाजवादी क्रान्ति लाने के लिए थोड़े ही हैं, उनका काम तो क्रान्ति के साथ विश्वासघात करके गाढ़े वक्त में पूँजीवाद के लिए ढाल बनना ही है। कगानोविच ने स्तालिन के बारे में कहा था :

"वह पुराने बोल्शेविकों में एक विशेष धातु के बने हैं। स्तालिन के सभी राजनीतिक कार्यकलापों में एक अत्यन्त उल्लेखनीय तथा बहुत ही महत्वपूर्ण बात जो पायी जाती है, वह यही है कि वह कभी लेनिन से दूर नहीं गये - न दक्षिण और न चरम वामपन्थ की ओर।"

अध्याय - पाँच

क्रान्ति और प्रतिक्रान्ति (सन 1917–21)

1. फरवरी क्रान्ति

सन 1917 में क्रान्ति का आरम्भ हुआ। औद्योगिक तौर से बहुत ही पिछड़े तथा जर्मन आक्रमणों के मुख्य लक्ष्य बने हुए रूस की हालत तीन वर्षों से ज्यादा लगातार लड़ते–लड़ते बहुत बुरी हो गयी थी। युद्ध–क्षेत्र में हार पर हार हो रही थी। इस्तेमाल के लिए काफी हथियार न पाने और अपने नालायक अफसरों के कारण सैनिक दुर्गति में पड़े हुए थे। उनमें जारशाही के प्रति भारी असन्तोष पैदा होना स्वाभाविक था। दूसरी ओर, देश में चारों ओर अभाव ही अभाव दिखायी पड़ता था। जनवरी से ही, इसके विरोध में हड़तालें होने लगीं। 6 जनवरी 1905 को जारशाही ने गोलियों की वर्षा करके इतवार के दिन खून की होली खेली थी। उसी की स्मृति में जनवरी के प्रथम हफ्ते में जबर्दस्त हड़तालें हुईं; जो कम होने की जगह बढ़ती और फैलती गयीं। मजदूरों के प्रदर्शनो में अब सैनिक और नौसैनिक भी भाग लेने लगे। 27 फरवरी को जब जारशाही ने गोली चलाने का हुक्म दिया, तो सैनिकों ने मजदूरों पर गोली छोड़ने से इन्कार कर दिया और वह सरकार का साथ छोड़कर जनता की ओर जाने लगे। आखिर बन्दूकें ही तो शासकों की रक्षा करती हैं। जब वही विरोधियों का साथ देने लगीं, तो जारशाही के भले दिनों की क्या आशा हो सकती थी? जारशाही के हाथ से एक–एक करके रक्षा के सभी साधन निकलने लगे। फिर धोखाधड़ी से काम लेते हुए, जार और उसके पिट्ठुओं ने अपने को बचाने की कोशिश की, लेकिन अब तो चिड़ियाँ खेत चुग चुकी थीं! मजदूर जारशाही को उखाड़ फेंकने में सबसे आगे थे। वर्दीधारी किसान सैनिक तथा दूसरे शोषित–उत्पीड़ित उनका साथ देने के लिए तैयार थे। जार की नैया डाँवाँडोल देखकर, मध्यमवर्ग ने अपना काम बनाना चाहा। फरवरी में जार को इस्तीफा देकर, रोमनोफ वंश का खात्मा करने के लिए

मजबूर होना पड़ा। सरकार की बागडोर पहले राजुल लबोफ और फिर वकील केरेन्स्की ने सँभाली। नयी सरकार भी समाजवादी क्रान्ति के लिए तैयार नहीं थी, लेकिन उसे जार की जगह पर बैठानेवाली तो साधारण मजदूर-किसान जनता ही थी, इसलिए जारशाही की तरह, हर बात में वह मनमानी कैसे कर सकती थी? मध्यमवर्गीय जनतान्त्रिक क्रान्ति के होने का फल यह हुआ कि राजबन्दियों के लिए कैदखानों के दरवाजे खुल गये। राजनीतिक निर्वासित मुक्त हो गये। अब तक गुप्त रहकर काम करनेवाली बोल्शेविक पार्टी खुलेआम काम करने लगी। चारों तरफ अखबारों और भाषण की स्वतन्त्रता की बाढ़ आ गयी।

मध्यवर्ग ने शासन की बागडोर हाथ में सँभालते हुए निश्चय किया था कि पीतर के अनुवांशिक शासन को हटाकर, उसकी जगह जनतान्त्रिकता का दम भरनेवाले मध्यमवर्ग की सरकार स्थापित कर दी जाये; और दूसरे पूँजीवादी देशों की तरह, रूस में भी उनके ही वर्ग के दो-तीन दल हों, जो मतदाताओं को बारी-बारी से बेवकूफ बनाकर, जनतन्त्रता के नाम पर जनता-विरोधी कामों के लिए शासन सँभालते रहें। सम्राट, कैसर या जार की जगह पर प्रेसीडेण्ट और सिंहासन की जगह एक आरामकुर्सी रख दी जाये। राज-लाँछनों को कहीं-कहीं इमारतों, वर्दियों और तमगों से मिटा देने, झण्डे और डाकखाने की टिकटों में हल्के से परिवर्तन करने; कुछ थोड़े से व्यक्तियों की अदला-बदली के सिवाय, वह उसी पुराने आर्थिक-सामाजिक ढाँचे को बनाये रखना चाहते थे। स्तालिन के शब्दों में :

"संक्षेप में मध्यवर्गीय क्रान्ति का मुख्य काम शक्ति को हथियाना और उसे विद्यमान मध्यवर्गीय आर्थिक व्यवस्था के अनुसार बनाना था; जबकि सर्वहारा क्रान्ति का मुख्य काम अधिकार हाथ में करने के बाद, एक नयी समाजवादी आर्थिक व्यवस्था का निर्माण करना है।"

और जगहों की तरह, रूस में भी मध्यवर्गीय क्रान्ति ने चाहा था कि सर्वहारा की सभी कुर्बानियों और आशाओं पर पानी फेर दे।

अचिन्स्क में स्तालिन को भेजने वाले खत्म हो चुके थे, इसलिए, उन्हें साइबेरिया में रोक रखने वाला कौन था? 12 मार्च 1917 को स्तालिन चुपचाप पेत्रोग्राद पहुँच गये। जर्मनी आक्रमण के कारण, उसके प्रति अपनी घृणा को व्यक्त करने के लिए इसी लड़ाई के दौरान में पीटर्सबर्ग का नाम जर्मन शब्द बुर्ग हटाकर, रूसी शब्द ग्राद जोड़कर पेत्रोग्राद कर दिया गया था। स्तालिन को स्वागत और प्रदर्शन की आवश्यकता नहीं थी। उन्हें सदा से चुपचाप ठोस काम करने की आदत रही है। प्रत्रोग्राद पहुँचते ही, वह पार्टी के काम में लग गये। उस समय की असाधारण स्थिति में क्षण-क्षण जो नयी समस्याएँ सामने आती थीं, उनका

हल ढूँढ़ निकालना स्तालिन के ही जिम्मे था। रोमनोफ वंश के खत्म होने के बाद, जो शासन उसका स्थान लेनेवाला था उसका क्या रूप होना चाहिए, यह सबसे अहम बात थी। कौन–सा वर्ग अपने हाथ में सरकार की बागडोर ले? समाजवादी क्रान्तिकारियों और मेंशेविकों ने मध्यवर्ग का साथ दिया था, इसलिए अस्थायी सरकार में पूँजीवादियों का बोलबाला था। लेकिन, दूसरी ओर जारशाही के खिलाफ जो असन्तोष के जबर्दस्त प्रदर्शन हो रहे थे और जिनमें देश की सर्वहारा तथा पीड़ित जनता विद्रोह के लिए खड़ी हो गयी थी, वह कोई असंगठित अव्यवस्थित भीड़ नहीं थी। सन 1905 की क्रान्ति के तजर्बे से फायदा उठाकर, मजदूरों और कमकरों के देपुतियों की सोवियतें जगह–जगह संगठित होकर, सभी कामों को सुव्यवस्थित रूप से कर रही थीं। यह बोल्शेविकों की ही दूरदर्शिता का परिणाम था कि उन्हें बारह वर्ष पहले ही पुराने शासन–यन्त्र का स्थान लेने वाले एक नये शासन–यन्त्र का अविष्कार कर लिया था। ये सोवियतें अब हर जगह तुरन्त संगठित हो रही थीं। दाल–भात में मूसरचन्द की कहावत के अनुसार, सर्वहारा और जारशाही के संघर्ष के भीतर घुसकर, मध्यवर्गी क्रान्ति–विरोधियों को लाभ उठाने का मौका बोल्शेविक कैसे दे सकते थे? स्तालिन ने 14 मार्च 1917 के 'प्राव्दा' में 'मजदूर–सैनिक देपुतियों की सोवियतें' के नाम से एक लेख लिखा, जिसमें उन्होंने फौरी कामों के बारे में बतलाया था : "पुरानी शक्तियों को खत्म कर डालने के लिए, जीते हुए अधिकारी को हाथ में रखना तथा प्रदेशों से मिलकर रूसी क्रान्ति को और आगे बढ़ाना।..." स्तालिन ने क्रान्ति की आधारभूत शक्ति के बारे में भी यह बतलाया था। "रूसी क्रान्ति का बल मजदूरों और वर्दी पहने सैनिकों के रूप में किसानों की मैत्री पर निर्भर करता है।" स्तालिन ने मजदूरों और सैनिकों की सोवियतों (पंचायतों) को और भी व्यापक बनाने तथा मजदूर और सैनिक देपुतियों की केन्द्रीय सोवियत के तत्वाधान में जनता की क्रान्तिकारी शक्ति के स्वरूप को बनाने के लिए कहा; और यह भी कि "क्रान्तिकारी समाजवादी जनतान्त्रियों को इसी दिशा में काम करना होगा।"

इस समय, जनता के सामने सबसे बड़ा प्रश्न था – युद्ध के सम्बन्ध में दो टूक फैसला करना, उसे बन्द करना। 16 मार्च 1917 के 'प्राव्दा' में युद्ध के नाम से एक लेख में स्तालिन ने कहा :

"हमारे लिए यह जरूरी है कि साम्राज्यवादियों का नकाब फाड़ दिया जाये। जनता को बतलाया जाये कि इस युद्ध के पीछे असल बात क्या है। इसका अर्थ है – युद्ध के खिलाफ वास्तविक युद्ध घोषित करना; इसका अर्थ है – वर्तमान युद्ध के और आगे चलाने को असम्भव कर देना।"

रूस बहुजातीय राज्य था। क्रान्ति की देहरी पर पहुँचकर, स्तालिन सभी

जातियों को एकताबद्ध रखने का ख़याल कैसे छोड़ सकते थे? इसीलिए 25 मार्च 1917 के 'प्राव्दा' में उन्होंने 'जातीय अयोग्यताओं को खत्म करना' लेख लिखते हुए कहा कि यह अत्यावश्यक है कि आज उत्पीड़न से मुक्त हुई जातियों के अधिकारों को तुरन्त स्थापित किया जाये; इस अधिकार को कानून की शक्ति प्रदान की जाये। उन्होंने इस लेख में जोर देकर कहा कि जातियों को आत्म-निर्णय का अधिकार मिलना चाहिए, जिसमें उनको अपने राज्य बनाने का हक भी होना चाहिए।

स्तालिन के नेतृत्व में जिस वक्त बोल्शेविक इस तरह क्रान्ति को आगे बढ़ाने की कोशिश कर रहे थे, उसी समय मेंशेविक और समाजवादी क्रान्तिकारी पूँजीपतियों और जमींदारों के पुराने शोषण को अक्षुण्ण रखने की कोशिश कर रहे थे। सर्वहारा को धोखा देने के लिए दुनिया के सभी प्रतिगामियों का बड़ा हथियार है – सुधारों की भूलभुलैया में डालकर समय गुजारना। रूसी मेंशेविक और समाजवादी-क्रान्तिकारी भी किसानों को समझाने-बुझाने की कोशिश कर रहे थे कि तुम अपनी समस्याओं को तुरन्त हल करने की माँग न करो, संविधान-सभा के बनने की प्रतीक्षा करो। वह जानते ही थे कि संविधान-सभा को कब बुलाना चाहिए, या नहीं ही बुलाना चाहिए, यह उन्हीं के हाथ है; जब प्रतीक्षा करते-करते जनता का जोश धीमा पड़ जायेगा, तो फिर वह जैसा चाहेंगे वैसा करने लगेंगे। लेकिन जनता के हित-समर्थक बोल्शेविक इतने भोले नहीं थे। वह जनता के अधिकार की माँग को खटाई में पड़ने देने के लिए तैयार नहीं थे। लेनिन के पेत्रोग्राद पहुँचने के ग्यारह दिन बाद 14 अप्रैल 1917 के 'प्राव्दा' में 'जमीन किसानों को' के नाम से स्तालिन ने एक लेख लिखा कि इस धोखे में नहीं पड़ना चाहिए। उन्होंने समाजवादी, क्रान्तिकारी, मेंशेविक और कादेत (प्रतिगामी सुधारवादियों) का भण्डाफोड़ करते हुए बतलाया :

"उन्हें तब तक किसानों की क्या परवाह है, जब तक कि जमींदार मौज उड़ा रहे हैं। इसीलिए, हम रूस के किसानों, सभी गरीब किसानों को पुकारकर कहते हैं कि लक्ष्य को अपने हाथ में लो; उसे आगे बढ़ाओ।

"हम उससे पुकारकर कहते हैं कि जिलों, देहाती इलाकों आदि की क्रान्तिकारी किसान-कमेटियाँ संगठित करो। इन कमेटियों द्वारा जमींदारियों पर अधिकार करो और किसी हुक्म का इन्तजार किये बिना, संगठित ढंग से उन्हें जोतना-बोना शुरू करो।

"हम उनसे पुकारकर कहते हैं कि जरा भी देर किये बिना, संविधान-सभा की प्रतीक्षा किये बिना, और प्रतिगामी मैत्रियों की मंसूखी की आज्ञा की ओर बिल्कुल ध्यान दिये बिना, देर किये बिना इस काम को करें, क्योंकि यह चीजें

क्रान्ति के चक्के के रास्ते में बाधाओं के सिवा और कुछ नहीं हैं।"

लेनिन के रूस में आने के पहले, किसानों और मजदूरों के सामने जो सबसे जबर्दस्त समस्याएँ खड़ी हुईं, स्तालिन ने ठीक समय पर उनका हल सामने रख दिया था। मेंशेविकों, समाजवादी क्रान्तिकारियों और कादेतों की छीछालेदर हो रही थी। अपनी लीडरी को हाथ से जाते देखकर, वे दाँत पीस रहे थे। पार्टी में भी कामेनोफ जैसे कुछ बुजदिल थे। लेकिन, स्तालिन के सामने उनकी क्या चल सकती थी?

2. लेनिन की वापसी

अन्त में, 3 अप्रैल का दिन आया। पश्चिमी साम्राज्यवादियों ने लेनिन के स्विट्जरलैण्ड से लौटने में हर तरह की रुकावटें डालीं। फ्रांस और इंग्लैण्ड लेनिन की शक्ति और प्रभाव को जानते थे और यह भी जानते थे कि वह साम्राज्यवादी युद्ध के बिल्कुल विरुद्ध हैं। अब तक उन्हें लाखों की संख्या में बहुत आसानी से रूसी किसान, युद्ध की बलि के बकरे मिल जाते थे। और, जार की जगर पर जो सरकार आयी थी, उसने भी पूरा विश्वास दिया था कि जार का सिंहासन च्युत होना तो एक घरू काम था, जहाँ तक लड़ाई का सवाल है, उसमें वह तब भी पश्चिमी मित्रों के साथ थे। जर्मनी भी लेनिन के क्रान्तिकारी विचारों के साथ सहानुभूति नहीं रख सकता था, लेकिन वह जानता था कि लेनिन के रूस में पहुँच जाने पर उनके दुश्मनों को रूसी मदद नहीं मिलेगी। रूस और दूसरे देशों में लड़ाई के कारण जो असन्तोष फैला हुआ था, उसका प्रभाव जर्मनी में भी मौजूद था, इसलिए जर्मन यह पसन्द नहीं करते थे कि लेनिन उनके देश से खुल्लमखुल्ला गुजरते हुए रूस जायें। इसलिए उन्होंने लेनिन के सामने यह शर्त रखी कि एक बन्द डिब्बे में बिना किसी से मिले-जुले या उतरे, रूस जाने के लिए तैयार हों, तभी जर्मनी से जाने की इजाजत दे सकते हैं। लेनिन कोई हवाई क्रान्तिकारी नहीं थे। उन्हें क्रान्ति के लिए पैर रखने की एक उपयुक्त जगह चाहिए थी, और वह था – अपना देश रूस। उन्हें वहाँ पहुँचने की जल्दी थी, इसलिए जर्मनों की शर्त मानकर, वह ट्रेन में बैठ रूस के लिए रवाना हो गये।

एक लम्बे अर्से के निर्वासन के बाद, 3 अप्रैल 1917 को लेनिन रूस पहुँचे। लेनिन के आने की खबर पेत्रोग्राद के अग्रगामी कमकरों को तुरन्त मिल गयी और स्तालिन के साथ, उनके नेता लेनिन का स्वागत करने के लिए राजधानी से बाहर वेलो ओस्त्रोफ पहुँचे। क्रान्ति के दो महान नेता, गुरु और शिष्य, आज एक-दूसरे से ऐसे समय मिल रहे थे, जब उनके जीवन का ध्येय पूरा होने वाला था। पेत्रोग्राद के रास्ते में, ट्रेन पर बैठे-बैठे स्तालिन ने लेनिन को देश और पार्टी की सारी

अवस्था तथा क्रान्ति की प्रगति बतलायी। लेनिन अद्‌भुत प्रतिभा के धनी पुरुष थे। स्विट्जरलैण्ड में रहते हुए भी, वह रूस की खबरों से अपने को वंचित नहीं रखते थे, और थोड़ी-थोड़ी बातों से भी असली तत्व को पकड़ लेना उनके बायें हाथ का खेल था। मॉस्को के फिनलैण्ड स्टेशन पर, जनता की अपार भीड़ ने अपने प्रिय नेता का स्वागत किया और उनके व्याख्यान के एक-एक शब्द को ध्यान से सुना। अगले ही दिन (4 अप्रैल) को एक कांफ्रेंस हुई, जिसमें उन्होंने अपने प्रसिद्ध 'अप्रैल-निबन्ध' को रखा, जिसका भाव था - सोवियतों द्वारा राज-शक्ति पर अधिकार करने की योजना। बुजदिल, ढुलमुलयकीन, नामनिहादी क्रान्तिकारी इससे घबरा उठे। वह कब क्रान्ति के लिए सर्वस्व की बाजी लगाने के लिए तैयार हो सकते थे? लेकिन? लेनिन वह लक्ष्य-वेधी धनुर्धर थे, जो अच्छी तरह समझते थे कि समय का महत्व भी भारी होता है। एक बार चूक जाने पर फिर मौका बार-बार हाथ नहीं आता। स्तालिन और दूसरे बोल्शेविक लेनिन के साथ थे। स्तालिन ने बाद में 8 जून 1926 को तिफलिस में रेलवे कमकरों की सभा में इसके बारे में बतलाया था :

"अन्त में, मुझे सन 1917 याद आता है, जब कि पार्टी की इच्छानुसार एक जेल से दूसरे जेल में बन्दी होते हुए एक-जगह से दूसरी जगह निर्वासित होकर घूमते हुए, मैं लेनिनग्राद भेजा गया। वहाँ रूसी कमकरों के बीच, सभी देशों के सर्वहारा के महान गुरु साथी लेनिन की समीपता में सर्वहाराओं और बुर्जुआ वर्ग के बीच होते भयंकर संघर्ष के बीच, साम्राज्यवादी युद्ध के मध्य, मैंने पहली बार यह सीखा कि मजदूर वर्ग की एक महान पार्टी का नेता होना क्या अर्थ रखता है। वहाँ उत्पीड़ित जनता के मुक्तिदाता और सभी जातियों से सर्वहाराओं के संघर्ष की हरावल सेना - रूसी कमकरों - के बीच मुझे तीसरा क्रान्तिकारी अग्नि-अभिषेक मिला। वहाँ लेनिन के पथ-प्रदर्शन में मैं क्रान्ति की कला में सिद्धहस्त हुआ।"

लेनिन के साथ, स्तालिन ने पेत्रोग्राद सोवियत की कार्यकारिणी कमेटी की बैठक में भाग लिया। अखिल रूसी मजदूर-सैनिक - देपुती-सोवियत कांफ्रेंस के संचालन में स्तालिन ने लेनिन का हाथ बँटाया। केन्द्रीय कमेटी के सदस्य के तौर पर, लेनिन के दाहिने हाथ की तरह, स्तालिन ने पार्टी के केन्द्रीय मुखपत्र 'प्राव्दा' का संचालन किया। अब से 'प्राव्दा' में बारी-बारी से लेनिन और स्तालिन के लेख निकलने लगे, जिन्होंने क्रान्ति के मार्ग को प्रशस्त किया। बोल्शेविकों की अप्रैल कांफ्रेंस में, स्तालिन ने जातीय समस्या पर अपनी रिपोर्ट दी और जातियों के आत्म-निर्णय के अधिकार को स्वीकार करने पर जोर दिया। इस कांफ्रेंस में जातियों को अधिकार देने के विरोधी सदस्यों को मुँहतोड़ जवाब देते हुए, स्तालिन

ने यह भी कहा था :

"इस प्रकार, जातीय प्रश्नों के बारे में हमारे विचारों को निम्न रूपों में रखा जा सकता है – 1. जातियों के राज्य से अलग होने के अधिकार को स्वीकार करना। 2. किसी राज्य के भीतर रहने के लिए तैयार जातियों को स्थानीय स्वायत्त-शासन देना। 3. अल्पसंख्यक जातियों के विकास को उन्मुक्त रखने की गारण्टी देते हुए, विशेष कानून बनाना। 4. किसी राज्य की सभी जातियों के सर्वहारों के लिए एक अकेली, अविभाज्य सर्वहारा जमात, एक अकेली पार्टी का होना।"

मई, सन 1917 में, केन्द्रीय कमेटी का एक राजनीतिक ब्यूरो संगठित किया गया। स्तालिन इसके सदस्य निर्वाचित हुए। स्तालिन सन 1917 से 1953, अपने निधन के समय, छत्तीस वर्षों तक पोलिस (राजनीतिक) ब्यूरो के सदस्य बने रहे।

अब दोनों महान गुरु और शिष्य बोल्शेविक पार्टी का नेतृत्व और सर्वहाराओं की अपार शक्ति का संचालन करते हुए, सर्वहारा क्रान्ति की तैयारी करने लगे। उस समय जरूरी था कि बुर्जुआ सरकार यह न समझे कि वह जारों की तरह की मनमानी करने के लिए स्वतन्त्र है। इसीलिए, हर अवसर पर कमकरों के विराट प्रदर्शन किये जाने लगे, जिनकी अपार शक्ति देखकर प्रतिगामियों का दिल दहल जाता था। अप्रैल में कई प्रदर्शन हुए। मई दिवस का जुलूस भी अपूर्व रहा, पर 18 जून के ऐतिहासिक प्रदर्शन ने तो कमाल कर दिया। इस प्रदर्शन के लिए स्तालिन ने एक घोषणा – 'पेत्रोग्राद के सभी मेहनतकशों, सभी कमकरों और सैनिकों के लिए' – लिखी, जिसमें उनसे कहा गया था कि इस दिन को उत्पीड़न और अत्याचार के फिर से चालू करने के विरुद्ध क्रान्तिकारी पेत्रोग्राद द्वारा एक जबर्दस्त विरोध-प्रदर्शन करने के दिवस में परिणत कर दो। घोषणा में आगे कहा गया था :

"स्वतन्त्रता और समाजवाद के शत्रुओं में बौखलाहट पैदा करने के लिए, कल हमारी विजयी ध्वजाएँ लहरायें!

"तुम्हारी पुकार, क्राति के योद्धाओं की पुकार, सभी उत्पीड़ितों और बन्धुओं के आनन्द के लिए सारी दुनिया में गूँज उठे!

"कमकरो! सैनिको! अपने हाथों को बन्धुता से एक-दूसरे से मिलाओ, समाजवाद के झण्डे के नीचे आगे बढ़ो!

"साथियो, सभी सड़कों पर आ जाओ!

"अपने झण्डों के चारों ओर, घनिष्ठता के साथ घेरा बाँधकर इकट्ठे हो जाओ!

"राजधानी की सड़कों पर अट्ट पंक्तियों के रूप में मार्च करो!

18 जून के प्रदर्शन में बोल्शेविकों दल के झण्डे के नीचे पाँच लाख मजदूर और किसानों ने भाग लिया था। बोल्शेविकों की शक्ति को इस तरह बढ़ते देखकर, अस्थायी सरकार कैसे चुपचाप रह सकती थी? उसने बोल्शेविक पार्टी पर प्रहार कर, उसे फिर भूमिगत बनाने का निश्चय किया। लेकिन, राजधानी के उद्बुद्ध कमकर और सैनिक बनियों की बन्दरघुड़की मानने के लिए कब तैयार थे? उनके इस प्रयत्न का फल यही हुआ कि 3 और 4 जुलाई को फिर जबर्दस्त प्रदर्शन हुए। सड़कों पर मजदूरों और सैनिकों पर गोली चलवाकर 'प्राव्दा' के कार्यालय को नष्ट-भ्रष्ट करने के बाद, अस्थायी सरकार ने लेनिन पर झूठा आरोप लगाकर उन्हें गिरफ्तार करने के लिए वारण्ट निकाला। पार्टी के भीतर अभी भी ऐसे विश्वासघाती थे, जो अदालत में प्रतिगामी सरकार के न्याय का झण्डा फाड़ने के बहाने लेनिन का बलिदान देने के लिए तैयार थे। लेनिन उस वक्त क्रान्ति की एक सबसे बड़ी शक्ति थे, उसे अस्थायी सरकार खूब जानती थी। यह निश्चय ही था कि लेनिन पर बाकायदा मुकदमा चलाने की जगह, वह अपने किसी गुण्डे से उन पर गोली चलवाकर क्रान्ति के एक शक्तिशाली ज्वालामुखी को दबा सकती थी। लेकिन, स्तालिन और दूसरे बोल्शेविक ऐसी कच्ची गोली नहीं खेले थे, और न लेनिन ही उसकी बात के महत्व से इन्कार कर सकते थे। इसलिए, यही निश्चय किया गया कि लेनिन को छिपा दिया जाये। यदि उस दिन कामनेफ, रुइकोफ और त्रात्स्की की बातों को माना गया होता, तो कौन जानता है कि लेनिन को खो देने पर क्रान्ति का रास्ता किस ओर जाता। यह बुजदिल, नेतृत्व के लिए अन्धे क्या उस समय क्रान्ति की धारा को ठीक रास्ते पर चला सकते थे? लेनिन अब पेत्रोग्राद से कुछ दूर रजलिफ के जंगल की एक कुटिया में शिकारी बनकर रहते थे। स्तालिन उस गुप्त स्थान में दो बार गये। पत्र-व्यवहार द्वारा तो वह उनसे बराबर सम्बन्ध रखते थे। दोनों की राय एक ही थी – हथियारबन्द विद्रोह द्वारा अस्थायी सरकार को उलटकर, सर्वहाराओं की सरकार स्थापित करना। त्रॉत्सकी और दूसरे ढुलमुलयकीन सदस्य दलीलें देते हुए कहते थे कि सर्वहारा क्रान्ति पश्चिम के देशों में ही हो सकती है। इस पर स्तालिन का जवाब था :

"यह सम्भावना भी हो सकती है कि रूस की ऐसा देश बने, जो समाजवाद का रास्ता बनाने में सफल हो। हमें इस पुराने, सड़े विचार को छोड़ देना चाहिए कि केवल यूरोप ही हमको रास्ता दिखा सकता है। मार्क्सवाद रूढ़ियात्मक और सृजनात्मक दोनों तरह का होता है। मैं सृजनात्मक मार्क्सवाद का समर्थक हूँ।"

इसे कहने की आवश्यकता नहीं कि त्रात्स्की, कामनेफ जैसे आदमियों को पुस्तकीय ज्ञान का अजीर्ण हो गया था। उनकी आँखों पर उसका ऐसा पर्दा पड़

गया था कि तत्कालीन परिस्थिति को देखकर, उनके पास पुस्तक की पंक्तियाँ उद्‌धृत करने के सिवा कोई रास्ता ही नहीं था। हर परिस्थिति में जो घटनाएँ घटित होती हैं, वे चाहे किसी पुरानी परिस्थिति में घटी घटनाओं से समानता रखती हों, लेकिन वह सामूहिक रूप से अपना बिल्कुल ही नया स्वरूप प्राप्त कर लेती हैं। ऐसे समय, ठीक रास्ता खोज निकालना लेनिन और स्तालिन जैसी प्रतिभाओं का ही काम था। सौभाग्य से लेनिन के फरार होने के बाद, स्तालिन सभी कामों को सँभालने के लिए तैयार थे। हथियारबन्द विद्रोह के लिए शक्ति-संचय का काम निर्बाध रूप से चलता रहा। 10 जुलाई 1917 को 'रबोची सोलूदात' (कमकर और सिपाही) का प्रथम अंक निकला। अस्थायी सरकार ने 'प्राव्दा' को बन्द कर दिया था, इसीलिए वह इस नये रूप में निकला था। इसमें स्तालिन ने 'क्रान्ति-विरोध की विजय' के नाम से एक लेख लिखते हुए कहा था :

"कमकर इसे कभी नहीं भूलेंगे कि जुलाई के भीषण अवसर पर, जबकि गुस्से से पालग क्रान्ति-विरोधियों ने क्रान्ति के ऊपर गोली-वर्षा आरम्भ की तो बोल्शेविक पार्टी की एकमात्र ऐसी पार्टी थी, जिसने मजदूरवर्गीय मुहल्लों को नहीं छोड़ा।

"कमकर इसे कभी नहीं भूलेंगे कि उन भयंकर क्षणों में समाजवादी क्रान्तिकारी और मेंशेविक जैसी 'शासन रूढ़' पार्टियाँ उस कैम्प में थीं, जो कि कमकरों, सैनिकों और नौसैनिकों पर आक्रमण करने तथा उनसे हथियार छीनने में लगा हुआ था।

"कमकर इस सबको याद रखेंगे और उसका ठीक निष्कर्ष निकालेंगे।"

इसमें क्या सन्देह है कि क्रान्ति की तैयारी के इन स्मरणीय दिनों में स्तालिन का एक-एक शब्द, एक-एक भयंकर बम का काम दे रहा था।

क्रान्ति-विरोधी अपनी क्षणिक सफलता पर फूले नहीं समाते थे। उन्होंने लेनिन को फरार करवा दिया था। इसी समय 26 जुलाई 1917 को छठी पार्टी कांग्रेस हुई। लेनिन का अभाव खटकता था। लेकिन वहाँ उप-लेनिन मौजूद थे। स्तालिन ने कांग्रेस में रिपोर्ट पेश की, जिसमें उन्होंने बतलाया कि उनके सामने मुख्य काम है - बुर्जुआ सरकार को हथियारों द्वारा पदच्युत करने और सर्वहारा तथा गरीब किसानों का राज्य स्थापित करने की आवश्यकता को जनता को समझाना! बस, एक ही बात बाकी रहती है, अर्थात बलपूर्वक अस्थायी सरकार को हटाकर शासन अपने हाथों में लेना। और गरीब किसानों की सहायता से, केवल सर्वहारा ही में वह शक्ति है, जिससे कि वह बलपूर्वक शासन को अपने हाथों में ले सकता है। त्रात्स्की और दूसरे किताबी पण्डित और अदूरदर्शी यही राग अलापते रहे कि रूस जैसा पिछड़ा देश हथियार के सहारे समाजवादी क्रान्ति

नहीं कर सकता, यह काम उद्योग-धन्धों में बढ़े हुए पश्चिमी राष्ट्रों में ही हो सकता है। हमें तो जनतान्त्रिक तरीके से आगे बढ़ना चाहिए। इसमें शक नहीं कि जनतान्त्रिकता की पुकार कायर और धोखेबाज समाजवादियों के लिए हमेशा से एक ढाल का काम करती आ रही है।

इस सारे समय, लेनिन जंगल में अपनी पर्णकुटी के भीतर छिपे हुए सो नहीं रहे थे। वह बड़ी सतर्कता के साथ, क्षण-क्षण की घटनाओं की देखभाल करते रहते थे। सेर्गो ओरयोनिकिद्जे गुरु और शिष्य के बीच बातों और सूचनाओं को लाने-ले जाने का काम करता था। इस समय, साथी स्तालिन बाकू में ही अपने घनिष्ठ सहकारी तथा मित्र स. अलीलुयैफ के घर में छिपकर रहते थे, जिसने अपने संस्मरणों में लिखा है :

"जुलाई के दिनों में, गुस्से से पागल बुर्जुआ वर्ग के प्रहार के कारण फरार होने से पहले, लेनिन 6 से 11 जुलाई तक मेरे साथ रहे। साथी स्तालिन लेनिन से मिलने मेरे घर आया करते थे। जब साथी लेनिन 11 जुलाई की रात को सेस्त्रोरेच्क में छिपने के लिए रवाना हुए, तो मैं और साथी स्तालिन सेस्त्रोरेच्क स्टेशन तक उनके साथ गये। उस समय, यह स्टेशन बोलशयानेव्वा बाँध पर नोवयादेरेव्न्या में अवस्थित था। हम दशमरोज्देसवेन्स्कया सड़क से उक्त स्टेशन तक पैदल ही गये।

"रजलिफ और बाद में फिनलैण्ड की झोंपड़ी में रहते समय, साथी लेनिन समय-समय पर स्तालिन को देने के लिए मेरे पास पत्र भेजा करते थे। चिट्ठियाँ मेरे घर आती थीं। चूँकि उनका जवाब तुरन्त देना होता था, इसलिए अगस्त में साथी स्तालिन रोजथ रोज्देस्तेन्स्कया सड़क वाले मेरे घर में चले आये और उसी कमरे में रहने लगे, जिसमें जुलाई के दिनों में साथी लेनिन छिपकर रहते थे।"

पुराने क्रान्तिकारी साथी और बहुत दिनों तक सोवियत संघ के राष्ट्रपति, कालिनिन ने इस समय के बारे में लिखा था : "अक्टूबर के तुरन्त ही पहले स्तालिन उन चन्द आदमियों में से थे, जिनको साथ लेकर लेनिन ने विद्रोह का निश्चय किया था। जिनोवियेफ और कामेनेफ भी उस समय केन्द्रीय कमेटी के मेम्बर थे, लेकिन लेनिन ने उन्हें इसका पता भी नहीं दिया था।" ये दोनों अपने को दूरदर्शी समझनेवाले कायर बराबर सशस्त्र विद्रोह का विरोध करते रहे, और संविधान सभा के ऊपर सब-कुछ छोड़कर बैठे रहना चाहते थे। लेकिन, जब विद्रोह शुरू ही हो गया, तो कोई दूसरा चारा नहीं रहा था। इसलिए, लेनिन ने मानो लाठी के हाथों उन्हें भी क्रान्ति के भीतर ढकेल दिया। त्रात्स्की यद्यपि स्वेच्छापूर्वक शामिल हो गया था, लेकिन पूरे मन से नहीं; क्योंकि उसके मत के अनुसार सर्वहारा क्रान्ति का स्थान पश्चिम यूरोप के उद्योग-प्रधान देश थे, न

कि पिछड़ा हुआ कृषि-प्रधान रूस। इन तीनों को छोड़, बाकी सभी बोल्शेविक सर्वस्व की बाजी लगाने के लिए तैयार थे। लेनिन ने क्रान्ति आरम्भ करने के समय को बिल्कुल गुपचुप रखना चाहा था, लेकिन जिनोवियेफ ने इस निर्णय के विरोध में पत्र में लिखना शुरू किया, जिससे केरेन्स्की की सरकार को सजग होने का मौका मिल गया।

अगस्त सन 1917 में जनरल कोर्निलोफ ने अस्थायी सरकार से विद्रोह करके, फिर से जारशाही स्थापित करनी चाही। केरेन्स्की उस समय किंकर्तव्यविमूढ़ को गया था, लेकिन क्रान्ति केरेन्स्की के बल पर नहीं हुई। जिन सर्वहाराओं और सैनिकों ने जार का तख्ता उलट दिया था, वे अब भी अपने नव-प्राप्त अधिकारों की रक्षा के लिए तैयार थे। सचमुच ही, 'जो शालिग्राम को भूनकर खा गया, उसे बैंगन भूनकर खाने में क्या देर लगेगी?' की कहावत को चरितार्थ किया। और, जारशाही तीसमार खाँ के मनसूबे को उन्होंने बिल्कुल विफल कर दिया। सारे कमकर हथियारबन्द हो, क्रान्तिकारी सैनिकों के साथ लड़ने के लिए आगे बढ़े और इनके शौर्य के सामने कोर्निलोफ की सेना धुन्ध की तरह विलीन हो गयी।

'रबोची सोल्दात' को भी जब केरेन्स्की की सरकार ने बन्द कर दिया, तो बोल्शेविकों ने 'प्रोलेतारी' के नाम से अपना पत्र निकालना शुरू किया। अगस्त सन 1917 के पहले अंक में स्तालिन ने क्रान्ति को स्थगित करने के विचार से मॉस्को में की गयी काउंसिल की बैठक के खिलाफ लिखते हुए, मॉस्को-काउंसिल की इस कार्यवाही के विरोध में संगठित हुई कमकरों की हड़ताल का स्वागत किया।

कोर्निलोफ को करारी हार देकर, बोल्शेविक पार्टी ने कमकर जनता में अपने प्रति पूरा विश्वास स्थापित कर लिया था। जनता अब इसी पार्टी को अपना रक्षक और अजेय वाहिनी समझती थी। इसलिए जब सोवियतों का नया चुनाव हुआ, तो उनमें बोल्शेविक सबसे अधिक संख्या में आये और अब फिर से 'सभी शक्ति - सोवियतों को' - का नारा चारों ओर गूँज उठा। लेनिन सारी परिस्थिति को अपने गुप्त स्थान से देख और सभी शक्तियों को आँक रहे थे। वह समझ गये कि यही वह दुर्लभ क्षण है, जिसकी वर्षो से प्रतीक्षा करते रहे हैं। उन्होंने अपने एक पत्र में विद्रोह की तैयारी करने पर जोर देते हुए लिखा था, "अब बोल्शेविकों को अपने हाथ में शक्ति लेनी होगी।" स्तालिन अपने गुरु के एक-एक आदेश और परामर्श को कार्यरूप में परिणत करने में लगे थे। अब उनका सारा समय सशस्त्र विद्रोह की तैयारी, लाल गारद और कमकरों की सेना के संगठन में लग रहा था। 10 अक्टूबर 1917 को केन्द्रीय कमेटी ने स्तालिन को विद्रोह का संचालक नियुक्त किया। वह बैठक 10 से 16 अक्टूबर तक

चलती रही, जिसमें जिनोवियेफ आदि बराबर संविधान-सभा की प्रतीक्षा करने की बात करके, संघर्ष को रोकना चाहते थे। 16 अक्टूबर को बोल्शेविक केन्द्रीय कमेटी की एक परिवर्द्धित मीटिंग हुई, जिसमें विद्रोह का संचालन करने के लिए स्तालिन को पार्टी-केन्द्र का नेता बनाया गया। इसी पार्टी-केन्द्र को महान क्रान्ति का संचालन करना था।

3. महान क्रान्ति

आखिर 24 अक्टूबर का दिन आया, जो कि नये पंचाँग के अनुसार 6 नवम्बर का था। उस दिन 11 बजे सवेरे 'रबोची पुत' (कमकर पथ) पत्र अस्थायी सरकार को हटा फेंकने के नारे के साथ निकला। पत्र के बाहर निकलते ही, पार्टी-केन्द्र ने विद्रोह के बारे में हिदायत देते हुए हुक्म निकाला और उसके सुनते ही क्रान्तिकारी सैनिकों और लाल गारदों की टुकड़ियाँ जल्दी-जल्दी आकर स्मोल्नी में जमा होने लगीं। यही पार्टी-केन्द्र था। विद्रोह शुरू हो गया। उसी दिन लेनिन ने 'केन्द्रीय कमेटी के मेम्बरों को पत्र' में लिखा था :

"चाहे जो भी हो, आज ही इसी रात को सरकार को गिरफ्तार करना होगा, पहले युंकरों (जारशाही के अफसरों) को नि:शस्त्र करना होगा। अगर वह प्रतिरोध करे, तो हराकर, इत्यादि।

"हमें इन्तजार नहीं करना होगा। नहीं तो हम सब कुछ खो देंगे।...

"इस बात का बिना चूके, आज ही शाम को या आज ही रात को निश्चय करना होगा; निर्णय करना होगा।

"सरकार आगा-पीछा कर रही है, चाहें जो भी हो उसे नष्ट करना होगा।

"कार्रवाई में देर करना खतरनाक होगा।"

ये वाक्य कैसे दृढ़ निश्चयी और पारदर्शी पुरुष की लेखनी से निकले थे? वस्तुत: यदि किसी को अन्तर्प्रत्यक्ष (इण्ट्यूशन) वाला कहा जा सकता है, तो वह लेनिन ही थे। उस समय जो शक्तियाँ एक-दूसरे के मुकाबले में खड़ी थीं, लेकिन उनके बलाबल को गणित के किसी प्रश्न के तौर पर साफ-साफ देख रहे थे। वह अन्तर्दृष्टि कामेनेफ, जिनोवियेफ और त्रात्स्की के पास नहीं थी, न वह तत्वदृर्शी थे, और न दाँव में सर्वस्व की बाजी लगाने की हिम्मत रखते थे। यशपाल ने अपने क्रान्तिकारी जीवन के संस्मरणों में एक साथी को इसीलिए अयोग्य बतलाया है कि वह प्राण जाने की 99 प्रतिशत सम्भावना वाले काम के लिए तैयार होते समय, सबसे पहले जान बचाने की फिक्र करता था। लेनिन अपनी गुप्त झोपड़ी में कितने तड़फड़ा रहे होंगे, लेकिन उनको स्तालिन जैसा सहायक मिला था, जो सभी बातों को अपने गुरु की दृष्टि से देख सकता था।

उसी दिन स्तालिन ने 'रबोची पुत' में 'हमें क्या चाहिए'? के नाम से एक लेख लिखा :

"वह समय आ गया है, जबकि और भी देर करना क्रान्ति के सारे उद्देश्य के लिए खतरनाक होगा।

"जमींदार और पूँजीपतियों की वर्तमान सरकार की जगह, मजदूरों और किसानों की एक नयी सरकार स्थापित करनी होगी।"

24 अक्टूबर (6 नवम्बर) की रात को लेनिन ने अपनी झोपड़ी छोड़कर संचालक केन्द्र के स्थान स्मोल्नी में आकर क्रान्ति-युद्ध की बागडोर अपने हाथों में सँभाल ली। सामन्ती-पूँजीपतियों की अन्तिम सरकार सचमुच ही सड़ी-सी लाश साबित हुई। उसको जनसाधारण का न कोई विश्वास और न कुछ सहायता प्राप्त थी। 24 अक्टूबर के सवेरे केरेन्स्की ने शक्ति परीक्षा करनी चाही, जब कि हथियारबन्द मोटरों के साथ उसने 'रबोची पुत' को दबाना तथा पत्र के सम्पादन कार्यालय एवं छापाखाने को नष्ट कर डालना चाहता था। लेकिन, स्तालिन पक्के खिलाड़ी थे, वह दुश्मन की एक-एक हरकत से पहले ही वाकिफ हो जाते थे। इसलिए, उस दिन 10 बजे सबेरे ही लाल गारद और क्रान्तिकारी सैनिक अपने मुखपत्र की रक्षा के लिए वहाँ मौजूद थे। उन्होंने हथियारबन्द गाड़ी को वहाँ से भगाकर, आफिसों की रक्षा के लिए जबर्दस्त सैनिक गारद बैठा दी। उसी दिन 11 बजे अखबार में स्तालिन का मशहूर लेख 'हमें क्या चाहिए?' छपकर निकला। उसी दिन सशस्त्र क्रान्ति आरम्भ हो गयी। यह वह नकली क्रान्ति नहीं थी, जिसमें एक सामन्त वंश दूसरे का स्थान लेता है, अथवा एक बुर्जुआ दल दूसरे की जगह सरकार का संचालन करने लगता है, जिसका मतलब है - सिर्फ ऊपरी, मामूली-सा परिवर्तन तथा शोषण-उत्पीड़न पूर्ववत ही जारी रहना। यह वह क्रान्ति थी, जिसके द्वारा दुनिया के छठे भाग पर शोषकों की शासन व्यवस्था समाप्त हुई और उसकी जगह समाजवादी शासन आरम्भ हुआ। अब तक निठल्ली जोंकें भाग्य का निपटारा करती थीं। अब मजदूर-किसान रूस के ही नहीं, विश्व के भाग्य विधाता बनने वाले थे।

जिस आसानी से और सबसे पहले नगर के शक्ति केन्द्रों - तारघर, बिजली-कारखाना, बैंक आदि पर कब्जा किया गया, उससे मालूम होता है कि लेनिन ने सन 1905 के एक-एक तजर्बे से फायदा उठाया था। राजनीतिक और सेना सम्बन्धी दाव-पेंच का सारा नेतृत्व लेनिन ने किया था। इसमें सन्देह नहीं कि लेनिन के दिमाग के बिना अक्टूबर की क्रान्ति सफल न होती।

क्रान्ति की बल-परीक्षा 7 नवम्बर को हुई। पुराने रूसी पंचाँग के अनुसार उस दिन 25 अक्टूबर था, इसीलिए 'लाल क्रान्ति' को अक्टूबर क्रान्ति भी कहते हैं।

3 महीने के बाद 1 फरवरी 1918 से पुराने पंचाँग को छोड़कर, यूरोप में सर्वत्र प्रचलित पंचाँग को स्वीकार किया गया, उस दिन पेत्रोग्राद के चौरस्ते और सड़कें युद्ध-क्षेत्र बन गयी थीं। कहीं बाल्तिक के नौसैनिक लड़ रहे थे और कहीं कारखानों के मजदूर, जिनमें औरतें भी थीं अपने रोजमर्रा के कपड़ों में राइफलें लेकर दुश्मनों पर धावा बोल रही थी। उसी दिन शाम को सोवियत की दूसरी कांग्रेस के उद्घाटन के समय, नयी सरकार के शासनारूढ़ होने की घोषणा की गयी। कांग्रेस में बोल्शेविकों का बहुत बहुमत था। घोषणा के समय तक शरद प्रासाद को छोड़कर सारी राजधानी सैनिक क्रान्तिकारिणी समिति के हाथ में आ गयी थी। केरेन्स्की संयुक्त राष्ट्र अमरीका के दूतावास की मोटर में बैठकर भाग गया। उस समय हेमन्त प्रासाद में अस्थायी सरकार के मन्त्रिमण्डल की बैठक हो रही थी। कुछ ही घण्टों में हेमन्त प्रासाद बोल्शेविकों के हाथों में था और अस्थायी सरकार के सदस्य बन्दी थे। लेनिन ने खुद कांग्रेस में आकर इस विजय की घोषणा की थी। पिछली जुलाई से यह पहला अवसर था, जबकि वह जनता के सामने आये थे। उत्साह और आनन्द के साथ लोगों ने उनका स्वागत किया।

दूसरे दिन, नयी सरकार स्थापित हुई। लेनिन अध्यक्ष हुए। सरकार का नाम रखा गया – सोवियत जनता कमीसार (सोवेत नरोद्निक कामिसरोफ), संक्षेप में सोव-नर्-कोम्। अस्थायी मन्त्रिमण्डल के सदस्यों को मन्त्री कहा जाता था, उनसे भेद करने के लिए 'कामीसार' नाम रखा गया। प्रथम सोव-नर् कोम् के सभी सदस्य बोल्शेविक थे। कामेनेफ, जिनोवियेफ, सिकोफ, लूनाचार्स्की, रियाजनोव जैसे सर्वोच्च शिक्षित बोल्शेविकों ने लेनिन को धमकी दी कि यदि वह दूसरी समाजवादी पार्टियों को नहीं लेंगे, तो वे सहयोग नहीं देंगे। लेकिन, लेनिन जानते थे कि गंगा-जमुनी मन्त्रिमण्डल हानिकारक सिद्ध होगा। उन्होंने उनकी बात मानने से इन्कार कर दिया और कहा "जो हमारी योजना नहीं मानते, हम उन्हें नहीं ले सकते।" उनका प्रोग्राम था – सभी शक्ति सोवियतों के हाथ में देना, लड़ाई को तुरन्त बन्द करना, रूस में बसनेवाली सभी जातियों को आत्मनिर्णय का अधिकार देना, भूमि और उद्योग-धन्धों को व्यक्तियों के हाथ से छीनकर राष्ट्र के हाथ में दे देना।

अधिकार सँभालने के बाद लेनिन ने जो पहला काम किया, वह भूमि सम्बन्धी घोषणा का था। कांग्रेस की दूसरे दिन (8 नवम्बर) की बैठक में प्रस्ताव पास हुआ कि "सभी जमींदारियाँ तथा उनके साथ के पशु और कृषि सम्बन्धी यन्त्र आदि जब्त किये जाते हैं और उनको सँभालने का भार किसानों द्वारा निर्वाचित स्थानीय भूमि समितियों के हाथ में दिया जाता है।"

इस प्रस्ताव ने किसान-सोवियतों की कांग्रेस, जो कि कुछ ही दिन बाद बैठी,

को लेनिन के पक्ष में कर दिया और इस प्रकार उन समाजवादियों को निराश होना पड़ा, जो किसान-सोवियतों से बोल्शेविकों के बड़े विरोध की आशा रखते थे।

सोव-नर्-कोम् ने अपने बोल्शेविक प्रोग्राम को बड़ी ईमानदारी से पूरा किया। एक सप्ताह के भीतर ही उसने बैंक और उद्योग-धन्धों को राष्ट्रीय बना दिया। काफी समय तक, नयी सरकार ने पूँजीवादियों के साथ नरमी का बर्ताव किया। इस नरमी का उन्होंने फायदा उठाना चाहा। कलमजीवी श्रेणी बड़ी कायर साबित हुई, वह देर तक विरोध पर न टिक सकी। हर पूँजीवादी के दिल में सोवियत शासन से घृणा थी, लेकिन सामने आने की हिम्मत न थी। विरोध करने वाले थे – सेना के बड़े-बड़े अफसर तथा शासन विभाग के कुछ अफसर। उनके साथ सैनिक स्कूल के तरुण विद्यार्थी थे, जो कि प्राय: सभी धनिकों के लड़के थे। पेत्रोग्राद से बाहर भी सोवियत शासन के फैलने में उतनी दिक्कत नहीं हुई।

इतनी आसानी से क्रान्ति को सफल बनाना, लेनिन का ही काम था। इसके बारे में स्तालिन ने कहा है : "लेनिन सचमुच ही क्रान्तिकारी विस्फोटों की एक अद्‌भुत प्रतिभा थे। बेढँगे से कोनों में भी वह आगे ही से उस दिशा को जान लेते थे, जिसकी ओर भिन्न-भिन्न वर्ग चलेंगे और जिन रास्तों पर जाने से क्रान्ति सफल होगी। इन सब बातों को मानो वह अपनी हथेली पर रखकर देख रहे हों; क्रान्ति में घण्टों का नहीं, बल्कि मिनटों का भी बहुत मूल्य है, और लेनिन की प्रतिभा सेकेण्डों का भी उपयोग करती थी।" राज्य की बागडोर सँभालते ही, नयी सरकार के लिए यह जरूरी था कि युद्ध बन्द किया जाये। उन्होंने मित्र-शक्तियों को भी इसके लिए कहा कि बिना किसी भूभाग को दबाये 'सुलह कर लेनी चाहिए', लेकिन वे मानने के लिए तैयार नहीं थीं। अब जर्मनी के साथ इसके लिए बात करनी जरूरी थी। सोवियत सरकार ने प्रधान सेनापति दुखोनिन को आदेश दिया कि युद्ध की कार्रवाई बन्द करो। लेकिन जारशाही जनरल दुखोनिन यह मानने के लिए कब तैयार था? उस समय की घटना को शब्दों में सुनिये :

"... मुझे वह दिन याद है, जब लेनिन, किलेंको (भावी मुख्य सेनापति) और मैं पेत्रोग्राद में जनरल स्टाफ के हेडक्वार्टर में एक खासतौर पर दुखोनिन से बातें करने गये थे।... दुखोनिन और हेडक्वार्टर के स्टाफ ने लोक कमीसार-परिषद (मन्त्रिमण्डल) के आदेशों को मानने से साफ इंकार कर दिया। सेना के कमाण्डर पूरी तौर से हेडक्वार्टर स्टाफ के हाथ में थे। और, सैनिक? कोई नहीं जानता था कि सेना क्या कहेगी; क्योंकि वह ऐसे संगठनों के अधीन थी, जो बिल्कुल सोवियत सरकार के विरुद्ध थे। हम जानते थे कि पेत्रोग्राद में युंकर विद्रोह करने के लिए तैयार हो रहे हैं और केरेन्स्की राजधानी पर आक्रमण करने के लिए प्रयास कर रहा है।... मुझे याद है, किस तरह टेलीफोन के सामने एक क्षण तक

चुप रहने के बाद, एकाएक लेनिन का चेहरा अत्यन्त असाधारण रूप से चमक उठा। देखनेवाला समझ सकता था कि वह किसी निर्णय पर पहुँचे हैं। उन्होंने कहा – 'हम बेतार के स्टेशन पर चलेंगे, वह हमारे मतलब को अच्छी तरह पूरा कर देगा। हम एक विशेष आदेश से जनरल दुखोनिन को उसके पद से हटाकर, उसके स्थान पर साथी किलेंको को मुख्य सेनापति (कमाण्डर–इन–चीफ) नियुक्त करेंगे, और अफसरों को छोड़कर सीधे सिपाहियों से अपील करेंगे कि अपने जनरलों को गिरफ्तार कर लें, सभी सैनिक कार्रवाइयों को बन्द कर दें, आस्ट्रिया और जर्मनी के सैनिकों के साथ मेल–जोल करें और सुलह–शान्ति के काम को आगे बढ़ाना अपने हाथों में ले लें।"

लेनिन परिणाम समझते थे और वही हुआ भी।

4. ब्रेस्त–लितोव्स्क सन्धि

पश्चिमी शक्तियाँ बोल्शेविकों की सन्धि की बातों को मानने के लिए तैयार नहीं थीं। वह चाहती थीं कि युद्ध तब तक चलता रहे, जब तक कि जर्मनी चारों खाने चित्त न हो जाये और उसके उपनिवेशों तथा कितने ही भागों को इंग्लैण्ड और फ्रांस अपने हाथों में न कर लें। इसीलिए, बोल्शेविकों को जर्मनी के साथ सुलह करके काम को आगे बढ़ाना था। जर्मनी के साथ सुलह की बात चलने लगी। जर्मन रूस की सैनिक अवस्था से फायदा उठाना चाहते थे। वह कड़ी से कड़ी शर्तें रख रहे थे। बातचीत के लिए त्रात्स्की को भेजा गया था। जर्मनी की कड़ी शर्तों को देखकर त्रात्स्की ने लेनिन के पास एक तार भेजा। जवाब में, लेनिन ने 15 फरवरी 1918 को निम्न तार दिया : 'त्रात्स्की को जवाब। उसके प्रश्न का जवाब देने से पहले मुझे स्तालिन से सलाह लेनी होगी।' और 18 फरवरी को लेनिन ने त्रात्स्की को तार दिया : 'स्तालिन अभी–अभी यहाँ पहुँचा। हम दोनों मिलकर स्थिति का अध्ययन करेंगे, फिर जितनी जल्दी हो सकेगा तुम्हारे पास संयुक्त उत्तर भेजेंगे। लेनिन।' जर्मनों की शर्तों को देखकर, त्रात्स्की इस सन्धि के खिलाफ था और हर गम्भीर बात में कोई भी निश्चय करने में असमर्थ, वह 'न शान्ति, न युद्ध' का मन्त्र जप रहा था। लेकिन, लेनिन और स्तालिन को मालूम था कि वे इस समय ऐसा करने की स्थिति में नहीं थे। स्तालिन का समर्थन पाकर, लेनिन ने जर्मनों की सर्वथा अन्यायोचित शर्तों के साथ ब्रेस्त–लितोव्स्क सन्धि कर ली। क्रान्ति के बाद, घर के शत्रुओं और बाहर के सबल दुश्मनों दोनों ही से लड़ना शक्ति से बाहर था, इसीलिए इस समय बाहर के शत्रु से अपने को बचाकर क्रान्ति की रक्षा करना सबसे पहला काम था। लेनिन जानते थे कि बाद में वे ऐसी स्थिति में होंगे, जब बाहरी शत्रुओं के मनसूबे

विफल कर सकेंगे। इस सन्धि को लेकिन, पार्टी के भीतर भयंकर झगड़ा पैदा हो गया। वामपन्थी उसका जबर्दस्त विरोध कर रहे थे। 23 फरवरी 1918 को केन्द्रीय कमेटी की मीटिंग में वामपक्षियों को मुँहतोड़ जवाब देते हुए, लेनिन ने कहा था :

"कुछ विश्राम मिलना चाहिए, नहीं तो, क्रान्ति का अन्त हो जायेगा। हमारे सामने प्रश्न है – या तो हमारे देश में क्रान्ति पराजित होती है, और यूरोप में भी क्रान्ति के मार्ग में बाधाएँ होती हैं, नहीं तो हमें कुछ समय मिले जिसमें हम अपनी स्थिति को मजबूत कर सकें।"

स्तालिन, स्वेर्दलोफ और दूसरे बोल्शेविकों के साथ, लेनिन अपनी बात पर दृढ़ रहे और कमेटी के बहुमत ने उनकी बात को स्वीकार किया। लेनिन ने इस सन्धि को 'शोकजनक सन्धि' कहा था और अगले दिन लिखा था : "सन्धि की शर्तें असह्य हैं। तो भी, इतिहास का निर्णय दूसरा ही होगा।... आओ, हम काम में लगें, संगठन करें, संगठन करें और संगठन करें; चाहे कितनी ही परीक्षाओं में पड़ना पड़े, भविष्य हमारा है।"

5. उक्रइनी रादा

उक्रइन में, वहाँ के राष्ट्रवादियों ने इस नाम से अपनी सरकार स्थापित कर ली थी, जिसमें विदेशी सेनाओं, मेंशेविकों और समाजवादी क्रान्तिकारियों ने उनकी सहायता की थी। इसका फल सोवियत सरकार और उक्रइनी रादा के बीच संघर्ष के रूप में हुआ था। ऐसे पेचीदा काम के लिए, लेनिन की नजर स्तालिन को छोड़कर और किस पर पड़ती? स्तालिन ही भेजे गये। वहाँ उन्होंने रादा के राजनीतिक रूप को देखा, वह दाँव-पेंच चलाकर सर्वहाराओं और किसानों को अधिकार से वंचित कर सामन्तों-पूँजीपतियों का शोषण जारी रखना चाहते थे। अक्टूबर क्रान्ति ने मजदूरों और किसानों को भी सजग कर दिया था। इस प्रकार, वहाँ रादा और सर्वहारा दो शक्तियों का मुकाबला था। स्तालिन की नीति के आगे रादा कैसे ठहरता? उन्होंने उक्रइन की जनता का नेतृत्व किया और रादा को मुँह की खानी पड़ी। बेलोरुसिया में भी, सोवियत प्रभाव को बढ़ाने में स्तालिन का जबर्दस्त हाथ था। जातियों की समस्या और उसका हल स्तालिन का अपना विषय था, जिस पर वह पिछले बारह वर्षों से मनन कर रहे थे। स्वयं भी एशियाई जाति के होने के कारण, वह उनकी मनोवृत्ति से पूरी तौर से वाकिफ थे। रूसियों की तरह, दूसरे लोगों में भी सर्वहारा, गरीब किसान और शोषक, सामन्त, पूँजीपति दो वर्ग थे। जातीय शक्ति को क्रान्ति के विरुद्ध न जाने देने के लिए, दोनों वर्गों के इस रूप को सर्वहारा के सामने स्पष्टता से रखना जरूरी था। कोई भी स्तालिन

को कल की प्रभु जाति का, रूसी कहकर सन्देह नहीं कर सकता था।

काकेशस में वर्षों क्रान्ति का काम करते हुए, स्तालिन ने अपने प्रति रूस की भिन्न-भिन्न जातियों का पूरा विश्वास पैदा कर लिया था। स्तालिन तातार-बाश्किर गणराज्य की संविधान कांग्रेस के अध्यक्ष हुए थे। यह भी स्तालिन के प्रति गैर-रूसी जातियों के विश्वास को प्रकट करता था। उन्होंने इस कांग्रेस में अध्यक्ष पद से जो भाषण दिया था, वह 10 मई 1918 के 'प्राव्दा' में छपा था। उन्होंने इस भाषण द्वारा तातार-बाश्किर के मुसलमानों से ही नहीं, बल्कि पूर्व की सभी मुसलमान जातियों से अपील की थी। आगे हम देखते हैं कि पूर्व की इन मुसलमान जातियों ने युगों के अत्याचारों से मुक्ति दिलाने वाले संघर्षों में बहुत महत्वपूर्ण भाग लिया है। काकेशस के गरीबों को मेंशेविकों, दशनकों (अर्मनी राष्ट्रवादियों) और मोसावातियों (काकेशीय मुस्लिम राष्ट्रवादियों) के फन्दे से निकालने में, स्तालिन का बहुत बड़ा हाथ था। एशियाई जातियों में भी, सोवियत शासन ने इस तरह आसानी से जो विजय यात्रा की, उसमें स्तालिन के प्रयत्नों और दूरदर्शिता ने भारी काम किया है।

रूस में क्रान्ति हो जाने के बाद, यह जरूरी था कि विश्व के सर्वहारा वर्ग की सहानुभूति को भी एक संगठित रूप दिया जाये, जिससे और देशो में भी क्रान्ति होने में आसानी हो। केन्द्रीय कमेटी के आदेश के अनुसार, जनवरी सन 1918 में यूरोप और अमरीका की समाजवादी पार्टियों के क्रान्तिकारी तत्वों के प्रतिनिधियों की एक कांफ्रेंस बुलायी गयी। यह कांफ्रेंस तृतीय कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल की स्थापना में बड़ी सहायक हुई।

6. आहार समस्या (सन 1918)

जिस समय बोल्शेविकों ने राज्य-शासन अपने हाथों में लिया था, उस समय पेत्रोग्राद (आधुनिक लेनिनग्राद) राजधानी में केवल दो दिन का खाद्य मौजूद था। स्तालिन ने सभी गोदामों और अनाज के ढेरों की खोज-पड़ताल करके, किसी तरह दस दिन की रोटी का प्रबन्ध किया। रयाबुशिन्स्की और दूसरे क्रान्ति-विरोधियों की यह धमकी केवल बन्दर-घुड़की नहीं थी कि वे अकाल के हाथों क्रान्ति का गला घुटवा देंगे। यदि लड़ाई के कारण चारों ओर फैली हुई भुखमरी ने क्रान्तिकारियों की शक्ति को बढ़ाया था, तो भुखमरी से बचाने के लिए कोई रास्ता न निकालने पर क्रान्ति को भी खतरा पैदा हो सकता था। आहार की समस्या का हल त्रात्स्की जैसे हवाई नेता क्या कर सकते थे? इसलिए, इस समस्या का भार सौंपते हुए, 29 मई 1918 को लोक-कमीसर-परिषद ने निश्चय किया :

"लोक-कमीसार-परिषद (मन्त्रिमण्डल) लोक कमीसार परिषद के सदस्य, लोक कमीसार योसेफ बिसारियोनोविच स्तालिन को दक्षिणी रूस में खाद्य विभाग का डाइरेक्टर जनरल (प्रधान संचालक) नियुक्त करती है।"

लेकिन, रोटी प्राप्त करना आसान नहीं था। देश में अन्न के भण्डार दक्षिणी रूस को सफेद गारदों (क्रान्ति-विरोधियों) ने अलग काट दिया था। इस काम में हाथ लगाते ही, स्तालिन ने समझ लिया कि वह हथियार के बल पर ही अन्न पा सकते हैं। मन्त्रिमण्डल के निश्चय से पहले ही, स्तालिन ने लेनिन की राय से दक्षिण की ओर प्रस्थान कर दिया था। स्तालिन ने लेनिन से बात करते हुए, वहाँ से टेलीफोन पर कहा था :

"उत्तरी काकेशस में अनाज का बहुत भारी जखीरा मौजूद है। लेकिन, रेलवे लाइनों के कट जाने से उसे उत्तर की ओर नहीं भेजा जा सकता। जब तक कि लाइन को ठीक न कर दिया जाता, तब तक अनाज के यातायात की बात ही नहीं उठ सकती। समारा और सरातोफ के प्रदेशों में अभियान भेजा गया है। लेकिन, अगले कुछ दिनों तक अनाज भेजना सम्भव नहीं होगा। हम आशा करते हैं कि करीब दस दिनों में रेलवे लाइन ठीक हो जायेगी। सारी शक्ति लगाकर डटे रहिये। मछली और मांस का राशन चलवाइए। हम उसे खूब अच्छे परिमाण में भेज सकते हैं। एक सप्ताह के भीतर अवस्था अनुकूल हो जायेगी।"

स्तालिन ने इस नये क्षेत्र में कितनी जल्दी सफलता पायी, यह चन्द दिनों बाद ही लेनिन के पास भेजे हुए उनके इस तार से मालूम होता है :

"इस रास्ते से आपको 160 गाड़ी अनाज और 64 गाड़ी मछली पहुँच जायेगी। बाकी चीजें सरातोफ के रास्ते से भेजी जायेंगी।"

7. जारित्सीन

स्तालिन को दक्षिण में अन्न बटोरकर भेजने के लिए रवाना किया गया था। स्तालिन ने देखा कि अन्न पाने का रास्ता भी लड़ाई के द्वारा ही है। उस समय, दोन-क्षेत्र में क्रान्ति-विरोधी बड़े जोर-शोर से काम कर रहे थे, जिनके कारण वोल्गा के किनारे का नगर जारित्सीन (वर्तमान स्तालिनग्राद) एक सैनिक महत्व का स्थान बन चुका था। जमींदारों को हटाकर, जमीन पर किसानों का अधिकार स्थापित किया गया। इसे कुलक (धनी किसान) बर्दाश्त करने के लिए तैयार नहीं थे। सर्वहाराओं के ये क्रूर शत्रु हर जगह सोवियत सरकार के खिलाफ विद्रोह करवा रहे थे। अन्न का रास्ता रोककर, वह सचमुच ही क्रान्ति का गला घोंटना चाहते थे।

क्रान्ति और गृह-युद्ध के समय, हम अनेक बार देखेंगे कि लेनिन सबसे

खतरनाक मोर्चे और दुष्कर कार्य पर स्तालिन ही को भेजते थे। वह जानते थे कि वही ऐसी कठिनाइयों में रास्ता ढूँढ़ सकते हैं। स्तालिन को आहार के संचय के लिए उधर भेजकर, मन्त्रिमण्डल (द्वितीय महायुद्ध के बाद तक सोवियत सरकार के मन्त्रिमण्डल को लोक-कमीसार-परिषद कहा जाता था, जिसे हम आसानी से समझने के लिए मन्त्रिमण्डल कहेंगे। मन्त्रियों को उस समय लोक कमीसार के नाम से पुकारा जाता था) ने उसी समय 'सभी मेहनतकश लोगों को' के नाम से एक घोषणा निकालकर कहा : "साइबेरियन रेलवे के कुछ केन्द्रों पर क्रान्ति-विरोधियों का अधिकार हो जाने से कुछ समय के लिए भूखों मरते हुए देश के लिए अन्न की प्राप्ति कठिन हो जायेगी। लेकिन, रूसी, फ्रेंच, अंग्रेज़ और कोस्लोवाकी साम्राज्यवादी क्रान्ति को भूखों मारकर मजबूर करने में, नत-मस्तक करने में सफल नहीं हो सकेंगे। भूखे उत्तर की सहायता के लिए, दक्षिण पूर्व आगे आ रहा है। लोक कमीसार स्तालिन इस समय जारित्सीन में हैं, जहाँ वह दोन तथा कूबान के इलाकों से खाद्य संचय के काम का संचालन कर रहे हैं। वह तार द्वारा हमें सूचित कर रहे हैं कि वहाँ पर अन्न का भारी जखीरा है, जिसे वह एक सप्ताह के भीतर ही उत्तर की ओर भेजने की आशा करते हैं।"

नयी सरकार में सेना-मन्त्री का पद त्रॉत्सकी को दिया गया था। त्रात्स्की कभी भी लेनिन का विश्वासपात्र नहीं रहा था। क्रान्ति के पहले, बहुत वर्षों तक तो वह लेनिन विरोधियों का अगुवा था, पर क्रान्ति के पहले दिनों में यह जरूरी था कि जितनों को भी क्रान्ति के विरुद्ध न जाने दिया जाये, उतना ही अच्छा हो। लेकिन, अब उसके कारण सैनिक मोर्चों में तत्परता और अनुशासन की कमी दिखायी पड़ती थी। जारित्सीन वोल्गा के किनारे ऐसे मुकाम पर था, जहाँ से दक्षिण में काकेशस और उक्रइन की सैनिक परिस्थिति को भी देखा जा सकता था और साइबेरिया के क्रान्ति-विरोधी क्या कर रहे हैं, इसका पता भी वहीं से पाया जा सकता था। स्तालिन को अन्न जमा करने के लिए भेजा गया था, लेकिन उनके अपने शब्दों में ही : "मैं युद्ध विभाग के गन्दे तबेलों को साफ करने का विशेषज्ञ बन गया।" सचमुच ही, त्रात्स्की ने युद्ध-विभाग को गन्दा तबेला बना रखा था। स्तालिन को वहाँ दो वर्ष रहकर तबेले को साफ करके, शत्रुओं के मनसूबों को चूर-चूर करना पड़ा। इसमें उन्हें बोरोशिलोफ और मीनिन जैसे योग्य सहायक मिले थे। देश में हर जगह क्रान्ति का खतरा पैदा हो गया था। मॉस्को में यदि समाजवादी क्रान्तिकारी विद्रोह करने पर उतारू थे, तो पश्चिम में मुरावियेफ शत्रुओं के सामने क्रान्ति के पक्ष को कमजोर बना रहा था। युद्ध के समय बन्दी बनाकर साइबेरिया भेजे गये, चैक क्रान्ति-विरोधी उराल प्रदेश में सोवियत के खिलाफ अपनी शक्ति मजबूत कर रहे थे। बाकू के तेल-क्षेत्र को

देखकर, अंग्रेज़ों के मुँह में पानी क्यों न भर आता? इसलिए, वह अपने दाँव-पेंच चला रहे थे। यह क्रान्ति का सौभाग्य था कि स्तालिन ऐसे ही समय में जारित्सीन पहुँचे। वह जानते थे कि दोन प्रदेश के विद्रोह की सफलता और जारित्सीन के हाथ से निकल जाने पर, सारे उत्तरी काकेशस के गेहूँ का प्रदेश हाथ से निकल जायेगा। जारित्सीन में रहते समय, स्तालिन का लेनिन के साथ लगातार पत्र-व्यवहार और तार द्वारा विचार-विमर्श होता रहता था। जारित्सीन में पहुँचने के साथ ही, स्तालिन के शब्दों में :

"मैं उन सभी को धमकाता और बुरा भला कहता हूँ, जिनको इसकी जरूरत है। साथी लेनिन, आप निश्चिन्त रहें, मैं किसी को भी दम नहीं लेने दूँगा, न खुद दम लूँगा। चाहे कुछ भी हो, हम आपके पास गेहूँ भेजेंगे। अगर हमारे सैनिक विशेषज्ञ, जिनके दिमागों में गोबर भरा हुआ है, सोये न रहते तो हमारी लाइन कभी न कटी होती; और अगर हम उसे फिर से ठीक कर लेते हैं, तो यह उनकी सहायता से नहीं, बल्कि उनकी कार्रवाइयों के बावजूद ही।"

स्तालिन ने इस सारे प्रदेश को भयंकर अस्त-व्यस्त रूप में पाया। कम्युनिस्ट मजदूर सभा ही नहीं, सैनिक संगठन भी बिल्कुल टूटे-फूटे थे। ऊपर से क्रान्ति-विरोधी कसाकों के साथ टक्कर का भारी डर पैदा हो गया था, जिन्हें उक्रइन पर दखल जमाये बैठी जर्मनी सेना पूरी मदद दे रही थी। एक के बाद एक, जारित्सीन के सभी इलाकों को सफेद गारदों ने अपने अधिकार में कर लिया था; मॉस्को तथा पेत्रोग्राद की ओर भेजे जाने वाले अन्न के यातयात को बिल्कुल रोक दिया था। अब स्वयं जारित्सीन भी खतरे में पड़ गया था।

ऐसी अवस्था में, स्तालिन के लिए सिवाय इसके और कोई चारा नहीं था कि सैनिक कमाण्ड को भी अपने हाथ में ले लें। 11 जुलाई के तार में उन्होंने लेनिन को लिखा :

"अवस्था इसलिए और भीषण हो गयी है कि उत्तरी काकेशस का हेडक्वार्टर स्टाफ क्रान्ति-विरोधियों से लड़ने में बिल्कुल असमर्थ है। जनरल हेडक्वार्टर के अधीन रहना तथा अभियान की योजनाएँ तैयार करना ही अपना काम समझकर, और बातों से बिल्कुल अलग-थलग, वह अपने को केवल तमाशा देखने वाले ही समझते हैं और इसीलिए, कार्यवाइयों में कुछ भी दिलचस्पी नहीं लेते।"

स्तालिन ने बीमारी पहचान ली, लेकिन वह इतने ही से चुप रहने वाले नहीं थे। उन्होंने आवश्यक कार्रवाई भी शुरू की :

"जब मैं देख रहा हूँ कि उत्तरी काकेशस के मोर्चे की रसद का रास्ता कट गया है और सारे उत्तरी रूस का सम्बन्ध अपने गेहूँ क्षेत्र से टूट चुका है, तो मैं कैसे चुपचाप रह सकता हूँ? मैं इस कमजोरी को, और दूसरी भी स्थानीय

कमजोरियों को दूर करूँगा; मैं इसके लिए ठीक से उपाय कर रहा हूँ। हमारे काम को बिगाड़ने वाली रेजीमेण्ट तथा स्टाफ के अफसरों को अगर हटाना पड़ेगा, तो भी किसी तरह की कायदे आदि की कठिनाइयों की परवाह न कर, जरूरत पड़ने पर उनकी उपेक्षा भी करते हुए, इस काम को करूँगा; इसलिए स्वभावतः ऊपर की सारी जिम्मेवारी मैं अपने ही ऊपर लेता हूँ।"

सारे लाल संगठन को ठीक से अपने पैरों पर खड़ा करने के लिए मॉस्को से जवाब आया : "फिर से व्यवस्था कायम करो। सैनिक टुकड़ियों को बाकायदे सेना के रूप में बनाओ। एक ठीक कमाण्डर की नियुक्ति करो। जो आज्ञा पालन के लिए तैयार नहीं हैं, उन्हें हटा दो।" – यह आदेश क्रान्तिकारी युद्ध परिषद की ओर से आया था, जिसमें लिखा हुआ था : 'यह तार लेनिन की सम्मति से भेजा जा रहा है।'

जारित्सीन में भयंकर स्थिति थी। वहाँ व्यवस्था कायम करना असम्भव-सा मालूम होता था : "लेकिन स्तालिन झूठे ही फौलादी नहीं कहे जाते थे। उन्होंने उसी अव्यवस्था में, छूमन्तर की तरह, सुव्यवस्था स्थापित की। एक क्रान्तिकारी युद्ध परिषद कायम हो गयी, जिसने उसी वक्त बाकायदा एक सेना का संगठन कर डाला। जल्दी-जल्दी सैनिक कोरें बनायी गयीं, और उनको डिवीजनों, ब्रिगेडों और रेजीमेण्टों में विभक्त कर दिया गया। सैनिक स्टाफ, रसद-व्यवस्था और मोर्चे से पीछे स्तालिन के हाथों के सैनिक संगठनों से सभी क्रान्ति-विरोधी आदमियों को निकाल बाहर किया गया। वही बात सोवियत तथा कम्युनिस्ट पार्टी के संगठनों की हुई। वहाँ पक्के बोल्शेविकों की कमी नहीं थी, जब ऊपर लादे गये अविश्वसनीय आदमियों को हटाकर उन्हें रखा गया, तो क्रान्ति एक दूसरे ही रूप में दिखलाई देने लगी। दोन का क्षेत्र जारित्सीन से बहुत दूर नहीं है, जहाँ पर क्रान्ति-विरोधी अपने को बड़ा शक्तिशाली समझते थे; लेकिन स्तालिन ने उन्हीं की नाक के नीचे एक जबर्दस्त मोर्चा कायम कर लिया।

पार्टी और सैनिक संगठनों में ही विश्वासघाती नहीं घुस गये थे, बल्कि सारे जारित्सीन नगर में क्रान्ति-विरोधी अपना जाल बिछाये हुए थे। समाजवादी क्रान्तिकारी, आतंकवादी और राजवादी सभी मिलकर क्रान्ति को विफल करने के लिए तैयार थे। लेकिन, स्तालिन ने बहुत मजबूत हाथों से झाड़ू फेरनी शुरू की। मध्यवर्गीय शरणार्थियों का समूह यहाँ आकर डेरा डाले हुए था, और वह खुलकर सफेद अफसरों के साथ मिले हुए थे। फुटपाथों, सड़कों, सार्वजनिक उद्यानों और विनोदशालाओं में, जहाँ भी देखो, वहीं जारित्सीन खुले षड्यन्त्र के केन्द्र का रूप धारण किये हुए था। स्तालिन जानते थे कि यह सब बाहरी दिखावा है, और इसको तभी तक एक शक्ति प्राप्त है, जब तक कि शासन का सूत्र

अयोग्य कर्मचारियों के हाथों में है। स्तालिन ने वहाँ बात की बात में एक नया वातावरण पैदा कर दिया। स्तालिन के संचालन में, स्थानीय क्रान्तिकारी युद्ध परिषद ने एक विशेष कार्यकारिणी कमेटी कायम करके, उस पर इन आदमियों का ध्यान से परीक्षण करने का काम सौंपा। इसमें शत्रुओं की हर एक खतरनाक योजना और दुरभि-सन्धि का पता लगाया। नासोविच सैनिक कार्रवाई का मुख्य अफसर था, जो विरोधी बनकर क्रास्नोफ की सफेद सेना में चला गया था। उसने बाद में जारित्सीन की स्थिति का विवरण एक सफेद अखबार 'दोन-संघर्ष' (3 फरवरी 1919) में दिया था। उसने इस बात को कबूल किया कि स्तालिन किसी काम को हाथ में लेकर अधूरा नहीं छोड़ते। उन्होंने सैनिक और असैनिक सारे शासन प्रबन्ध को अपने हाथ में लेकर, क्रान्ति के शत्रुओं के सारे प्रयत्नों और चालों को एक-एक करके व्यर्थ कर दिया। उस समय स्थानीय क्रान्ति-विरोधी संगठन बहुत शक्तिशाली हो गये थे। मॉस्को से आये हुए पैसे की सहायता से, वह सैनिक दखलन्दाजी की तैयारी करते और दोने के कसाकों की मदद से, जारित्सीन को बोल्शेविकों से मुक्त करना चाहते थे। उनके दुर्भाग्य से इन संगठनों के मुखिया जिनमें इंजीनियर अलेक्सियेफ और उसके दो पुत्र भी थे – को वास्तविक स्थिति का बहुत कम पता था। उनके एक गलत कदम उठाने के कारण संगठन का पता लग गया। अलेक्सियेफ अपने दो पुत्रों तथा काफी संख्या में सहयोगियों के साथ गोली से मार दिया गया।

जुलाई सन 1918 में मॉस्को में विद्रोह करके, वामपक्षीय समाजवादी क्रान्तिकारी अब जारित्सीन पर भी आक्रमण करने वाले थे। लेनिन को भी इस खतरे का पता लग गया था, जिसके लिए स्तालिन को टेलीफोन करने पर, उन्हें जवाब मिला : "जहाँ तक इन खप्तियों का सवाल है, आपको निश्चिन्त रहना चाहिए। हम दृढ़ता के साथ तैयार हैं। शत्रुओं के साथ, हम शत्रुओं जैसा ही बर्ताव करेंगे।"

स्तालिन ने लोगों में एक नयी स्फूर्ति, एक नया उत्साह पैदा कर दिया। सैनिक और राजनीतिक नेता तथा पलटन के साधारण सिपाही भी अनुभव करने लगे कि एक सच्चे और मजबूत नेता से काम पड़ा है, जो उन लोगों के साथ जरा भी दया दिखाने के लिए तैयार नहीं है, जो फिर से पुरानी दासता में ले जाना चाहते हैं। नासोविच ने त्रात्स्की की बौखलाहट को भी अपने उसी लेख में बतलाते हुए कहा है : "इतनी मेहनत से तैयार किये हुए सैनिक कमाण्ड को नष्ट होते देखकर, त्रात्स्की घबड़ा गया और उसने तार भेजकर कहा कि हेडक्वार्टर स्टाफ और कमीसारों को फिर से उनके पदों पर स्थापित करके उन्हें अपना काम करने देना चाहिए। स्तालिन ने उस तार पर लिख दिया : 'इसकी ओर कोई ध्यान नहीं

देना चाहिए।' और उस तार की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया गया। जारित्सीन में सारा तोपखाना कमाण्ड और हेडक्वार्टर स्टाफ का भी एक भाग एक स्टीमर के ऊपर वैसे ही बेकार बैठा रहा।

स्तालिन किसी काम को आधे मन से करना नहीं जानते थे। वह नया संगठन करने में ही अपने काम को समाप्त नहीं समझते थे। जारित्सीन के चार सौ मील के मोर्चे पर उन्होंने स्वयं जगह-जगह जाकर बोल्शेविक शासन को मजबूत किया। स्तालिन ने कभी सेना में काम नहीं किया था। युद्ध ने जबर्दस्ती भरती होने का एक मौका दिया था, लेकिन जारशाही डर गयी थी। अब यहाँ जारित्सीन में आकर, उन्होंने पहले-पहल अपनी सैनिक प्रतिभा का परिचय दिया। उस समय भी, नजदीक से जानकारी रखने वाले नहीं कह सकते थे कि स्तालिन में इस काम को करने की कोई अपनी मौलिकता नहीं है। दूसरे महायुद्ध में तो दोस्त और दुश्मन दोनों को ही मानना पड़ा है कि सैनिक दाव-पेंच में भी यह पुरुष उतना ही निष्णात था, जितना राजनीतिक और अर्थनीतिक क्षेत्रों में। कगानोविच ने इस बारे में लिखा है :

"मुझे जैसे वह बात कल की ही मालूम होती है। सन 1918 के आरम्भ में, क्रास्नोफ की कज्जाक सेना ने जारित्सीन पर आक्रमण किया और उसे चारों ओर से घेरकर, लाल सेना को वोल्गा पर ढकेलने की कोशिश की। एक कम्युनिस्ट डिवीजन के अधीन, दौनेत्स्क के कमकरों से बनी हुई इस लाल सेना ने कई दिनों तक, पूरी तौर से शिक्षित और संगठित कज्जाकों के आक्रमण को अद्‌भुत दृढ़ता के साथ रोका, वे सचमुच ही भयंकर दिन थे। तुम उस समय स्तालिन को देख सकते थे। वह हमेशा की तरह शान्त और अपने विचारों में लीन रहते थे। वस्तुतः वह बिल्कुल नींद न लेते थे। वह अपने अनथक काम को युद्ध पंक्ति और सैनिक हेडक्वार्टर में बाँटे हुए थे। मोर्चे पर हालत प्रायः निराशाजनक थी। फिजखलोरोफ, मामोन्तोफ और दूसरे अफसरों के नेतृत्व में, आस्नोफ की सेनाएँ हमारी थकी-माँदी पलटनों का भीषण संहार कर रही थी। शत्रु का व्यूह अर्धगोलाकार था, जिसके दोनों छोर वोल्गा पर थे। वह दिन-प्रतिदिन और अधिक भूमि घेरता जा रहा था, निकलने का कोई रास्ता नहीं था। लेकिन, स्तालिन ने इसकी चिन्ता नहीं की। उनके दिमाग में सिर्फ एक ही विचार था - हमें जीतना है। स्तालिन की यह अदम्य इच्छाशक्ति ही थी, जिसने उनके नजदीकी सहायकों में जान फूँक दी। यद्यपि हम ऐसी स्थिति में थे, जहाँ बचाव का कोई रास्ता नहीं रह गया था, तो भी किसी को एक क्षण के लिए विजय में सन्देह नहीं था; और हम विजयी हुए! पराजित शत्रु सेना को दोन नदी के उस पार भगा दिया गया।"

जारित्सीन के वे दिन कितने भयंकर थे, कितने निराशापूर्ण थे, और स्तालिन

ने उनमें किस तरह सफलता प्राप्त की, यह बतलाता है कि बाद में, स्तालिनग्राद के नाम से मशहूर इसी जारित्सीन में हिटलर की विजयोन्मत्त सेना को क्यों भयंकर हार खानी पड़ी।

जारित्सीन को बचाकर और क्रान्ति-विरोधियों की शक्ति को छिन्न-भिन्न करके, स्तालिन ने सोवियत जनता को अकाल और भुखमरी से बचा लिया, साथ ही वहाँ सैनिक महत्व का एक ऐसा जबर्दस्त गढ़ तैयार किया, जिसने उत्तरी काकेशस, दक्षिणी उक्रइन और साइबेरिया से आने वाले क्रान्ति-विरोधियों के तूफान को बेकार बना दिया।

स्तालिन ने जिस समय जारित्सीन में यह सफलता प्राप्त की थी, उसी समय उक्रइन में जर्मनों ने भयंकर स्थिति पैदा कर दी थी।

8. उक्रइनी मोर्चा

जारित्सीन के विजेता को अब केन्द्रीय कमेटी ने उक्रइन के मोर्चे पर भेजा। उनके साथ बोरोशिलोफ आदि, बारह पार्टी कार्यकर्ता भेजे गये। नवम्बर के अन्त में, क्रान्ति की सेनाएँ पेतलुरा और जर्मनों के विरुद्ध आगे बढ़ीं और उन्होंने उक्रइन के महान नगर रकोफ को मुक्त करा लिया। उक्रइन ही नहीं, पश्चिम में मिन्स्क को भी लाल सैनिकों ने दुश्मनों के हाथ से आजाद किया।

30 नवम्बर 1918 को लेनिन की अध्यक्षता में कमकर किसान परिषद कायम की गयी, जिसका काम था मोर्चे और युद्ध पंक्तियों के पीछे की प्रतिरक्षा के सारे काम का संचालन करना, तथा उद्योग-धन्धों, यातायात व्यवस्था या देश के सभी सम्पत्ति स्त्रोतों को इस काम में लगाना।

9. गृह-युद्ध

बोल्शेविक अच्छी तरह से जानते थे कि गृह-युद्ध को खत्म किये बिना समाजवादी राज्य ढंग से कायम नहीं किया जा सकता। जिन जोंकों को उन्होंने पदच्युत किया था; पीढ़ियों और सहस्त्राब्दियों से जो 'परमुण्डे फलाहार' करते थे, दुख और चिन्ता के दिन नहीं देखे थे, वह अपने पैरों के नीचे से धरती खिसकती देखकर शान्त नहीं बैठे रह सकते थे। सामन्त और पूँजीपति अपनी पशुता और बर्बरता को चरम रूप में दिखाये बिना, ऐसे ही हथियार नहीं डाल देंगे। इसलिए, रूस के साम्राज्यवादी युद्ध से छुट्टी पाने का मतलब यह नहीं था कि वह गृह-युद्ध से बच जायेगा। पूँजीवादी राष्ट्र इसीलिए तो उस महायुद्ध को चला रहे थे कि विश्व में अपनी-अपनी शक्ति को मजबूत करते हुए, देशों को

परतन्त्र बनाते हुए, जनसाधारण का शोषण और दोहन करें। समाजवाद चुपके से दुनिया के छठे हिस्से को अपने हाथ में कर ले, यह भला वह कैसे पसन्द कर सकते थे? जर्मनी से छुट्टी पाते ही, उनका ध्यान इस तरफ गया। इंग्लैण्ड और फ्रांस के साम्राज्यवादियों ने चेकोस्लोवाकी सेनाओं को बड़े यत्नपूर्वक विद्रोह के लिए उकसाया, रूसी क्रान्ति-विरोधी कादतों, मेंशेविकों और समाजवादी क्रान्तिकारियों की पीठ पर हाथ रखा। सन 1918 के पूर्वार्ध में ही, दो निश्चित शक्तियाँ सोवियत शासन को उखाड़ फेंकने के लिए तैयार हो रही थीं। वे थीं – विदेशी साम्राज्यवादी मित्र शक्तियाँ और घर में क्रान्ति-विरोधी। सोवियत के विरुद्ध संघर्ष शुरू कर लेने पर, ये दोनों विरोधी शक्तियाँ एक होने के लिए मजबूर हुईं। यह एकता सन 1918 के पूर्वार्द्ध में स्थापित हो गयी थी। इस प्रकार, जर्मनी से फुर्सत पाने पर, क्रान्ति के बाद के कुछ महीनों का जो विश्राम मिला था, उसे साम्राज्यवादियों ने खत्म कर दिया और गृह-युद्ध शुरू हो गया। रूस के कमकरों किसानों का यह युद्ध विदेशी स्वदेशी शत्रुओं के विरुद्ध हुआ। शत्रुओं ने पाँच मुख्य मोर्चे स्थापित किये थे, जहाँ से वह रूस के भिन्न-भिन्न भागों पर भयंकर प्रहार कर रहे थे। ये मोर्चे थे : (1) पूर्वी मोर्चा, जिसका नेता कोलचक था; (2) दक्षिणी (काकेशस) मोर्चा, जिसका नेता देनीकिन था; (3) उत्तर-पश्चिमी मोर्चा, जिसका नेतृत्व रोदजेंको और यूदेनिच के हाथों में था; (4) पोल मोर्चा और (5) रेंगल मोर्चा। गृह-युद्ध के समय, सोवियत सरकार की प्राय: सारी शक्ति इन भीषण शत्रुओं का मुकाबला करने में लगी हुई थी। कम्युनिस्ट पार्टी और तरुण कम्युनिस्ट लीग के 57 प्रतिशत सदस्य हथियार लेकर लड़ रहे थे, और शत-प्रतिशत को शत्रुओं से लड़ने के लिए सेना में भरती होना पड़ा था। इस युद्ध में स्तालिन ने क्या पार्ट अदा किया, इसे वर्तमान सोवियत राष्ट्रपति बोरशिलोफ के शब्दों में सुनिये :

"सन 1918 से 1920 के समय में, सम्भवत: साथी स्तालिन अकेले ही ऐसे आदमी थे, जिसे केन्द्रीय कमेटी एक मोर्चे से दूसरे मोर्चे पर भेजती रही। क्रान्ति के लिए जिस जगह सबसे ज्यादा खतरा होता, वह उन्हें ही भेजती थी।"

4 अगस्त 1918 में जारित्सीन से स्तालिन ने लेनिन को लिखा था : "अब फिर उन्हीं बातों को आरम्भ करना पड़ा है। हमने रसद का इन्तजाम किया, सैनिक कार्रवाई के विभाग को कायम किया, मोर्चे के सभी भागों के साथ संचार सम्बन्ध स्थापित किया, पुरानी व्यवस्था, जो कि अपराधपूर्ण व्यवस्था थी, को हटाया और यह सब करने के बाद ही, तिखोरेच्क के दक्षिण तथा कलाच पर आक्रमण किया है।

10. पेर्म का मोर्चा

वस्तुतः क्रान्ति अभी तक अपना कोई सुव्यवस्थित सैनिक संगठन नहीं कर सकी थी। पुरानी सेना जारशाही के खत्म होने के साथ ही विलीन हो गयी थी। नयी सेना का अभी-अभी निर्माण किया गया था। सेना-संचालन का काम त्रात्स्की जैसे को दिया गया था, जिसे न सेना का ज्ञान था, और न जिसमें सैनिक संगठन की प्रतिभा ही थी। इस पद पर त्रात्स्की का होना सैनिक संगठन के लिए एक बहुत भारी बाधा थी; हम यह जारित्सीन के पहले संघर्ष में ही देख चुके हैं। जहाँ तक सैनिकों की संख्या का सवाल था, कोई कमी नहीं थी। गोरिल्ला ढंग की लड़ाई सफलतापूर्वक की जा सकती थी। लेकिन, कायदे-नियम की पाबन्द, एक संगठित और अनुशासित सेना तैयार करने में बड़ी बाधाएँ थीं। क्रान्ति की रक्षा के लिए, ऐसी सेना का निर्माण करना अत्यन्त जरूरी था। यह सौभाग्य की बात थी कि पार्टी हर एक खतरनाक मोर्चे पर स्तालिन को ही भेजती थी। सन 1918 के अन्त में, पूर्वी मोर्चे की अवस्था बड़ी भयंकर हो गयी, कोलचक ने पेर्म पर अधिकार कर लिया था। उत्तर की ओर से साम्राज्यवादियों की सेनाएँ बढ़ रही थीं। कोलचक ने चाहा था कि उनसे सम्बन्ध स्थापित करके, नयी सरकार को खतरे में डाल दे। बोल्शेविक तृतीय सेना हारकर, भारी नुकसान के साथ पीछे हट रही थी, जिसका एक बड़ा कारण था – कमाण्डरों की अयोग्यता। केन्द्रीय कमेटी ने इस हार के कारण की जाँच करने के लिए, स्तालिन और जेर्जिन्स्की की एक जाँच समिति 'पेर्म के आत्म-समर्पण और उराल के मोर्चे पर हाल की पराजय के कारणों की पूरी तौर से जाँच करने के लिए, और सभी परिस्थितियों का पता लगाने के लिए नियुक्त की। नवम्बर के अन्त में, इस मोर्चे पर स्थिति सचमुच ही बड़ी निराशापूर्ण हो गयी थी। न सेना में अनुशासन था, न उसके राशन का कोई प्रबन्ध था। 29वीं डिवीजन को पाँच दिनों तक एक रोटी का टुकड़ा भी नहीं मिल पाया था; इस पर हिमबिन्दु से भी 35 डिग्री नीचे की भयंकर सर्दी पड़ रही थी। इस ढाई सौ मील लम्बे मोर्चे के सारे रास्ते दुर्गम हो गये थे। ऊपर से, जार के जिन अफसरों को त्रात्स्की ने अपने पदों पर बहाल रखा था, वह पूरी तौर से विश्वासघात करके दुश्मन से मिल गये थे। बीस दिनों के अन्दर करीब दो सौ मील पीछे हटना, अठारह हजार आदमियों को खोना, दर्जनों तोपों और सैकड़ों मशीनगनों से हाथ धोना – कितनी भयंकर बात थी। शत्रु इतने नजदीक आ गया था कि व्यात्का और सारे पूर्वी मोर्चे को खतरा पैदा हो गया था। लेनिन ने क्रान्तिकारी युद्ध परिषद को तार दिया :

"पेर्म के आस-पास से हमें कई रिपोर्टें मिली हैं, जिनमें तृतीय सेना के शराब

पीकर मतवाले होने और खतरनाक स्थिति की बातें बतलायी गयी हैं। मैं स्तालिन को भेजने की सोच रहा हूँ।" जैसा कि ऊपर कहा गया है, केन्द्रीय कमेटी ने पेर्म की पराजय के कारणों का पता लगाने के लिए, स्तालिन व जेर्जिन्स्की को भेजा था। सचमुच, वहाँ की स्थिति प्राप्त हुई सूचना से भी कहीं अधिक भयंकर थी। स्तालिन ने वहाँ पहुँचकर राष्ट्रीय प्रतिरक्षा परिषद के अध्यक्ष (लेनिन) को तार देकर, तुरन्त कुमुक भेजने के लिए लिखा। फिर एक सप्ताह बाद, पेर्म की पराजय के भिन्न-भिन्न कारणों को लिख भेजा और लड़ने की क्षमता बढ़ाने के लिए कुछ उपायों को काम में लाने का प्रस्ताव रखा। जारित्सीन की तरह, यहाँ भी स्तालिन ने सैनिक और राजनीतिक संगठन के लिए ऐसे असाधरण कदम उठाये कि उसी महीने (जनवरी, सन 1919) में पूर्वी मोर्चे पर शत्रु की प्रगति रोक दी गयी। यही नहीं, बल्कि सेना के दाहिने पक्ष ने आगे बढ़कर, आक्रमण करके उराल्स्क पर अधिकार कर लिया। दखल देने के लिए आयीं हुई चैक सेनाओं से कोलचक की सेना के मिलने की सम्भावना खत्म हो गयी। दक्षिण और उत्तर दोनों ओर से इतने जबर्दस्त प्रहार किये गये कि कोलचक के पैर उखड़ गये।

पूर्वी मोर्चे से लौटने के बाद, स्तालिन पर राज्य नियन्त्रण के संगठन का काम पड़ा। मार्च सन 1919 में लेनिन के कहने पर, उन्हें राज्य नियन्त्रण का जन कमीसार नियुक्त किया गया। स्तालिन ने अपनी स्वाभाविक तत्परता के साथ मजदूर किसान निरीक्षण जन कमीसारियत का संगठन किया। उन्हें इस काम में अप्रैल सन 1922 तक लगा रहना पड़ा। सेना के लिए इस कमीसारियत की कितनी जरूरत थी, इसे कहने की आवश्यकता नहीं।

स्तालिन की पहली शादी उनके फरारी क्रान्तिकारी जीवन के समय एकातेरीना से हुई थी। उससे एक लड़का हुआ था। एकातेरिना सन 1917 में निमोनिया से मर गयी थी। बाकू में काम करते समय, स्तालिन के सहकारियों में अलीलुयेफ भी था। एक बार स्तालिन पीटर्सबर्ग में इन्हीं के घर में गिरफ्तार हुए थे। क्रान्ति के समय, लेनिन और स्तालिन अलीलुयेफ परिवार में छिपकर रहे थे। यहीं रहते समय, अलीलुयेफ की छोटी लड़की नादेज्दा से स्तालिन का परिचय हुआ था। उसकी बड़ी बहिन ओल्गा प्रधान कार्यालय में काम करती थी। नादेज्दा सन 1901 में बाकू में पैदा हुई थी और घर के कामों में निपुण होने के साथ, पार्टी के काम में भी बड़े उत्साह से योग देती थी। सन 1918 में स्तालिन ने नादेज्दा से शादी की। स्तालिन के लिए वैयक्तिक जीवन का बहुत कम महत्व था। इसीलिए उसके बारे में बहुत कम लिखा गया है। स्तालिन के जीवन की महत्ता और बहुमूल्यता जिस काम के लिए थी, लेखकों का ध्यान उसी तरफ ज्यादा गया।

11. पेत्रोग्राद पर खतरा (सन 1919)

कोलचक को मार भगाने में बोल्शेविकों ने सफलता पायी। लेकिन, पश्चिमी साम्राज्यवाद और उसके सैनिक नेता चर्चिल को अपने सहकारियों को नष्ट होने देना कब पसन्द आ सकता था? उन्होंने पूर्वी मोर्चे से बोल्शेविकों का ध्यान हटाने के लिए, उत्तर से पेत्रोग्राद पर आक्रमण करना चाहा। इसके लिए, एस्तोनिया में जनरल यूदेनिच के नेतृत्व में सफेद गारदों की सेना तैयार की गयी, जो बड़ी तेजी से पेत्रोग्राद की ओर बढ़ने लगी। स्वयं राजधानी के नौसैनिक अड्डे क्रोन्स्तात के बाल्तिक बेड़े में पुराने अफसरों के रूप में दुश्मन के आदमी मौजूद थे, जिसके कारण कास्नयागोर्का और सेरयालोशद जैसे कुछ महत्वपूर्ण सैनिक दुर्ग बोल्शेविकों के हाथ से निकल गये। उधर पश्चिम में जनरल बुलक बलखोविच की सेनाएँ प्स्कोफ्र के सैनिक महत्व के स्थान तथा पेत्रोग्राद के पश्चिमी दरवाजे की ओर बढ़ने लगीं। इस आक्रमण में अंग्रेजी नौसैनिक बेड़ा भी भाग ले रहा था। इसी समय, पेत्रोग्राद में षड्यन्त्र का पता लगा और मालूम हुआ कि इसमें सेना और नौसेना के सैनिक अफसरों का भारी हाथ है। यूदेनिच के पेत्रोग्राद के नजदीक पहुँचने पर प्स्कोफ्र को खतरा हो जाने और साथ ही भीतरी शत्रुओं के बिछे हुए जाल को देखकर, ऐसा मालूम होने लगा कि क्रान्ति खत्म होने जा रही है। कम-से-कम चर्चिल और उसके सहायक ऐसी ही आशा करने लगे थे। सफेद सेनाओं और पेत्रोग्राद के बीच का फासला क्षण-क्षण कम होता जा रहा था; लाल सैनिक पीछे हट रहे थे। लेकिन, लेनिन के पास एक ऐसा आदमी था, जो ऐसे भयंकर खतरों का दो बार सफलतापूर्वक मुकाबला कर चुका था। केन्द्रीय कमेटी ने तुरन्त स्तालिन को इस काम पर नियुक्त किया। तीन सप्ताहों में ही, स्तालिन ने पासा पलट दिया। बीस दिन बीतते-बीतते सेना की भीतरी खराबियाँ, झिझक और किंकर्तव्यविमूढ़ता दूर हो गयी। पेत्रोग्राद के कमकर और कम्युनिस्ट भारी संख्या में युद्ध में भाग लेने लगे। भीतरी शत्रुओं को पकड़कर, उनका सफाया कर दिया गया। दुश्मन के कदम रुक गये। इस लड़ाई में स्तालिन ने युद्ध सैनिक कार्रवाइयों में भी भाग लिया था। उन्होंने लेनिन को एक तार में लिखा था :

"...क्रास्नयागोर्का और सेरेयालोशद का काम ठीक कर देने के बाद, सभी किलों और किलेबन्दियों में बड़ी तेजी से व्यवस्था कायम कर दी गयी है। नौसैनिक विशेषज्ञ मुझे विश्वास दिला रहे हैं कि क्रास्नयागोर्का (लाल गिरि) पर अधिकार करने में मैंने नौसैनिक विज्ञान के सभी सिद्धान्तों को उलट-पुलट दिया है। मुझे सिर्फ इसका अफसोस है कि वह विज्ञान न जाने किसको कहते हैं। गोर्का पर इतनी जल्दी अधिकार करने का कारण था - मेरी ओर से बड़ी जबर्दस्त

दखलन्दाजी और सैनिक कार्रवाइयों में नागरिकों का भी आमतौर से तत्परता से भाग लेना। इस कार्रवाई को करने के लिए जल और स्थल पर निकाली हुई दूसरी आज्ञाओं को रोककर, उनकी जगह हमारी अपनी आज्ञाओं को कार्यरूप में परिणत किया गया था। मैं आपको यह सूचित करना अपना कर्तव्य समझता हूँ कि विज्ञान के लिए मेरे दिल में भारी सम्मान रहते हुए भी, मैं आगे भी इसी तरह करूँगा।"

किताबी ज्ञान–विज्ञान और स्तालिन जैसे प्रतिभा के धनी तथा व्यवहार में निपुण व्यक्ति के ज्ञान में कितना अन्तर है, यह स्तालिन की इस कार्रवाई से मालूम होता है। यह कोई आकस्मिक घटना नहीं थी। द्वितीय महायुद्ध में भी हिटलर और उसके सैनिक पण्डितों को स्तालिन के सामने मुँह की खानी पड़ी। मॉस्को और स्तालिनग्राद की भावी विजयों की तैयारी स्तालिन ने इसी समय, पेत्रोग्राद को बचाकर की थी। 6 दिन बाद के तार में, इस युद्ध के बारे में स्तालिन ने फिर लिखा था :

"हमारी सेनाओं का कायाकल्प होना शुरू हो गया है। इस सारे सप्ताह में वैयक्तिक या सामूहिक पलायन या आत्म–समर्पण की एक भी घटना नहीं घटी। हजारों की संख्या में भगोड़े सेना में लौट आये। दुश्मन की सेना से भागकर, हमारी ओर आ मिलने वालों को और अधिक संख्या में देखा गया। एक सप्ताह में अपने सारे हथियारों को लिए करीब–करीब चार सौ आदमी हमारी सेना में आकर शामिल हो गये हैं। कल से हमने अपना आक्रमण शुरू किया है। यद्यपि ऊपर जिस कुमुक का वचन दिया गया था, वह अभी तक हमारे पास नहीं आयी है, लेकिन तब भी हम आगे बढ़ने में सफल हुए हैं। हमारे लिए अपनी पुरानी पंक्ति में रहना असम्भव था; क्योंकि वह पेत्रोग्राद के बहुत नजदीक थी। इस बार का हमारा आक्रमण सफल रहा। शत्रु सिर पर पैर रखकर भाग रहा है। आज हमारी पाँति केनीवो, वरानिनो, स्लेपिवो और कस्कोवो पर है। हमने बहुत से बन्दियों, तोपों, मशीनगनों और गोला बारूद पर अधिकार कर लिया है। शत्रु–अंग्रेज़ों के युद्धपोतों ने मुँह नहीं दिखाया। यह साफ है कि वह क्रास्नयागोर्का से डरते हैं, जो अब पूर्णतया हमारे साथ में है।"

इस प्रकार, स्तालिन ने चर्चिल के मंसूबों को विफल कर दिया। यूदेनिच ने भाग कर एस्तोनिया में शरण लेनी पड़ी थी। लेकिन, सबसे बड़ा खतरा सन 1919 की शरद में दिखायी पड़ा, जिसके बारे में मानूइल्स्की ने लिखा है : "यह सारे गृह–युद्ध का निर्णायक और बहुत खतरनाक समय था।"

12. दक्षिणी मोर्चा (सन 1919–20)

जिस तरह पूर्व से कोलचक ने और उत्तर से युदेनिच ने बोल्शेविकों के लिए

खतरा पैदा कर दिया था, अब वही काम दक्षिण से देनीकिन करने लगा। अब तक जर्मनी हथियार डाल चुका था। इंग्लैण्ड तथा फ्रांस को युद्ध से छुट्टी मिल चुकी थी। अब विश्व पूँजीवाद को काल स्वरूप दिखायी देने वाले, बोल्शेविकों के पीछे पड़ना जरूरी मालूम हुआ। देनीकिन को रुपयों और हथियारों से ही मदद नहीं मिल रही थी, बल्कि अंग्रेज़ और फ्रेंच जनरल स्टाफ उसकी पूरी तौर से सहायता कर रहा था। सफेद सेना ओरेल की ओर बढ़ रही थी; और सारी दक्षिणी युद्ध-पंक्ति खतरे में पड़ गयी थी। एक ओर लाल सैनिक पीछे हट रहे थे और दूसरी ओर युद्ध-पंक्ति के पीछे स्थिति भयंकर हो गयी थी। एक-एक क्षण में अवस्था संगीन होती जा रही थी। ऐसी समस्याएँ सामने आ रही थीं, जिनके हल करने का एकाएक कोई उपाय नहीं सूझता था। युद्ध और गृह-युद्ध के कारण, रूस के तीन-चौथाई उद्योग-धन्धे नष्ट हो चुके थे। न कच्चा माल था, न ईंधन, न काम करने वाले। इसके कारण, बचे-खुचे कल-कारखाने भी बन्द थे। सारे देश में, यहाँ तक कि मॉस्को में भी – जो कि अब सोवियत की राजधानी बन चुका था – क्रान्ति-विरोधी अपने कामों में बड़े जोर-शोर से लगे हुए थे। हथियारों और लोहे के कारखानों वाला नगर तुला खतरे में पड़ गया था। उसके निकल जाने पर, राजधानी मॉस्को को भी बचाना मुश्किल होता। एक बार फिर केन्द्रीय कमेटी की नजर स्तालिन की ओर गयी और उसने उन्हें दक्षिण मोर्चे पर जाने के लिए कहा। सितम्बर सन 1919 में क्रान्तिकारी युद्ध परिषद के सदस्य स्तालिन ने दक्षिण का रास्ता लिया। मानूइलस्की ने लिखा है :

"आज इस बात को छिपाने की कोई जरूरत नहीं है कि स्तालिन ने प्रस्थान करने से पहले (पार्टी) केन्द्रीय कमेटी पर तीन शर्तों को मानने के लिए जोर दिया था (1) त्रात्स्की को दक्षिणी मोर्चे में कोई दखल नहीं देना होगा और उसे अपनी जगह पर ही रहना पड़ेगा; (2) उन सैनिक नेताओं को, जिन्हें स्तालिन सैनिक स्थिति ठीक करने के लिए अयोग्य समझते हों, तुरन्त वापिस बुला लेना होगा; और (3) इस काम को करने में स्तालिन द्वारा चुने गये सक्षम नेताओं को तुरन्त ही दक्षिणी मोर्चे पर भेज देना होगा; कमेटी ने इन शर्तों को पूरी तौर से मान लिया था।"

सैकड़ों मील लम्बा दक्षिणी मोर्चा वोल्गा से पोलैण्ड उक्रइन की सीमा तक फैला हुआ था, जहाँ लाखों की संख्या में सैनिक जमा थे। अस्त-व्यस्तता और शिथिलता को दूर करके, इतनी भारी सेना का सुव्यवस्थित रूप से संचालन करना आसान काम नहीं था। इसके लिए एक निश्चित योजना बनाकर चलना जरूरी था, जिससे कि सेना के हर एक भाग को मुस्तैदी के साथ अपने सामने के काम के लिए आगे बढ़ाया जा सके। स्तालिन ने मोर्चे पर जाकर देखा कि

सभी जगह भयंकर विश्रृंखलता और अनुत्साह फैला हुआ है। कुर्स्क–ओरेल तुला की मुख्य रक्षा–पंक्ति पर लाल सेना को हार खानी पड़ी थी। उसका पूर्वी पक्ष भी किसी ही तरह कायम था। दक्षिणी मोर्चे के लिए उच्चतर युद्ध कमेटी ने पिछले सितम्बर में एक योजना बनायी थी, जिसके द्वारा लालसेना के वामपक्ष को जारित्सीन से और दोन के मैदानों से नवोरोसिस्क तक की शत्रु सेना पर आक्रमण करना था। स्तालिन को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि सितम्बर की बनायी हुई योजना आज भी जरा परिवर्तन किये बिना उसी तरह बनी हुई थी। 'कोरिन की सैनिक टुकड़ी को आक्रमण करना है। उसका काम है – दोन और कूबान नदियों पर जाकर, शत्रु को नष्ट करना।' स्तालिन ने इस योजना को बड़े ध्यान से देखा, फिर निश्चय किया कि वह ठीक नहीं थी। कम–से–कम उस समय के लिए तो बिल्कुल उपयुक्त नहीं थी। दो महीने पहले के लिए भले ही अच्छी रही हो; लेकिन तब से परिस्थितियाँ बदल चुकी थीं। उस योजना से काम नहीं चलेगा, यह सोचकर स्तालिन ने लेनिन के पास नये सुझाव लिख भेजे। इस भाग्य–निर्णायक अवसर पर, लेनिन के पास भेजे हुए इस पत्र की कुछ पंक्तियाँ थीं :

"दो महीने पहले उच्चतर कमेटी ने सिद्धान्त के रूप में स्वीकार किया था कि मुख्य आक्रमण पश्चिम से पूर्व की ओर दोनेत्स्क की घाटी के भीतर से होना चाहिए। यह कार्रवाई नहीं की गयी, क्योंकि गर्मियों में दक्षिण सेना के पीछे हटने के कारण पैदा हुई स्थिति उसके अनुकूल नहीं थी – अर्थात दक्षिण से सेना के पीछे हटने के कारण पैदा हुई स्थिति उसके अनुकूल नहीं थी – अर्थात दक्षिण–पूर्वी मोर्चे पर सेना के पुनर्विभाजन में जो समय लगा, उससे देनीकिन ने फायदा उठाया। लेकिन, सेनाओं के पुनर्विभाजन के साथ मिलकर अब स्थिति बिल्कुल बदल गयी है। पूर्वी अष्टम सेना (पुराने दक्षिणी मोर्चे की एक प्रधान सेना) आगे बढ़ी है, और दोनेत्स्क की घाटी उसके सामने है। बुदयन्नी–रिसाला जैसी दूसरी महत्वपूर्ण सेना भी आगे बढ़ी है। लेत डिवीजन नामक एक नयी सेना की हमारी सेना में और वृद्धि हुई है। एक महीने के भीतर, जब वह पुनः संगठित हो जायेगी, तो वह देनीकिन को खतरा पैदा कर देगी। ऐसी स्थिति में उच्चतर कमेटी को पुरानी योजना को कायम रखने के लिए क्या मजबूरी है? इसका कारण स्पष्ट ही ऐसी हठधर्मी है जो कि हमारे गणराज्य के लिए बहुत ही खतरनाक और अदूरर्शितापूर्ण हो सकती है, और जिसे सैनिक दाँव–पेंच के महान विशेषज्ञ (त्रात्स्की) उच्चतर कमेटी द्वारा लालित–पालित कर रहे हैं।"

"कुछ समय पहले उच्चतर कमेटी ने कोरिन की दोन के कान्तार को पार करके, नवोरोसिस्क पर आगे बढ़ने का आदेश दिया था। यह ऐसा रास्ता है, जो

कि हमारे वैमानिकों के लिए ही व्यवहार्य हो सकता है। हमारी सेना और तोपखाने का दोन कान्तार होते हुए आगे बढ़ना असम्भव है। यह निपट लड़कपन है। यह बतलाना बिल्कुल आसान है कि शत्रु देश में एक असम्भव पाँत के ऊपर होते हुए बढ़ाव की यह योजना बिल्कुल निर्बुद्धितापूर्ण है, और सत्यानाश का कारण बन जायेगी। यह बतलाना बिल्कुल आसान है कि इस प्रकार कज्जाक गाँवों के ऊपर से बढ़ने का एक ही फल होगा – जो कि कुछ ही समय पहले हो भी चुका है – अपने गाँवों की प्रतिरक्षा के लिए कज्जाकों का देनीकिन के साथ मिल जाना, और देनीकिन को दोन का त्राता बनने का मौका देना अर्थात देनीकिन को इस प्रकार अपने हाथों को मजबूत करने में सफल होने देना। इसलिए, पुरानी योजना एक क्षण की भी देर किये बिना बदलनी होगी और उसकी जगह खरकोफ और दोनेत्स–घाटी के बीच से रस्तोफ के ऊपर केन्द्रीय आक्रमणवाली योजना स्वीकार करनी पड़ेगी। इस प्रकार, (1) शत्रु–देश के बीच से नहीं, बल्कि हमें मित्रतापूर्ण इलाकों से गुजरना पड़ेगा, जिससे आगे बढ़ने में आसानी होगी; (2) हम दोनेत्स जैसी एक महत्वपूर्ण रेलवे लाइन–देनीकिन की सेना के संचार की मुख्य लाइन–बोरोनेज रस्तोफ लाइन पर अधिकार कर सकेंगे, (3) हम देनीकिन की सेना को दो भागों में काट देंगे, जिनमें से एक भाग (स्वयंसेवकों) को मखनो ठीक कर देगा, और कम कज्जाक सेना को पीछे से खतरा पैदा कर देंगे; (4) यह भी हो सकता है कि हम देनीकिन के कज्जाकों को नाराज करा दें, क्योंकि यदि हमारा बढ़ाव कामयाब रहा तो देनीकिन कज्जाकों को पश्चिम की ओर हटाने की कोशिश करेगा, जिसे अधिकांश कसाक मानने से इंकार कर देंगे; और (5) हमें कोयला मिल जायेगा, जबकि देनीकिन को कुछ भी कोयला नहीं मिल सकेगा। अभियान की इस योजना को स्वीकार करने में जरा भी देर नहीं करनी चाहिए।... संक्षेपतः हाल की घटनाओं के कारण अब समय से पिछड़ी हुई पुरानी योजना किसी भी हालत में काम में नहीं लानी चाहिए, क्योंकि यह गणराज्य के लिए खतरा पैदा करते हुए, देनीकिन की स्थिति को बेहतर बनाने का कारण अवश्य होगी। उसकी जगह एक नयी योजना स्वीकार करनी होगी। उसके लिए परिस्थितियाँ और अनुकूलताएँ भी पूरी मात्रा में मौजूद हैं, बल्कि इस तरह के परिवर्तन की भारी आवश्यकता है। अन्यथा, दक्षिणी मोर्चे पर मेरा काम व्यर्थ, अपराधपूर्ण और बेकार हो जायेगा; जो मुझे अधिकार देता या मजबूर करता है कि मैं यहाँ न रहकर, चाहे जहाँ, शैतान के पास भी, चला जाऊँ। – आपका स्तालिन।"

केन्द्रीय कमेटी ने स्तालिन की योजना मानने में जरा भी आनाकानी नहीं की। लेनिन ने अपने हाथों दक्षिणी मोर्चे के जनरल स्टाफ को लिखकर, उन्हें अपनी

आज्ञाओं को बदलने का हुक्म दिया। लाल सेना ने दोनेत्स-रस्तोफ घाटी में खरकोफ के ऊपर मुख्य आक्रमण किया और इसका फल हुआ - सन 1920 के आरम्भ में देनीकिन की सेना को कालासागर के किनारे तक ढकेल देना। उक्रइन और उत्तरी काकेशस सफेद गारदों के हाथ से छीन लिये गये और गृह-युद्ध की निर्णायक विजय बोल्शेविकों के ही हाथ रही। इस युद्ध में स्तालिन के सहायक थे - बोरोशिलोफ, ओर्योनिकिद्जे, किरोफ, बुदयोन्नी, श्वादेंको और मेखली।

सितम्बर सन 1919 में केन्द्रीय कमेटी ने स्तालिन को दक्षिणी मोर्चे की ओर भेजा, 'देनीकिन के विरुद्ध लड़ने के लिए सभी चलो' का नारा दिया था। इसी समय बुदयोन्नी के नेतृत्व में प्रामि सवार सेना संगठित हुई।

देनीकिन की पराजय के बाद, सोवियत गणराज्य को जो थोड़ा-सा समय मिला, उसी में लेनिन ने स्तालिन को युद्ध से नष्टप्राय उक्रइन की अवस्था सुधारने के लिए भेजा। सन 1920 की फरवरी और मार्च में स्तालिन इस काम पर जुट पड़े। उद्योगों को फिर से चालू करने के लिए कोयला बहुत जरूरी था। कल-कारखानों को चालू किये बिना, देश को न सैनिक और न आर्थिक तौर से ही सबल बनाया जा सकता था। स्तालिन ने 'रूस की लिए कोयला उतना ही महत्वपूर्ण है, जितनी की देनीकिन पर विजय थी' - कहते हुए, मार्च सन 1920 में कमकर सेना को उत्साहित किया और थोड़ी ही दिनों में कोयले की पैदावार तथा रेलों का काम बहुत कुछ सुधर गया।

13. रेंगल की पराजय (1920)

देनीकिन के हारने के बाद, चर्चिल और उसके साथियों ने अब बैरन रेंगल की पीठ ठोंकी और अगस्त सन 1920 में फिर उसी जगह भयंकर लड़ाई छिड़ गयी, जहाँ से देनीकिन को भागना पड़ा था। 2 अगस्त 1920 को केन्द्रीय कमेटी ने निश्चय किया :

"रेंगल की सफलताओं और कूबान के खतरे को देखते हुए, रेंगल-मोर्चे को जबर्दस्त महत्व वाला एक बिल्कुल स्वतन्त्र मोर्चा मानकर, उसकी व्यवस्था करनी होगी। साथी स्तालिन को आदेश दिया जाता है कि वह एक क्रान्तिकारी सैनिक-परिषद बनाकर, अपना सारा प्रयत्न रेंगल-केन्द्र पर लगायें।"

जिस समय (अप्रैल सन 1920 में) रेंगल ने दक्षिण में आक्रमण शुरू किया, उसी समय साम्राज्यवादियों की शह पर पोल सरकार ने भी सोवियत-भूमि पर आक्रमण करके, उक्रइन की राजधानी कियेफ पर अधिकार कर लिया। स्तालिन ने जाकर रेंगल के विरुद्ध प्रतिरक्षा की तैयारी की और लड़ाई की योजना बनायी।

3 अगस्त 1920 को केन्द्रीय कमेटी ने निम्न प्रस्ताव पास किया :

"स्तालिन को क्रान्तिकारी सैनिक-परिषद बनाने का काम देना होगा। सभी उपलब्ध सेनाओं को इसी मोर्चे पर लगाना होगा। इगोरोफ या फुंजे को इसी मोर्चे की कमाण्ड देनी होगी, जैसा कि स्तालिन के साथ सलाह करके उच्चतर परिषद ने तय किया है।"

स्तालिन ने नये मोर्चे का संगठन किया, लेकिन इसी समय बीमार पड़ जाने से उन्हें वहाँ से हटना पड़ा। तो भी, उन्हीं की बनायी हुई योजना के अनुसार फुंजे ने रेंगल को भगाने में सफलता पायी।

14. पोलिश मोर्चा (1920)

रेंगल के खिलाफ लड़ाई होते समय, बीमारी के कारण स्तालिन को वहाँ से चला आना पड़ा था, लेकिन पोलैण्ड के क्रान्ति-विरोधियों से लोहा लेने के समय वह फिर मैदान में आ गये थे। स्तालिन का अर्थ ही अब विजय हो गया था और, पुराने श्लोक को जरा-सा बदलकर, हम कह सकते हैं : 'यत्र युक्तीश्वरो लेनिन, यत्र स्तालिन धनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्धुवा नीतिर्मतिर्मम।' पोलिश सेना पछाड़ी गयी। कियेफ और उक्रइन मुक्त करा लिये गये। लाल सेना गलीसिया के बहुत भीतर तक घुस गयी। कियेफ, बेदीचेफ और जितोमिर में तृतीय पोलिश सेना के प्रायः पूर्णतया नष्ट हो जाने के बाद, पोलिश-मोर्चा खत्म हो गया। एक ओर लाल रिसाला ल्वोफसर पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहा था, और दूसरी ओर लाल सेना पौलेण्ड की राजधानी वारसा के पास पहुँच गयी थी। इस पर पोलों ने सर्वस्व की बाजी लगाकर, बोल्शेविक सेना को हराया। इसका कारण था, कुछ सफलता दिखलाने के लिए लालायित युद्ध-मन्त्री त्रात्स्की को अपनी बेवकूफी दिखलाने का मौका मिल जाना। विजय की सफलता से फूले न समाते हुए, गोला-बारूद और सर्दी का इन्तजाम किये बिना ही, त्रात्स्की ने एक सेना को वारसा पर अधिकार करने के लिए भेज दिया था, जिसके कारण ही यह परजय हुई और जिसका परिणाम यह हुआ - पश्चिमी उक्रइन और पश्चिमी बेलोरुसिया का सन 1919 से बीस वर्षों के लिए पोलों के हाथ में चला जाना।

लेनिन की प्रेरणा से 27 नवम्बर 1919 को अखिल रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति ने गृह-युद्ध की विजयों के उपलक्ष्य में, स्तालिन को लाल झण्डे का तमगा प्रदान किया। इंग्लैण्ड, फ्रांस तथा दूसरे साम्राज्यवादी देशों ने गृह-युद्ध में क्रान्ति-विरोधियों को धन और सामान से सहायता देकर ही सन्तोष नहीं किया, बल्कि हार के बाद जब जर्मनी की सेनाएँ रूस से हटीं तो फ्रेंच और अंग्रेजी सेनाएँ जल और स्थल - दोनों मार्गों से रूस के भीतर घुसकर लूटमार करने तथा वहाँ

के निवासियों के खून से हाथ रँगने लगीं। जो भी हाथ आये, कल-कारखाने आदि सबको उन्होंने बेदर्दी से नष्ट कर दिया। जर्मन सेना ने रूस से बाल्तिक तक के प्रदेश (लिथुवानिया, लेत्विया और एस्तोनियाँ) और फिनलैण्ड छीन लिए थे। फ्रेंच-ब्रिटिश साम्राज्यवादियों ने पश्चिमी उक्रइन और बेलारूसिया के कितने ही भाग को देकर, पोलैण्ड में एक नया राज्य कायम कर दिया; उन्होंने कालसागर के तटवर्ती बेसराबिया को छीनकर रूमानिया को दे दिया। यह स्मरण रखने की बात है कि जिस समय यह काम किया जा रहा था, उस समय फ्रांस या इंग्लैण्ड की रूस से कोई लड़ाई नहीं थी। फ्रांस को एक बड़े नेता रेने पिनो के अनुसार : "यह दखल देना, एक विदेशी राज्य के भीतरी कामों में दखल देना भर नहीं था, बल्कि साथ ही एक देश तथा उसके साथ सारी दुनिया को, एक (खतरनाक) सामाजिक और सामान्य व्यवस्था (बोल्शेविज्म) के खतरे से मुक्ति दिलाने का प्रयत्न था। (1)..." सारी दुनिया के प्रतिगामियों की पीठ ठोंकने और हर तरह की मदद देने के लिए, जिस तरह द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अमरीका तैयार हुआ है, वही काम प्रथम विश्वयुद्ध के बाद इंग्लैण्ड और फ्रांस ने किया था। इस काम में उस समय इंग्लैण्ड का अगुवा वही चर्चिल था, जिसने द्वितीय युद्ध की समाप्ति के समय अमरीका को शह देकर, हिरोशिमा और नागासाकी पर अणु बम गिरवा कर नृशंस नरसंहार कराया है।

गृह-युद्ध की इन घटनाओं से मालूम होगा कि स्तालिन एक तिकड़मी आदमी या केवल लेनिन की रबड़-मुहर नहीं थे। उनके पास मौलिक प्रतिभा थी, जिसका चमत्कार उन्होंने पग-पग पर दिखलाया है।

पूँजीवादी अखबार और उनके भरमाये हुए दूसरे आदमी, स्तालिन और बोल्शेविकों पर यह दोष लगाते हैं कि उन्होंने अपने शत्रुओं के साथ हद से अधिक कठोरता का बर्ताव किया है। स्तालिन ने इसके बारे में सन 1931 के अन्त में, एक वार्तालाप के दौरान कहा था :

"जिस समय बोल्शेविकों ने अधिकार सँभाला, उस समय उन्होंने अपने शत्रुओं के प्रति बड़ी नरमी दिखानी चाही थी। मेंशेविक काफी समय तक कानूनी तौर से रहते और अपना पत्र भी निकालते थे। यही बात समाजवादी क्रान्तिकारियों की थी। यहाँ तक कि कादेत भी अपना पत्र निकालते थे। जनरल क्रस्नोफन क्रान्ति-विरोधी सेना लेकर पेत्रोग्राद पर कूच करते हुए, हमारे हाथ में पड़ गया था। युद्ध के नियमों के अनुसार, उसके साथ हम चाहे कुछ भी कर सकते थे या कम-से-कम कैदी बनाकर तो रख सकते थे, उसे गोली से भी मरवा सकते थे, लेकिन हमने उसे पैरोल (वचन बन्दी) पर छोड़ दिया था। लेकिन, उसका फल क्या हुआ? हमने जल्दी ही देख लिया कि इस तरह की नरमी सोवियत

शक्ति की स्थिरता को कमजोर बनाती है और कमकर वर्ग के शत्रुओं के प्रति इस तरह की सहिष्णुता का परिचय देकर हम गलती कर रहे हैं। अगर हम आगे भी इस तरह की नर्मी जारी रखते, तो यह कमकर वर्ग के प्रति हमारा अपराध होता, उनके हितों के प्रति विश्वासघात होता। जल्दी ही हमारे सामने यह बात स्पष्ट हो गयी। हमने जल्दी ही मालूम कर लिया कि अपने शत्रुओं के प्रति हम जितनी ही अधिक उदारता दिखलाते हैं, वह उतनी ही अधिक मजबूती के साथ हमारा प्रतिरोध करते हैं। थोड़े ही समय बाद, सामाजवादी क्रान्तिकारी गोत्ज आदि और दक्षिण पन्थी मेंशेविकों ने पेत्रोग्राद के सैनिक–स्कूल में विद्रोह संगठित किया, जिसके कारण हमारे बहुत से क्रान्तिकारी नौ–सैनिकों की जानें गयीं। जिस क्रास्नोफ को हमने पैरोल पर छोड़ दिया था, उसने हमारे विरुद्ध सफेद कज्जाकों को संगठित किया, ममन्तोफ से मिलकर दो साल तक सोवियत सरकार के विरुद्ध हथियाबन्द लड़ाई की।... यह आसानी से समझा और देखा जा सकता है कि अधिक नर्मी दिखलाकर हमने गलती की थी।

"इसके अतिरिक्त, मैं स्तालिन की उस बात को भी जोड़ता हूँ जो कि उन्होंने मुझसे सात वर्ष पहले (सन 1927 में) प्रसिद्ध 'लाल–आतंक' के सम्बन्ध में कही थी। वह मृत्यु–दण्ड के बारे में बातें कर रहे थे : 'हम सभी मृत्यु–दण्ड बन्द करने के पक्ष में हैं। सचमुच हमारा विश्वास है कि सोवियत संघ के शासन–प्रबन्ध में इसको रखने की आवश्यकता नहीं है। हमने मृत्यु–दण्ड को कभी का खत्म कर दिया होता, यदि बाहरी दुनिया, बड़े साम्राज्यवादी राज्य, हमें अपने अस्तित्व को बचाये रखने के लिए, उसे कायम रखने पर मजबूर न किये होते।"

अध्याय - छः

उपनेता (सन 1921-23)

गृह-युद्ध में भीतरी और बाहरी शत्रुओं को करारी हार देने के बाद, यद्यपि लड़ाई से छुट्टी मिल गयी थी, लेकिन सोवियत नेताओं के सामने पुनर्निर्माण का भारी काम था। सन 1914 के महायुद्ध ने रूस के चालीस अरब सुवर्ण रूबल की सम्पत्ति का नुकसान पहुँचाया था। कमकर जनता के एक-तिहाई का खून हो चुका था। सन 1913 की अपेक्षा, सन 1921 में उद्योग-धन्धों, उपज और यातायात का पाँचवाँ या छठवा हिस्सा ही शेष रह गया था। गृह-युद्ध के समय पचास अरब रूबल की सम्पत्ति और भी नष्ट हो गयी थी। सभी कारखाने ध्वस्त हो गये थे। सारे देश में युद्ध की आग भड़कने के कारण, आधे खेत परती पड़ गये थे। शासन-व्यवस्था, शिक्षा-व्यवस्था, सभी अस्त-व्यस्त थीं। लाल सेना के पास राइफलों और बूटों की ही नहीं, बल्कि रोटियों की भी कमी थी। ऊपर से बड़े-बड़े साम्राज्यवादी राज्य देश पर कहर ढा रहे थे। फ्रांस के क्लेमन्सो और प्वानकारे तथा इंग्लैण्ड के लायड जार्ज और चर्चिल, चौदह राष्ट्रों को लेकर सोवियत शक्ति को नेस्तेनाबूद करने पर तुले हुए थे। कोलचक की सेना को 'फ्रेंच सरकार ने सत्रह सौ मशीनगनें, तीस टैंक और दर्जनों बड़ी-बड़ी तोपें दी थीं। कोलचक के साथ मिलकर, आक्रमण करनेवालों में हजारों अंग्रेज और अमरीकी सिपाही, सत्तर हजार जापानी और करीब साठ हजार चेकोस्लोवाकी सिपाही भी थे। देनीकिन की सेना के साठ हजार आदमियों को इंग्लैण्ड ने अपने हथियारों और गोला-बारूद से लैस करते हुए, उसे दो लाख राइफलें, दो हजार बन्दूकें और तीस टैंक दिये थे, साथ ही सेना को सलाह और शिक्षा देने के लिए सैकड़ों अंग्रेज़ अफसर भेजे थे। साइबेरिया को रूस से छीनने के लिए, साम्राज्यवादियों ने ब्लादीबोस्तोक पर अपनी सेना उतारी, जिसमें दो जापानी डिवीजन, दो अंग्रेजी बटालियनें, छः हजार अमरीकी और तीन हजार फ्रेंच तथा इटालियन थे। रूस के

गृह–युद्ध में इंग्लैण्ड ने चौदह करोड़ पौण्ड और पचास हजार सिपाहियों की जानें होम की थीं। पश्चिमी साम्राज्यवादियों ने खूनी दखलन्दाजी करके, रूस में जो सत्यानाश मचाया, उसमें चौवालीस अरब सुवर्ण रूबल की सम्पत्ति का सत्यानाश हुआ था। सन 1921 में रूस में एक फ्रेंच एडमिरल अपनी सरकार का प्रतिनिधि बनकर भी, सोवियत सरकार के शत्रुओं को खुले आम संरक्षण दे रहा था। फ्रांस ने बहुत बाद तक वह काम किया, जिसे करने की हिम्मत तब इंग्लैण्ड और तुर्की भी नहीं करते थे। गुर्जी से भागे हुए क्रान्ति–विरोधी योरदानिया और चेकेली को फ्रेंच सरकार गुर्जी के मुखिया और राजदूत के तौर पर स्वीकार करती थी। उसने कोलचक को शासक स्वीकार किया था, और रेंगल के बारे में भी वही करने जा रही थी।

गृह–युद्ध के बाद, एक और भारी खतरा पार्टी के भीतर पैदा हो गया था। बोल्शेविकों ने त्रात्स्की जैसे बहुत–से छोटे–बड़े ढुलमुलयकीनों को खुल्लमखुल्ला विरोधी न होने देने के लिए अपने भीतर ले लिया था। उन्होंने अपनी बेवकूफी से गृह–युद्ध के समय भारी हानि पहुँचायी ही थी। अब पुनर्निर्माण के समय, वह उससे भी ज्यादा विरोध करने के लिए तैयार थे। सन 1920 में लेनिन की सिफारिश पर, राज्य बिजलीकरण–कमीशन (गो–एल–रो) स्थापित किया गया था, जिससे देश के बिजलीकरण के लिए दस वर्षों की एक योजना का काम पहले–पहल यहीं से शुरू हुआ। त्रात्स्की और रूइकोफ ने इस योजना का विरोध करना शुरू किया; जब कि योजना की एक कापी के साथ लेनिन का पत्र पाकर स्तालिन ने तुरन्त जवाब दिया था कि यह एक सच्ची आर्थिक योजना है, और उनके विचार में 'आज के समय में आर्थिक तौर से पिछड़े हुए रूस के सोवियत वाले ऊपरी ढाँचे को वस्तुत: व्यावहारिक तकनीक तथा उत्पादन के आधार पर आधारित करने का एकमात्र मार्क्सवादी प्रयत्न है।' – स्तालिन ने जोर देकर कहा कि उसे काम में लाने में देर नहीं करनी चाहिए और सारे काम का कम–से–कम एक–तिहाई इसी योजना में लगना चाहिए। लेकिन, त्रात्स्की और उसके अनुयायियों का कहना था कि युद्धकालीन साम्यवादी नीति को, अब भी शान्तिकालीन आर्थिक क्षेत्र और पार्टी के काम में बरता जाये तथा फँदे को ढीला करने की जगह और भी कस दिया जाये।

1. दशम कांग्रेस (मार्च सन 1921)

यह बोल्शेविक पार्टी की वही कांग्रेस थी, जिसमें युद्धकालीन साम्यवादी नीति की जगह लेनिन द्वारा प्रस्तावित नवीन आर्थिक नीति के प्रोग्राम को स्वीकार किया गया था। इसी कांग्रेस में स्तालिन ने जातीय समस्या के सम्बन्ध में पार्टी

के सामने फौरी विषयों पर अपनी रिपोर्ट दी थी, जिसमें कांग्रेस ने स्पष्ट माना था कि गो जातीय उत्पीड़न मिटा दिया गया है लेकिन वह काफी नहीं है। उन्हें अतीत के बुरे दाय भाग को भी खत्म करना है, जिसका अर्थ है – भूतपूर्व दलित जातियों के आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक पिछड़ेपन को खत्म करना, इन सभी बातों में उन्हें रूस के लोगों के बराबर लाना। नवीन आर्थिक नीति का जबर्दस्त समर्थन करते हुए, स्तालिन ने उसकी व्याख्या की थी : "नवीन आर्थिक नीति सर्वहारा राज्य की एक विशेष नीति है, जो पूँजीवाद को सहन करते हुए, लेकिन अहम स्थानों को सर्वहारा राज्य के हाथों में रखते हुए पूँजीवाद और समाजवादी तत्वों के संघर्ष में समाजवादी तत्वों के महत्वपूर्ण विकास के लिए पूँजीवादी तत्वों के मत्थे, पूँजीवादी तत्वों के ऊपर समाजवादी तत्वों की विजय और वर्गों के खत्म करने तथा समाजवादी आर्थिक व्यवस्था की नींव रखने के उद्देश्य से बनायी गयी है।" स्तालिन ने जातीय प्रश्न पर कहा था : "उन जातियों को आर्थिक और सांस्कृतिक सहायता देने की ओर बहुत ध्यान देना चाहिए, जो कि जारशाही शासन में उपेक्षित और पद–दलित रही थीं, जिससे क्रान्ति–विरोधियों को उन्हें भड़काने का मौका न मिले।" स्तालिन ने सबसे पहले जातीय समस्या को हल करने के महत्व को समझा, उसकी तरफ बोल्शेविकों का ध्यान आकृष्ट किया था। प्रथम युद्ध से एक साल पहले, उन्होंने अपने विचारों को एक पुस्तक के रूप में पेश किया था, लेनिन ने भी जिसकी दूरदर्शिता की दाद दी थी। इसमें शक नहीं कि शान्ति, किसानों को खेत और मजदूरों को कारखानों पर अधिकार देने के साथ–साथ जातियों की स्वतन्त्रता की अभिलाषा को प्रोत्साहन देना भी अक्टूबर–क्रान्ति की सफलता का एक कारण था। स्तालिन ने लिखा था : "कोलचक और देनीकिन को मार भगाने में हम इसीलिए सफल हुए कि दलित जातियों की सहानुभूति हमारे साथ थी।" सन 1917 में राज्य के सभी मुस्लिम कमकरों को सम्बोधित करते हुए, लेनिन और स्तालिन ने अपने हस्ताक्षरों से एक घोषणा निकाली थी, जिसमें कहा गया था :

"तुर्किस्तान, साइबेरिया, काकेशिया और वोल्गा के प्रदेशों में जगह–जगह बिखरे हुए करोड़ों लोगों को दूसरों को बराबर लाना हमारा पहला कर्तव्य होगा।"

और, यह कर्तव्य उन्होंने जनता को मुगालते में रखने के लिए पेश नहीं किया था। सोवियत के भाग्य–विधाताओं ने उस पर सच्चे दिल से अमल करने का निश्चय किया था। जातियों की अपनी विशेषताओं – समष्टिगत नैतिक और बौद्धिक राष्ट्रीय संस्कृति, राष्ट्रीय परम्परा, जनकथाओं में प्रकट होने वाली प्रत्येक वस्तु, कला और कला–सम्बन्धी सृजन, मानसिक उत्पादन तथा पारिवारिक भावना और पूर्वजों के अभिमान, मातृभाषा द्वारा किये जाने वाले हर एक

काम – इन सभी चीजों को सिर्फ सुरक्षित ही नहीं रखने, बल्कि बोल्शेविकों ने उन्हें और भी समृद्ध करने का भार अपने ऊपर लिया। उन्होंने जातीय समस्याओं को केवल राष्ट्रीय दृष्टिकोण से ही नहीं, बल्कि प्रादेशिक दृष्टिकोण से भी सुलझाने का प्रयत्न किया। जहाँ तक जातीय धर्मों का सम्बन्ध था, वह कहीं भी स्थानीय उपज नहीं थे। ईसाई धर्म जारों के साथ बाहर से आया था; इस्लाम को अरब गाजियों ने बड़े खून–खराबे के बाद मध्य एशिया में फैलाया था; – तो भी, सोवियत अधिकारियों ने उनको छेड़ा नहीं, और सिर्फ बहुपत्नी विवाह तथा मठों की सम्पत्ति जैसे सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में ही उनके अनुचित दखल को बन्द किया। जातियों के सम्बन्ध में स्तालिन का नुस्खा बहुत ठीक साबित हुआ। द्वितीय विश्वयुद्ध ने भी उसकी पुष्टि की। इस सम्बन्ध में स्तालिन ने एक बार कहा था :

"सोवियत देश–भक्ति की शक्ति इस बात पर आधारित है कि वह नस्ली या राष्ट्रीय पक्षपातों पर आधारित न होकर, सोवियत मातृभूमि के प्रति जनता की पूर्ण भक्ति और विश्वास पर, हमारे देश में रहने वाली सभी जातियों के कमकरों के भाईचारे वाले सहयोग पर निर्भर है। लोगों की राष्ट्रीय परम्पराओं तथा सोवियत संघ की सभी कमकर जनता के मुख्य एक समान हितों के साथ सोवियत देश–भक्ति का बड़ा ही सुन्दर सम्मिश्रण है। यह देश–भक्ति बिना भेदभाव के, बिना बिलगाव के सभी जातियों को एक भ्रातृभावपूर्ण परिवार में एकताबद्ध करती है।"

सन 1921 की गर्मियों में स्तालिन बीमार पड़ गये थे। लेनिन को अपने इस इकलौते बेटे जैसे शिष्य के लिए बड़ी चिन्ता हुई। उन्होंने सेर्गो ओर्योनिकिद्ज़े को तुरन्त तार दिया :

"कृपया मुझे बतलाओ कि स्तालिन का स्वास्थ्य कैसा है और डाक्टरों की क्या राय है?"

जवाब पाकर, लेनिन ने फिर तार दिया : "स्तालिन की चिकित्सा करने वाले डाक्टर का नाम और पता भेजो। वह कितने समय से बीमार है?"

सन 1921 की शरद में, लेनिन ने क्रैमलिन के अधिकारी को लिखा था : "रसोईघर के पास सोने में बाधा होती है, इसलिए स्तालिन को किसी और आरामदेह मकान में ले जाना चाहिए।" लेनिन ने इस काम को तुरन्त करने के लिए हुक्म देते हुए, यह भी पूछा था : "मुझे सूचित करो कि तुम इसे कर सकते हो या नहीं और कर सकते हो, तो कब?" लेनिन ने दिसम्बर में अपने सेक्रेटरी के पास नोट लिखा रखा था कि वह रोज सवेरे इस बात की याद दिलाया करे कि स्तालिन को देखना है, और उससे पहले स्तालिन के डाक्टर के साथ

टेलीफोन का सम्बन्ध भी जोड़ दे। यह समझना बिल्कुल आसान है कि अप्रतिम स्तालिन में लेनिन ने अपनी भविष्य की सारी आशाओं को केन्द्रित देखा था। उनकी अपनी कोई सन्तान नहीं थी। स्तालिन में उनका अपने पुत्र जैसा ही वात्सल्य निहित था।

बीमार पड़ने से पहले 6 जुलाई 1921 को स्तालिन ने तिफलिस के पार्टी संगठनों की एक सभा में भाषण दिया था। वहाँ पर भी राष्ट्रवादी मध्यवर्ग अपना दूसरा ही रास्ता पकड़ना चाहता था और सारे काकेशिया का फैडरल सोवियत गणराज्य बनाने में सहमत नहीं था। लेनिन ने इस बात को पसन्द किया और स्तालिन ने वहाँ फैडरल गणराज्य कायम कर दिया था।

2. ग्यारहवीं कांग्रेस (सन 1922)

नवीन अर्थनीति का एक साल बीत गया था, जब कि सन 1922 की मार्च–अप्रैल में पार्टी ने इस कांग्रेस में नयी नीति के परिणामों पर विचार किया। इसी समय, लेनिन ने घोषित किया था :

"एक साल तक हम पीछे हटते रहे, लेनिन अब पार्टी के नाम पर हमें, 'ठहरो' कहना है। पीछे हटने का जो उद्देश्य था, वह पूरा हो गया है। वह काल खत्म हो रहा है, या हो चुका है। अब हमारा उद्देश्य दूसरा है, वह है – अपनी शक्तियों को एकत्रित करना।" इसी कांग्रेस में 3 अप्रैल को लेनिन के प्रस्ताव पर, केन्द्रीय कमेटी के प्लेनम (बड़ी बैठक) में केन्द्रीय कमेटी ने स्तालिन को महामन्त्री निर्वाचित किया। पार्टी में यह नया और बड़ा महत्वपूर्ण पद था, जो अन्तिम समय तक स्तालिन के हाथ में रहा। भविष्य ने लेनिन के इस काम को सर्वथा उचित सिद्ध किया। स्तालिन–विरोधी प्रेओब्रजेन्स्की ने इसकी आलोचना करते हुए कहा था कि स्तालिन पहले से ही दो विभागों – जातीय विभाग और कमकर–किसान–निरीक्षण–विभाग के जन–कमीसार हैं। इस तरह, उनके हाथ में और शक्तियों को देना अच्छा नहीं है। इस पर लेनिन ने कड़ा जवाब देते हुए कहा था :

"प्रेओब्रजेन्स्की ने हल्कापन दिखलाते हुए शिकायत की है कि स्तालिन के हाथ में दो विभाग दे दिये गये हैं। लेकिन, जातीय विभाग के जन–कमीसार के पद की वर्तमान स्थिति को कायम रखने और तुर्किस्तान, काकेशिया तथा दूसरे प्रश्नों की गहराई तक पहुँचने के लिए हम और क्या कर सकते हैं? आखिर ये राजनीतिक समस्याएँ हैं, और इन समस्याओं को हल करना होगा। ये ऐसी समस्याएँ हैं जो कि यूरोपीय राज्यों को सैकड़ों वर्षों से परेशान किये हुए हैं; और जो जनतान्त्रिक गणराज्यों में भी बहुत थोड़े ही परिणामों के साथ हल की गयी

हैं। हम इन समस्याओं को हल कर रहे हैं, जिसके लिए हमारे पास एक ऐसा आदमी होना चाहिए, जिसके पास जातियों का कोई भी प्रतिनिधि आकर सम्बन्धित विषयों पर सविस्तार बातचीत कर सके। हम ऐसा आदमी कहाँ से पायेंगे? मैं समझता हूँ कि इस काम के लिए प्रेओब्रजेन्स्की भी साथी स्तालिन को छोड़कर किसी दूसरे आदमी का नाम नहीं दे सकते। यही बात कमकर-किसान निरीक्षणालय के बारे में भी है। यह बहुत जबर्दस्त काम है। लेकिन, जाँच-पड़ताल के काम को ठीक से करने के लिए, हमें एक अधिकारयुक्त आदमी की आवश्यकता है, नहीं तो हम छोटी-छोटी तिकड़मों में ही डूब जायेंगे।"

3. लेनिन का निधन (सन 1924)

सन 1918 में क्रान्ति-विरोधियों द्वारा बहकायी हुई, एक स्त्री ने लेनिन पर मरणान्तक आक्रमण किया था। यद्यपि उससे उसी वक्त उनकी जान नहीं गयी, लेकिन छाती में मर्मस्थान पर गोली लगने से लेनिन का स्वास्थ्य हमेशा के लिए बिगड़ गया था; और सन 1921 के अन्त से ही उन्हें काम से अक्सर अलग रहना पड़ता था। तभी से पार्टी की सारी जिम्मेवारी स्तालिन के कन्धों पर थी। इसी समय, स्तालिन ने जातीय सोवियत गणराज्यों का निर्माण तथा सारे सोवियत गणराज्यों को मिलाकर एक संघ-राज्य - सोवियत समाजवादी गणसंघ - का निर्माण किया। सन 1922 की गर्मियों में लेनिन की बीमारी भयंकर हो उठी। उस समय स्तालिन बराबर अपने गुरु को देखने जाया करते थे और डाक्टरों की आज्ञा होने पर राजकाज की बातों को भी बतलाते थे। जैसे ही लेनिन का स्वास्थ्य कुछ ठीक हुआ, वैसे ही उन्होंने स्तालिन को मिलने के लिए बुलाया। स्तालिन ने अपने संस्मरणों में बतलाया है कि लेनिन सभी राजनीतिक परिस्थितियों में कितनी दिलचस्पी लेते थे।

अक्टूबर सन 1922 में लेनिन का स्वास्थ्य इतना अच्छा हो गया था कि उनके डाक्टरों ने काम पर जाने के लिए इजाजत दे दी थी। वह जन-कमीसार-परिषद (मन्त्रिमण्डल) की बैठकों में जाने लगे। उसी महीने में, केन्द्रीय कमेटी की एक प्लेनरी (बड़ी) मीटिंग में भी शामिल हुए। वह सोवियतों की अखिल रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी की चतुर्थ कांग्रेस में भी बोले, और उन्होंने कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल की चतुर्थ कांग्रेस में नवीन आर्थिक नीति और विश्व-क्रान्ति की सम्भावना के बारे में एक रिपोर्ट भी दी। 20 नवम्बर सन 1922 को मॉस्को सोवियत (नगर पालिका) की एक प्लेनरी बैठक में, गृह और विदेश-सम्बन्धी नीति पर भाषण देते हुए लेनिन ने अपना दृढ़विश्वास प्रकट किया था कि नवीन अर्थनीति पर चलने वाला रूस एक दिन अवश्य ही समाजवादी रूस बनेगा।

लेनिन का यह अन्तिम सार्वजनिक भाषण था। वह अखिल रूसी सोवियत कांग्रेस में भाषण देने की तैयारी कर रहे थे। उन्होंने उसकी योजना भी बना ली थी, लेकिन उनका स्वास्थ्य तेजी से खराब होने लगा। उन्होंने स्तालिन को एक चिट्ठी भी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की विस्तारित मीटिंग में पढ़ने के लिए लिखी, जिसमें राज्य इजारेदारी के विरोधियों बुखारिन आदि की कड़ी आलोचना करते हुए, उन पर कुलक–नीति का समर्थन करने का दोष लगाया था।

दिसम्बर सन 1922 को सोवियत समाजवादी गणसंघ की स्थापना हुई। लेनिन बीमार थे। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इस काम में स्तालिन का ही सबसे अधिक हाथ था। संघ के सन्धि–पत्र को उन्होंने ही तैयार किया और उन्हीं की रिपोर्ट पर सोवियत संघ की प्रथम कांग्रेस ने 30 दिसम्बर 1922 को उस सन्धि–पत्र को स्वीकार किया था। स्तालिन ने ही सोवियत समाजवादी गणसंघ के संविधान को तैयार किया, जिसे संघ की द्वितीय कांग्रेस ने सन 1924 में पास किया था। स्तालिन ने इस समय प्रथम कांग्रेस के सामने भाषण देते हुए कहा था :

"आज का दिन सोवियत सरकार के इतिहास में एक नये युग का परिचायक है। यह पुराने युग और नये युग की विभाजन–सीमा को बनाता है। पुराना युग, जो अतीत हो गया है – जबकि सभी सोवियत गणराज्य यद्यपि एक होकर काम करते थे, लेकिन तो भी उनमें से हर एक अपने–अपने रास्ते जाता और अपनी ही रक्षा के साथ अपना मुख्य सम्बन्ध रखता था। नया युग, जो अब आरम्भ हो रहा है – इसमें भिन्न–भिन्न सोवियत गणराज्यों के अलग–थलग अस्तित्व को खत्म किया जा रहा है और आर्थिक अस्तव्यस्तता को सफलतापूर्वक हटाने के लिए, उसे एक अकेले फैडरल राज्य के रूप में परिणत किया जा रहा है। अब से सोवियत सरकार सिर्फ अपने ही अस्तित्व को कायम रखने का ध्यान न रखकर, अन्तरराष्ट्रीय स्थिति पर प्रभाव डालने और मेहनतकशों के हितों में सुधार करने में सक्षम होने के लिए एक महत्वपूर्ण अन्तरराष्ट्रीय शक्ति के रूप में विकसित हो रही है।"

बोल्शेविकों की, विशेषकर स्तालिन की, जबर्दस्त सूझ का ही फल था कि जातीय गणराज्यों ने मिलकर एक राज्य हो जाने में कोई हिचकिचाहट महसूस नहीं की। उन्होंने क्रान्ति के बाद के पाँच वर्षों में देख लिया था कि बोल्शेविकों के हृदय में किसी तरह का जातीय पक्षपात नहीं है और रूसी जैसी सबसे आगे बढ़ी हुई जाति भी पिछड़ी जातियों के साथ सच्चा भाई–चारा दिखाती हुई, उन्हें हर तरह से अपने बराबर लाने की कोशिश कर रही है। इसीलिए, जब तातार और बाशकिर बुर्जुआ–राष्ट्रवादियों ने सुलतान हलीयैफ (गलीयैफ) के नेतृत्व में कुछ

गड़बड़ी मचानी चाही, तो उन्हें अपनी जनता की सहायता न पाकर विफल-मनोरथ होना पड़ा।

सन 1922 के बाद, बीमारी के कारण लेनिन मॉस्को के पास गोर्की गाँव में रहते थे। वह अब इस स्थिति में नहीं रह गये थे कि राजकाल में भाग लेते। एक वर्ष से ऊपर का उनका जीवन अपने पुराने कर्मठ जीवन से बिल्कुल भिन्न था। वस्तुतः इस सारे समय वह जीवन और मृत्यु के बीच में लटके हुए थे, लेकिन उनको इस बात का सन्तोष था कि सोवियत राज्य का भार बड़े ही योग्य कन्धों पर पड़ा है। सन 1923 का पूरा साल सारे देश, लेनिन और उनकी पार्टी के लिए भारी परीक्षा का समय था। लेनिन की बीमारी से फायदा उठाकर, त्रात्स्की और उसके अनुयायी हर तरह से पार्टी और सरकार पर आक्रमण करके उसे कमजोर करने की कोशिशें करते रहे। उनके प्रहार के मुख्य लक्ष्य थे – केन्द्रीय कमेटी के महामन्त्री स्तालिन। उन्होंने पार्टी के सम्बन्ध में वाद-विवाद खड़ा कर दिया और एक दूसरी पार्टी बनाने का भी मनसूबा बाँधा, लेकिन स्तालिन कई क्षेत्रों में अपनी अद्भुत प्रतिभा दिखला चुके थे। वह राजनीतिक शतरंज में भी कच्चे गोइयाँ नहीं निकले। पार्टी के लोग उन पर अपार विश्वास रखते थे। वह पिछड़ी जातियों के हिमायती और श्रद्धेय बन चुके थे। 2 दिसम्बर 1923 को क्रास्नयाप्रेस्न्या (मॉस्को) जिला कमेटी की एक बैठक में स्तालिन ने पार्टी को मजबूत करने और बोल्शेविक संगठन तथा बोल्शेविक नीति के शत्रुओं के मनसूबों को विफल करने के लिए केन्द्रीय कमेटी ने क्या काम था, इसे बतलाया। 15 दिसम्बर 1923 को स्तालिन के हस्ताक्षर से केन्द्रीय कमेटी की एक घोषणा 'प्राव्दा' में प्रकाशित हुई, जिसमें अवसरवादियों के विरुद्ध एक होकर संघर्ष करने के लिए लिखा गया था। जनवरी सन 1924 में पार्टी कांफ्रेंस हुई, जिसमें स्तालिन ने रिपोर्ट दी। कांफ्रेंस में त्रात्स्की और उसके अनुयायियों को निम्न बुर्जुआ पथभ्रष्ट कहते हुए, उनकी निन्दा की गयी।

अन्त में 21 जनवरी 1924 का वह मनहूस दिन आया, जब मॉस्को के पास गोर्की गाँव में महान लेनिन ने संसार से अन्तिम विदाई ली। साम्यवाद और सोवियत राष्ट्र के लिए यह भयंकर क्षति थी, इसमें शक नहीं; लेकिन, पिछले एक साल के तूफानों का मुकाबला करते हुए, स्तालिन ने किस तरह राष्ट्र-नौका को आगे बढ़ाया था, इसे देखकर लोगों को आगे के लिए किसी भय की सम्भावना नहीं थी।

स्तालिन की अपने गुरु में अपार श्रद्धा थी, लेकिन उस श्रद्धा का कारण मूढ़ भक्ति नहीं थी, बल्कि लेनिन की चमत्कारपूर्ण प्रतिभा और अद्वितीय सूझ की करामात को बार-बार देखकर सच्चाई के सामने सिर झुकाने जैसी भावना थी।

स्तालिन को इस बात का बहुत अभिमान और सन्तोष था कि वह ऐसे गुरु के शिष्य हैं। जब स्तालिन का स्वरूप आगे की सफलताओं के कारण विराट हो गया, तब भी वह अपने को लेनिन का विनम्र शिष्य समझने में गौरव का अनुभव करते थे। लेनिन के शव को 26 जनवरी को अन्तिम विश्राम के लिए ले गये थे। उसी दिन, स्तालिन ने अपने गुरु की अर्थी के सामने पार्टी तथा राष्ट्र की ओर से शपथ ली थी।

4. स्तालिन की शपथ (26 जनवरी 1924)

"हम कम्युनिस्ट एक विशेष साँचे में ढले हुए आदमी हैं; हम एक विशेष धातु के बने हैं। हम सर्वहारा युद्ध-विद्या-विशारद, महान साथी लेनिन की सेना के सिपाही हैं। दुनिया में इस सेना के अंग होने से बढ़कर और कोई सम्मान नहीं है। उस पार्टी के सदस्य की उपाधि से बढ़कर कोई बड़ी चीज नहीं हो सकती, जिसके संस्थापक और नेता साथी लेनिन हैं।...

"हमसे विदा होते हुए, साथी लेनिन ने हमारे ऊपर जिम्मेवारी रखी है कि पार्टी के सदस्य की महान उपाधि को ऊँचा, शुद्ध और सुरक्षित रखने के लिए प्रयत्न करें। साथी लेनिन, हम तुम्हारे सामने शपथ लेते हैं कि हम तुम्हारी इच्छा को भली-भाँति पूरा करेंगे।...

"हमसे विदा होते हुए, साथी लेनिन ने हमारे ऊपर जिम्मेवारी रखी है कि हम अपनी पार्टी की एकता को अपनी आँखों की पुतली की तरह जोगा कर रखें। साथी लेनिन, हम तुम्हारे सामने शपथ लेते हैं कि हम तुम्हारी इच्छा को भली-भाँति पूरा करेंगे।...

"हमसे विदा होते हुए, साथी लेनिन ने हमारे ऊपर जिम्मेवारी रखी है कि हम सर्वहारा के नेतृत्व को सुरक्षित और मजबूत करें। साथी लेनिन, हम तुम्हारे सामने शपथ लेते हैं कि हम तुम्हारी इच्छा को भली-भाँति पूरा करेंगे।...

"हमसे विदा होते हुए, साथी लेनिन ने हमारे ऊपर जिम्मेवारी रखी है कि हम कमकरों और किसानों की दोस्ती को अपनी सारी शक्ति से मजबूत करें। साथी लेनिन हम तुम्हारे सामने शपथ लेते हैं कि हम तुम्हारी इच्छा को भली-भाँति पूरा करेंगे।...

"साथी लेनिन बराबर हमसे अपने देश की जातियों के स्वेच्छापूर्वक संघ को कायम रखने की आवश्यकता, गणसंघ के ढाँचे के भीतर उनमें भाईचारे के सहयोग की आवश्यकता पर जोर देते थे।

"हमसे विदा होते हुए, साथी लेनिन ने हमारे ऊपर जिम्मेवारी रखी है कि हम गणों के संघ को मजबूत और विस्तृत करें। साथी लेनिन, हम तुम्हारे सामने शपथ

लेते हैं कि हम तुम्हारी इच्छा को भली-भाँति पूरा करेंगे।...

"अनेक बार लेनिन ने हमको बतलाया था कि हम लाल सेना को मजबूत करें, और उसकी स्थिति में सुधार करना हमारी पार्टी का एक महत्वपूर्ण काम है।... साथियो, आओ हम शपथ लें कि अपनी लाल सेना और लाल नौसेना को मजबूत करने में किसी भी बात को उठा नहीं रखेंगे।...

"हमसे विदा होते हुए, साथी लेनिन ने हमारे ऊपर जिम्मेवारी रखी है कि हम कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल के सिद्धान्तों के विश्वासपात्र रहें। साथी लेनिन, हम तुम्हारे सामने शपथ लेते हैं कि सारी दुनिया के मेहनतकशों के संघ – कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल – को मजबूत और विस्तृत करने में हम अपने प्राणों की भी परवाह नहीं करेंगे।..."

इस शपथ के बाद, स्तालिन उन्तीस वर्ष तक जिये और उन्होंने लेनिन के सामने ली हुई अपनी शपथ की एक-एक बात को किस तरह पूरा किया है, इसे सारी दुनिया जानती है।

लेनिन की अन्त्येष्टि-क्रिया के दो दिन बाद 28 जनवरी 1924 को उस महान नेता के प्रति श्रद्धांजलि भेंट करते हुए, उनके योग्य उत्तराधिकारी ने एक महत्वपूर्ण भाषण दिया था।

प्रथम बरसी के समय 'रबोचया गजेता' (मजदूर अखबार) में स्तालिन ने एक पत्र लिखा था, जिसके कुछ अंश हैं :

"अपने गुरु और नेता – लेनिन का स्मरण रखो, उनसे प्रेम करो और उनका अध्ययन करो।

"हमें लेनिन ने जैसे सिखलाया है, वैसे ही भीतरी-घरेलू और विदेशी शत्रुओं के साथ लड़ो और उनको मार भगाओ।

"हमें लेनिन ने जैसे सिखलाया है, उसी तरह एक नये जीवन और अस्तित्व के एक नये रास्ते और नयी संस्कृति का निर्माण करो।

"छोटी-छोटी चीजों के करने से इन्कार न करो, क्योंकि छोटी-छोटी चीजों से ही मिलकर बड़ी चीजें बनती हैं – यह लेनिन की एक महत्वपूर्ण वसीयत है।"

त्रात्स्की व्यावहारिक राजनीति या अर्थनीति में चाहे कितना ही कच्चा हो, लेकिन उसकी महत्वाकांक्षाएँ बहुत बढ़ी-चढ़ी थीं। लेनिन जानते थे कि वह कितना क्षुद्र, अविश्वसनीय और निकम्मा आदमी है; इसीलिए उन्होंने त्रात्स्की को आगे नहीं बढ़ाया और पार्टी तथा सरकार की सारी जिम्मेवारी स्तालिन ही के ऊपर रखी। लेनिन के मरने के बाद, अब त्रात्स्की और उसके साथियों ने फिर सिर उठाया। स्तालिन अपने गुरु की बीज रूप में छोड़ी हुई योजनाओं को एक

बड़े आकार में पूरा करने के लिए बहुत-सी कल्पनाएँ कर रहे थे, लेकिन वह देख रहे थे कि मुट्ठीभर त्रात्स्कीवादियों के विरोध के कारण एक मन से, दृढ़संकल्प के साथ देश के लिए कुछ भी करना मुश्किल होगा। इसीलिए, उन्होंने घोषित किया : "जब तक त्रात्स्कीवाद को हराया नहीं जाता, तब तक नयी अर्थनीति की स्थितियों में विजय प्राप्त करना और आज के रूस को एक समाजवादी रूस के रूप में परिवर्तित करना भी असम्भव होगा।" – त्रात्स्कीवादियों के कुतर्कों का जवाब देते हुए, उन्होंने पार्टी के मुखपत्र 'प्राव्दा' में पहले कई लेख लिखे थे। इसी साल (अप्रैल सन 1926) उन्होंने स्वेर्दलोफ युनिवर्सिटी में 'लेनिनग्राद की आधारशिलाएँ' के नाम से कई व्याख्यान दिये थे। ये भाषण तथा इस सम्बन्ध में लिखे हुए उनके दूसरे लेख 'लेनिनवाद की समस्याएँ' के नाम से प्रकाशित हुए थे। लेनिनवाद की व्याख्या करते हुए स्तालिन ने कहा :

"लेनिनवाद साम्राज्यवाद और सर्वहारा क्रान्ति के युग का मार्क्सवाद है। ठीक तौर से कहना होगा कि लेनिनवाद साधारण तौर से सर्वहारा क्रान्ति का सिद्धान्त और दाँव-पेंच, विशेष तौर से वह सर्वहारा अधिनायकत्व का सिद्धान्त और दाँव-पेंच है।"

अध्याय - सात

पुनर्निर्माण (सन 1924-37)

मार्क्स और एंगेल्स ने सन 1848 में 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' प्रकाशित करते हुए, बतलाया था कि सर्वहारा अपनी विजय के बाद किसी प्रकार पूँजीवादी समाज को समाजवादी समाज के रूप में परिणत कर सकता है। 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' के बाद, सन 1973 में फ्रांस के मजदूरों ने पेरिस कम्यून के रूप में सर्वहारा राज्य स्थापित करके, उसे थोड़े-से समय के लिए चलाया था। लेकिन, उसे गृह-युद्ध के बीच ही खत्म हो जाना पड़ा था। जिसमें वह थोड़े-से ही मौलिक परिवर्तन, सो भी कुछ ही समय के लिए कर पाये थे। इसमें शक नहीं कि बोल्शेविकों ने पेरिस कम्यून के तजर्बों से काफी फायदा उठाया था और उन्होंने क्रान्ति के सफल होते ही कई कार्यक्रम कार्यरूप में परिणत कर दिये थे। भूमि का राष्ट्रीकरण कर, जमींदार वर्ग को खत्म कर - खेत किसानों के हाथों में दे दिये; पूँजीपतियों को खत्म कर - मिलों, फैक्टरियों, रेलों तथा दूसरे यातायात के साधनों और खानों के साथ, बैंकों का भी राष्ट्रीकरण कर दिया गया। उन्होंने यह कदम उठाकर, पूँजीवाद की दाढ़ों और विषदन्तों को निकाल फेंका और देश के किसानों को सर्वहारों के साथ एक कर दिया। यदि गृह-युद्ध में न फँसना पड़ता, तो पुनर्निर्माण और नव-निर्माण का काम बहुत पहले से ही शुरू हो गया होता। बीमारी के समय ही, सन 1923 की जनवरी और मार्च में लेनिन का दिमाग देश के पुनर्निर्माण और उद्योगीकरण पर ही केन्द्रित रहता था। चाहे वह अनुशासन को मानते हुए, उन्हें अखबार पढ़ने की इच्छा न होती हो, लेकिन उनका दिमाग (लेनिन का) कैसे मूर्छित रह सकता था। तीन महीनों में उन्होंने कई महत्वपूर्ण लेख लिखवाये थे, जिनमें उन्होंने सहयोगी-योजना, समाजवादी पुनर्निर्माण, देश के उद्योगीकरण तथा कृषि के सामूहीकरण के बारे में लिखा था। उन्होंने यह दिखलाया था कि सर्वहारा के अधिनायकत्व के साथ, जब उत्पादन

के सभी बड़े पैमाने के साधन सोवियत राज्य के हाथ में हैं, जब सर्वहारा किसानों का पथ-प्रदर्शन कर रहे हैं, तब तक पूर्ण समाजवादी समाज का निर्माण करने के लिए सभी आवश्यक चीजें मौजूद हैं। उन्होंने लिखा था :

"हमें एक ऐसा राज्य बनाने की कोशिश करनी है, जिसमें किसानों का नेतृत्व कमकर अपने हाथ में रखें; अपने में किसानों का विश्वास कायम रखते हुए, अत्यन्त मितव्ययता का परिचय दें और हमारे सामाजिक सम्बन्धों से हर एक तरह की फिजूलखर्ची के चिन्हों को भी मिटा दें। दुनिया में कहीं कोई ऐसा स्थान नहीं है, जहाँ से हमें मदद मिल सकेगी। देश के उद्योगीकरण और बिजलीकरण के लिए, सभी साधनों को देश के भीतर से ही बड़ी मितव्ययता और खर्च की कमी करके जुटाना होगा। देखना होगा कि एक-एक पैसा जो हम बचाते हैं; वह हमारे बड़े पैमाने के मशीन-उद्योग, बिजलीकरण आदि के विकास, बोल्खोफ पन-बिजली स्टेशन आदि के निर्माण में ही लगे। इसी, और केवल इसी में हमारी आशा निहित है।"

ऊपर के उद्धरणों से मालूम होगा कि लेनिन ने उन सभी बातों पर संक्षिप में प्रकाश डाल दिया था, जिन पर ले जाकर देश को एक शक्तिशाली राष्ट्र में परिणत करना था। लेनिन की मृत्यु के समय तक, यह एक परिवर्तन अवश्य हुआ था कि अब साम्राज्यवादी सब कुछ करके हार चुके थे और उनमें से एक-एक करके कितनों ही ने बोल्शेविकों की सरकार को स्वीकार भी कर लिया था।

1. चौदहवीं पार्टी कांग्रेस (सन 1925)

त्रात्स्की और उसके अनुयायी पहले ही, लेनिन के सामने से ही, हल्ला मचा रहे थे कि देश में तब तक समाजवादी समाज की स्थापना नहीं हो सकती, जब तक कि समाजवाद दूसरे देशों में भी विजयी न हो जाये। त्रात्स्की के अनुसार, सारे विश्व में क्रान्ति हो जाने पर ही समाजवाद कायम किया जा सकता था। वह एक देश में समाजवाद के विजयी होने की सम्भावना न समझकर, उसका विरोध करता था। स्तालिन ने त्रात्स्की की बड़ी-बड़ी बातों को कोरा गाल बजाना बतलाते हुए, कहा कि एक देश में भी समाजवाद का निर्माण हो सकता है; एक देश में वैसा प्रयत्न न करने का मतलब केवल हवाई किले बनाना है। उन्होंने साफ कहा कि समाजवाद की अन्तिम विजय, साम्राज्यवादियों के सोवियत संघ में दखल देने तथा पूँजीवाद की पुन:स्थापना के प्रयत्नों को सर्वदा के लिए खत्म करने के लिए यह जरूरी है कि दूसरे देशों में भी पूँजीवाद का खात्मा हो, अर्थात पूँजीवादी घेरा टूट जाये। लेकिन, जहाँ तक भीतरी बातों का सवाल है, समाजवाद की विजय और वर्गहीन समाजवादी समाज के निर्माण के लिए आवश्यक सारी चीजें सोवियत समाजवादी गणसंघ में मौजूद हैं।

चौदहवीं पार्टी कांग्रेस (अप्रैल सन 1925) ने स्तालिन के इन विचारों का समर्थन किया। इस कांफ्रेंस ने सभी पार्टी सदस्यों के लिए अनिवार्य कर दिया कि वह सोवियत संघ में समाजवाद की विजय के लिए काम करें। फौरी काम की व्याख्या करते हुए, स्तालिन ने इसी कांफ्रेंस में कहा था :

"आज हमारे सामने मुख्य काम है – मँझोले किसानों को सर्वहारा के साथ करके, उन्हें अपने पक्ष में लाना। आज मुख्य काम है – किसानों के मुख्य समूह के साथ सम्बन्ध स्थापित करना, उनके भौतिक और सांस्कृतिक तल को ऊँचा करना और इन मुख्य समूहों के साथ मिलकर, समाजवाद के पथ पर आगे बढ़ना। मुख्य काम है – किसानों के साथ, और मजदूर वर्ग के पूर्ण नेतृत्व में समाजवाद का निर्माण करना। मजदूर वर्ग का नेतृत्व इस बात की मौलिक गारण्टी है कि हमारा निर्माण का काम समाजवाद के पथ पर होते हुए आगे बढ़ेगा।"

दिसम्बर सन 1925 में पार्टी की यह कांग्रेस हुई, जिसके सामने स्तालिन ने केन्द्रीय कमेटी की ओर से राजनीतिक रिपोर्ट दी थी। तेरहवीं कांग्रेस के बाद देश में जो कुछ हुआ था, उसके बारे में बतलाते हुए उन्होंने कहा कि जो कुछ भी हम कर पाये हैं, वह एक पिछड़े हुए कृषि-प्रधान देश के लिए सन्तोषजनक नहीं है। साथ ही, यह भी बतलाया कि हमारा लक्ष्य है :

"अपने देश को एक किसानी देश से औद्योगिक देश के रूप में परिवर्तित करना, जिसमें वह अपने प्रयत्नों से सभी आवश्यक साधनों को पैदा कर सके।"

जिनोवियेफ और कामनेफ ने स्तालिन की योजना का विरोध किया और उसकी जगह ऐसी योजना रखी, जिसका मतलब था – देश को कृषि-प्रधान बनाये रखना। स्तालिन भारतीय नेताओं की तरह दुर्बल बुद्धि, अदूरदर्शी या लोगों को धोखे में रखने वाले नहीं थे, उन्हें जल्द से जल्द देश को स्वावलम्बी बनाकर राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सैनिक दृष्टि से मजबूत बना डालना था; जो उद्योगीकरण के बिना हो ही नहीं सकता था। भारत में जो तथाकथित पंचवर्षीय योजना बनायी गयी है, उसमें उद्योगीकरण के लिए समुद्र में बूँद जितनी पूँजी भी सरकार ने नहीं रखी है। वह चाहती है, पूँजीपति घड़ियालों के बल पर देश का उद्योगीकरण करना! लेनिन की मृत्यु के बाद, अब सारे ही ढुलमुलयकीन अवसरवादी एक होकर, विरोध पर तुले हुए थे। त्रात्स्की, जिनोवियेफ, बुखारिन, कामनेफ और उनके अनुयायी मिलकर, स्तालिन की योजना के विरुद्ध सारी शक्ति लगा रहे थे; लेकिन उनके अनुयायियों की संख्या बहुत कम थी। और, दूसरी ओर क्रान्ति तथा गृह-युद्ध की आग में तपे हुए मोलोतोह, कालिनिन, बोरोशिलोफ, कुइबिशेफ, फुंजे, जैर्जिन्स्की, आर्योनिकिद्जे, किरोफ, यारोस्लाव्स्की, मिकोयान, अन्द्रेयेफ, श्वेर्निक, ज्दानोफ, शूकिर्यातोफ आदि स्तालिन के साथ थे।

लेनिन ने पहले ही कह दिया था :

"अगर हम अपने देश में उद्योग-धन्धे खड़े करके उसे मजबूत नहीं कर सकते, तो इसका मतलब होगा अपने देश को एक सभ्य देश, एक समाजवादी देश के रूप में खत्म करना।"

लेनिन के इस वाक्य की सत्यता को स्तालिन अच्छी तरह से जानते थे। वह समझते थे कि देश की सुरक्षा उद्योग-धन्धों पर ही निर्भर है। उद्योग-धन्धों की मजबूत नींव रखने के लिए, किसानों और मजदूरों के सहयोग की बड़ी जरूरत है। किसानों को शिक्षित करके समाजवाद के निर्माण में हाथ बँटाने के लिए, यह जरूरी है कि खेतों का सामूहीकरण हो, बड़े पैमाने पर उत्पादन का संगठन किया जाये। इन सबके लिए नये उपायों और नये साधनों की अवश्यकता होगी, जिन्हें हम कल-कारखानों से ही पा सकते हैं।

स्तालिन के नेतृत्व में फिर बोल्शेविकों की विजय हुई और अवसरवादियों को हराकर, उन्होंने उद्योगीकरण के लिए पहला कदम उठाया।

2. समाजवादी उद्योगीकरण

देश का उद्योगीकरण अनिवार्यतया आवश्यक था। बाहर से पूँजी मिलने की कोई सम्भावना नहीं थी और न इंग्लैण्ड की तरह, अपने अधीन जातियों को लूट-खसोट कर ही पूँजी जमा की जा सकती थी। पूँजी के अतिरिक्त, आवश्यक विशेषज्ञों की भी बहुत कमी थी। जारशाही के समय में जो इंजीनियर, टेक्नीशियन आदि थे भी, उनमें से कितने ही क्रान्ति-विरोधियों के पक्ष में होकर बाद में देश से बाहर चले गये थे। लेकिन, स्तालिन ने अच्छी तरह समझ लिया था कि अपने ही बूते पर उद्योगीकरण करना असम्भव नहीं है। उन्होंने इस विषय पर अपने विचारों को प्रकट करते हुए, समाजवादी उद्योगीकरण के ये सिद्धान्त बताये थे :

(1) उद्योगीकरण का अर्थ केवल औद्योगिक उपज को बढ़ाना ही नहीं है, बल्कि भारी उद्योग, और सबसे बढ़कर उसके मूल स्त्रोत मशीन-निर्माण का विकास करना है, क्योंकि मशीन-निर्माण उद्योग के साथ स्वदेशी भारी उद्योग ही केवल वह चीज है, जो समाजवादी के लिए भौतिक आधार बन सकता है।

(2) अक्टूबर समाजवादी क्रान्ति के परिणामस्वरूप, हमारे देश में जमींदारों और पूँजीपतियों का उच्छेद, भूमि, कारखानों, बैंकों आदि में वैयक्तिक का खात्मा और इन सबका सारी जनता की सम्मिलित सम्पत्ति के रूप में परिणत होना - इन सबने उद्योगों के विकास के लिए, समाजवादी पूँजी-संचय के लिए एक बहुत जबर्दस्त स्त्रोत पैदा कर दिया है।

(3) समाजवादी उद्योगीकरण पूँजीवादी उद्योगीकरण से मौलिक भेद रखता

है। पूँजीवादी उद्योगीकरण का आधार है – अधीन देशों की लूट–खसोट, सैनिक विजय और सूद पर लगाये भारी–भारी कर्ज तथा अधीनस्थ लोगों का निष्ठुर शोषण समाजवादी उद्योगीकरण का आधार है – उत्पादन के साधनों का सामाजिक स्वामित्व, मजदूरों और किसानों के जांगर से उत्पादित धन का संचयन और प्रबन्ध, जिसके साथ कमकर वर्ग के जीवन–तल का ऊपर उठना आवश्यक रूप से लगातार होता जाता है।

(4) इसलिए, उद्योगीकरण के संघर्ष के लिए मुख्य काम है – श्रम की उत्पादकता को बढ़ाना, उत्पादन के खर्च को कम करना, कमकरी अनुशासन तथा कड़ी मितव्ययता आदि को आगे बढ़ाना।

(5) सोवियत संघ में समाजवाद के निर्माण के लिए जो स्थितियाँ मौजूद हैं और कमकर वर्ग में काम के लिए जो उत्साह है, उसके कारण उद्योगीकरण में तीव्र गति से सफलता प्राप्त करना बिल्कुल सम्भव है।

(6) समाजवादी ढंग पर कृषि के पुनर्निर्माण करने के पहले, देश का उद्योगीकरण जरूरी है, जिसमें कृषि के पुनर्निर्माण के लिए आवश्यक यान्त्रिक साधन तैयार हो जायें।

स्तालिन की सूझ के सुपरिणाम को हम पहले देख चुके हैं। स्तालिन के तिकड़म से नेता बन जाने की बात कहने वाले केवल अपने को ही धोखा देते हैं, अथवा कम्युनिज्म के खिलाफ हर तरह की झूठ को पुण्य समझकर, वह दुनिया के सदिच्छुक सीधे–सादे आदमियों को सच्चाई के पास पहुँचने से रोकना चाहते हैं। सचमुच, अगर कोई समझदार आदमी भी इस तरह की ऊल–जलूल बातें करें, तो हमें समझ लेना चाहिए कि उस आदमी में कोई नैतिक बल नहीं है, वह गन्दगी का कीड़ा है और वह अवसर मिलते ही, जघन्य से जघन्य काम कर सकता है। साथ ही, यह निश्चय है कि ऐसे पामर आदमी में इतिहास के प्रवाह को बदलने की क्षमता बिल्कुल नहीं हो सकती। क्लोरिन के अनुसार :

"केवल सिद्धान्तवादी और व्यावहारिक आदमी के तौर पर, अपनी श्रेष्ठता से ही स्तालिन हमारे नेता बन गये हैं।"

और, इन्हीं गुणों के न रहने के कारण त्रॉत्सकी सबसे निचले गड्ढे में गिरकर, अन्त में क्रान्ति–विरोधी और आदर्श द्रोही बन गया। उसके काले हृदय को परखने के बाद, उसे अपने चेले द्वारा ही प्राण गँवाने पड़े। स्तालिन ने नेता बनने की योग्यता के बारे में लिखा है :

"बागडोर हाथ में लेकर आँखें बन्द करके तब तक आगे ताकना, जब तक कि दुर्घटना न घट जाये, यह नेतृत्व का अर्थ नहीं है। बोल्शेविक नेतृत्व के काम को इस तरह नहीं समझते। नेतृत्व करने के लिए, आदमी को दूरदर्शी होना

चाहिए।... तुम अगर अलग-थलग हो, चाहे दूसरे उन साथियों से भी जो कि नेतृत्व कर रहे हैं, तो तुम हममें एक चीज को केवल ऐसे रूप में देखोगे, मानो एक ही समय लाखों-करोड़ों कमकर कमजोरियों को ढूँढ़ रहे हैं, गलतियों का पता लगा रहे हैं और सम्मिलित काम को पूरा करने में अपने को खपा रहे हैं।"

कल-कारखानों और बिजली-स्टेशनों के निर्माण का काम बड़े जोर-शोर से होने लगा। इसमें जो सफलता प्राप्त हुई, उसके कारण स्तालिन को विश्वासपूर्ण यह कहते हुए हिचकिचाहट नहीं हुई कि "हमें अत्यन्त आगे बढ़े हुए पूँजीवादी देशों के स्तर तक पहुँचना और कम-से-कम समय में, उनसे आगे बढ़ना है।" लेकिन, हम दिसम्बर सन 1925 की चौदहवीं कांग्रेस में देख चुके हैं कि जिनावियेफ और कामनेफ के गुट ने एड़ी-चोटी का जोर लगाकर, किस तरह विरोध किया था। उन्होंने 'नवीन विरोधी दल' के नाम से अपना एक गुट कायम किया, जिसका अगुवा जिनोवियेफ था। इस गुट ने सन 1926-27 में बड़ी तत्परता से काम किया। इस प्रकार समाजवादी निर्माण का काम, साथ ही इस गुट की साजिशों और तोड़-फोड़ की कार्रवाइयों के खिलाफ निर्मम संघर्ष चलाने का काम भी था। सन 1926 की फरवरी में कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल की कार्यकारिणी कमेटी के छठे परिवर्धित प्लेनम में, स्तालिन ने 'दक्षिण पन्थी' और 'चरम वामपन्थी' विरोधियों की कड़ी आलोचना की और विरोध के कारण देश की प्रगति ही नहीं, उसके अस्तित्व के लिए भी जो खतरा पैदा हो गया था, उसको साफ शब्दों में बतलाया। उसके कारण, विरोधियों का प्रभाव और भी कम हो गया।

इसी साल (30 नवम्बर 1928 में,) स्तालिन ने 'चीनी क्रान्ति की समस्याएँ' नामक एक अत्यन्त महत्वपूर्ण निबन्ध लिखा था, जिसने आगे चलकर चीनी क्रान्ति की सफलता में भारी पथ-प्रदर्शन किया। अगले साल 13 मई 1927 को उन्होंने सनप-यात-सेन युनिवर्सिटी के विद्यार्थियों के सामने भाषण दिया और 24 मई 1917 को चीनी क्रान्ति के सम्बन्ध में कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल के कर्तव्य का निर्देश किया। यह सब देखने से मालूम होता है कि देश के पुनर्निर्माण में लगे रहते हुए भी, दुनिया के दूसरे भागों के पथ-प्रदर्शन से स्तालिन ने आँखें नहीं मूँद ली थीं। उनकी नजर बराबर दूसरे देशों पर भी रहती थी। सन 1926 में इंग्लैण्ड के मजदूरों ने जब सार्वजनिक हड़ताल की, तो उसी साल जून में तिफलिस के रेलवे कमकरों के सामने स्तालिन ने उसके महत्व पर भाषण दिया था।

नवम्बर सन 1926 में पार्टी की पन्द्रहवीं कांफ्रेंस हुई। स्तालिन ने पुनर्निर्माण के तजर्बों के आधार पर बड़ी योजना की ओर बढ़ने की आवश्यकता समझकर, इसके बारे में कहा :

“यह बिना जाने कि हमें किस दिशा में जाना चाहिए, बिना जाने की हमारी गति का लक्ष्य क्या है, हम आगे नहीं बढ़ सकते। हम तब तक निर्माण नहीं कर सकते, जब तक कि इस बात की सम्भावना और निश्चय न हो कि हम समाजवादी आर्थिक व्यवस्था के निर्माण का आरम्भ करके उसे पूरा कर सकेंगे। पार्टी बिना स्पष्ट सम्भावना, बिना स्पष्ट लक्ष्य के निर्माण के काम का पथ-प्रदर्शन नहीं कर सकती। हम बर्नस्टाइन के विचारों के अनुसार नहीं कह सकते कि ‘गति सब कुछ है, और लक्ष्य कुछ नहीं।’ इसके विरुद्ध क्रान्तिकारियों की तरह हमें अपनी प्रगति, अपने व्यावहारिक काम को सर्वहारा-निर्माण के मौलिक वर्ग-लक्ष्य के अधीन करना होगा। नहीं तो, निस्सन्देह और अवश्य ही हम अवसरवाद के दल-दल में जा गिरेंगे।” इसी कांफ्रेंस ने बड़े पैमाने पर समाजवादी उद्योग के निर्माण करने के लिए, देशव्यापी योजना को कार्यरूप में परिणत करने का निश्चय किया।

सन 1927 के दिसम्बर में जब पन्द्रहवीं पार्टी कांग्रेस हुई, तब तक पुनर्निर्माण का काम पूरा हो चुका था। प्रथम महायुद्ध और गृह-युद्ध के बाद, सम्पत्ति का भीषण ध्वंस हुआ था और कृषि तथा उद्योग के हर-एक क्षेत्र में उपज बहुत घट गयी थी। सन 1927 के खत्म होते-होते, अब सोवियत रूस के उत्पादन के आँकड़े हर बात में सन 1912 के रूस की अपेक्षा बहुत आगे बढ़ चुके थे। जारशाही रूस के उत्पादन का चरम विकास सन 1913 में हुआ था, यह ध्यान रखना चाहिए। सन 1927 में 1913 की अपेक्षा कृषि की उपज 8 फी सैकड़ा अथवा एक अरब रूबल अधिक हुई। उद्योग-धन्धों में यह वृद्धि 12 फी सैकड़ा या बीस करोड़ रूबल अधिक थी। जारशाही रूस में जहाँ उतने ही भूभाग में, सन 1913 में साढ़े छत्तीस हजार मील रेलें थीं, अब वह बढ़कर अड़तालीस हजार दो सौ मील हो गयी थीं, कमकरों के वेतन में भी 16 फी सैकड़ा की वृद्धि हुई थी। शिक्षा क्षेत्र में तो यह वृद्धि और भी आश्चर्यजनक हुई थी। सन 1913 में जितने विद्यार्थी प्राइमरी स्कूलों में पढ़ते थे, उनकी संख्या बढ़कर सन 1925 में साढ़े बाईस लाख हो गयी थी। टेक्नीकल स्कूलों में तो उनकी संख्या दूनी हो गयी थी, शिक्षा पर दूना पैसा खर्च किया जा रहा था और वैज्ञानिक प्रतिष्ठानों पर तो वह दस गुना हो रहा था। राष्ट्रीय आय अब बढ़कर साढ़े बाईस रूबल हो गयी थी और सोवियत संघ का नम्बर अब इस क्षेत्र में कनाडा, इंग्लैण्ड, जर्मनी और फ्रांस के बराबर और केवल संयुक्त राष्ट्र अमरीका के पीछे था। अब 77 फी सैकड़ा उद्योग-धन्धे सामूहिक थे, केवल 14 फी सैकड़ा निजी और एक सहकारी प्रबन्ध में थे। कृषि उत्पादन में समाजवादी भाग अभी केवल 2.7 फी सैकड़ा था और निजी खेती 97.3 फी सैकड़ा। व्यापार में, समाजवादी कारोबार

81.9 फी सैकड़ा और निजी 18.1 फी सैकड़ा रह गया था।

3. त्रात्स्की का पतन

इस प्रकार, इन सफलताओं के बाद अगला बड़ा कदम उठाना स्वाभाविक ही था। लेकिन, अब विरोधी अपने पैर के नीचे से धरती खिसकती देखकर जबर्दस्त संघर्ष के लिए तैयार थे। त्रात्स्की और उसके अनुयायी सन 1927 की शरद में अब खुले आम प्रहार करके, पूँजीवाद की पुन:स्थापना में हाथ बँटाने के लिए स्वतन्त्र दल बनाने का प्रयत्न करने लगे। सोवियत रूस की इस हालत को देखकर, पूँजीवादी देश बड़े प्रसन्न थे और वह इस दल को हर तरह की मदद देने के लिए तैयार थे। पन्द्रहवीं कांग्रेस के बाद, त्रात्स्कीवादियों का विरोध अब पुराने मेंशेविकों के रास्ते पर चलने लगा। विश्व के और बहुत से देशों में क्रान्ति के लिए बिना किसी देश में समाजवाद प्रतिष्ठापित नहीं किया जा सकता – वह इन बातों की आड़ में, देश में पूँजीवाद के लिए रास्ता साफ करना चाहते थे। त्रात्स्की और उसके अनुयायी पुनर्निर्माण के समय से ही जिस तरह का सक्रिय विरोध कर रहे थे, यदि उसमें सफलता होती, तो क्या सोवियत रूस कभी सबल हो सकता था? और, उसे निर्बल रखना क्या शक्तिशाली साम्राज्यवादियों को फिर से आक्रमण के लिए निमन्त्रण देना नहीं था? पन्द्रहवीं कांग्रेस के निश्चय के अनुसार प्रथम पंचवार्षिक योजना तैयार की गयी। और, इसी कांग्रेस ने त्रात्स्की और उसके अनुयायियों को पार्टी से निकाल बाहर किया। त्रात्स्की के निकलने के बाद, अब वही हथियार इकोफ, बुखारिन, तोम्स्की आदि ने उठाया और अब वामपक्ष के स्थान पर दक्षिणपक्ष की ओर से प्रहार होने लगा। मई सन 1928 में, इन अवसरवादियों की ओर ध्यान देना जरूरी हो गया। प्रथम पंचवार्षिक योजना का मुख्य उद्देश्य था – भारी उद्योग-धन्धों को दृढ़ नींव पर स्थापित कर, देश को आर्थिक तौर से स्वावलम्बी और सामरिक तौर से मजबूत बनाना। लेकिन, दक्षिणपक्षी विरोधी यह कहकर उसका विरोध कर रहे थे कि इसके कारण जो भारी पूँजी की आवश्यकता होगी, उसे लगाने पर लोगों का जीवन-तल बहुत गिर जायेगा; इसमें शक नहीं कि अपने परिश्रम से ही बचाकर भारी परिणाम में पूँजी लगाने का प्रभाव लोगों के लिए कष्टदायक होता, लेकिन और क्या रास्ता था? पूँजीवादी देश फिर सोवियत के विरुद्ध कड़ा रुख करने लगे थे और वह किसी वक्त भी आक्रमण कर सकते थे। इसीलिए स्तालिन ने अपने भाषण में कहा कि "भारी उद्योगों के विकास को रोकने का मतलब हमारे देश के लिए आत्महत्या होगी;" और, "इसका मतलब होगा – देश के उद्योगीकरण के नारे को त्यागना तथा अपने देश को पूँजीवादी आर्थिक व्यवस्था की पूँछ बना देना।"

त्रात्स्की को निकाल बाहर किये जाने पर, वह दुनिया के पूँजीवादियों का एक बड़ा पैगम्बर बन गया। पूँजीवादी उसको क्रान्ति का अप्रतिम योद्धा और पारदर्शी राजनीतिक नेता कहकर, स्तालिन और सोवियत रूस के खिलाफ आग उगलने लगे। मालूम होता था कि यही थैलीशाह बोल्शेविक क्रान्ति के सबसे बड़े पक्षपाती हैं; त्रात्स्की के बारे में लेनिन पहले ही लिख चुके थे – "वह कभी अपनी महत्वाकांक्षा पर होने वाले किसी आक्रमण को क्षमा नहीं कर सकता।" और, वही महत्वाकांक्षा उसे डुबोने का कारण बनी। लेकिन, बोल्शेविकों को बदनाम करने के लिए उनके शत्रुओं को कोई बात तो मिलनी चाहिए थी। उन्होंने त्रात्स्की-काण्ड को खूब बढ़ा-चढ़ाकर फैलाया, और इसको लेकर तटस्थ लोगों में नवीन रूस के प्रति घृणा पैदा करने की पूरी कोशिश की। पूँजीवादियों ने वास्तविक स्थिति के साथ परिचय प्राप्त करने के सभी रास्ते भी बन्द कर दिये थे और सब जगह एक तरफा प्रचार हो रहा था। त्रात्स्की वर्षों से लेनिन का जबर्दस्त विरोधी रह चुका था; गृह-युद्ध में भी हम उसके रवैये को देख चुके हैं; सन 1921 में लेनिन के समय भी उसने पार्टी का जबर्दस्त विरोध किया था; सन 1922-23 में भी वह वैसी ही कोशिशें कर रहा था। लेनिन ने कहा था : "त्रात्स्की एक मानव गेंद है।" त्रात्स्की भी किसी व्यावहारिक कार्य के लिए निर्णय करने की शक्ति नहीं रखता था; लेकिन शायद उसमें बातें बघारने का रोग भारत के हमारे महान नेता जितना ही दिखायी देता था। अपनी आवाज को सुनकर, वह मस्त हो जाता था। उसके एक पुराने साथी ने लिखा है : "किसी अकेले आदमी से गुप्त रीति से बातें करते समय भी, वह वक्ता बन जाता था।"

फ्रेंच लेखक बारबूस के अनुसार : "त्रात्स्की के पास वकीलवादी, कला आलोचक और पत्रकार के लिए आवश्यक बहुत ऊँचे दर्जे के गुण मौजूद थे, लेकिन उसमें नयी भूमि तैयार करने के लिए एक राजनीतिज्ञ की योग्यता नहीं थी। उसमें वास्तविकता और जीवन को परखने-समझने की क्षमता बिल्कुल नहीं थी। कर्मठ आदमी के लिए जो बड़ी लगन और निष्ठुरता की आवश्यकता होती है, उसमें उसका नितान्त अभाव था। वस्तुत:; उसमें मार्क्सीय धारणाओं के प्रति दृढ़ विश्वास नहीं था। वह हमेशा से डरता आया था। वह इसी भय के कारण, मेंशेविक रहा था और इस समय भय के कारण उसके भीतर सन्तुलन नहीं रह गया था। कोई भी आदमी तब तक त्रात्स्की को नहीं समझ सकता था, जब तक कि उसके क्रोध में पागल होते समय भीतर से उसकी कमजोरी को न पहचान ले। 'दूसरे देशों में क्रान्ति का विकास और समर्थन अपनी विजयी क्रान्ति के लिए अत्यन्त आवश्यक है!' – यह रटन लगाते हुए, वह चाहता था कि रूस की नवीन जनता को अनिश्चित काल तक अकर्मण्यता की मरुभूमि में घुमाता रहे। यदि

उसमें इतना धैर्य नहीं था, तो यह अच्छी ही बात थी।"

स्तालिन का जवाब बिल्कुल साफ था :

"क्रान्ति की विजय को सिर्फ एक देश में, एक शुद्ध राजनीतिक घटना नहीं समझना चाहिए। साथ ही, यह भी नहीं समझना चाहिए कि रूसी-क्रान्ति एक निष्क्रिय वस्तु है, जिसे बाहरी सहायता ही आगे बढ़ा सकती है।"

स्तालिन ने कहा था :

"साथी त्रात्स्की ने अपने व्याख्यान के दौरान में कहा था : 'हम वस्तुतः अपने को लगातार विश्व अर्थनीति के नियन्त्रण में पाते हैं।' लेकिन, क्या यह ठीक है? नहीं। यह पूँजीवादी घड़ियालों का स्वप्न है, लेकिन सच नहीं है।"

बारबूस के अनुसार : "स्तालिन और त्रात्स्की एक-दूसरे के बिल्कुल विपरीत हैं; मानवता के दो परस्पर विरोधी बिन्दुओं पर विद्यमान, दो प्रकार के आदमी हैं; स्तालिन व्यावहारिक तर्क और व्यावहारिक बुद्धि पर विश्वास रखते हैं। पर निश्चल, अडिग और व्यवस्थित कार्य-प्रणाली को मानने वाले हैं। वह लेनिनवाद को अच्छी तरह समझते और जानते हैं और कमकर वर्ग तथा पार्टी को सरकार में जो पार्ट अदा करना है, उसे भली-भाँति जानते हैं। वह दिखावा पसन्द नहीं करते, न मौलिक होने की इच्छा उन्हें परेशान करती है। जो कुछ वह कर सकते हैं, उस सभी को करने की कोशिश करते हैं। वक्तृत्व कला पर, अथवा सनसनी पैदा करने पर उनका विश्वास नहीं है। जब वह बोलते हैं, तो उसमें सादगी के साथ स्पष्टता का समावेश करने की कोशिश करते हैं। लेनिन की तरह, सदा उन्हीं विषयों को हृदयंगम कराने की कोशिश करते हैं। वह बहुत प्रश्नों को उठाना चाहते हैं, क्योंकि उन प्रश्नों से सुननेवाली जनता के भावों का पता लगता है और पुराने युग के किसी बड़े उपदेशक की तरह, एक से ही शब्दों में जवाब देते हैं। वह आपके सामने बिना भूल किये, सारे सबल और निर्बल पहलुओं को रखने का ढंग जानते हैं।"

पार्टी ने त्रात्स्की को बिना मौका दिये हुए ही निकाल बाहर नहीं किया था। दिसम्बर सन 1927 में कांग्रेस के अधिवेशन से एक महीना पहले ही, केन्द्रीय कमेटी ने पोलित ब्यूरो से अपने पक्ष के कुछ समर्थन में वक्तव्य दिलवाया था। इस प्रकार विरोधियों को जवाब देने के लिए, एक महीने का समय दिया गया था। विरोधी पक्ष ने 3 सितम्बर 1927 को ही 120 पृष्ठों का अपना वक्तव्य निकालकर जोर दिया था कि इसको तुरन्त छापा जाये और सभी स्थानीय कमेटियों और संगठनों के पास भेजा जाये। चार महीने पहले से दंगल खड़ा करने के लिए पार्टी तैयार नहीं थी, लेकिन एक महीने का समय उन्हें दिया गया था। पार्टी के लोगों ने बहुत कोशिश की कि त्रात्स्की और जिनोवियेफ अपने अड़ंगों

को छोड़ दें और फिर साथ काम करने लगें। लेकिन, वह तो लड़ने के लिए तैयार थे। लेनिनग्राद में जिनोवियेफ का उस समय काफी प्रभाव था, वह वहाँ की सोवियतों की परिषद का अध्यक्ष था। दोनों ने पार्टी के खिलाफ तरुण कम्युनिस्टों को भड़काने की कोशिश की; खूब उनकी गुप्त बैठकें होती रहीं; उन्होंने गुप्त छापाखाना भी कायम कर लिया था। सभा-स्थानों पर भी जबर्दस्ती अधिकार किया था। उन्होंने 7 नवम्बर 1927 को सड़कों पर प्रदर्शन कराया। केन्द्रीय कमेटी के मेम्बरों को मीटिंग में आने से जबर्दस्ती रोका। यारोस्लाव्स्की तथा दूसरों को मॉस्को की एक मीटिंग से जबर्दस्ती निकाल दिया। बोल्शेविकों के लिए, अब और बर्दाश्त करना असम्भव था।

पन्द्रहवीं कांग्रेस ने कड़ा रुख अख्तियार किया और त्रात्स्की से कहा कि वह अपने संगठनों को बन्द करे, और मॉस्को में हुई हाल की हरकतों को छोड़े तथा पार्टी के बहुमत को स्वीकार करे। त्रात्स्की ने 21 आदमियों के हस्ताक्षरों से एक दूसरा प्रस्ताव रखा और किसी भी तरह अपने को समझौते के लिए तैयार नहीं किया। अब पंचवार्षिक योजनाओं का काल शुरू हो रहा था, इसलिए और अधिक सहन करने का मतलब था – लोगों में दुविधा पैदा करके, योजनाओं को कार्यरूप में परिणत करने में शिथिलता लाना। स्तालिन ने घोषित किया :

"यह विरोध हटाओ, क्रान्तिकारी शब्दाडम्बरों को दूर फेंकने पर देखोगे कि इन सबके नीचे आत्मसमर्पण की भावना काम कर रही है।..."

त्रात्स्की क्रान्ति की शक्तियों में अविश्वास पैदा करना चाहता था। ओर्जोनिकिद्ज़े ने ठीक ही लिखा था :

"त्रात्स्की की विजय का अर्थ होता – सोवियत की सारी सृजनात्मक योजनाओं का विध्वंस; त्रात्स्की और दक्षिणपक्षियों पर स्तालिन की विजय, क्रान्ति की एक नयी सफलता थी।"

4. कृषि की समस्या

कांग्रेस में स्तालिन ने औद्योगिक पुनर्निर्माण की सफलता का विवरण देते हुए, यह भी बतलाया कि खेती पिछड़ रही है; और :

"इससे निकलने का एक ही रास्ता है – 'छोटी-छोटी तथा बिखरी हुई किसान खेतियों को विशाल संयुक्त फार्मों के रूप में साझे की खेती करते हुए, आधुनिक और उच्च टेक्नीक के अनुसार भूमि का सामूहीकरण।' रास्ता यही है कि छोटे-छोटे बौने किसान-फार्मों को धीरे-धीरे किन्तु दृढ़तापूर्वक, पर दबाव से नहीं, बल्कि उदाहरण देकर और समझाकर सम्मिलित सहयोगी, सामूहिक खेती के आधार पर खेती की मशीनों, ट्रैक्टरों और वैज्ञानिक ढंग की खेती करने पर

सहमत किया जाये। इसे छोड़कर और कोई रास्ता नहीं है।"

यद्यपि इस समय तक खेती की उपज महायुद्ध से पहले की स्थिति में पहुँच रही थी। लेकिन, जो अन्न बाजार के लिए प्राप्य था, वह युद्ध के पहले से एक तिहाई (37 फी सैकड़ा) ही था। देश में ढाई करोड़ के करीब छोटे-छोटे किसान थे। इन छोटे किसानों की स्थिति ऐसी नहीं थी, कि वह किसी भी आधुनिक खेती के तरीके का इस्तेमाल कर सकें। उनके छोटे-छोटे खेतों में ट्रैक्टर और खेती की दूसरी मशीनें नहीं चल सकती थीं। ये खेत और भी टुकड़ों में बँटते जा रहे थे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि अगर अनाज पैदा करने की यह अवस्था जारी रहती, तो सेना और नगर की जनता को बराबर अकाल का सामना करना पड़ता।

पूँजीवादी फार्मों को संगठित करने से भी उपज में वृद्धि की जा सकती थी, किन्तु उस समय भारी संख्या में बेकार हुए किसानों की क्या हालत होगी? पहले तो उनको समझा-बुझाकर नहीं, बल्कि उनसे जबर्दस्ती खेतों को छीनकर ऐसे फार्मों के रूप में परिणत करना पड़ता, फिर मशीनों के इस्तेमाल के कारण भारी संख्या में किसान बेकार हो जाते और कमकरों और किसानों की मैत्री, जो क्रान्ति की सफलता के लिए एकमात्र गारण्टी थी, वह खत्म हो जाती। कुलकों (धनी किसानों) को भी इससे सहायता मिलती। इन सबका नतीजा होता देहात में समाजवाद की पूर्ण पराजय। यही योजना थी, जिसे दक्षिणपन्थी सामने रख रहे थे। स्तालिन के सुझाव पर, पार्टी ने दूसरे ही तरीके समाजवादी खेती अर्थात कोलखोजी (सामूहिक) खेती को अपनाया। इसमें बिखरे हुए खेतों को बड़े-बड़े फार्मों के रूप में परिणत करने की गुंजाइश थी और साथ ही हर एक गाँव के किसान अपनी खेती और उपज के मालिक तथा काम के साझीदार थे, इसलिए उनके बेकार होकर क्रान्ति-विरोधी बनने की सम्भावना नहीं थी। वैज्ञानिक ढंग की मशीनों से खेती करने के कारण उपज बढ़नी निश्चित थी, जिसका अर्थ था किसानों के पास अधिक धन का आना और उसका मतलब समाजवाद और सर्वहारा के नेतृत्व में उनके विश्वास का अधिक बढ़ना था। लेनिन ने छोटे-छोटे किसानों की जगह, मशीनों द्वारा सामूहिक विशाल खेती का सुझाव रखते हुए कहा था : "छोटी-छोटी खेती करने पर, गरीबी से बचने का कोई उपाय नहीं है।"

पन्द्रहवीं कांग्रेस ने सामूहिक (कोलखोजी) खेती के पूर्ण विकास के लिए प्रस्ताव पास किया था। इसी कांग्रेस ने प्रथम पंचवार्षिक योजना तैयार करने के लिए भी आदेश दिया था, यह हम बतला चुके हैं। इस प्रकार, हम यह भी देखते हैं कि स्तालिन अच्छी तरह समझते थे कि केवल उद्योग-धन्धों के विकास पर जोर देना और खेती को छोड़ रखना ठीक नहीं है; भारतीय पंचवार्षिक योजना

की तरह, केवल खेती की टुटपुँजिया योजना बनाना भी आगे बढ़ने का रास्ता नहीं है। योजना को कार्यरूप में परिणत करने के लिए जिन भौतिक और मानवीय साधनों की आवश्यकता थी, उनके जुटाने की भी तैयारी की गयी। पार्टी के सबसे योग्य सदस्यों और उत्साही कमकरों को सामूहिक खेती को बढ़ावा देने के लिए नियुक्त किया गया, जो कोलखोज पहले से ही मौजूद थे, उन्हें मशीन, बीज और वैज्ञानिक परामर्शदाता जुटाकर मजबूत किया गया। मशीनों से सहायता देने के लिए मशीन ट्रैक्टर स्टेशन स्थापित किये गये। सारे देश में एक उत्साह छा गया, क्योंकि वहाँ जनता ने चोरबाजारी पूँजीपति घड़ियालों को देखती थी, न घूस से नाक तक डूबे छोटे से बड़े तक सरकारी कर्मचारियों और उनके आकाओं को। वहाँ कामचोरी की कोई गुंजाइश नहीं थी। सभी कमकर कमर कसकर शारीरिक और बौद्धिक सभी तरह का श्रम करने को तैयार थे। अमरीकी संचालन में भारत की सामूहिक ग्राम योजनाओं की तरह, बाबुओं की पलटन तैयार करके देश के रुपये को बरबाद करना और किसानों को भड़काना उनका ध्येय नहीं था और न कम्युनिस्ट वहाँ के गाँवों में कुर्सी पर बैठकर, कलम घिसाई करने गये थे। किसी हलवाहे को पीछे रहते देखकर, वह स्वयं हल की मुठिया अपने हाथ में पकड़ लेते; किसानों की तरह ही ऐड़ी से चोटी तक का पसीना एक करते। ऐसी अवस्था में, बोल्शेविकों की पंचवार्षिक योजना और उसके प्रणेता के प्रति लोगों की भारी आस्था क्यों न होती और वह सामने के प्रोग्राम को दिलोजान से पूरा करने के लिए तैयार क्यों न होते?

सन 1927 में, अमरीकी मजदूरों का एक प्रतिनिधि-मण्डल रूस गया था। उन्होंने स्तालिन से मुलाकात की थी। पिछले दस वर्षों में अमरीकी पूँजीवादी पत्रों ने जिस झूठ का प्रचार किया था, यद्यपि उसका प्रभाव इन मजदूरों पर कम ही हो सकता था, तो भी उन्होंने स्तालिन से चार घण्टे तक तरह-तरह के प्रश्न किये। स्तालिन ने सभी का जवाब मुँहजवाबी दिया था, जो 11,800 शब्दों में समाप्त हुआ। सभी जवाब परस्पर सम्बद्ध थे। जब प्रतिनिधि-मण्डल प्रश्न करते-करते थक गया, तो स्तालिन ने उनसे पूछा "क्या मैं भी अमरीका के बारे में कुछ प्रश्न कर सकता हूँ?" फिर, उन्होंने दो घण्टे तक और वार्तालाप किया, जिससे पता लगा कि वह अमरीकी जीवन के हर एक पहलू का कितना ज्ञान रखते थे। स्तालिन ने अकेले ही जितनी खूबी के साथ चार घण्टे तक जवाब दिये, प्रतिनिधि-मण्डल वैसा करने में असमर्थ रहा। इस पूरे छः घण्टे की बातचीत में न कोई टेलीफोन की घण्टी बजी और न बीच में कोई सेक्रेटरी आया। इससे मालूम होता है कि स्तालिन सामने आये काम पर कितनी एकाग्रता से जुट जाते थे।

अध्याय - आठ

पंचवार्षिक योजनाएँ (सन 1927–41)

पंचवार्षिक योजनाओं के बारे में बारबूस ने लिखा है :

"योजनीकरण की प्रकाण्ड प्रक्रिया, जिसका जाल सारे देश में एक लम्बे समय से बिछा हुआ है, सोवियत की बिल्कुल अपनी कल्पना है। लेकिन, इसकी छाप सारी दुनिया पर भी पड़ी है। इसने सोवियत संघ में ठोस प्रगति की है। दूसरी जगहों में भी विचार और कल्पना के रूप में यह आगे बढ़ी है। सोवियत संघ बड़े राष्ट्रों से पैसा उधार लेने में कभी सफल नहीं हुआ, लेकिन बड़े राष्ट्रों ने सोवियत संघ से कुछ महत्वपूर्ण चीजें अवश्य उधार ली हैं। उन्होंने सोवियत से नियन्त्रित आर्थिक व्यवस्था उधार ली है। 'नियन्त्रित अर्थनीति' के रूप में, पूँजीवाद ने समाजवाद का झिझकते हुए अभिनन्दन किया है।

"नियन्त्रित अर्थनीति, हाँ, कठिनाइयों से बाहर निकलने के लिए मानव जाति के सामने इसके अलावा दूसरा रास्ता नहीं है। सचमुच, हमारे सामने एक रामबाण औषधि मौजूद है। लेकिन, नियन्त्रण का अर्थ है – एकीकरण; और पूँजीवाद का अर्थ है – अराजकता, राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय दोनों ही दृष्टिकोणों से। अगर 'नियन्त्रित' शब्द का अर्थ पूरा राष्ट्रीय नहीं है, और न वास्तविक अन्तरराष्ट्रीय अर्थ ही है, तो देश में हो या बाहर, इसका कोई अर्थ नहीं, कोई भी मूल्य नहीं है।"

"आर्थिक योजना की कल्पना, यह केवल सोवियत–कल्पना इसलिए नहीं है कि इसमें किसी से बाजी मारने का विचार नहीं था; सोवियत के लिए तो यह प्रकृत वस्तु थी। पूँजीवादी देशों में जहाँ पर निजी व्यवसाय के कारण आर्थिक प्रश्नों में विशेष सुविधा, स्वार्थों की विभिन्नता और बहुतायत काम करती है, तत्परता के साथ कोई एक सामान्य आर्थिक योजना को कार्यरूप में परिणत करना असम्भव है।... लेकिन, यह बात समाजवादी राज्य के लिए नहीं है, समाजवादी राज्य के लिए एक निश्चित, तर्कसम्मत, निर्माणात्मक योजना को जनता के हितों

के लिए, गणित की तरह, बिल्कुल नपे-तुले रूप में पूरा करना कठिन नहीं है; क्योंकि वहाँ संचालन संस्था ही विधान निर्मात्री, कार्यकारिणी, स्वामिनी और व्यय करने वाली संस्था भी है।"

पहली पंचवार्षिक योजना (1928-32)

1. उद्योग क्षेत्र : यह योजना 1 अक्टूबर 1928 को शुरू हुई थी। 31 दिसम्बर 1931 तथा अर्थात पाँच वर्षों का काम इसने चार वर्षों में पूरा कर लिया था। इसके कारण कितनी औद्योगिक उन्नति हुई, यह इसी से मालूम होगा कि जहाँ सन 1928 में राष्ट्रीय आय 15.66 अरब रूबल थी, वहाँ सन 1931 में 41. 90 अरब हो गयी। उससे पहले, रूस में न ट्रैक्टर बनते थे, न विमान। जारशाही रूस अपनी अधिकांश मशीनें यूरोप और अमरीका से मँगाता था, लेकिन प्रथम पंचवार्षिक योजना ने ही सोवियत को इन चीजों में स्वावलम्बी बना दिया। इसी समय, पेट्रोल और कोयले की उपज में सोवियत रूस दुनिया के दूसरे देशों को पीछे छोड़कर, प्रथम हो गया। मध्य एशिया और काकेशस में पहले कल-कारखाने नाम को थे, अब वहाँ उनकी दृढ़ नींव पड़ गयी। कपास की उपज इन चार वर्षों में दूनी हो गयी और कपड़े की बड़ी-बड़ी तेरह नयी मिलें खुलीं। पहले, कारखानों में कुल मिलाकर 4.60 अरब रूबल पूँजी लगी हुई थी, किन्तु इन चार वर्षों के भीतर ही, अब 24 अरब रूबल की नयी पूँजी लगायी गयी। सन 1928 में जहाँ 7.23 लाख आदमी कारखानों में काम करते थे, वहाँ सन 1932 में उनकी संख्या सवा 31 लाख, अर्थात चौगुने से भी अधिक हो गयी। 1500 नये कल-कारखाने बने। इसी समय दो तिहाई खेती पंचायती बन गयी।

ये सफलताएँ वैसे ही आश्चर्यजनक थीं; तब भी पूँजीवादी दुनिया समाजवाद की किसी भी सफलता को स्वीकार करने के लिए तैयार ही नहीं थी। इसलिए, वह क्यों मानती? जब सारे आँकड़ों और विवरणों के साथ प्रथम पंचवार्षिक योजना घोषित की गयी, तो पश्चिमी साम्राज्यवादी देश उसे देखकर मुस्कुरा दिये। वे तरह-तरह की भीषण भविष्यवाणियाँ करने लगे और योजना को बोल्शेविकों का स्वप्न या झूठा प्रोपेगेण्डा कहने से भी बाज नहीं आये। किसी ने कहा - "इन आँकड़ों को मानने के लिए आदमी को अन्धविश्वासी होना चाहिए। दूसरे ने कहा : "पंचवार्षिक योजना के आँकड़े निश्चय ही गलत हैं, क्योंकि वे बहुत बड़े हैं। राष्ट्रीय सम्पत्ति स्रोतों का इतने बड़े परिमाण में स्थानान्तरित करना केवल युद्ध के समय, गोलों के डर के मारे ही सम्भव है।"

सन 1928 में ही, बारबूस ने लिखा था :

"जो पंचवार्षिक योजना इस वक्त चल रही है, वह कोई नौकरशाहों और साहित्यिकों के आँकड़ों और शब्दों की कल्पनाओं का रूप नहीं है, बल्कि एक नया तुला कार्यक्रम है। राज्य योजना के आँकड़ों को सूचनाओं के रूप में नहीं, बल्कि प्राप्त विजयों के रूप में देखना चाहिए। हमसे जब बोल्शेविक कहते हैं कि सन 1931 तक सोवियत उद्योग में 8 फी सैकड़ा की वृद्धि होगी, आर्थिक पुनरुज्जीवन के काम में 7 अरब रुपया लगाया जायेगा और पन-बिजली स्टेशनों की शक्ति 35 लाख किलोवाट तक पहुँच जायेगी।... तो हमें मानना चाहिए कि वस्तुत: वे चीजें अस्तित्व में भी आ चुकी हैं।"

सोवियत योजना 109 फी सैकड़ा सफल हुई। पूँजीवादी दुनिया केवल पंचवार्षिक योजनाओं के आँकड़ों पर ही अविश्वास नहीं करती थी, बल्कि वह चाहती थी कि वह किसी भी तरह से सफल न हो। 'न्यूयार्क टाइम्स' (नवम्बर सन 1932) ने लिखा था : "यह योजना नहीं है, मन के लड्डू हैं। घोर पराजय है!"। अंग्रेजी 'डेली टेलीग्राफ' ने घोषित किया था : "यह पूरा दिवालियापन है!"। पोलैण्ड का पूँजीवादी पत्र 'गजेता पोलस्का' कह रहा था : "गतिरोध, भारी गतिरोध!" इटालियन 'पोलितिचा' का फतवा था : "सर्वनाश स्पष्ट है!" लन्दन का बूढ़ा 'फाइनैंशियल टाइम्स' गम्भीरतापूर्वक आगाही दे रहा था : सारी व्यवस्था का विश्रृंखलन, खण्ड-खण्ड होना!" अमरीकन 'करेण्ट हिस्ट्री' ने लिखा था : "अपने उद्देश्य में खण्ड-खण्ड अपने सिद्धान्तों में खण्ड-खण्ड!" पार्टी से निकाले गये एक रूसी ने लिखा था : "सोवियत समाजवादी गणसंघ में पंचवार्षिक योजना केवल कागज पर होती है, वह कभी सफल नहीं होती।" इसी लेखक ने सन 1931 में अपनी पुस्तक में लिखा था : "सोवियत समाजवादी गणसंघ में जेल ही ऐसी जगह है, जहाँ पर आदमी भूख से नहीं मरता! हर एक सोवियत नागरिक के जूतों में छेद हैं और उसके चेहरे पर निराशा।" एक ने तो यहाँ तक भी लिख दिया था : "मास्को के होटलों में वह बच्चों को पकाकर खाते हैं!"

लेकिन, प्रथम पंचवार्षिक योजना कितनी सफल रही, इसके आँकड़े हम बतला चुके हैं; न भीषण गतिरोध हुआ, न सर्वनाश; न दिवाला पिटा, न खण्ड-खण्ड हुआ। उपज और उद्योग-धन्धों की वृद्धि के साथ-साथ, सोवियत में साक्षरों की संख्या जो सन 1930 में 67 फी सैकड़ा थी 1933 में 90 फी सैकड़ा हो गयी। योजना की समाप्ति के समय, बारबूस ने रूस में जाकर देखा था : "एक विशाल हवाई जहाज जिसके भीतर जाने पर आदमी समझता था, मानो वह किसी कारखाने के मशीन रूम में हो - जिसके निर्माण में कोई भी चीज बाहर से लाकर नहीं लगायी गयी थी, सिवाय पहियों के रबर के टायरों

के। द्रियेप्रोज, मग्नितागोर्स्क, चेलिाबिन्स्क, बोगरिती, उरालमाशस्त्रोय, क्रामाशस्त्रोय आदि नये औद्योगिक नगर पैदा हो गये।" अंग्रेजी पत्र 'नेशन' ने लिखा था : "चार वर्षों में पृथ्वी पर पचास नये नगर उठ खड़े हुए, जिनमें से हर एक की जनसंख्या पचास हजार से ढाई लाख की है। कुजलनेत्स्क-उपत्यका में 6 नये शहर तैयार हुए, जिनकी जनसंख्या 6 लाख थी। ध्रुवकक्षीय प्रदेश में फास्फेट निकल आने से, वहाँ 50 हजार की आबादी का एक नगर (किरोवग्राद) तैयार हो गया।" स्तालिन ने जहाँ प्रथम पंचवार्षिक योजना में भारी उद्योगों की दृढ़ नींव रखकर, सोवियत भूमि को औद्योगिक तौर से स्वावलम्बी बनाने का निश्चय किया था, वहीं वह यह भी समझते थे कि पूँजीवादी शक्तियाँ एक अकेले समाजवादी राज्य के खिलाफ जिस महायुद्ध की साजिशें कर रही हैं, उसे छेड़कर ही रहेंगी और उसमें पड़ने के लिए सोवियत को मजबूर करेंगी ही। ऐसी अवस्था में, अपने बड़े-बड़े उद्योग-धन्धों को मजबूत करना जरूरी है। इसीलिए, मग्नितोगोर्स्क, स्वेर्दलोव्स्क, चेलियाबिन्स्क, नवोसिबिर्स्क, कूजनेत्स्क, अंगरास्त्रोय आदि नये विशाल औद्योगिक केन्द्र बनाये गये।

उद्योग-धन्धों में जिस तरह काम हुआ, खेती में भी वही बात हुई। और इस प्रकार, स्तालिन की योजना ने सोवियत रूस को सर्वांगीण सफलता प्रदान की। साम्राज्यवादियों ने औद्योगिक योजनाओं का केवल उपहास करके ही सन्तोष नहीं किया, बल्कि उन्होंने तोड़फोड़ के काम कराने की भी पूरी कोशिशें कीं - शाख्ती की खानों में ऐसा ही हुआ था। जहाँ भी अवसर मिला, पुराने मध्यवर्ग के प्रतिगामी विशेषज्ञ तोड़-फोड़ का काम किये बिना नहीं रहे। स्तालिन ने देखा कि देश जब तक विरोधी वर्ग के विशेषज्ञों पर निर्भर रहेगा, तब तक इस तरह के खतरे बराबर बने ही रहेंगे; इसीलिए, योजना के दौरान में ही, उन्होंने मजदूर वर्गीय विशेषज्ञों, प्रबन्धकों और बुद्धिजीवियों को भारी संख्या में शिक्षित करने की ओर ध्यान दिया। होनहार तरुणों को पाँच वर्ष की शिक्षा देने की जगह, उन्होंने डेढ़-डेढ़ वर्ष की फौरी तथा आंशिक शिक्षा देकर, काम पर लगाया और काम करते हुए उनकी शिक्षा और ज्ञान को बढ़ाने का भी प्रबन्ध किया। इसी वक्त, स्तालिन ने यह भी कहा था :

"हमें अपने बारे में आत्म-आलोचना करते रहने की जरूरत है। इसके बिना, हम अपने व्यवसाय, मजदूर संघ और पार्टी संगठन को नहीं सुधार सकते। समाजवाद के निर्माण में बुर्जुआ तोड़-फोड़ की कार्रवाई को तब तक कम नहीं कर सकते, जब तक कि हम आत्म-आलोचना को पूरी तौर से विकसित नहीं करते, जब तक कि हम अपने संगठनों के काम को जनता के नियन्त्रण के अधीन नहीं रखते।"

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के इतिहास के अनुसार : "नये विकास के लिए इतने विराट पैमाने पर, इतने उत्साह के साथ करोड़ों कमकरों द्वारा श्रम में वीरता दिखलाते हुए, यह विकास और औद्योगिक निर्माण इतिहास में कभी नहीं देखा गया था।" स्तालिन ने स्वयं निर्माण के स्थानों का दौरा किया था। वह सन 1928 के जाड़ों में साइबेरिया के बरनोल आदि स्थानों तथा अलताई के इलाके में गये थे। क्रान्ति के बारहवें वार्षिकोत्सव के समय (सन 1929), स्तालिन ने 'महान परिवर्तन का एक वर्ष' के नाम से एक लेख में बतलाया था कि समाजवाद ने शहर और देहात में किस तरह पूँजीवादी तत्वों के खिलाफ जबर्दस्त आक्रमण किया था।

2. कोलखोज (सामूहिक खेती) : समाजवादी दृष्टि से सामूहिक खेती, कोलखोजी व्यवस्था पर पहुँचना बिल्कुल स्वाभाविक है। सन 1922-23 में, मुझे न मार्क्सवाद का उतना ज्ञान था और न सोवियत-भूमि में होने वाली बातों का परिचय ही था। जब मैंने हिन्दी में 'योटोपिया' (कल्पना) के रूप में अपनी 'बाईसवीं सदी' लिखनी शुरू की, तो सामुदायिक खेती के रूप में ही गाँव के जीवन को चित्रित करने का ख़्याल आया था। इसलिए, यदि मार्क्स जैसे क्रान्तिदर्शी, ने इस तरह की खेती को पहले ही देख लिया, तो इसमें आश्चर्य की क्या बात थी? मार्च सन 1881, में मार्क्स ने वेरा जासुलिच को एक चिट्ठी लिखते हुए कहा था कि रूस एक ऐसा देश है, जिसको प्रकृति ने वे सभी साधन प्रदान किये हैं, जो समाजवादी क्रान्ति हो जाने पर, समाजवादी यान्त्रिक खेती के अनुकूल होंगे। उस वक्त, मार्क्स ने राय दी थी कि रूस सामूहिक यान्त्रिक खेती के लिए आवश्यक यन्त्र साधन पूँजीवादी देशों से प्राप्त कर सकता है। लेनिन भी लाखों ट्रैक्टर और ट्रैक्टर ड्राइवरों वाली खेती का स्वप्न देख रहे थे। सामूहिक खेती के महत्व पर उनका बहुत जोर था। लेनिन का वह स्वप्न उनके, योग्य शिष्य ने सत्य करके दिखला दिया। स्तालिन ने ट्रैक्टरों और कृषि मशीनों के लिए, बड़े-बड़े कारखाने बनाने की ओर पूरा ध्यान दिया। छोटी से छोटी बातों पर भी उन्होंने स्वयं विचार किया। नयी मशीनों के परीक्षण में भाग लिया; कारखानों के मैनेजरों, आविष्कारकों और डिजाइनरों को स्वयं सलाह दी। इस प्रकार थोड़े ही दिनों में, यन्त्र-निर्माण में बहुत पिछड़े हुए रूस ने ट्रैक्टरों, कटाई की कम्बाइनों, आलू बोने वाले यन्त्रों, मंगेला, चुकन्दर, कपास की फसलों के जमा करने की मशीनों को बड़े परिणाम में बनाना शुरू कर दिया।

कोलखोजीकरण का काम आसानी से आगे नहीं बढ़ा; क्योंकि जमींदारों के खत्म हो जाने के बाद, कुलक (सूदखोर धनी किसान) कोलखोजों को बड़ी शनि-दृष्टि से देख रहे थे। जब तक किसान जनसाधारण भारी अभाव और गरीबी

में रहें, तभी तक कुलकों की पाँचों उँगली घी में रहती हैं। सामूहिक खेती का मतलब था – किसानों का अभाव और गरीबी से मुक्त होकर, अपने पैरों पर खड़ा होना, जिसका अर्थ था – कुलकों के फलने-फूलने के रास्तों का रुक जाना। उन्होंने हर तरह से छोटे और मँझोले किसानों को भड़काना शुरू किया। लेकिन, स्तालिन की आँखें सिर्फ कल कारखानों को ही नहीं बल्कि रोटी के बारे में गाँवों में क्या हो रहा है, इसे भी देख रही थीं। एक साल के अन्दर, कोलखोजी आन्दोलन काफी आगे बढ़ा। स्तालिन ने लिखा था : "वर्तमान कोलखोजी आन्दोलन का नया और निर्णायक पहलू यह है कि किसान कोलखोजों में अलग-अलग गुटों में आकर शामिल नहीं हो रहे हैं, जैसा कि उन्होंने पहले किया था, बलिक अब गाँव-के-गाँव, तहसीलें-की-तहसीलें और जिले-के-जिले ही नहीं, सारे प्रदेश कोलखोज में शामिल हो रहे हैं। इसका क्या अर्थ है? इसका अर्थ है – मँझोले किसान कोलखोज आन्दोलन में शामिल हो रहे हैं" – लेकिन जिस तरह कोलखोज में शामिल होने के लिए किसान जन साधारण उत्साह दिखला रहा था, उसी तरह कुलक भी उसमें बाधा डालने के लिए तैयार थे। उन्होंने साधारण किसानों को भड़काया। कभी प्रलोभन देकर कोलखोज के जानवरों को मरवाया, कभी मशीनों को खराब किया और कभी मुल्लों और पादरियों से मिलकर धर्म के नाम पर सीधे-सादे किसानों को फुसलाया। यही समय था, जब बाहरी दुनिया में युद्ध का नाम खतरा पैदा हो गया था। सन 1921 में, जापान ने मंचूरिया पर अधिकार कर लिया और सामुराई पूर्वी साइबेरिया पर अपनी गिद्ध दृष्टि डाल रहे थे। ऐसी व्यवस्था में, कुलकों के अस्तित्व को और बर्दाश्त करते रहना युक्तियुक्त न समझा गया। उन्हें गैर-कानूनी बना दिया गया। 27 दिसम्बर 1929 को कृषि के विद्यार्थियों की कांफ्रेंस में भाषण देते हुए, स्तालिन ने बतलाया :

"चाहे पूँजीवाद की ओर पीछे हटो, या आगे समाजवाद की ओर बढ़ो – दो ही रास्ते हैं। तीसरा रास्ता न है, न हो सकता है। जहाँ छोटे-छोटे किसानों की बहुतायत है, समाजवादी नगरों को देहातों का नेतृत्व करना होगा। देहाती इलाकों में कोलखोजी और सोविखोजी खेती कायम करो। देहाती इलाकों को एक नये समाजवादी आधार पर संगठित करना होगा।"

अभी तक, अधिक खेतों के मालिक और अधिक उपज हाथ में होने के कारण अनाज और पशुओं की सम्पत्ति की कुंजी कुलकों के हाथ में ही थी, लेकिन अब पाँसा पलट गया। स्तालिन के कथनानुसार : "कुलकों के उत्पादन की जगह, कोलखोज और सोविखोज के उत्पादन के भौतिक आधार हमारे पास हैं; इसीलिए, हमने कुलकों के शोषण पर नियन्त्रण करने की जगह, उन्हें एक

वर्ग के तौर पर खत्म कर देने की नीति अख्तियार की है।"

कोलखोज का प्रसार और भी जोरों से होने लगा। कितने ही अदूरदर्शी कार्यकर्ता उत्साह के मारे चरमपन्थी बनकर, किसानों को भी कुलक बनाकर बाहर करने तथा दबाव डालकर सारे इलाके को कोलखोजों में परिवर्तित करने लगे, जिसके कारण देहातों में असन्तोष बढ़ने लगा। समय रहते ही, स्तालिन की सावधान आँखों ने खतरे को देख लिया और उसी समय उन्होंने 'सफलता से चकाचौंध' के नाम से एक लेख लिखकर खूब फटकारते हुए, बतलाया कि कोलखोज (सामूहिक खेती) का निर्माण केवल किसानों की स्वेच्छा पर निर्भर होना चाहिए। और, यह भी सामूहिक खेती का रूप सहकारी (अर्तेल) होना चाहिए। स्तालिन ने इसी लेख में नेतृत्व के बारे में कहा था :

"नेतृत्व की कला एक गम्भीर विषय है। आदमी को आन्दोलन से पीछे नहीं रहना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने पर वह जनसाधारण से अलग हो जायेगा। लेकिन, साथ ही आदमी को आगे भी नहीं दौड़ जाना चाहिए, क्योंकि आगे दौड़ जाने का मतलब है – जनसाधारण के सम्पर्क से वंचित होना। जो भी आदमी किसी आन्दोलन का नेतृत्व करना चाहता है और साथ ही विशाल जनता के साथ सम्पर्क भी बनाये रखना चाहता है, उसे दो मोर्चों पर लड़ाई लड़नी होती है – उनके साथ भी, जो पीछे पड़ रहे हैं और उनके साथ भी जो आगे दौड़ जाना चाहते हैं। हमारी पार्टी इसीलिए मजबूत और अजेय है कि आन्दोलन का नेतृत्व करते समय, वह जानती है कि कैसे कमकरों और किसानों के विशाल समूह के साथ सम्पर्क स्थापित करके आगे बढ़ना चाहिए।"

15 मार्च 1930 को स्तालिन के इसी लेख को केन्द्रीय कमेटी ने एक प्रस्ताव के रूप में स्वीकार किया।

इसके बाद, किसानों ने स्तालिन को पत्र भेजने शुरू किये। इन प्रश्नों का उत्तर 'कोलखोजी सार्थियों को जवाब' 3 अप्रैल 1930 को प्रकाशित हुआ, जिसमें स्तालिन ने बतलाया कि जो गलतियाँ कोलखोजों के बनाने में की गयी थीं, उनका कारण था मँझोले किसानों के महत्व को न समझना और लेनिन के इस आदेश को भूल जाना था कि किसानों को कोलखोज में शामिल करने के लिए जबर्दस्ती नहीं करनी चाहिए, कोलखोजों का निर्माण स्वेच्छापूर्वक होना चाहिए। स्तालिन ने यह भी बतलाया था : "कोलखोजी खेंत की अन्तिम परिणति साम्यवादी खेती में होगी। किन्तु, ऐसा होना तभी सम्भव होगा, जब उपज इतनी अधिक हो कि कम्यून के सदस्यों की सभी आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। सहकारी (या अर्तेल) वह खेती है, जिसमें उत्पादन के मुख्य साधन समाजीकृत किये जाते हैं; लेकिन, घर, साग-सब्जी की क्यारियाँ, कुछ ढोर,

भेड़-बकरियाँ, मुर्गियाँ आदि समाजीकृत नहीं होतीं। साम्यवादी (कम्यून) व्यवस्था में केवल उत्पादन ही नहीं, बल्कि वितरण भी समाजीकृत या सम्मिलित हो जाता है।"

कोलखोज-आन्दोलन पूर्णतया सफल रहा। पार्टी इतिहास के शब्दों में :

"इस क्रान्ति की एक बड़ी विशेषता यह है कि ऊपर से, राज्य की प्रेरणा कैसे कार्य रूप में परिणत की गयी है, किन्तु उसका समर्थन सीधे नीचे की ओर से उन करोड़ों किसानों द्वारा हुआ है, जो कुलकों की गुलामी को उखाड़ फेंकने के लिए लड़ते हुए कोलखोजों में स्वतन्त्र जीवन बिताना चाहते थे।"

इस सफलता में जिस पुरुष का सबसे बड़ा हाथ था, उसे (स्तालिन को) फरवरी सन 1930 में सोवियत संघ की केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी ने लाल झण्डे का दूसरा तमगा प्रदान किया।

3. सोलहवीं कांग्रेस (सन 1930) : 26 जून 1930 को पार्टी की सोलहवीं कांग्रेस शुरू हुई। तब तक कृषि और उद्योग-धन्धों, दोनों ही में भारी सफलता प्राप्त हो चुकी थी और समाजवाद चारों ओर विजयी हो रहा था। कुलक-वर्ग देहात से खत्म कर दिया गया था और कोलखोजीकरण बड़े व्यापक और ठोस रूप से आगे बढ़ चुका था। इसी कांग्रेस में नारा बुलन्द किया गया – 'पाँच वर्षों की योजना चार वर्षों में पूरी की जाये। उसके बाद, द्वितीय पंचवार्षिक योजना की तैयारी हो।' उद्योग-धन्धों और कोलखोजी खेती के इतने विशाल रूप में संगठित होने पर उनके प्रबन्ध की ओर भी ध्यान जाना जरूरी था। इसके लिए समाजवादी उद्योगों के प्रबन्धकों की प्रथम कांफ्रेंस हुई जिसमें 4 फरवरी 1931 को स्तालिन ने 'व्यवसाय प्रबन्धकों के कर्तव्य' के नाम से एक भाषण देते हुए कहा :

"हम दुनिया के आगे बढ़े हुए देशों से पचास या सौ वर्ष पीछे हैं। हमें यह मंजिल दस वर्षों में पूरी करनी है। या तो हम इसे पूरा करें, या वह हमें पीस देंगे।"

इस प्रकार, स्तालिन ने व्यावसायिक प्रबन्ध की आवश्यकता को भी आँखों से ओझल नहीं होने दिया। उद्योग-धन्धों की टेक्नीक पर तो उन्होंने और भी जोर दिया। साथ ही, सोवियत की नयी जनता अन्तरराष्ट्रीय कमकरों की मैत्री का मूल्य न भूल जाये, इसलिए उन्होंने कहा :

"सोवियत समाजवादी गणसंघ दुनिया के मजदूर-वर्ग का एक अंग है। हमें केवल सोवियत समाजवादी गणसंघ के मजदूर-वर्ग के प्रयत्नों के कारण ही विजय नहीं मिली, बल्कि दुनिया के मजदूर वर्ग की सहायता भी उसमें सहायक हुई थी। बिना इस समर्थन के बहुत पहले ही हमारे टुकड़े-टुकड़े कर दिये गये होते। कहा जाता है, हमारा देश सभी देशों के सर्वहाराओं का हरावल दस्ता है,

जो ठीक ही कहा जाता है। लेकिन, इसमें हमारी जिम्मेवारियाँ बढ़ जाती हैं। अन्तरराष्ट्रीय सर्वहाराओं ने क्यों हमारा समर्थन किया? कैसे हम उस समर्थन के पात्र बने? इसीलिए कि पूँजीवाद के खिलाफ लड़ी जाने वाली लड़ाई में हमने अपने आपको सबसे पहले झोंका; मजदूर वर्ग के राज्य की स्थापना करने में हम सबसे पहले आगे बढ़े और समाजवाद के प्रथम निर्माण के आरम्भ करने वाले भी हम ही हुए। इसी कारण, हम वह काम कर रहे हैं, जिसमें यदि सफलता मिली तो वह सारी दुनिया को बदल देगा और सम्पूर्ण मजदूर वर्ग को मुक्त करेगा। लेकिन, सफलता के लिए किस चीज की जरूरत है? अपने पिछड़ेपन को हटाना और निर्माण के लिए बोल्शेविकों की जबर्दस्त कार्य-गति को विकसित करना। हमें इस तरह आगे बढ़ना चाहिए कि सारी दुनिया का मजदूर वर्ग हमारी ओर देखकर कहने लगे : 'यह हमारा हरावल है, यह हमारा तूफानी दस्ता है, यह हमारा मजदूर वर्ग का राज्य है, यह हमारी पितृभूमि है; ये जिस काम को आगे बढ़ा रहे हैं, वह हमारा काम है और ये उसे अच्छी तरह से कर रहे हैं। आओ, हम पूँजीपतियों के विरुद्ध उनका समर्थन करें और विश्व क्रान्ति के काम को फैलायें।"

इस भारी काम की जबर्दस्त कठिनाइयों की बात करने वालों को स्तालिन का जवाब था।

"दुनिया में कोई भी ऐसा किला नहीं है, जिस पर बोल्शेविक अधिकार नहीं कर सकते। हमने कितनी ही अत्यन्त कठिन समस्याओं को हल किया है। हमने पूँजीवाद को उखाड़ फेंका है। हमने राज्य शक्ति हाथ में ले ली है। हमने एक विशाल समाजवादी उद्योग का निर्माण किया है। हमने मँझोले किसानों को समाजवाद के पथ पर चलाया है। निर्माण के दृष्टिकोण से बहुत ही महत्वपूर्ण कितने ही कामों को हम पूरा कर चुके हैं; अब जो करने को बाकी रह गया है, वह बहुत नहीं है। वह है – टेक्नीक का अध्ययन और विज्ञान पर अधिकार प्राप्त करना। जब हम इसको भी कर लेंगे, तो हमारे कार्य की गति इतनी विकसित हो जायेगी कि आज उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। और, हम यह कर सकते हैं, अगर वस्तुतः करना चाहें।"

जून सन 1931 की व्यवसाय-प्रबन्धकों की सभा में नयी स्थितियाँ, नये आर्थिक कर्तव्य पर भाषण देते हुए, स्तालिन ने उद्योग के विकास के लिए आवश्यक 6 बातों पर जोर दिया था : (1) कोलखोजों के साथ संगठित ढंग से शर्तनामा करके, मजदूरों की भर्ती करना और नये कमकरों की मेहनत को यन्त्रों द्वारा हल्का करना। (2) सब मजदूरी को बराबर करने के ख़याल को छोड़ना, ठीक तरह से मजदूरी का नियमन करना और कमकरों की जीवन

स्थितियों को सुधारना। (3) वैयक्तिक जवाबदेही के अभाव को खत्म करना, श्रम संगठन को बेहतर बनाना और उद्योग-धन्धों में श्रम की शक्तियों का ठीक तौर से वितरण करना। (4) ऐसा प्रबन्ध करना, जिसमें सोवियत समाजवादी गणसंघ के मजदूर वर्ग के पास अपने निजी औद्योगिक और टेक्निकल बुद्धिजीवी हों। (5) पुराने ढंग के इंजीनियरों और टेक्नीशियनों के प्रति अपने भाव को बदलना, उनकी ओर अधिक ध्यान और सहानुभूति रखना और उनका सहयोग प्राप्त करने के लिए अधिक निर्भीकता से काम लेना। (6) व्यवसाय के हिसाब-किताब को ठीक तरह से रखने का प्रबन्ध करना, प्रचार करना और उद्योग-धन्धों में पूँजी जमा करने के काम को अधिक बढ़ाना।"

स्तालिन सन 1929 में 50 वर्ष के हुए थे। उनकी महिमा सोवियत राष्ट्र के कोने-कोने में फैल चुकी थी। उनकी 50वीं वर्षगाँठ के दिन व्यक्तियों और संस्थाओं ने बहुत से अभिनन्दन भेजे थे, जिनका जवाब देते हुए स्तालिन ने कहा था : "मैं आपके अभिनन्दनों और अभिवादनों को मजदूर वर्ग की महान पार्टी के नाम पर मानता हूँ, जिसने मुझे पैदा किया और पाल-पोसकर इस रूप में बनाया है।"

स्तालिन यह भली प्रकार जानते थे कि उनकी सारी योजनाएँ केवल दिमागी कल्पना-मात्र रह जातीं, यदि कमकर वर्ग और कम्युनिस्ट पार्टी उन्हें कार्य रूप में परिणत न करती।

4. स्त्रियाँ : समाजवादी उद्योग-धन्धे और खेती ने स्त्रियों को आर्थिक स्वतन्त्रता दी, जो सभी स्वतन्त्रताओं की जननी है। वे आर्थिक तौर से अपने पैरों पर खड़ी हुईं। स्तालिन ने स्त्रियों की अतीत और वर्तमान की अवस्था के बारे में कहा था :

"इतिहास में उत्पीड़ितों का कोई भी ऐसा महान आन्दोलन नहीं है, जिसमें कमकर स्त्रियों ने भाग न लिया हो। कमकर स्त्रियाँ सभी उत्पीड़ितों में भी अत्यन्त उत्पीड़ित हैं, लेकिन तो भी वह कभी ऐसे समय में मुक्ति के महान अभियान से अलग-थलग नहीं रहीं और न रह सकती थीं। हम जानते हैं, दास-मुक्ति आन्दोलन में लाखों स्त्रियाँ शहीद हुई थीं, उन्होंने वीरतापूर्वक काम किया था। किसान अर्धदासों की मुक्ति के लिए जब लड़ाई हुई तो हजारों की संख्या में स्त्रियों ने उसमें सीधे भाग लिया था। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि मजदूर वर्ग के क्रान्तिकारी आन्दोलन पीड़ित जनता की मुक्ति के आन्दोलनों में सबसे अधिक शक्तिशाली, मजदूर वर्ग के क्रान्तिकारी आन्दोलन में उसके झण्डे के नीचे करोड़ों कमकर स्त्रियाँ आकर खड़ी हुईं। कमकर स्त्रियाँ औद्योगिक कमकर और किसान स्त्रियाँ मजदूर वर्ग की सबसे बड़ी रिजर्व सेना है, ऐसी

रिजर्व, जो कि संख्या में सारी जनता की आधी है। यह स्त्रियों की रिजर्व सेना मजदूर वर्ग के साथ होगी या उसके खिलाफ, इसी पर सर्वहारा सरकार की विजय या पराजय का निपटारा है। इसीलिए, सर्वहारा और उसकी हरावल कम्युनिस्ट पार्टी का यह प्रथम कर्तव्य है कि बुर्जुआओं के प्रभाव से कमकर और किसान स्त्रियों को निकालने के लिए, सर्वहारा के झण्डे के नीचे कमकर किसान स्त्रियों को राजनीतिक तौर से शिक्षित और संगठित करने के लिए जबर्दस्त संघर्ष करें।... लेकिन कमकर स्त्रियाँ रिजर्व सेना ही नहीं, कुछ और अधिक भी हैं। यदि मजदूर वर्ग ठीक नीति अख्तियार करे, तो वे बुर्जुआओं के विरुद्ध लड़ने वाले मजदूर वर्ग की बाकायदा फौज बन सकती हैं। स्त्रियों की श्रम सेना को सर्वहारा की महान सेना के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर कमकर किसान स्त्री सेना के रूप में ढालना मजदूर वर्ग का द्वितीय और निर्णायक कर्तव्य है।"

कोलखोजी तूफानी कमकरों की प्रथम कांग्रेस में, कोलखोजी औरतों के बारे में, स्तालिन ने कहा था :

"साथियो! कोलखोजों में स्त्रियों का प्रश्न एक बड़ा प्रश्न है। मैं जानता हूँ, आपमें से बहुत से लोग स्त्रियों के मूल्य को कम समझते या उनका उपहास भी करते हैं। यह गलत है। सवाल यही नहीं है कि स्त्रियाँ हमारी जनसंख्या की आधी हैं, बल्कि खास बात यह है कि कोलखोज आन्दोलन ने उल्लेखनीय तथा योग्य कितनी ही स्त्रियों को ऊँचे पदों पर पहुँचाया है। इसी कांग्रेस की प्रतिनिधियों की ओर देखो, तो तुम्हें मालूम होगा कि स्त्रियाँ पिछड़े हुओं की पंक्ति से आगे बढ़ने वालों की पंक्ति में काफी पहले पहुँच गयी हैं। कोलखोजों में स्त्रियाँ एक भारी शक्ति हैं। इस शक्ति को दबा रखना भयंकर अपराध होगा। हमारा कर्तव्य है कि स्त्रियों को कोलखोज में लायें, आगे बढ़ायें और इस महान शक्ति का उपयोग करें।

"और, जहाँ तक कोलखोजी स्त्रियों का अपना सम्बन्ध है, उन्हें कोलखोज के महत्व और शक्ति का ध्यान रखना चाहिए। उन्हें याद रखना चाहिए कि केवल कोलखोज में आकर ही उन्हें पुरुषों के बराबर होने का अवसर मिला है। बिना कोलखोज के असमानता है; और कोलखोज में समान अधिकार प्राप्त है। हमारी कोलखोजी स्त्री साथिनों को इसे याद रखना चाहिए और कोलखोजी व्यवस्था को अपनी आँखों की पुतली जैसा प्रिय मानना चाहिए।"

सोलहवीं कांग्रेस ने अपने एक प्रस्ताव में कहा : "जमींदारी जब्त करना देहात में अक्टूबर क्रान्ति का पहला कदम था, कोलखोजी खेती का स्वीकार करना दूसरा और अत्यन्त निर्णायक कदम है, जिसका कि सोवियत समाजवादी गणसंघ में समाजवादी समाज की नींव रखने में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है।"

5. विज्ञान : स्तालिनग्राद (पुराने जारीत्सीन) में सोवियत का सबसे बड़ा ट्रैक्टर का कारखाना बना। उसके उद्घाटन के दिन (17 जून 1930) स्तालिन ने कहा था :

"सोवियत समाजवादी गणसंघ के प्रथम विशाल 'लाल ध्वज ट्रैक्टर कारखाने' के कमकरों और प्रबन्धकों का, उनकी विजय के उपलक्ष्य में अभिवादन और अभिनन्दन! पचास हजार ट्रैक्टर, जो तुम हर साल हमारे देश के लिए पैदा करने वाले हो, वह पचास हजार भीषण गोले होकर पुराने व बुर्जुर्वा जगत को चूर-चूर कर देंगे और देहात में नवीन समाजवादी व्यवस्था का रास्ता साफ करेंगे।"

स्तालिन वैयक्तिक तौर से, हर एक नये आविष्कर्ता को प्रोत्साहन और सम्मान प्रदान करते थे। वह विज्ञान और वैज्ञानिकों के हमेशा पृष्ठ-पोषक रहे और लेनिन की तरह ही, उनके सात खून माफ करने के लिए तैयार रहते थे। सोवियत नेताओं और उनके कामों को गाली देते रहने पर भी, लेनिन और स्तालिन ने पावलोफ को अपनी खोजों में इतनी सहायता दी, जो जारशाही क्या किसी पूँजीवादी देश में भी सम्भव नहीं हो सकती। स्तालिन ने च्योल्कोव्स्की, पावलोफ, चीचिन, लीस्सेंको जैसे महान वैज्ञानिकों का भारी सम्मान और समर्थन किया। कम्युनिस्ट एकेडमी का अलग रखना बेकार समझकर, उनकी सलाह से ही उसे विज्ञान एकेडमी में मिला दिया गया था।

द्वितीय पंचवार्षिक योजना (1933-37)

प्रथम पंचवार्षिक योजना की सफलताओं को देखते हुए, द्वितीय पंचवार्षिक योजना की तैयारी शुरू की गयी "सोवियत संघ छोटे-छोटे किसानों की खेती के देश से कोलखोज, सोविखोज के विकास और यन्त्रों के अधिकाधिक उपयोग के आधार पर दुनिया के एक बड़े पैमाने के कृषि वाले देश के रूप में परिणत हो गया है।... देश ने राष्ट्रीय आर्थिक जीवन के पुनर्निर्माण के काम को पूरा करने के लिए अपने सारे आधार तैयार कर लिये हैं।" ऐसी अवस्था में द्वितीय पंचवार्षिक योजना तैयार की गयी।

इसी साल (सन 1932 में), स्तालिन की पत्नी - नादेज्दा का देहान्त हुआ। उसकी अर्थी की यात्रा में स्तालिन उसके साथ-साथ रहे। उसे बड़े सम्मानपूर्वक दफनाया गया। वह अपने एक पुत्र वासिली और पुत्री स्वेतलाना को छोड़कर मरी थी, जिन्हें स्तालिन बहुत प्रेम करते थे।

प्रथम पंचवार्षिक योजना कितनी सफल हुई, इसके बारे में हम कह चुके हैं। सोवियत के साम्राज्यवादी शत्रुओं और उनके पत्रों को भारी सिरदर्द पैदा हो गया, जब उन्होंने देखा कि समाजवाद की सार्वत्रिक और सार्वजनिन मुक्ति के

वातावरण में कोई चीज असम्भव नहीं है। फ्रांस के साम्राज्यवादी पत्र 'लताँ' (27 जनवरी 1932) ने स्वीकार किया : "सोवियत संघ ने बिना विदेशी पूँजी की सहायता के, अपने को उद्योग प्रधान बनाकर पहली बाजी जीत ली।" कुछ ही महीनों बाद अप्रैल में, फिर उसी पत्र ने लिखा : "जान पड़ता है, साम्यवादी एक साँस में निर्माण की उन सारी अवस्थाओं को लाँघ गया है, जिससे पूँजीवादी शासन को अत्यन्त धीरे-धीरे पार होना पड़ा था। सभी बात देखने पर यह साफ है कि बोल्शेविकों ने हमें इस सम्बन्ध में हरा दिया है।" अंग्रेजी साम्राज्यवादी पत्रिका 'राउण्ड टेबिल' ने लिखा : "पंचवर्षीय योजना की सफलता एक आश्चर्यजनक घटना है।" – 'फाइनैंशियल टाइम्स' ने लिखा : "उनकी सफलता के बारे में कोई सन्देह नहीं किया जा सकता। अपने पत्रों और व्याख्यानों में कम्युनिस्ट जो फूले नहीं समाते देखे जाते हैं, वह बेबुनियाद ही नहीं है।" आस्ट्रियन पत्र 'नोये फ्राई प्रेस' ने लिखा था : "आधुनिक पंचवार्षिक योजना विराट है।" यूनाइटेड डोमिनियन ट्रस्ट के प्रेसीडेण्ट गिब्सन जार्वी का विचार था : "रूस आगे बढ़ता जा रहा है, जबकि हम पीछे हट रहे हैं। पंचवार्षिक योजना ने हमें पीछे छोड़ दिया है!... रूस के तरुणों और कमकरों के पास एक चीज है, जिसका हमारे पास अभाव है, वह है – आशा।" – संयुक्त राष्ट्र अमरीका के पत्र 'नेशन' ने लिखा था : "पंचवार्षिक योजना के पाँच वर्ष वस्तुतः उल्लेखनीय सफलताओं को दिखलाने में सफल हुए हैं। सोवियत संघ ने एक नवीन जीवन की नींव निर्माण करने में जिस तरह अपने को लगाया, वह युद्ध-काल के ज्यादा अनुरूप है।" स्काटलैण्ड के पत्र 'फार्वर्ड' का कहना था : "युद्ध के दर्मियान इंग्लैण्ड ने जो कुछ किया, वह इस पंचवार्षिक योजना के सामने नगण्य है। अमरीकन स्वीकार करते हैं कि पश्चिमी राज्यों में अत्यन्त जोर के निर्माण का भूत सिर पर चढ़े होने के समय की भी, इससे कोई तुलना नहीं है।.. इतनी मात्रा में शक्ति लगायी गयी है, जिसका दुनिया के इतिहास में उदाहरण नहीं मिलता। प्रतिद्वन्द्वी पूँजीवादी जगत के लिए यह चमत्कारपूर्ण ललकार है।"

इन उदाहरणों से, इसका अन्दाजा लगाया जा सकता है कि सोवियत संघ ने क्या किया था। प्रथम पंचवार्षिक योजना के द्वारा स्तालिन के नेतृत्व में सोवियत के लोग सर्वस्व की बाजी भी लगा सकते थे, क्योंकि उनके यहाँ न चोरबाजारी न नफाखोर सेठों के हित का ख़याल करना था, न मुट्ठी-भर सामन्ती जमींदारों का; और न भाई-भतीजे-भाँजों को नौकरियाँ बाँट-बाँटकर शासन के व्यय भार को पाँच-छः गुना बढ़ाने और ऊपर से नीचे तक घूस-रिश्वत के बाजार को गरम करने की गुंजाइश थी। महीने में तीन-चौथाई दिनों में बेकार रहने वाले करोड़ों नर-नारियों को श्रम निर्माण के काम में लगा दिया गया, प्रतिभाओं को

ढूँढ़-ढूँढ़कर आगे बढ़ाया गया। वहाँ राष्ट्रीय धन की एक-एक कौड़ी को विदेशी दूतावासों, कमीशनों, मन्त्रियों तथा उनके कृपापात्रों के सैर-सपाटे तथा ऐश में खर्च नहीं किया जा रहा था। उनको अपनी गरीब जनता के पसीने की कमाई की एक-एक कौड़ी के लिए दर्द था; स्तालिन से लेकर गाँव की साधारण किसान औरत तक ने दृढ़संकल्प कर लिया था कि चाहे जो भी हो, अपनी योजना पूरी करनी है और इसमें कुलक, पुराने बुर्जुआ वर्ग या किसी दूसरे की बाधा को सहन नहीं करना है। जहाँ इस तरह का दृढ़संकल्प काम कर रहा हो, वहाँ क्यों न श्रीर्विजयों मूर्ति: पैर तोड़कर बैठी रहे?

जनवरी सन 1933 में केन्द्रीय कमेटी और केन्द्रीय नियन्त्रण कमीशन का संयुक्त विशेष अधिवेशन (प्लेनम) हुआ, जिसमें प्रथम पंचवार्षिक योजना के परिणाम के बारे में स्तालिन ने रिपोर्ट दी और घोषित किया :

"प्रथम पंचवार्षिक योजना के तजर्बे से, हम इस निर्णय पर पहुँचे हैं कि एक देश के भीतर समाजवादी समाज का निर्माण करना बिल्कुल सम्भव है और सोवियत संघ में ऐसे समाज की आर्थिक नींव डाली जा चुकी है। अब हमारे यहाँ राष्ट्रीय अर्थनीति का 70 फी सैकड़ा समाजवादी उद्योग पर निर्भर करता है। समाजवादी आर्थिक ढाँचा ही हमारे उद्योग का एकमात्र ढाँचा है। कृषि-क्षेत्र में कोलखोजी खेती ने अपना पक्का स्थान कायम कर लिया है। राष्ट्रीय अर्थनीति की सभी शाखाओं में समाजवादी विजय ने मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण को समाप्त कर दिया है। पंचवार्षिक योजना की सफलताओं ने सभी देशों में मजदूर वर्ग की क्रान्तिकारी शक्तियों को पूँजीवाद के खिलाफ सक्रिय कर दिया है। कोलखोजी खेती आर्थिक संगठन का एक समाजवादी रूप है; ठीक वैसे ही जैसे सोवियतें (पंचायतें) राजनीतिक संगठन के समाजवादी रूप हैं।"

6. कोलखोजी कांग्रेस (सन 1933) : स्तालिन की प्रेरणा से फरवरी 1933 में कोलखोजी तूफानी दस्तों की प्रथम कांग्रेस हुई, जिसमें कोलखोज आन्दोलन के प्रथम परिणामों पर प्रकाश डालते हुए स्तालिन ने कहा :

"यह हमारी ऐसी सफलता है, जिसके द्वारा हमने करोड़ों गरीब किसानों को कोलखोजों में सम्मिलित होने में सहायता की है; यह हमारी ऐसी सफलता है कि कोलखोजी खेती में सम्मिलित होकर उनके पास सबसे अच्छी भूमि है, उत्पादन के सबसे अच्छे हथियार हैं, और जिसके द्वारा करोड़ों गरीब किसान उठकर मँझोले दर्जे के किसानों के तल तक पहुँचे हैं। यह हमारी ऐसी सफलता है, जिससे कि पहले के कौड़ी-कौड़ी के लिए मुँहताज करोड़ों किसान अब कोलखोजी खेती से मध्यवित्त किसान बन गये हैं और उनके लिए आर्थिक सुरक्षा निश्चित हो गयी है।... अब हमें अगला दूसरा कदम उठाना है और सभी

कोलखोजी किसानों – पुराने समय के गरीब और मध्यवित्त, दोनों ही प्रकार के किसानों को समृद्ध किसानों के तल पर पहुँचाने में सहायता करनी है।"

प्रथम पंचवार्षिक योजना में देश की 70 फी सैकड़ा खेती कोलखोजी हो गयी थी। कोलखोज और सोविखोज (सोवियत खेती) दोनों मिलकर देश के लिए 85 फी सैकड़ा अन्न पैदा करने लगे थे। कोलखोज का औसत आकार-प्रकार 1,070 एकड़ था और सोविखोज का 5,000 एकड़। कोलखोजी किसानों की मदद सरकार ने निम्न प्रकार से की थी :

(1) दो अरब रूबल खर्च करके 2.860 मशीन ट्रैक्टर स्टेशन कायम किये, जहाँ से कोलखोजों को ट्रैक्टर और दूसरी मशीनें सस्ते भाड़े पर मिलने लगीं।

(2) कोलखोजों को 1.60 अरब रूबल उधार दिया गया।

(3) 40 लाख टन बीज उधार दिया गया।

(4) करों की कमी और फसलों के बीमों के द्वारा 37 करोड़ रूबल की सहायता पहुँचायी गयी।

और, इसके बदले में किसानों ने क्या किया? राज्य को वैयक्तिक किसानों ने 78 करोड़ पूद (1 पूद = प्राय: आधा मन) और कोलखोजी किसानों ने 12 करोड़ पूद अनाज सन 1929-30 में दिया था, जबकि सन 1933 में कोलखोजों ने 1 अरब पूद और वैयक्तिक किसानों ने 13 करोड़ पूद अनाज प्रदान किया। यह देखने से स्पष्ट हो जाता है कि अब सोवियत संघ अन्न के बारे में उसी तरह निश्चिन्त था, जिस तरह कि औद्योगिक उपजों में। सन 1934 में मौसम अच्छा नहीं रहा, तब भी उपज सन 1933 की अपेक्षा अच्छी हुई थी। बात यह थी कि भारत से सात गुने बड़े देश सोवियत रूस में सभी जगह तो एक साथ मौसम खराब नहीं होता। इसलिए, यदि आधुनिक ढंग से तत्परता के साथ खेती की जाये, तो जहाँ तक सारे देश का सम्बन्ध है, उपज की कमी नहीं हो सकती। यदि ऐसी निश्चिन्तता न होती, तो दिसम्बर सन 1934 में सोवियत सरकार अपने यहाँ राशन की व्यवस्था खत्म करने की हिम्मत न करती। इसी सफलता को देखकर, मोलोतोफ ने अपने एक भाषण में कहा था : "तैयार माल और रोटी के सम्बन्ध में राज्य के प्रान्त इतने बढ़ गये हैं, जितना कभी सुना नहीं गया था, जबकि सोवियत नीति की नयी महान विजय के परिणामस्वरूप अब वह समय आ गया है कि रोटी और आटे को आम तौर से बिना दाम के बेचने के बारे में सोचा जा सकता है।"

हाँ, द्वितीय युद्ध के पहले अन्न की इतनी बहुतायत हो गयी थी कि सोवियत नेता बड़ी गम्भीरतापूर्वक विचार करने लगे थे कि रोटी और अन्न की बिक्री तथा उसका हिसाब-किताब रखने में हजारों आदमियों और हजारों टन लिखने-पढ़ने

के लिए कागज तथा दूसरे सामान के व्यय और परेशानी को हटाकर, हवा-पानी की तरह, रोटी और अनाज का वितरण भी बिना कीमत हो। आज भी सोवियत रूस इस स्थिति में है, लेकिन जब दुनिया के और देशों में अन्न का इतना अभाव है और अमरीकन साम्राज्यवादियों द्वारा अन्न जबर्दस्त राजनीतिक हथियार के तौर पर इस्तेमाल किया जा रहा है, ऐसी अवस्था में वह इस शौकीनी को पूरा करने के लिए तैयार नहीं हैं और वह अपने साथी देशों और दुनिया के दूसरे लोगों को भी अनाज से मदद पहुँचाना चाहते हैं। प्रथम पंचवार्षिक योजना के समाप्त होने के साथ-साथ, उसी पहले की जारशाही की खेती की भूमि में 25 हजार कोलखोज और 5,000 सोविखोज तैयार हो गये थे, जिन्होंने पहले की जोती हुई जमीन में 80 हजार वर्ग मील खेतों की और वृद्धि की। जिस तरह कारखाने की मशीनें अपने वेग के कारण मजदूरों को शिथिल नहीं रहने देंती, वही बात अब देहात में कोलखोजों और सोविखोजों ने किसानों के साथ कर दी थी, इसलिए वहाँ किसान सुस्त नहीं रह सकते थे। काम के अनुसार, ऊपर से उपज का हिस्सा तय होने का नियम होने के कारण शिथिल काम करने वाला किसान फसल की बँटाई के समय अपने पैसों और अनाज की कमी को देखकर खींझने के लिए मजबूर था।

स्तालिन को हर एक काम सुव्यवस्थित रूप से करने की आदत है। यह हो ही नहीं सकता था कि वह कोलखोजों की सुव्यवस्था के लिए स्पष्ट मार्ग-निर्देशन न करते। इसके लिए उन्होंने कृषि के 'कोलखोजीकरण का सिद्धान्त' लिखा, जिसमें निम्न बातें बतलायीं :

(1) कोलखोजी खेती समाजवादी देहाती अर्थनीति का एक रूप है।

(2) उन्होंने बतलाया कि वर्तमान अवस्था में जिस कोलखोजी खेती का विकास करना है, उसका रूप खेती का अर्तेल (सहकारिता) है, क्योंकि यह किसानों के लिए समझने में बहुत आसान है, तथा कोलखोजी किसानों के वैयक्तिक और सामूहिक दोनों प्रकार के स्वार्थ इससे पूरे हाते हैं, जिसके कारण वह अपने वैयक्तिक स्वार्थों द्वारा सार्वजनिक स्वार्थों के लिए भी काम करने को तैयार होते हैं।

(3) उन्होंने अपनी इस कृति में यह भी बतलाया कि कुलकों के ऊपर नियन्त्रण या उनके 'निचोड़ने की नीति' को छोड़कर ठोस कोलखोजीकरण के आधार पर, उन्हें एक वर्ग के तौर पर उखाड़ फेंकना ही अच्छा है।

(4) उन्होंने मशीन ट्रैक्टर स्टेशनों के महत्व को दिखलाते हुए कहा कि यह कृषि के समाजवादी पुनर्संगठन के सहायक तथा ऐसे साधन हैं, जिनके द्वारा समाजवादी राज्य कृषि और किसानों दोनों को उचित सहायता दे सकता है।

स्तालिन ने पंचवार्षिक योजना की सफलता द्वारा अपने जिस विराट रूप को दिखलाया, उस पर गद्‌गद हो उनके शिष्य और सहकारी सेर्गेई किरोफ ने सत्रहवीं कांग्रेस से कुछ पहले, लेनिनग्राद में कहा था : "साथियों, जिस समय हम अपनी पार्टी की सेवाओं और उसकी सफलताओं के बारे में कहते हैं, उस समय जिस विराट विजय को हमने प्राप्त किया है, हम उसके महान संगठक को नहीं भूल सकते – मेरा मतलब साथी स्तालिन से है। मुझे कहना होगा कि सचमुच ही वह हमारी पार्टी के महान संस्थापक के, जिनसे कि हम दस वर्ष पहले वंचित हो गये – सच्चे तौर से योग्य और पूर्ण उत्तराधिकारी हैं।

"स्तालिन को उनके विशाल रूप में हृदयंगम करना आसान नहीं है। इन पिछले वर्षों में, जबकि हमें लेनिन के बिना ही अपने काम को करना पड़ा, हमारे श्रम मोर्चे पर, या नये कामों के सम्बन्ध में, किसी भी महत्वपूर्ण नीति का कोई भी नारा या झुकाव ऐसा नहीं आया, जिसके रचयिता साथी स्तालिन न रहे हों। पार्टी को यह जानना चाहिए कि सभी महत्वपूर्ण काम साथी स्तालिन की सम्मति, उनकी हिदायतों, उनकी प्रेरणा और उनके पथ-प्रदर्शन में होता है। केवल महत्वपूर्ण ही नहीं, बल्कि तृतीय क्या दशम श्रेणी के भी जो प्रश्न हैं, यदि वह कमकरों, किसानों, हमारे देश की आम मेहनतकश जनता से सम्बन्ध रखते हैं, तो उनमें भी स्तालिन की दिलचस्पी रहती है।

"मुझे यह भी कहना पड़ेगा कि यह बात समाजवाद के पूरी तौर से निर्माण के बारे में ही नहीं, बल्कि हमारे काम के भिन्न-भिन्न पहलुओं के सम्बन्ध में भी है। उदाहरणार्थ, हमारे देश की प्रतिरक्षा को ले लीजिये। इसे स्पष्टता और जोर के साथ कहना पड़ेगा कि इस क्षेत्र की सभी सफलताएँ, जो हमें मिली हैं, उनका श्रेय स्तालिन को ही है; और इसके लिए हम स्तालिन के ऋणी हैं।"

7. स्तालिन का स्वभाव : जर्मन लेखक एमिल लुडविग ने सन 1933 में स्तालिन से मुलाकात की थी। इस महान लेखक द्वारा लिखे हुए, मुलाकात के वर्णन से स्तालिन के व्यक्तित्व पर काफी प्रकाश पड़ता है। वह लिखता है :

"जैसी उनकी तस्वीर मैंने कल्पित की थी, जो कहानियाँ मैंने सुनी और पढ़ी थीं और जैसा फौलादी उनका स्तालिन नाम है, वह सब उनके लिए उपयुक्त नहीं है। मैंने ख़याल किया था कि मुझे पुरानी जारशाही का कोई रोबीला, गम्भीर, कठोर ग्राण्ड ड्यूक मिलेगा, लेकिन उसकी जगह, मुझे एक ऐसा अधिनायक देखने को मिला, जिसके हाथ में मैं अपने बच्चों को खुशी से छोड़ सकता हूँ। मैंने पढ़ा था, वह जनता में नहीं आते, क्योंकि चेचक ने उनके चेहरे को बड़ा कुरूप बना दिया है। लेकिन, यहाँ उसका कोई चिन्ह या दाग दिखना मुश्किल था। मैंने यह भी पढ़ा था कि जब वह शहर में अपने प्रासाद जैसे देहात के

निवास-स्थान गोर्की, जिसमें बीमारी के समय लेनिन रहे और मरे थे, को प्रतिदिन जाते हैं, तो उनके आसपास 5 मोटर कारें रहती हैं। गोर्की के बारे में कहा जाता था कि वहाँ रात-दिन हथियारबन्द कज्जाक पहरा देते हैं। यह भी कहा गया था कि स्तालिन प्रतिदिन कैमलिन के एक दरवाजे से भीतर जाते और दूसरे से बाहर आते हैं। खाने के वक्त जार के खाने के सोने के बर्तनों में भोजन परोसा जाता है। यहाँ तक कहा गया है कि वह अपनी तरुण स्त्री को तुर्की के सुल्तान की तरह घर में ताला बन्द करके रखते हैं।

"लेकिन, सच्चाई इससे बिल्कुल उलटी है। लेनिन की मृत्यु के बाद, वह कभी गोर्की के प्रासाद में नहीं गये। जब मैं मॉस्को में उनसे मिला, उस वक्त वह अपनी स्त्री और बच्चों के साथ शहर के बाहर एक सीधे-सादे घर में रहते थे। वह अपने आफिस में अपनी अकेली कार में जाते हैं और प्रतिदिन उसी द्वार से जाते हैं। दरवाजे पर सन्तरी कोई विशेष सलाम नहीं देता। उनका खाना, रहन-सहन साधारण आदमी-सा है। वह सुव्यवस्था को बहुत पसन्द करते हैं और अपने काम के समय को ठीक से बाँटने में बड़ा ध्यान रखते हैं। उनकी रुचि बहुत सीधी-सादी है।...

"जब मैं स्तालिन से मिला, मैंने उन्हें एकान्तप्रिय आदमी पाया। धन, सुख और महत्वाकांक्षा का उन पर कोई प्रभाव नहीं है। यद्यपि उनके हाथों में अपार शक्ति है, लेकिन उन्हें उसके लिए अभिमान नहीं... मैं कहूँगा कि स्तालिन के स्वभाव में दो बातें अधिकता से पायी जाती हैं। पहली बात है – धैर्य और इसको उन्होंने चरम सीमा तक पहुँचा दिया है, और दूसरी बात है – दूसरों पर बिना अवलम्ब किये, पूर्णतया आत्मावलम्बी होना।

"वह अब (सन 1933 में) 50 के करीब पहुँच रहे हैं। एक वर्ष में यह 3-4 से अधिक यूरोपियनों से भेंट नहीं करते, इसलिए जब कोई पाश्चात्य आदमी पहले उनसे मिलने आता है, तो उन्हें 'अनकुस'-सा मालूम होता है। मुझे इससे आश्चर्य हो रहा था, क्योंकि मैं अच्छी तरह जानता था कि मैं संसार के छठे हिस्से के वास्तविक शासक के सामने हूँ। अगर मेरा दिल ठीक कहता है, तो मैं कहूँगा कि स्तालिन स्वभाव से ही अच्छे दिल के आदमी हैं। उनमें कल्पना का अभाव नहीं है, लेकिन उसकी उड़ान की शौकीनी से वह इंकार करते हैं। वह महत्वाकांक्षी नहीं हैं, लेकिन अपने प्रतिद्वन्द्वियों से नर्मी नहीं बरतना चाहते हैं। पिछले 35 वर्षों से उनके दिमाग में सिर्फ एक ही बात है, जिसके लिए उन्होंने अपना यौवन, अपना स्वास्थ्य, अपनी सुरक्षा और जीवन के सभी दूसरे आनन्द कुर्बान कर दिये हैं। इसलिए नहीं कि वह खुद शासन करें, बल्कि इसलिए कि शासन उन सिद्धान्तों के अनुसार हो, जिसके लिए उन्होंने शपथ ली थी। उन्होंने

मुझसे कहा : 'मेरे जीवन का यही उद्देश्य है कि जांगर चलाने वाली श्रेणी को और ऊपर उठाया जाये। मुझे जातीय राज्य बनाने का ख़्याल नहीं है, बल्कि मैं एक समाजवादी राज्य चाहता हूँ, जो संसार के सभी कमकरों के स्वार्थों की रक्षा करे। अगर मेरे जीवन का हरएक कदम उसी राज्य की स्थापना की ओर नहीं बढ़ा, तब मैं समझूँगा कि व्यर्थ ही जिया।' वह बड़ी नर्मी से बोल रहे थे। और, धीमी आवाज ऐसे निकल रही थी, मानो वह अपने आप से बात कर रहे हों।...

"मेरे एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा – 'मेरे माता-पिता अशिक्षित थे। लेकिन, उन्होंने मेरे लिए बहुत किया। मसारिक (चेकोस्लोवाकिया के राष्ट्र निर्माता) को जैसे धुन हुई थी, वैसे ही मैं 10 या 12 वर्ष में समाजवादी नहीं हो गया था। जब तक मैं पादरियों की पाठशाला में रहा, मैं समाजवादी नहीं बना था। फिर, प्रचलित शासन प्रथा का विरोधी हुआ। शासन-प्रथा क्या थी? खुफियों के पीछे पड़े रहना और धोखा देना। मुझे 6 बजे सवेरे चाय के लिए बुलाया गया। जब कोठरी में लौटा, तो देखा कि सभी दराजों की एक-एक करके छान-बीन हुई है। वह हमारे कागजों की छान-बीन नहीं कर रहे थे, बल्कि हमारे दिलों के एक-एक कोने की छान-बीन कर रहे थे। यह असह्य था। मैं किसी भी हद तक और किसी भी प्रथा के पक्ष में जाने के लिए तैयार हो जाता, यदि समझता कि मैं उसके द्वारा उस शासन-व्यवस्था का विरोध कर सकता हूँ। उसी समय, रूसी समाजवादियों की एक कानून-विरोधी टोली काकेशस की पहाड़ी में आयी। उन्होंने मुझ पर बहुत प्रभाव डाला और उसी समय से मुझे निषिद्ध साहित्य का चस्का लगा।'

"स्तालिन और मुस्तफा कमाल दो ही ऐसे आदमी हैं, जिनसे बातें करते समय मुझे दुभाषिया की जरूरत पड़ी। जिस कमरे में हम प्रविष्ट हुए, वह लम्बा था। उसके एक छोर पर, एक मँझोले कद का आदमी भूरे रंग का बन्द गले का कोट पहिने कुर्सी के पास खड़ा था। उसकी पोशाक उतनी ही साफ थी, जैसा कि वह कमरा।... बीच में एक लम्बी मेज रखी थी, जिस पर पानी की झारी, गिलास और राखदानी पड़ी थी। हरएक चीज से सुव्यवस्था टपक रही थी। दीवारें गहरे हरे रंग से रँगी थीं; उन पर लेनिन, मार्क्स तथा कुछ मेरे अपरिचित व्यक्तियों के फोटो टँगे हुए थे। स्तालिन की लिखने की मेज भी सुव्यवस्थित तौर से रखी थी। उस पर लेनिन का एक फोटो था। बगल में 4-5 टेलीफोन के यन्त्र वैसे ही रखे थे, जैसे कि सरकारी आफिसों में होते हैं। लड़खड़ाती रूसी में, मैंने कहा – 'दोब्रे उत्रा' (सुप्रभातम्)। उन्होंने कुछ संकोच से मुस्करा दिया, लेकिन वह बड़े ही विनम्र थे। उन्होंने मुझे देने के लिए एक सिगरेट उठायी। उन्होंने विश्वास दिलाया कि मैं जो भी प्रश्न पूछना चाहूँ, पूछ सकता हूँ और मेरे पास डेढ़ घण्टा समय

है। जब समय खत्म होते वक्त मैंने अपनी घड़ी निकाली, तो उन्होंने मना करने का संकेत दिया और मुझे आधा घण्टा और पास रखा। एक शक्तिशाली पुरुष के लिए कुछ मात्रा तक संकोच उतनी ही अच्छी बात है, जितनी कि एक सुन्दर स्त्री में।

"चूँकि वह दुभाषिया के सहारे मुझसे बातें कर रहे थे, इसलिए प्रायः बराबर उनका मुँह दूसरी ओर रहता था। वह दोनों घण्टे कागज के टुकड़ों पर लकीरें खींचते रहे। एक लाल पेंसिल से वृत्त और दूसरी शक्लें खींचते तथा अंक लिखते जाते थे। हमारे बात करने के समय, उन्होंने कागज के कई टुकड़े लाल रेखाओं से भरे और समय-समय पर उनको मोड़कर फाड़ दिया।... स्तालिन का स्वभाव है, बिना हिले-डुले बैठने का। वह बोलते वक्त किसी शब्द पर जोर देना या हाथ-मुँह हिलाना नहीं जानते। ... उनके बारे में यह मुख्य बात मेरे दिल में धँसी कि वह संयत हैं। स्तालिन वह आदमी हैं, जिनके नाम से कितने नर-नारी रोब में पड़ जाते हैं। लेकिन, एक बच्चा या पशु वैसा नहीं कर सकता। पुराने युग में ऐसे पुरुष को लोग देश का पिता कहते थे।...

"यद्यपि मेरे सभी प्रश्नों के लिए उन्होंने तैयारी नहीं की थी और उन्हें हमारी यूरोपीय सरकारों के मन्त्रियों - जिनसे कि वही प्रश्न हफ्ता दर हफ्ता पूछे जाते हैं - जैसा अनुभव भी नहीं था। वह यह भी जानते थे कि यह उत्तर को सारे संसार के लिए प्रकाशित करेगा। सभी ऐतिहासिक घटनाएँ और नाम उनको कंठाग्र थे। मेरे दुभाषिया ने सारे वार्तालाप को लिखा था, लेकिन उन्होंने उसकी कापी नहीं माँगी और न किसी संशोधन की इच्छा प्रकट की। इस प्रकार का आत्मविश्वास मैंने कहीं नहीं देखा। दुनिया के और जितने नेताओं से मैंने वार्तालाप किया है, उनके कहने को मैंने उसी वक्त कागज पर नहीं उतारा, बल्कि पीछे उतारकर उनकी स्वीकृति के लिए भेजा है। लेकिन यहाँ मैंने दूसरे आदमी द्वारा त्वरित लिपि में लिखे हुए लेख को लिया और जब मैंने उसे गौर से मिलाया, तो उसमें जरा भी कोई बात छूटी नहीं देखी, तो भी वाक्यावलि बिल्कुल दुरुस्त थी। जब मैं मन में अपने बेचारे मन्त्रियों की आदत को ख़याल में लाता हूँ, जो कि अपने पार्लामेण्ट में देने वाले व्याख्यान या संवाद को देते वक्त अपने प्रेस विभाग के अध्यक्ष द्वारा उसका संशोधन करा लेते हैं, तो इस काकेशस के चर्मकार के लड़के के लिए मेरा दिल सम्मान से भर जाता है। स्तालिन नियमपूर्वक 4 बजे भिनसारे चारपाई पर सोने जाते हैं। लायड जार्ज की तरह, उनके पास 32 सेक्रेटरी नहीं हैं; बल्कि सिर्फ एक साथी प्रोस्कोविचेफ हैं। दूसरों के लिखे हुए कागजों पर वह दस्तखत नहीं करते। उनके पास लेखन-सामग्री भेज दी जाती है और वह सब काम अपने आप करते हैं। हर एक चीज उनके हाथ

से गुजरती है; लेकिन इससे क्या? वह प्रत्येक पत्र का जवाब दिये या भेजे बिना नहीं रहते। मुलाकात के समय वह बड़े दिल खोलकर, बिना नियन्त्रण के मिलते हैं।... वह बच्चों की तरह ठठाकर हँसते हैं।

"मॉस्को के महान ओपेरा भवन में गोर्की की जुबली हो रही थी। बीच के अवकाश में, पुराने सम्राट या सम्राटकुमारों के बैठने के स्थान के पीछे के कमरों में कुछ सरकारी अधिकारी जमा थे। आवाज कान के पर्दे फाड़ रही थी और हरएक आदमी कहकहा लगाकर हँस रहा था। इनमें स्तालिन, ओर्योनीकिद्जे, रूइकोफ, बुगनोफ, मोलोतोफ वोरोशिलोफ, कगानोविच और प्यातिन्स्की भी थे। गृह-युद्ध की घटनाओं की बातें बड़े मनोरंजक ढंग से कर रहे थे : 'तुम्हें याद है, जब तुम अपने घोड़े से लुढ़क पड़े थे?' – 'हाँ, गन्दा पशु! मुझे नहीं मालूम हुआ, क्या बात थी...।' – लेनिन में भी जोर से ठठाकर हँसने की आदत थी। गोर्की ने कहा था : 'मैं ऐसे किसी भी आदमी से नहीं मिला, जिसकी हँसी व्लादिमिर इलिच जैसी, छूत की बीमारी की तरह, लगती हो। गोर्की ने निष्कर्ष निकाला था : 'इस तरह की हँसी वाले आदमी के पास बड़ा ठोस मानसिक स्वास्थ्य होना आवश्यक है।' जो लोग इस तरह की हँसी हँसते हैं, वे बच्चों से बड़ा प्रेम करते हैं। स्तालिन के पास तीन बच्चे हैं – सबसे बड़ा यश्चेका और दो छोटे-छोटे चौदह वर्ष का वासिली और आठ वर्ष की स्वेतलाना। उनकी बीवी नादेज्दा अलीलुइयेवा पिछले ही साल मरी है। उसका भौतिक शरीर अब नहीं है, लेकिन उसका एक सुन्दर सम्भ्रान्त साधारण जन जैसा चेहरा और बड़ी कब्र के भीतर से निकलती सुन्दर संगमरमर की बाँह नवोदेवीची के कब्रिस्तान में देखी जा सकती है। स्तालिन ने अर्तियोम सेर्गियेफ को करीब-करीब अपना बेटा बना लिया है, जिसका बाप सन 1921 की एक दुर्घटना में मारा गया था। बाकू में अंग्रेज़ों द्वारा गोली मारे गये – जापरित्जे की दो लड़कियों और कितनी ही दूसरी से भी स्तालिन का व्यवहार अपने बच्चों जैसा ही है। अर्नालूद कपलान और बोरिस गोल्दस्ताइन – पियानो और वाइलिन के अद्भुत प्रतिभाशाली बालकों का संगीत-समाज में उनकी विजय के बाद स्तालिन ने जिस तरह स्वागत किया, उसका वर्णन करते समय उनके चेहरे पर जो प्रसन्नता दीख पड़ती थी, वह मुझे अब भी याद है। स्तालिन ने उन्हें तीन हजार रूबल देते हुए, यह भी कहा था : "अब तुम पूँजीपति हो गये, क्या सड़क में देखकर मुझे पहचानोगे?"

स्तालिन की मुक्त हँसी और उनके खुले दिल का परिचय बहुत कम लोगों को है। इसका एक कारण यह भी था कि उस पुरुष के कन्धे पर जितनी अधिक जिम्मेवारी और काम थे, उतने शायद ही इतिहास में किसी पुरुष पर होंगे। उन्होंने अपने 73 वर्ष के जीवन को, बचपन के थोड़े-से वर्षों को छोड़कर बाकी सारे

समय के एक-एक क्षण को, किस तरह इस्तेमाल किया है, इसकी बानगी हमें मिल चुकी है। व्यंग्य और जिन्दादिली में स्तालिन अद्वितीय थे। उनके पुराने सहकारी दामियन बेद्नी ने स्तालिन के जीवन की एक मनोरंजक कहानी बतलायी थी :

"सन 1927 की जुलाई के आरम्भिक दिनों में, एक शाम को मैं और स्तालिन 'प्राव्दा' के सम्पादन के काम में लगे हुए थे। इसी समय टेलीफोन की घण्टी बजी। क्रौन्सतात के नौसैनिकों ने स्तालिन से पूछा – 'प्रदर्शन में हमें अपनी राइफलों के साथ आना चाहिए, या उनके बिना ही?' – मैं सोच रहा था, देखूँ तो वह टेलीफोन पर क्या जवाब देते हैं? और, जवाब सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ – 'राइफलें? साथियो, यह निश्चय करना तुम्हारा अपना काम है। साथियो! हम लेखक तो अपनी पेंसिलें बराबर अपने साथ रखते हैं।' और, सचमुच ही, सभी नौसैनिक अपनी-अपनी पेंसिलें लिए हुए ही प्रदर्शन में आये थे।"

इतने महान होने पर भी, स्तालिन कितने विनम्र थे! लुडविग से बातें करते समय, उन्होंने अपने अन्तस्तल से कहा था : "मैं केवल लेनिन का एक शिष्य हूँ।"

8. सत्रहवीं कांग्रेस (सन 1934) : यह कांग्रेस 'विजेताओं की कांग्रेस' के नाम से प्रसिद्ध है। पाँच वर्षों की योजनाओं को सन 1934 तक, चार वर्षों के भीतर पूरा करके यदि सोवियत के नर-नारियों ने विजेता की उपाधि प्राप्त की, तो इसमें आश्चर्य ही क्या है, इस कांग्रेस में भी उन्होंनें, अपने जीवन के अन्तिम वर्षों की तरह, सोवियत की वैदेशिक नीति के बारे में कहा था :

"हमारी वैदेशिक नीति स्पष्ट है, वह है – शान्ति की रक्षा और सभी देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्धों को मजबूत करना। सोवियत समाजवादी गणसंघ आक्रमण करने की बात तो अलग, किसी को धमकाने की बात नहीं सोचता। हम शान्ति चाहते हैं और शान्ति के कामों के समर्थक हैं। लेकिन, हम धमकी से नहीं डरते और लड़ाई भड़काने वालों को मुक्के का जवाब मुक्के से देने के लिए तैयार हैं।... जो हमारे देश पर आक्रमण करने की कोशिश करेंगे, उन्हें हमारी ओर से चूर-चूर कर देने वाला जबर्दस्त प्रहार मिलेगा, जिससे वे सीख जायेंगे कि हमारे सोवियत के बगीचे में अपना थूथुन डालना ठीक नहीं है।"

इसी समय सन 1934 में, स्तालिन ने अमरीकी संवाददाता वॉल्टर डुरेंटी से 4 जनवरी को मुलाकात की और 23 जुलाई को अंग्रेज़ ग्रन्थकार एच. जी. वैल्स से भेंट की। एच. जी. वैल्स के साथ स्तालिन की मुलाकात बड़ी मनोरंजक और ज्ञानवर्द्धक थी। इस वार्तालाप के बारे में टिप्पणी करते हुए, बर्नार्ड शा ने लिखा था :

"इसे दो असाधारण पुरुषों के बीच वार्तालाप या भिड़न्त कह लीजिये, यद्यपि इसमें ऐसी कोई भी बात नहीं हुई, जिससे दोनों के विचारों के बारे में हम कोई नयी जानकारी पायें।... स्तालिन बड़े ही मजाकपसन्द आदमी हैं। हर वक्त कोमल हँसी उनके पास मौजूद रहती है... वैल्स ने जो कुछ कहा, स्तालिन ने बड़े ध्यान से और गम्भीरतापूर्वक सुना और अपनी बारी में, उन्होंने जवाब के रूप में काँटी के बिल्कुल सिर पर प्रहार किया। वैल्स स्तालिन की बातें नहीं सुनते थे, वह बड़ी अधीरतापूर्वक फिर से बात आरम्भ करने के लिए, स्तालिन के चुप होने की प्रतीक्षा करते रहते थे। वह समझते थे कि वह उससे कहीं ज्यादा जानते हैं, जितना कि स्तालिन जानते हैं। वह स्तालिन से शिक्षा लेने नहीं गये थे, बल्कि उन्हें शिक्षा देने गये थे।"

वैल्स और स्तालिन के वार्तालाप के मनोरंजक पहलुओं को देने के लिए यहाँ स्थान नहीं है, लेकिन इस वार्तालाप में स्तालिन ने कितने ही गम्भीर तत्वों का प्रकाशन और स्पष्टीकरण किया था।

9. किरोफ की हत्या (सन 1934) : दिसम्बर सन 1934 में लेनिनग्राद में त्रात्स्कीवादियों का मनोरथ सफल हुआ, जबकि लेनिनग्राद में उनके एक आदमी ने सेर्गेई किरोफ को गोली मार दी। किरोफ स्तालिन का बहुत ही योग्य शिष्य और सहायक था। राजधानी के मॉस्को में पहुँच जाने पर, स्तालिन–विरोधियों ने लेनिनग्राद में अपना मजबूत अड्डा जमा लिया था। वहाँ जिनोवियेफ और कामनेफ की बहुत चलती थी। ऐसे समय, किरोफ ने लेनिनग्राद को ठीक करने का बीड़ा उठाया था और उसने अपने काम को बड़ी सफलता के साथ पूरा किया था। वह स्तालिन का दाहिना हाथ था और आमतौर से आशा की जाती थी कि वही स्तालिन का उत्तराधिकारी होगा। लेकिन, देश के भाग्य का संचालन अभी स्तालिन को ही करना था। किरोफ की हत्या के बाद भी वह उन्नीस वर्षों तक काम करके, द्वितीय महायुद्ध और उसके बाद के जबर्दस्त पुनर्निर्माण के काम को समाप्त करके ही, दुनिया से विदा हुए हैं। सोवियत के लोगों के दिलों में इतनी अधिक शंका क्यों रहती है, इसका एक जबर्दस्त कारण किरोफ की हत्या भी है। लेकिन किरोफ पर गोली मारकर, क्रान्ति–विरोधियों ने अपनी अन्तिम गोली खत्म कर दी; उनके साथ ही उनका भी खात्मा हो गया। अब त्रात्स्कीवादी और दूसरे क्रान्ति–विरोधियों का नाम अपार घृणा के साथ लेने के लिए ही सोवियत–भूमि में शेष रह गया है। किरोफ की हत्या लेनिनग्राद के स्मोल्नी प्रतिष्ठान में हुई थी, जहाँ रहकर लेनिन ने अक्टूबर–क्रान्ति का सफलतापूर्वक संचालन किया था।

सत्रहवीं पार्टी कांग्रेस की रिपोर्ट से पता लगा कि द्वितीय पंचवार्षिक योजना

में भी उसी तरह की सफलता मिल रही थी, जिस तरह कि प्रथम पंचवार्षिक योजना में मिली थी। और, आशा बँधने लगी कि इसको भी समय से पहले पूरा कर लिया जायेगा। स्तालिन ने इसी समय कहा था :

"हम विघ्न-बाधाओं को हटाकर, लेनिनवादी मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं।... पार्टी के भीतर केन्द्रीय कमेटी के विरुद्ध विरोधी विद्रोह खड़ा करना चाहते हैं। इतना ही नहीं, वह हममें से कुछ को गोलियों की धमकी भी दे रहे हैं। शायद वह इस तरह हमें डराकर, लेनिनवादी पथ से विमुख करना चाहते हैं। इन लोगों को पता नहीं, ये लोग भूल जाते हैं कि हम बोल्शेविक एक खास धातु के आदमी हैं। वे भूल जाते हैं कि न कठिनाइयाँ और न धमकियाँ ही, बोल्शेविकों को भयभीत कर सकती हैं। वे भूल जाते हैं कि हम उन महान लेनिन – हमारे नेता, हमारे गुरु, हमारे पिता – द्वारा शिक्षित और फौलादी बनाये गये हैं, जो लड़ाई में न भय को जानता, न उसे मानता था।"

इसी भाषण में स्तालिन ने जोर देकर कहा था : "टेक्नीक (तैयार यन्त्र तथा वैज्ञानिक कौशल) सब चीजों का फैसला करती है। जब टेक्नीक तैयार कर ली गयी, तो हमें ऐसे आदमियों की आवश्यकता पड़ती है, जो उस टेक्नीक का पूरा अधिकार रखते हैं, हमें ऐसे 'कादर' (कर्मियों) की आवश्यकता होती है, जो कला के सभी नियमों के अनुसार टेक्नीक में दस हों और उसको काम में लायें। ऐसे अधिकार प्राप्त आदमियों के बिना टेक्नीक मरी हुई है। अधिकार-प्राप्त आदिमियों के हाथ में पड़कर टेक्नीक जादू-सा काम कर सकती है इसीलिए, अब हमें उन आदमियों, कर्मियों, कमकरों पर जोर देना है, जो टेक्नीक के आचार्य हैं।... इसीलिए, पुराने नारे 'टेक्नीक हर बात का फैसला करती है' – की जगह, हमें नारा देना चाहिए – 'कर्मी सब चीजों का फैसला करते हैं।'" स्तालिन ने यह भाषण मई सन 1935 में लाल सैनिक एकेडमी के ग्रेज्युएटों के सामने दिया था।

और सचमुच ही, उस समय टेक्नीक आचार्य आश्चर्यजनक गति से पैदा हुए। जब माध्यमिक शिक्षा अनिवार्य हो, और शिक्षा भी जीवन के हर पहलू के उपयोग की दृष्टि से दी जाती हो; जब सरकार कमकरों की हर तरह से सहायता करने तथा प्रोत्साहन देने के लिए तैयार हो और शोषण तथा भ्रष्टाचार रहित देश दिलोजान से नव-निर्माण में लगा हो; तो फिर क्यों न अपना चमत्कार दिखलाने के लिए नयी-नयी प्रतिभाएँ कार्य-क्षेत्र में उतरें। ऐसी ही बात हुई, जब कोयले की खान के एक साधारण कमकर – स्ताखानोफ ने अपनी पारी में तीन गुने से अधिक कोयला निकाल दिया। उसने यह काम-काम के बँटवारे तथा खनन-यन्त्र के अच्छे उपयोग की क्रिया के द्वारा किया था। स्तालिन को इस तरह की

असाधारण घटना का पता लगने में देर नहीं लगी। यह खबर जैसे ही दोनबास से मॉस्को पहुँची, स्तालिन ने उसका अभिनन्दन किया। स्ताखानोफ का सम्मान बढ़ाया गया। उसे खान-इंजीनियर बनकर और बड़ा काम करने, तथा महासोवियत के सदस्य बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ; साथ ही, स्ताखानोफ के नाम से एक विशाल आन्दोलन चल पड़ा। नवम्बर सन 1935 में प्रथम स्ताखानोफी कांफ्रेंस हुई, जिसमें स्तालिन ने कहा था : "यह आन्दोलन समाजवादी प्रेरणा की एक नयी लहर तथा समाजवादी विकास की एक नयी और ऊँची सीढ़ी है।... स्ताखानोफ आन्दोलन की विशेषता इस बात में है कि यह टेक्नीक के पुराने मान को अपर्याप्त समझकर, उसे तोड़ रहा है।"

स्तालिन का ध्यान टेक्नीक के विकास के साथ, सांस्कृतिक विकास की ओर भी बराबर था। शिक्षा, कला, साहित्य सभी क्षेत्रों में वह प्रोत्साहन देते थे। स्तालिन जिनसे बड़े-बड़े विदेशी राजदूत भी वर्षों तक मिलने में सफल नहीं होते थे, वह इन अद्‌भुत कर्मियों, कमकरों और किसानों के लिए बिल्कुल सुलभ थे। उनसे मिलने तथा उनकी बातें समझने और पथ-प्रदर्शन करने के लिए बराबर उनकी कांफ्रेंसें कराते रहते थे। क्रैमलिन में स्ताखानेफी कांफ्रेंस हुई। उसी साल, 4 दिसम्बर को ताजिकिस्तान और तुर्कमानिस्तान के प्रमुख कोलखोजी किसानों की कांफ्रेंस हुई। इसी समय के आस-पास, उज्बेकिस्तान, कजाकिस्तान और कराकल्पक के कोलखोजी किसानों ने भी क्रैमलिन में अपनी कांफ्रेंस करके, स्तालिन के दर्शन और प्रेरणादायक सीखों से लाभ उठाया। केवल दर्शन के लिए एक-एक आदमी को समय देना, स्तालिन जैसे सदा व्यस्त रहने वाले पुरुष के लिए मुश्किल था; लेकिन जनता के नवीन नायकों के घनिष्ठ सम्पर्क में आने की आवश्यकता वह अच्छी तरह महसूस करते थे, इसलिए ऐसी कांफ्रेंसों में वह बराबर हिस्सा लेते थे और उनके सुभीते का ख़याल करके वह कांफ्रेंसें क्रैमलिन में ही हुआ करती थीं। स्तालिन ने सन 1935 के नवम्बर में, चुकन्दर की खेती वाले कोलखोजों की अग्रणी स्त्रियों का स्वागत किया और उन्हें बतलाया कि स्ताखानोफी आन्दोलन मानवता के सबसे पिछड़े हुए अंग - स्त्रियों को आगे बढ़ाने में कितना सहायक हो सकता है।

जिस तरह उद्योग-धन्धों और खेती में सोवियत रूस बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा था, उसी तरह यातायात और संचार के नये-नये साधन भी विशाल रूप में प्रस्तुत किये जा रहे थे। इसका एक उदाहरण इसी साल श्वेत सागर की नहर का बनना है, जिसके द्वारा बाल्तिक समुद्र को ध्रुवीय समुद्र से मिला दिया गया है। यह मानव-निर्मित नवीन जल-पथ केवल सस्ते यातायात के लिए ही उपयोगी नहीं है, बल्कि देश की सुरक्षा के लिए इसका सैनिक महत्व भी बहुत जबर्दस्त

था। इन पंचवार्षिक योजनाओं के समय, देश की सामरिक शक्ति को बढ़ाने में भी उतना ही काम हुआ था; यद्यपि आँकड़ों को गुप्त रखने के कारण, बाहर वालों को तब तक उसका पता नहीं लगा, जब तक लाल सेना ने द्वितीय महायुद्ध में हिटलरियों को भगाना शुरू नहीं किया।

सन 1936 में, स्तालिन का दिमाग फिर एक बार कलम की ओर गया और उन्होंने अपने सम्पादकत्व में सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी का इतिहास तैयार किया। अधिकांशत: स्तालिन द्वारा लिखी गयी, इस पुस्तक में सोवियत और उसके बाहर घटने वाली भिन्न-भिन्न महत्वपूर्ण घटनाओं का गहरा विवेचन और विश्लेषण है। यद्यपि इसके सम्पादक-मण्डल में और भी कितने ही योग्य व्यक्ति थे, लेकिन उसके एक-एक शब्द का मूल्यांकन स्तालिन ने स्वयं किया था। इसीलिए, यह एक अमर कृति है। जब तक सारे विश्व में समाजवादी की विजय नहीं हो जाती, तब तक यह बराबर हर समय हमारा पथ-प्रदर्शन करती रहेगी।

स्तालिन सन 1936 में भी कितनी ही कांफ्रेंसों में भाग लेते रहे। इसी साल, उन्होंने अमरीकन संवाददाता राय होवार्ड से 1 मार्च 1936 को भेंट की थी। पूँजीवादी पत्र सोवियत को गाली देने और झूठे लाँछन लगाने में ही व्यस्त थे, सोवियत की क्षमताओं और सफलताओं की वह मौन रहकर उपेक्षा किया करते थे। स्तालिन अब अत्यन्त मितभाषी हो गये थे, इसका अर्थ यह नहीं था कि वह विशाल निर्माण के काम में लगे हुए लोगों के साथ भी मौन-व्रत रखते थे। जो भी हो, जब भी वर्षों बाद कोई विदेश संवाददाता उनसे बातचीत करने में सफल होता, अथवा वह स्वयं किसी वैदेशिक या गृह-नीति पर कोई संक्षिप्त-सा भी भाषण देते, तो उसे प्रकाशित करने के लिए विदेशी पत्रों में होड़ लग जाती थी।

10. स्तालिनीय संविधान : सन 1936 की एक असाधारण घटना थी - नये संविधान की स्वीकृति। स्वीकृत करने से पहले, इसके मसौदे को एक साल तक आलोचना और राय देने के लिए प्रकाशित कर दिया गया था और संविधान के बारे में जो भी आवश्यक सुझाव आये थे, उनको सम्मिलित करके, संविधान को स्वीकृत किया गया था। नये संविधान ने सन 1924 में स्वीकृत सोवियत संघ के संविधान का स्थान लिया। संविधान को पास कराने के समय, स्तालिन ने एक बहुत महत्वपूर्ण भाषण दिया था, जिसके उपसंहार में उन्होंने कहा था :

"सन 1919 में लेनिन ने कहा था : 'वह समय दूर नहीं है, जबकि सोवियत सरकार इसे लाभदायक समझेगी कि वह बिना प्रतिबन्ध के सार्वजनिक मताधिकार का आरम्भ करे।' इस वाक्य पर कृपया ध्यान दीजिए - 'बिना किसी प्रतिबन्ध के!' लेनिन ने यह ऐसे समय कही थी, जबकि विदेशी सेना का नाजायज दखल अभी बन्द नहीं हुआ था और जब हमारे उद्योग और हमारी कृषि

बहुत ही शोचनीय दशा में थी। तब से 17 वर्ष बीत चुके हैं। साथियो, क्या अब वह समय नहीं है कि हम लेनिन के वचन को पूरा करें? मैं समझता हूँ कि समय आ गया है।

"यह एक ऐसा दस्तावेज होगा, जो उस घटना को सिद्ध करेगा, जिसका पूँजीवादी देशों के लाखों ईमानदार आदमी स्वप्न देखते थे और अब भी देख रहे हैं; जो सो. स. गणसंघ में प्राप्त भी किया जा चुका है। यह एक ऐसा दस्तावेज होगा, जो इस बात को सिद्ध करेगा कि जो बात सो. स. गणसंघ में प्राप्त की जा चुकी है, दूसरे देशों में भी उसका प्राप्त करना बिल्कुल सम्भव है।

"इससे मालूम होगा कि सो. स. गणसंघ के नये विधान का अन्तरराष्ट्रीय महत्व कितना अधिक है।

"आज, जबकि फासिज्म की भयंकर लहर श्रमिक श्रेणी के समाजवादी आन्दोलन को छिन्न-भिन्न कर रही है, सभ्य जगत के श्रेष्ठ पुरुषों के जनतान्त्रिक प्रयत्नों को विफल कर रही है, सो. स. गणसंघ का नया संविधान फासिज्म के विरुद्ध 'समाजवाद और जनतान्त्रिकता का अटूट सम्बन्ध है' - इसे घोषित करते हुए, एक जबर्दस्त विरोधी आवाज उठा रहा है। सो. स. गणसंघ का नया विधान उन सभी लोगों की नैतिक सहायता और वास्तविक मदद का काम करेगा, जो आज फासिस्ट बर्बरों से लड़ रहे हैं।

"यह जानकर आनन्द और खुशी होगी है कि किसलिए हमारे लोग लड़े और किस तरह उन्होंने सारे संसार के इतिहास के लिए महत्वपूर्ण इस विजय को प्राप्त किया है। यह जानकर आनन्द और खुशी होती है कि हमारे लोगों का खून, जो इतनी अधिकता से बहा है, वह व्यर्थ नहीं गया, उसने सुन्दर फल दिये हैं।"

सोवियत संविधान 5 दिसम्बर 1936 को पास हुआ।

सोवियत को बालपन से ही पूतनाओं का सामना करना पड़ा था, यह हम अनेक बार देख चुके हैं। पुरानी व्यवस्था के समर्थकों ने बराबर यह कोशिश की थी कि हर एक काम में रोड़े अटकाये जायें और नेताओं को खत्म कर दिया जाये। उन्होंने इसी उद्देश्य से लेनिन पर गोली चलायी थी, इसी उद्देश्य से किरोफ को मारा था और फिर भी जब कभी मौका मिला, वह षड्यन्त्र करने से बाज नहीं आये। फिर, एक बड़े षड्यन्त्र का भण्डाफोड़ सन 1937 में हुआ। मुकदमे की कार्यवाहियों से पता लगा कि इस षड्यन्त्र में सिर्फ देश और विदेश के प्रतिगामी ही शामिल नहीं थे, बल्कि उसमें जापान औ जर्मनी की फासिस्ट सरकारों का भी हाथ था। ये प्रतिगामी समझते थे कि उनकी ही तरह, सोवियत रूस के भीतर भी सब कुछ एक ही आदमी का तमाशा है। उन्हें पता नहीं था कि व्यक्ति और नेता का महत्व सोवियत-व्यवस्था में भी है, लेकिन सोवियत नेतृव एक दूसरे ही

प्रकार का है। स्तालिन ने इसके बारे में कहा था : "लेनिन ने हमें सिखाया है कि केवल ऐसे ही नेता वास्तविक बोल्शेविक नेता हो सकते हैं, जो कमकरों और किसानों को सिखाना ही नहीं जानते, बल्कि यह भी जानते हैं कि उनसे कैसे सीखना चाहिए" – लेनिन को खोकर भी, सोवियत व्यवस्था किस तरह आगे बढ़ी, इसको दुनिया ने देखा है। स्तालिन के महान नेतृत्व को देखकर भी, साम्राज्यवादी फिर समझने में गलती करने लगे, तभी तो वह आशा कर रहे थे कि स्तालिन के बाद फिर वहाँ गड़बड़ी होगी और उन्हें साजिशें करने का मौका मिलेगा; लेकिन उन्हें निराश होना पड़ा।

सन 1937 में, द्वितीय पंचवार्षिक योजना भी पहली योजना की तरह ही सफलता के साथ और समय से नौ मास पहले पूर्ण हुई। इसी साल, तृतीय पंचवार्षिक योजना भी अगले साल से चालू करने के लिए तैयार की गयी। वर्ष के अन्त में नये संविधान के अनुसार 12 दिसम्बर 1937 को महासोवियत का नया चुनाव हुआ। एक दिन पहले स्तालिन ने मॉस्को में चुनाव–भाषण करते हुए बतलाया था कि हमारे पार्लामेण्ट के सदस्यों को लेनिन की तरह योग्य और निर्भीक होना चाहिए।

तृतीय पंचवार्षिक योजना (1938–41) : 1 जनवरी 1938 को यह योजना शुरू हुई और 31 दिसम्बर 1942 को समाप्त होने वाली थी, लेकिन इसके पहले ही हिटलर ने सोवियत–भूमि पर आक्रमण कर दिया, जिसके कारण यह योजना खटाई में पड़ गयी। इसके आरम्भ होने के एक साल बाद ही, द्वितीय महायुद्ध के छिड़ जाने से सोवियत की अधिक शक्ति अपनी सैनिक–सुरक्षा में लगने लगी। तब भी उसमें कितनी सफलता हुई, यह इससे पता लगेगा कि सन 1938 में पिछले साल की अपेक्षा कल–कारखानों की उपज में 10 फी सैकड़ा, लकड़ी की उपज में 9 फी सैकड़ा और रेलवे में साढ़े 5 फी सैकड़ा की वृद्धि हुई।

11. अठाहरवीं पार्टी कांग्रेस (सन 1939) : यह महत्वपूर्ण कांग्रेस मार्च महीने में हुई। इसी कांग्रेस के आदेशानुसार, सोवियत राष्ट्र ने द्वितीय महायुद्ध में महान विजय प्राप्त की और फिर युद्धोपरान्त प्रथम पंचवार्षिक योजना (चतुर्थ पंचवार्षिक योजना) को सफलतापूर्वक समाप्त किया।

अभी द्वितीय महायुद्ध घोषित होने में 6 महीने की देर थी। इसी समय यूरोप, अफ्रीका और एशिया में इटली, जर्मनी और जापान के फासिस्टों का जबर्दस्त हस्तक्षेप शुरू हो गया था; और महायुद्ध केवल इसीलिए रुका हुआ था कि प्रतिद्वन्द्वी साम्राज्यवादी उनके विरोध में उठने के लिए अपने को समर्थ नहीं पाते थे। इसी बीच में द्वितीय पंचवार्षिक योजना सफलतापूर्वक हुई थी। कांग्रेस में

स्तालिन ने देश-विदेश की सारी परिस्थिति पर प्रकाश डालते हुए, बतलाया कि जर्मनी और जापान जैसे जबर्दस्त आक्रमणकारी नया साम्राज्यवादी युद्ध छेड़ चुके हैं। इस युद्ध में 50 करोड़ जनसंख्या वाले भूभाग पड़ भी चुके हैं, जिसका विस्तार तियान्-चिन्, शँघाई और कैण्टन होते हुए अबीसीनिया से जिब्राल्टर तक फैला हुआ है। युद्ध की भावना इंग्लैण्ड, फ्रांस और अमरीका के साम्राज्यवादी हितों को अधिकाधिक दबाये जा रही है, लेकिन तब भी यह देश प्रतिरोध के लिए कोई प्रयत्न नहीं करते। साम्राज्यवादी समझते थे कि वह हिटलर को सोवियत की विशाल भूमि की तरफ बढ़वाने में सफल होंगे। प्रथम युद्ध के बाद से ही, बोल्शेविक हौवा उनके सिर पर इतना सवार था कि वह दूसरी सम्भावनाओं को छोड़कर, केवल इसी का स्वप्न देखा करते थे कि कोई ऐसा शक्तिशाली नेतृत्व पैदा हो, जिसे सोवियत को धर-दबाने के लिए उकसाया जा सके। वस्तुत; इटली और जर्मनी में मुसोलिनी और हिटलर के फासिस्टवाद को पैदा करके मजबूत करने में सबसे बड़ा हाथ इन्हीं साम्राज्यवादियों का था। उन्होंने जर्मनी के सैनिक तौर से मजबूत हो जाने के बाद, चेकोस्लोवाकिया को ही खत्म करवाने का निश्चय नहीं कर लिया, बल्कि इसी समय चैम्बरलेन और दलादिये ने समझा कि अब हिटलर को सोवियत की तरफ निश्चित तौर से फेर दिया गया है। सोवियत के नेताओं ने बहुत कहा कि मिलकर फासिस्ट शक्तियों से मुकाबला किया जाये, लेकिन इंग्लैण्ड और फ्रांस के साम्राज्यवादी भला इसे मानने के लिए क्यों तैयार होते, जबकि वे जानते थे कि हिटलरी अभियान की कुंजी उन्हीं के हाथों में है। लेकिन, उनका समझना गलत था। हिटलर उनके हाथ की कठपुतली नहीं था। हिटलर को पूर्व की ओर अभियान करने से पहले, यह देख लेना जरूरी था कि उसका मुकाबला वहाँ कैसी शक्ति से पड़ेगा। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद, सोवियत सेना के शिक्षण में जर्मन सैनिक विशेषज्ञों से भी सहायता ली गयी थी, जिन्हें पता था कि नये रूस की सामरिक शक्ति क्या है। इसीलिए हिटलर मुस्करा रहा था, जबकि पश्चिमी साम्राज्यवादी म्यूनिक की सफलता पर फूले नहीं समा रहे थे।

कांग्रेस में सोवियत की वैदेशिक नीति के सिद्धान्तों को बतलाते हुए, स्तालिन ने कहा था :

"वैदेशिक नीति के क्षेत्र में, पार्टी को ये काम करने हैं :

"(1) शान्ति की नीति को जारी रखना और सभी देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध मजबूत करना;

"(2) सावधान रहना और जंगबाजों को हमारे देश को युद्ध में न खींचने देना। जंगबाजों की यह आदत है कि वह अपने लिए दूसरों से आग में से शोलों को

उठवाना चाहते हैं;

"(3) लाल सेना और लाल नौसेना की शक्ति को चरम रूप में मजबूत करना;

"(4) राष्ट्रों के बीच शान्ति और मित्रता की पक्षपातिनी – सभी देशों की कमकर जनता के साथ मित्रता के अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों को मजबूत करना।"

स्तालिन ने इसी साल अपना साठवाँ वर्ष पूरा किया। अपने महान नेता की इस महत्वपूर्ण वर्षगाँठ को सारी जनता ने बड़े उत्साह के साथ मनाया और हृदय से कामना की कि स्तालिन दीर्घजीवी हों; देश और मानवता के ऊपर घिर आयीं भयंकर काली घटाओं को चीरते हुए, हमारा पथ-प्रदर्शन करें।

इसी साल, मध्य एशिया में सोवियत की जनता ने एक बड़ी सफलता प्राप्त की, जब उज्बेकिस्तान के लोगों ने 46 दिनों में 270 किलोमीटर लम्बी फर्गाना की विशाल नहर बना डाली। स्तालिन जानते थे कि जब फासिस्टों के आक्रमण से अन्न की कठिनाई होगी, उस समय इस सुरक्षित स्थान से लाखों मन अनाज की आमदनी होगी। उज्बेक कोलखोजियों की इंजीनियरों और सामग्री से पूरी मदद की गयी। उन्होंने सफल होकर, स्तालिन के नाम एक पद्य-बद्ध अभिनन्दन भेजा और अपनी नहर का नाम भी 'स्तालिन फर्गाना महानहर' रखा।

कामों में व्यस्त रहते हुए भी इसी साल (सन 1936), स्तालिन ने अपना एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ, 'समाजवादी राज्य का अखण्ड और पूर्ण सिद्धान्त' लिखा। लेनिन ने 'राज्य और क्रान्ति' नाम पुस्तक सन 1917 के अगस्त में बोल्शेविक क्रान्ति से कुछ ही महीने पहले लिखी थी, जिसके द्वारा क्रान्ति के समय भारी पथ-प्रदर्शन प्राप्त हुआ था। क्रान्ति के बाद जिस रास्ते से सोवियत रूस को गुजरना पड़ा, पुनर्निर्माण और पंचवार्षिक योजनाओं द्वारा जिस तरह उसमें महान परिवर्तन किये तथा जिस तरह भीतरी और बाहरी शत्रुओं से उसे मुकाबला करना पड़ा – इस तरह के महत्वपूर्ण और विशाल तजर्बों का वर्णन करना स्तालिन ही के बस का था; स्तालिन ने ही उसे किया भी। स्तालिन का यह ग्रन्थ पार्टी, तरुण कम्युनिस्ट लीग, मजदूर सभा, सहयोग संस्थाएँ, आर्थिक संगठन, शिक्षा सेना आदि सभी संगठनों के और उनमें काम करने वालों के पथ-प्रदर्शन के लिए बहुत मूल्यवान साबित हुआ।

उन्होंने अठारहवीं कांग्रेस की रिपोर्ट में बतलाया था :

"अगर मार्क्सवादी-लेनिनवादी शिक्षा हमारे कर्मियों में ढीली पड़ने लगी और इन कर्मियों के राजनीतिक और सैद्धान्तिक ज्ञान के तल के ऊपर उठाने में हमने गफलत की; कर्मी स्वयं इसके कारण हमारी और आगे की प्रगति की सम्भावनाओं में कम दिलचस्पी लेने लगे और बिना व्यापक दृष्टिकोण के,

संकीर्णतापूर्वक, अन्धे होकर, यान्त्रिक तौर से ऊपर की हिदायतों को पूरा करने की कोशिश करने लगे; तो हमारा सम्पूर्ण राज्य और पार्टी का काम जरूर खटाई में पड़ जायेगा।"

फासिस्टों के खिलाफ मिलकर मुकाबला करने के लिए, पश्चिमी साम्राज्यवादियों के सामने सोवियत का जोर देना बेकार ही गया। वह बराबर यही सोचते रहे कि हिटलर किस तरह पूर्व की ओर बढ़े। ऊपर से वह मीठी-मीठी बातें करके, सोवियत के नेताओं को गफलत में रखना चाहते थे, लेकिन सोवियत राजनीतिज्ञ और उसके नेता - स्तालिन कच्चे गोइयाँ नहीं थे। वह साम्राज्यवादियों की बात को नहीं, बल्कि उनके काम को देखते थे। मार्च सन 1939 में, फ्रांस और इंग्लैण्ड ने चेकोस्लोवाकिया को हिटलर के लिए बलिदान कर दिया। उसके बाद, एक ओर जर्मनी ने पूर्वी यूरोप में बढ़ना शुरू कर दिया और दूसरी ओर, उसके सहकारी फासिस्ट जापान ने चीन में मनमानी शुरू करके, मई 1939 में मंगोलीय लोक गणराज्य की सीमा पार करके आगे बढ़ना चाहा, तो सोवियत के नेताओं को मालूम हो गया कि खतरा बिल्कुल सिर पर आ गया है। लेकिन, क्रान्ति के बाद के बाईस वर्षों के एक-एक क्षण को सोवियत रूस ने पूरी तौर से इस्तेमाल किया था और स्वतन्त्र मंगोल जनता को अपनी देख-रेख में इतना मजबूत कर दिया था कि खलखिनगोल के किनारे जापानी सेना को मंगोलों के हाथों जबर्दस्त हार खानी पड़ी। इस हार ने पूर्वी और पश्चिमी फासिस्टों को बतला दिया कि सोवियत गणसंघ की शक्ति की तो बात ही क्या, उसके एक छोटे-से राज्य के पास भी इतनी शक्ति और दाँव-पेंच हैं कि सामुराई पहलवान को चारों खाने चित्त होना पड़ा।

पश्चिमी साम्राज्यवादी सोवियत के साथ मिलकर कोई भी कार्रवाई करने के लिए तैयार नहीं थे, बल्कि उल्टा उसे धोखा देना चाहते थे। पश्चिमी शक्तियों के साथ, समझौते की बातचीत महीनों चलती रही। स्तालिन देख रहे थे कि किसी तरह छोटे-छोटे अधिकारियों को भेजकर सुलह की बातचीत में उलझाये रखना ही फ्रांस और इंग्लैण्ड की नीति है। इसी समय हिटलर ने सोवियत की शक्ति को समझकर चाहा कि उसको पूर्व से खतरा न रहे। उसने अपने विदेश-मन्त्री रिबेनट्राप को तुरन्त मॉस्को भेजकर अनाक्रमण सन्धि करने का प्रस्ताव रखा। स्तालिन उसे कैसे ठुकरा सकते थे? इस प्रकार, सोवियत ने अगस्त सन 1936 में जर्मनी के साथ अनाक्रमणात्मक सन्धि कर ली। पश्चिमी साम्राज्यवादी इस सन्धि को सोवियत का फासिस्टवाद का समर्थन कहकर तरह-तरह से बदनाम करते रहे, लेकिन यह झूठा प्रचार-भर था। वह भली-भाँति जानते थे कि सोवियत का वैसा करना उन्हीं के रवैये के कारण हुआ था।

साठवीं वर्षगाँठ के समय, सोवियत सरकार ने 20 दिसम्बर 1936 को स्तालिन को 'समाजवादी श्रम-वीर' की उपाधि प्रदान की और दो दिन बाद विज्ञान एकेडमी ने उन्हें अपना सम्माननीय सदस्य निर्वाचित किया।

12. स्तालिन की सादगी : स्तालिन का जीवन बहुत सीधा-सादा रहा है। यद्यपि विरोधियों के षड्यन्त्रों के लम्बे तजर्बे के कारण, उनकी सुरक्षा के हित में यह पसन्द नहीं किया जाता था कि वह ऐसे स्थानों में बहुत अधिक जाया-आया करें, जहाँ शत्रुओं को अपना मंसूबा पूरा करने का मौका मिल सके। इसीलिए, उनके जीवन को नजदीक से देखने का मौका बहुत ही कम लोगों को मिल पाता था। अ. स. याकोब्लेफ टेक्नीक के विशेषज्ञ तथा डिजाइनर हैं, जिन्होंने अपनी अविस्मरणीय मुलाकातों का वर्णन में स्तालिन के चरित्र पर इस प्रकार प्रकाश डाला है :

"साथी स्तालिन से अपनी पहली मुलाकात के बाद भी, मुझे एकाधिक बार अपने काम के सम्बन्ध में उनसे मिलने का मौका मिला और मेरे सामने उस महापुरुष की तस्वीर और भी साफ होती गयी।

"हर उस चीज में जो उनके व्यक्तिगत जीवन से सम्बन्ध रखती है, स्तालिन बिल्कुल ही आडम्बरहीन थे। वह सादी पोशाक पहनते थे। युद्ध से पहले, वह बहुधा धूसर वर्ण की विशेष किस्म की सैनिक जाकिट पहनते थे। वस्तुत; सैनिक जाकिट की बजाय उसे एक आरामदेह, ढीली-ढाली जाकिट कहना ज्यादा उपयुक्त होगा। वह उनके पतलून की ही तरह, धूसर रंग के कपड़े की बनी होती थी। इसके साथ ही, वह मुलायम चमड़े के बने हुए आरामदेह ऊँचे बूट पहिनते थे।

"बातचीत करते समय, स्तालिन अपने आफिस में धीरे-धीरे चहलकदमी करने लगते थे। वह जिससे बातें करते, उसको बातचीत के दौरान में बहुत ही कम टोकते थे; जब तक वह अपनी बात पूरी तरह न कह ले, तब तक इन्तजार करते थे।

"मैंने देखा, उनके पास सरकारी संस्थाओं की सभा द्वारा बहुधा नोट भेजे जाते थे। वह हमेशा उन्हें पढ़ते और फिर मोड़कर सफाई के साथ अपनी जेब में रख लेते थे। वह उनमें से एक की भी उपेक्षा नहीं करते थे।

"स्तालिन अपने प्रश्नों के संक्षिप्त, सीधे और स्पष्ट उत्तर पसन्द करते थे। जब कोई पहली बार साथी स्तालिन से बातें करता, तो बहुधा गलती के डर से उनके प्रश्न का उत्तर देने में देर तक हिचकिचाता। साथी स्तालिन से पहली बार बातें करते समय मैं भी ऐसा ही करता था, खिड़की के बाहर एकटक देखने लगता और कभी छत की ओर ताकने लगता था। स्तालिन ने हँसकर टीका की : 'छत

की ओर ताकने की कोई जरूरत नहीं है। वहाँ आपको कुछ भी लिखा हुआ नहीं मिलेगा। बेहतर यह है कि आप मेरी ओर देखें और जो कुछ सोचते हैं, साफ-साफ कहें। आपसे सिर्फ यही आशा की जाती है।'

"एक बार जब उन्होंने मुझसे सीधे एक प्रश्न पूछा, तो मैं किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। मैं नहीं जानता था कि वह मेरा उत्तर किस रूप में लेंगे, जो कुछ मैं कहना चाहता था, उसे पसन्द करेंगे या नहीं।

"वह इस बात को ताड़ गये और गम्भीरतापूर्वक बोले : 'बिल्कुल वही उत्तर दीजिए, जो आप सोच रहे हैं। आप वह सब कहने की कोशिश न कीजिये, जिनसे आप सोचते हैं कि मैं खुश होऊँगा। हमारी बातचीत से कुछ भी फायदा नहीं होगा, यदि आप मेरी मर्जी के बारे में अनुमान लगाने की कोशिश करेंगे। आप यह न सोचें कि यदि आप कुछ ऐसी बात करेंगे, जिससे मैं असहमत हूँ, तो उसका बुरा असर होगा। आप एक विशेषज्ञ हैं। आप और मैं इसीलिए बातें कर रहे हैं कि मैं आपसे कुछ सीखूँ, सिर्फ इसलिए नहीं कि मैं आपको सिखाऊँ।

"एक बार स्तालिन ने कहा : 'यदि आपका दृढ़विश्वास है कि आप जो कह रहे हैं, वह सही है और आप उसे सिद्ध कर सकते हैं, तो आप इसकी परवाह न करें कि अमुक-अमुक व्यक्ति इसके विषय में क्या सोचते हैं; आप अपनी बुद्धि और विवेक के अनुसार काम कीजिए।'

"एक राजनीतिक की हैसियत से, साथी स्तालिन को अनिवार्यत: बहुत लोगों से मिलना पड़ता था। वह नये लोगों से प्यार करते थे, उनका अध्ययन करते थे, पता लगाते थे कि वह व्यक्ति कैसा है, उसे कौन-सा काम सौंपा जा सकता है, उसकी क्षमता क्या है। बहुधा, व्यावहारिक विषयों की बातचीत के दौरान में वह विनोदपूर्ण टिप्पणी कर देते थे।

"एक बात हम किसी समस्या को लेकर, स्तालिन से मिलने गये। बातचीत के दौरान में, हमने कुछ कर्मचारियों का जिक्र किया, जिन्होंने सन्तोषजनक प्रगति नहीं की थी। स्तालिन ने एकाएक टीका कर दी : 'ये हैं जामोस्कवोरेची (मॉस्को के निकट एक जिला) के मिलशियादीज और थेमिस्तोक्लीज (जनरल और सिपहसालार)!

"यह कहने के बाद, उन्होंने हमारी ओर यह देखने के लिए ताका कि मैंने उनका मजाक समझा या नहीं और पूछा : 'जामोस्कवोरेची के क्यों? आप जानते हैं, मिलशियदीज और थेमिस्तोक्लीज कौन थे?'

"'पुराने जमाने में यूनान के सिपहसालार थे।'

"'और, उन्होंने किस तरह ख्याति प्राप्त की थी?'

"'किसी-न-किसी लड़ाई में, ठीक-ठीक नहीं जानता किस तरह।'

“मुझे यूनान के प्राचीन इतिहास की अपनी अनभिज्ञता पर अत्यन्त लज्जा आयीं।

“एक बार किसी कर्मचारी के विषय में बातें करते हुए, स्तालिन ने उसकी तुलना चेखोफ की ‘ब्याह’ नामक कहानी के एक पात्र से की। इसक बाद, उन्होंने मुझसे पूछा : ‘आपको वह कहानी याद है?’

“मैंने उत्तर दिया : ‘नहीं, मुझे याद नहीं है साथी स्तालिन।’

“‘आपने चेखोफ को क्यों नहीं पढ़ा है?’

“‘मैंने चेखोफ की समस्त कृतियाँ कई बार पढ़ी हैं, लेकिन मुझे वह कहानी याद नहीं है।’

“‘कोई-कोई ऐसी चीजें हैं, जो दिमाग में घर कर लेती हैं।’

“मैं पुनः लज्जित हुआ, मैं अपने को एक सुशिक्षित एवं सुसंस्कृत व्यक्ति समझता था।

“बातचीत चाहे टेक्नीकल विषय पर हो रही हो या राजनीतिक पर, स्तालिन इतिहास, पौराणिक कथा अथवा क्लासिकल साहित्य से उपयुक्त उदाहरण देना पसन्द करते थे।

“वह ‘एक शहर के इतिहास’ - से आश्चर्यजनक ढंग से, बड़े विनोदपूर्वक लम्बे-चौड़े उद्धरण देते और उन लोगों पर निर्मम व्यंग्य कसते थे, जिनमें शेद्रिन के पात्रों की कुछ चारित्रिक विशेषताएँ अभी पायी जाती थीं।

“एक नये विमान की अविलम्ब जाँच-परख की जाने को थी। कुछ लोगों ने वायुयान को फैक्टरी से कुछ दूर, उस जगह ले जाने का सुझाव दिया, जहाँ हवाबाज रहते थे।

“स्तालिन ने कहा : ‘वायुयान क्यों ले जाओ। हवाबाजों का यहीं आ जाना कहीं अधिक आसान है। दुनिया में कौन इस ढंग से काम करता है? तुम अपने दिमाग से काम क्यों नहीं लेते? तुम ग्लुपोफ के निवासियों के दृष्टान्त का अनुसरण कर रहे हो; शेद्रिन की ‘शहर का इतिहास’ - शीर्षक कहानी में शहर का नाम! तुम्हें याद है, वे किस तरह बछड़े को स्नानागार में ले गये थे और उन्होंने किस तरह वोल्गा में जौ का आटा मिलाया था?’

“एक दिन काफी रात गये उनके आफिस में देर तक काम सम्बन्धी बातचीत करने के बाद, स्तालिन ने हम सभी को अपने यहाँ भोजन के लिए निमन्त्रित किया।

“उन्होंने कहा : ‘आज के लिए इतना काफी है। मुझे आप लोगों के विषय में तो पता नहीं है, लेकिन मैं भूखों मरा जा रहा हूँ। मैं आप लोगों में से किसी को विशेष रूप से निमन्त्रित नहीं कर रहा हूँ, जो आप अपने को कृतज्ञता के बोझ

से दबा हुआ अनुभव करें। हाँ, जो कोई भोजन करना चाहे, उसे हार्दिक निमन्त्रण है।'

"इसे कौन अस्वीकार करता? ऐसा निमन्त्रण बार-बार नहीं मिला करता।

"अत: हम सब उनके साथ, उनके निवास-स्थान पर गये। हमारे पहुँचने तक भोजन-कक्ष में मेज लगायी जा चुकी थी। साथी स्तालिन का कक्ष निहायत सादे ढंग से सुसज्जित था। वहाँ बड़ी संख्या में रखी पुस्तकें किसी का भी ध्यान आकृष्ट कर लेंती। खाने के कमरे में भी दीवार के साथ, एक सिरे से दूसरे सिरे तक पुस्तकों से भरी आलमारियों की कतार चली गयी थी। "भोजन के समय राजनीतिक, अन्तरराष्ट्रीय, टेक्निकल, साहित्यिक एवं कला सम्बन्धी विषयों पर बातचीत होती थी। हम सब इत्मिनान के साथ खुलकर बातें करते थे। ऊँच-नीच अथवा दबने-दबाने का भाव बिल्कुल नहीं था। हम सब बराबरी का अनुभव करते थे।

"स्तालिन किसी चीज के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए, बहुधा पुस्तकों का सहारा लेते थे। किसी मसले के बारे में सोचते हुए, वह किताबों की अलमारी के सामने खड़े हो जाते और उसमें से आवश्यक पुस्तक निकाल लेते थे। यदि बातचीत भौगोलिक विषय से सम्बन्धित होती, तो वह यह कहते हुए अपना फटा-पुराना मानचित्र ले आते थे : 'इसको मेरे मानचित्र में देखिये। बेशक, यह बहुत जीर्ण-शीर्ण है, लेकिन फिर भी काम देता है।'

"स्तालिन की उक्तियों में साहित्य के उद्धरणों का प्राचुर्य पाया जाता था। उनकी स्मरणशक्ति असाधारण थी और वह कई कृतियों से लम्बे-चौड़े उद्धरण, प्राय: अक्षरश: देते थे। वह प्राय: गोर्की, चेखोफ तथा साल्तिकोफ शेद्रिन का जिक्र किया करते थे। वह आधुनिक साहित्य के विकास का ध्यानपूर्वक अध्ययन करते तथा हमेशा नवीनतम पुस्तकों की जानकारी रखते थे।

"एक बार साहसिक कहानियों - मेनेरिंग और जेम्स फेनीमोर कूपर की कृतियों - के विषय में प्रसंग छिड़ गया। स्तालिन ने कहा कि बचपन में, वह इन लेखकों के उपन्यासों के प्रवाह में बह जाते थे।

"स्तालिन लोगों के साथ अपने व्यवहार में असाधारण कौशल का परिचय देते थे। वह जिससे बातें करते, उसका बहुत ध्यान रखते और बड़ी शिष्टता दिखाते थे। जब वे किसी को अपने आफिस में बुलाते, तो उससे हमेशा पूछते थे : 'अपने कार्य में व्यस्त रहने के कारण, आपको यहाँ आने में असुविधा तो नहीं हुई?' अथवा, 'इस समय मुझसे मिलने के लिए आने में आपके काम में हर्ज तो नहीं हुआ?'

"'क्यों, साथी स्तालिन?'

"'तो यथाशीघ्र आइए?'

"स्तालिन बहुधा, व्लादिमिर इलिच लेनिन के जीवन और कृत्यों को दृष्टान्त के रूप में पेश करते थे। वह प्रेमपूर्वक लेनिन की याद करते थे। एक बार उन्होंने हमें बताया था : 'सन 1918 में, सोवियत सरकार ने राजधानी पेत्रोग्राद से मॉस्को स्थानान्तरित करने का निर्णय किया था। वह उथल-पुथल का जमाना थ। मॉस्को की यात्रा में, हम व्लादिमिर इलिच के साथ थे। उनकी रक्षा के लिए हमें बड़ी चिन्ता हुई। जब हमने देखा कि हमें खुली गाड़ी में जाना होगा, तो हमने लेनिन को गाड़ी के अन्दर बिठा दिया और खुद उनके चारों ओर खड़े हो गये, ताकि उन्हें कोई देखे नहीं और यदि उन पर हमला भी हो, उससे उनका बाल भी बाँका न हो व्लादिमिर इलिच इस चीज के खिलाफ थे। उन्होंने हमें अपनी बगल में बैठने को कहा, लेकिन हमने आग्रह किया और हम रास्ते-भर खड़े रहे।'

"अपने काम के दौरान में जिस किसी को भी, साथी स्तालिन से मिलने का मौका मिलता, उसके लिए यह सुअवसर एक अद्‌भुत शिक्षालय में शिक्षा प्राप्त करने के समान होता था। उनसे हुई, हर बातचीत की गहरी छाप पड़ जाती थी। हर बार उनसे मिलने के बाद, अनुभव होता था कि हमने राजनीतिक तथा व्यावसायिक दोनों ही दृष्टियों से तरक्की की है।...

"अपने समस्त कार्यों में, साथी स्तालिन सोवियत संघ के लाखों-लाख लोगों के साथ अदृश्य सूत्रों द्वारा बँधे थे। हमारी विशाल मातृभूमि के कोने-कोने से उनके पास हर रोज हजारों पत्र आते थे। वह व्यक्तिगत रूप में सोवियत संघ के स्त्री-पुरुषों से परिचित थे। वह जानते थे कि उनसे किस तरह की बातें करनी चाहिए, तथा यह भी कि उनकी बातें कैसे सुननी चाहिए, जो कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। स्तालिन के विचार एवं भाव जनता के विचार एवं भाव है। – मॉस्को, सन 1950"

13. महायुद्ध की घटाएँ : सन 1940 में सोवियत की आर्थिक स्थिति कितनी आगे बढ़ी थी, इसका पता निम्न आँकड़ों से लगेगा।

उत्पादन	**1940 में** (करोड़ टन)	**1933 से**
कच्चा लोहा	1.50	प्राय: 4 गुना
फौलाद	1.83	साढ़े 4 गुना
कोयला	16.60	साढ़े 5 गुना
तेल-पेट्रोल	3.10	साढ़े 3 गुना
कपास	.27	प्राय: 3 गुना
अनाज	3.83	1.70

साथी स्तालिन ने 11 दिसम्बर 1937 को पार्लामेण्ट के निर्वाचन-भाषण में ठीक ही कहा था : "उत्पादन की यह अद्वितीय वृद्धि, देश के पिछड़ेपन से प्रगति की ओर बढ़ने के मामूली साधारण से विकास के तौर पर नहीं मानी जा सकती। यह वस्तुतः छलाँग मारना है, जिसके द्वारा हमारी मातृभूमि एक पिछड़े देश से अग्रगामी देश और कृषि-प्रधान देश से उद्योग-प्रधान देश के रूप में परिवर्तित हो गयी है।"

द्वितीय महायुद्ध में पड़ने से पहले, सोवियत-भूमि की आर्थिक अवस्था जहाँ इतनी अच्छी थी, वहाँ सुरक्षा के बारे में भी वह गाफिल नहीं थी। हिटलर के पूर्व की ओर के बढ़ाव ने यह भी मौका दे दिया कि सन 1939 की शरद में, बीस वर्षों से जबर्दस्ती पोलैण्ड के दखल में चले गये, पश्चिमी उक्रइन और पश्चिमी बेलोरुसिया मुक्त होकर फिर अपने जातीय गणराज्यों में मिल जायें। अगले साल (अगस्त सन 1940 में) बाल्तिक के गणराज्य लिथुवानिया, लात्विया और एस्तोनिया भी पश्चिमी साम्राज्यवादियों के जाल से निकलकर अपने कम्युनिस्ट परिवार में आ मिले। इस प्रकार, पंचवार्षिक योजनाओं से समृद्ध सोवियत-भूमि और फासिस्ट जर्मनी के बीच का फासला, इन राजनीतिक परिवर्तनों के कारण, और भी चौड़ा हो गया।

अठारहवीं पार्टी कांग्रेस मार्च सन 1939 में हुई, जिसमें तृतीय पंचवार्षिक योजना की सफलताओं और वैदेशिक सम्बन्धों तथा सुरक्षा के बारे में विचार किया गया। इसी में, राज्य-योजना-कमीशन की चौथी पंचवार्षिक योजना बनाने का काम सुपुर्द किया गया और लक्ष्य रखा गया था - कच्चा लोहा, फौलाद, तेल-कोयला, बिजली-शक्ति, मशीनें, तथा उपभोग की चीजों के उत्पादन की प्रति पुरुष मात्रा मुख्य पूँजीवादी देशों के स्तर से अधिक बढ़ाना।

लेकिन, शान्तिपूर्वक निर्माण का समय समाप्ति पर पहुँच रहा था। अब जर्मनी सारे यूरोप पर अधिकार करके, पागल सियार की तरह हो रहा था। स्तालिन की सूक्ष्म बुद्धि बतला रही थी कि वह समय दूर नहीं था, ब्रिटिश चैनल तक पहुँचकर रुका हुआ, हिटलर पूर्व को रुख करेगा।

स्तालिन लेनिन के निर्विवाद उत्तराधिकारी और सोवियत राष्ट्र के सर्वश्रेष्ठ नेता थे, लेकिन वह अब तक केवल कम्युनिस्ट पार्टी के प्रधानमन्त्री के पद पर थे। इस स्थिति में परिवर्तन करते हुए 6 मई 1941 को महासोवियत के अध्यक्ष-मण्डल ने उन्हें लोक-कमीसार-परिषद का अध्यक्ष अर्थात सोवियत संघ का प्रधानमन्त्री चुना। अब आर्थिक क्षेत्र की विजयों के सेनानी, 62 वर्ष की उम्र में मानवता के लिए ऐतिहासिक युद्ध-विजय के सेनानी बने।

अध्याय - नौ

मानवता का त्राता (सन 1941–45)

युद्ध–काल में स्तालिन के कामों का उल्लेख करते हुए, आज (सन 1953) के सोवियत प्रतिरक्षा मन्त्री, न. बुलगानिन ने महान नेता की 70वीं वर्षगाँठ पर कहा था :

"मॉस्को युद्ध के समय, साथी स्तालिन ने अपनी असाधारण बुद्धि और हिम्मत का परिचय दिया था। युद्ध–क्षेत्र की स्थिति बड़ी भयंकर होते हुए भी, साथी स्तालिन ने रिजर्व सेना को समय से पहले युद्ध में नहीं उतरने दिया। पश्चिमी मोर्चे के मुख्य सेनापति को मालूम था कि मॉस्को के करीब जनरल हेडक्वार्टर के पास भारी रिजर्व सेना मौजूद है। इसलिए, उसने कुमक माँगी, लेकिन साथी स्तालिन ने उसे हुक्म दिया कि अपने पास की फौजों द्वारा ही शत्रु को रोक रखो। जल्दी ही, साथी स्तालिन के निर्णय की दूरदर्शिता का पता लगा। साथी स्तालिन ने उन रिजर्व सेनाओं को एक निर्णायक प्रत्याक्रमण करने के उद्देश्य से बचा रखा था। ठीक समय पर, मोर्चे को ये रिजर्व सेनाएँ उपयुक्त परिमाण में मिलीं, जिसने मॉस्को के पास शत्रु (जर्मनी) की पराजय में मुख्य काम किया।

"महान मुक्ति–युद्ध की सभी सैनिक कार्रवाइयों की योजना साथी स्तालिन ने ही बनायी थी और उनके पथ–प्रदर्शन में ही, उन्हें कार्यरूप में परिणत किया गया था। कोई भी सैनिक कार्रवाई ऐसी नहीं थी, जिसकी योजना में उन्होंने भाग न लिया हो। किसी भी सैनिक कार्रवाई को मंजूर करने से पहले, वह अपने नजदीकी सैनिक अफसरों से बहुत बारीकी के साथ बहस और विश्लेषण करते थे। उन्होंने नौसेना और सेना के कमाण्डरों की सम्मतियों और सुझावों को सुनने का नियम बना लिया था। वह सभी टिप्पणियों और प्रस्तावों को बड़े ध्यान से सुनते थे।

"किसी निश्चित सैनिक कार्यवाही के पहले, मौके पर जाकर सेनाओं की

तैयारी की जाँच-पड़ताल के लिए वह स्वयं युद्ध-मोर्चे पर जाते थे। स्मोलेन्स्क में सैनिक कार्रवाई आरम्भ करने से पहले, वह पश्चिमी मोर्चे पर गये थे।...

"स्तालिन की युद्ध-कला की एक विशेषता यह है कि वह शत्रु के साथ लड़ने के तरीके और रूप को अपनाने में अपने दृष्टिकोण को बिल्कुल मुक्त रखती है। वह बुर्जुआ युद्ध-कला की रूढ़ियों और पुरानी मान्यताओं का अन्धानुसरण पसन्द नहीं करती।...

"साथी स्तालिन ने सोवियत सैनिक नेताओं के नये कर्मियों को चुनकर, उन्हें शिक्षित करके आगे बढ़ाया, जिन्होंने स्तालिन की प्रतिभा द्वारा बनायी गयी योजनाओं को कार्यरूप में परिणत करने में अद्भुत कौशल का परिचय दिया है। उन्होंने हमारे सैनिक कर्मियों को नजदीक से परखकर चुना है। वह हमारे जनरलों, एडमिरलों और बहुसंख्यक सैनिक अफसरों को व्यक्तिगत तौर से जानते हैं।"

जर्मन आक्रमण

1. धोखे से हिटलर का आक्रमण : 22 जून 1941 को हिटलर ने बिना चेतावनी दिये हुए, अनाक्रमणात्मक सन्धि तोड़कर सोवियत संघ पर आक्रमण कर दिया, जो सचमुच में उसका पागल सियार की भाँति गाँव की ओर भागना ही सिद्ध हुआ। सारे यूरोप की सेनाओं और सैनिक उत्पादन के साथ, हिटलर ने अचानक आक्रमण करके उस समय कुछ आरम्भिक सफलता जरूर पायी। लेकिन, स्तालिन की नीति बड़ी गम्भीर थी, जिसको समझने में फासिस्ट बिल्कुल असमर्थ रहे। स्तालिन ने अपनी सारी शक्ति को पहले ही मुकाबले में दाँव पर लगा देना पसन्द नहीं किया और उसी सैनिक दाँव-पेंच को काम में लाना अच्छा समझा, जिसके द्वारा रूस में सवा सौ वर्ष पहले नेपोलियन को हराया गया था। सोवियत सेनाएँ मुकाबला करते हुए, पीछे हटने लगीं। वे चाहती थीं कि फासिस्ट सेनाओं को काफी हानि पहुँचाकर, उनके बढ़ाव की गति मन्द कर दें। हमला होने के आठ दिन बाद (30 जून 1941), राज्य सुरक्षा समिति की स्थापना करके उसके हाथ में सारी शक्ति दे दी गयी। स्तालिन इस समिति के अध्यक्ष हुए। अंगद की तरह, उन्होंने अपने पैर मॉस्को में रोप दिये और राजधानी पर भयंकर खतरा होने तथा अन्धाधुँध हवाई हमलों के साथ भी, वहाँ से हटने का नाम नहीं लिया। हिटलर के पास हजारों टैंकों और हवाई जहाजों के साथ 170 डिवीजन सेना थी। सारे यूरोप के कारखाने उसके लिए गोला-बारूद, टैंक, विमान और दूसरे हथियार बना रहे थे। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी, यदि फासिस्ट सेनाओं ने जल्दी ही लिथुवानिया, लातविया के काफी भाग, पश्चिमी बेलोरुसिया तथा पश्चिमी उक्रइन के भाग को अपने अधिकार में कर लिया था।

3 जुलाई 1941 को साथी स्तालिन ने अपने रेडियो-भाषण में सोवियत जनता और सेना को देश की नाजुक स्थिति का परिचय दिया। उन्होंने खतरे को कम करके नहीं बतलाया और न शत्रु की सफलताओं को छिपाना ही चाहा। साथ ही, सोवियत जनता को बतलाया कि उन्हें सर्वस्व की बाजी लगाकर, शत्रु से मुकाबला करना है। इस भाषण की कुछ पंक्तियाँ थीं :

"शत्रु क्रूर और पकड़ाई आने में कठिन है। वह हमारी उस भूमि को छीनने पर उतारू है, जिसको हमने अपने ललाट के पसीने से सींचा है। वह हमारे अन्न और तेल को छीनना चाहता है, जिन्हें हमारे हाथों के श्रम ने प्राप्त किया है। वह जमींदारों के शासन और जारशाही को पुनः स्थापित करने पर उतारू है और रूसियों के राष्ट्रीय अस्तित्व और राष्ट्रीय संस्कृति को एक राज्य के रूप में नष्ट कर देने की नीयत रखता है। वह रूसियों, उक्रइनियों, बेलोरुसियों, लिथुवानियों, लातवियों, एस्तोनियों, उज्बेकों, तातारों, मोलदावियों, गुर्जियों, आर्मनियों, आजुर्बाइजानियों तथा सोवियत संघ की दूसरी स्वतन्त्र जातियों की राष्ट्रीय संस्कृति और उनके राष्ट्रीय अस्तित्व को एक राज्य के रूप में खत्म करने पर उतारू है।

"वह हमें जर्मन रंग में ढालकर, जर्मन राजुलों और लार्डों के दासों के रूप में परिणत करना चाहता है। इस प्रकार सोवियत राज्य के लिए, यह जन्म-मरण का प्रश्न है। सोवियत समाजवादी गणसंघ के लोगों के लिए, जन्म-मरण का प्रश्न है। सोवियत संघ के लोग स्वतन्त्र रहेंगे, या जर्मन-दासता में पड़ेंगे?"

स्तालिन ने फासिस्ट जर्मनी के विरुद्ध युद्ध में, सोवियत संघ के लक्ष्य को बतलाते हुए कहा कि वह जर्मन फॉसिस्ट सेना के विरुद्ध सारी सोवियत जनता का महान युद्ध है। जनता के मुक्ति युद्ध का लक्ष्य केवल देश पर आये खतरे को दूर करना ही नहीं, बल्कि जर्मन फासिस्टवाद के जुए के नीचे कराहती सारी यूरोपीय जातियों को मुक्त करने में सहायता देना भी है। उन्होंने यह भी कहा था कि मुक्ति-युद्ध में सोवियत जनता अकेली नहीं है :

"अपनी मातृभूमि की मुक्ति के लिए की जाने वाली यह लड़ाई यूरोप और अमरीका की जनता की अपनी स्वतन्त्रता तथा जनतान्त्रिक मुक्ति के संघर्ष से मिलकर रहेगी। हिटलरी फासिस्ट सेना के दास बनने के खतरे के विरुद्ध स्वतन्त्रता की पक्षपाती, दासीकरण की विरोधी जातियों का यह संयुक्त मोर्चा होगा।"

पश्चिमी शक्तियों ने फासिस्टों के खतरे को सिर पर देखते हुए भी, सोवियत संघ की बात मानकर, एक होकर, मुकाबला करने में बहुत हीला-हवाला किया था। अब उन हीला-हवाला करने वालों में, इंग्लैण्ड ही बचा हुआ था और वह भी हिटलरी आक्रमण के भय के मारे काँप रहा था। हिटलर को शह देने वाला

चैम्बरलेन रंगमंच छोड़ चुका था और चर्चिल इंग्लैण्ड का प्रधानमन्त्री था। उसने 12 जुलाई 1941 को जर्मनी के विरुद्ध रूस से समझौता कर लिया। जून, सन 1942 में संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने भी सोवियत संघ के साथ समझौता करके, आक्रमण के विरुद्ध युद्ध करने में पारस्परिक सहायता के सिद्धान्त को स्वीकार कर लिया। इस प्रकार, अब इंग्लैण्ड-सोवियत-अमरीका की संयुक्त शक्ति फासिस्ट गुट को नष्ट करने के लिए एकजुट हो गयी थी। इस प्रकार अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति अनुकूल बनाकर, स्तालिन ने सोवियत जनता का आह्वान किया कि अब से सारा जीवन युद्ध के लिए संगठित करना चाहिए; शत्रु को हराने के लिए सेना की सारी आवश्यकताओं को पहले पूरा करना चाहिए। केवल लाल सेना और लाल नौसेना ही नहीं, बल्कि सारे सोवियत नागरिकों को अपने खून की एक-एक बूँद से सोवियत की एक-एक इंच जमीन की, प्रत्येक गाँव और नगर की रक्षा के लिए लड़ना होगा। उन्होंने सेना और जनता को यह भी आदेश दिया कि अगर पीछे हटने के लिए मजबूर होना पड़े तो शत्रु के हाथ में एक रेल का इंजन या डिब्बा ही नहीं, बल्कि कल-कारखानों, एक सेर अन्न और एक गैलन तेल भी नहीं छोड़ना चाहिए। लाखों की तादाद में बूढ़े-बच्चों और स्त्री-पुरुषों को अपने ग्राम छोड़कर पूर्व की ओर भागना पड़ा था। उस समय, सोवियत सरकार ने फासिस्टों के खतरे में तुरन्त पड़ने वाले कल-कारखानों की मशीनों को बहुत भारी परिमाण में ले जाकर पूर्व में स्थापित करवाया। पंचवार्षिक योजनाओं के कारण, थोड़े ही समय में बड़े-बड़े काम करने के आदी हो जाने से सोवियत कमकरों और विशेषज्ञों ने तीन-तीन वर्षों में खड़े होने वाले कारखानों को छः-छः, आठ-आठ महीनों में ही नयी जगहों पर ले जाकर, खड़ा कर दिया। हजारों की संख्या में अनाथ बच्चे किसी भी पूँजीवादी देश के लिए भारी समस्या बन सकते थे, लेकिन अपने नेता के परामर्श को सुनते ही मध्य एशिया तथा दूसरे भागों के सोवियत नागरिकों ने अपने-अपने घरों में एक-एक, दो-दो बच्चे धर्म-पुत्रों की तौर पर पालन शुरू किये, जिसके कारण बच्चों के पालन-पोषण ही नहीं, बल्कि उनकी शिक्षा-दीक्षा की समस्या भी हल हो गयी। साथी स्तालिन के प्रथम भाषण को सोवियत जनता ने हृदयंगम कर लिया था :

"शत्रु का ध्वंस करने के लिए, जनता की सारी शक्तियो, विजय के लिए आगे बढ़ो!"

और सचमुच, सोवियत के एशियाई यूरोपीय अनेक जातियों के गणराज्यों ने अपनी अद्‌भुत एकता का परिचय दिया। उनके भीतर कहीं भी दरार नहीं दीख पड़ी।

19 जुलाई 1941 को युद्ध शुरू होने के दूसरे महीने, महासोवियत के

प्रेसीडियम (अध्यक्षमण्डल) ने स्तालिन को प्रतिरक्षा जन कमीसार नियुक्त किया। अभी भी जर्मन सेनाओं के बढ़ाव का वेग कम होता नहीं दिखायी पड़ रहा था। अक्टूबर में बहुत भारी संख्या में अपनी सेनाओं को कटवाकर, फासिस्ट सेनाएँ मॉस्को प्रदेश में घुसने में सफल हो गयीं। इस प्रकार सोवियत सेना को पीछे हटते देखकर, पश्चिमी सहयोगियों को यह विश्वास हो गया था कि फ्रांस की तरह, रूस भी कुछ ही दिनों में घुटने टेक देगा। लेकिन, सोवियत जनता और उसके अदम्य नेता को कभी क्षण-भर के लिए भी अपने भविष्य पर सन्देह नहीं हुआ; क्योंकि उसे अपनी शक्ति पर पूरा विश्वास था। तो भी, मॉस्को प्रदेश में फासिस्टों के घुस आने पर राजधानी के लिए भयंकर खतरा पैदा हो गया है - इसे वे भी समझते थे। 19 अक्टूबर 1941 को राज्य प्रतिरक्षा कमेटी के अध्यक्ष के तौर पर, स्तालिन ने मॉस्को के घेरे में पड़ने की घोषणा कर दी। राजधानी से बहुत से मन्त्रालय अन्यत्र भेज दिये गये। कुइविशेफ युद्धकालीन राजधानी बन गयी। लेकिन, अंगद मॉस्को से अपने पैर हटाने के लिए तैयार नहीं थे। उन्होंने अपने सेनापतियों के साथ मिलकर मॉस्को को बचाने की ही नहीं, बल्कि जर्मन फासिस्टों को सबसे बड़ा सबक सिखाने की योजना भी तैयार की। शत्रु मॉस्को के दरवाजे पर आकर ललकार रहा था, तो भी क्रान्ति के चौबीसवें वार्षिकोत्सव को लोगों ने उसके अनुरूप ही मनाया। एक दिन पहले, 6 नवम्बर को स्तालिन ने हमेशा ही तरह, एक सभा में भाषण भी दिया, जिसमें उन्होंने चार महीने के युद्ध का सिंहावलोकन करते हुए बतलाया कि सेना, सैनिक, नेता और जनता - सभी बड़ी बहादुरी और अद्‌भुत उत्साह के साथ अपने कर्तव्य का पालन कर रहे हैं। साथ ही, यह भी बतलाया कि किसी भी तरह की गफलत करना शत्रु के हाथ मजबूत करना होगा। और, अन्त में घोषित किया : "जर्मन फासिस्टों और उनकी सेना का नाश होकर रहेगा।"

हिटलर ने डेढ़-दो महीनों में सोवियत संघ को खत्म कर देने के लिए गाल बजाया था, लेकिन चार महीने हो गये; पर फासिस्ट सेना अगम दलदल में फँसी दिखायी पड़ती थी। फासिस्टों ने अपने गुरुओं - पश्चिमी साम्राज्यवादियों की तरह, गलत अन्दाजा लगाया था कि सोवियत व्यवस्था वहाँ की जनता पर जबर्दस्ती लादी गयी है, वहाँ के लोग उसके साथ नहीं हैं और युद्ध के अवसर से फायदा उठाकर वह विद्रोह कर देंगे। सोवियत सैनिक शक्ति के बारे में भी, उनका ख़याल उसी तरह गलत था। और, उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि शकों, मंगोलों तथा इतिहास में अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध दूसरी जातियों के इन वंशजों की वीरता को सोवियत व्यवस्था ने कम करने की जगह कई गुना बढ़ा दिया है। और, हरएक पिछड़ी हुई जाति को अपने बराबर लाने के लिए प्राण-पण

से प्रयत्न करके, पिछले चौबीस वर्षों में रूसी जाति ने अपने स्वाभाविक भाईचारे का एक ऊँचा आदर्श रखा है। वहाँ तो युद्ध के खतरे ने उन्हें कवच की कड़ियों की तरह एक-दूसरे के साथ और भी घनिष्ठ बना दिया था।

फासिस्टों को इतनी सफलता भी निश्चय ही नहीं मिलती, यदि इसी समय पश्चिमी सहयोगियों ने 'मुँह में राम, बगल में छुरी' की रीति को न अपनाया होगा। स्तालिन ने वार्षिकोत्सव के समय, अपने भाषण में इस बात को स्पष्ट कहा था कि द्वितीय मोर्चे के न खोले जाने के कारण ही फासिस्टों को इतनी सफलता मिली। उन्होंने यह भी बतलाया था कि उनके कारखानों के विमान और टैंक फासिस्टों की अपेक्षा बहुत अच्छे और अधिक शक्तिशाली हैं, परन्तु सेना के पास उनकी पर्याप्त संख्या नहीं है। साथी स्तालिन ने सबसे ज्यादा जोर इस बात पर दिया कि टैंकों और विमानों का उत्पादन बढ़ाने की ओर सबसे अधिक ध्यान देना होगा।

तरुणाई शास्त्रार्थी और भारी वक्ता, अब सोवियत राष्ट्र का संचालक बनकर मितभाषी हो गया था। स्तालिन के भाषण भी छोटे-छोटे होते थे, लेकिन उनके एक-एक शब्द में अणु बम की शक्ति थी। स्तालिन ने फासिस्टों के आततायीपन को बतलाते हुए, अपनी जनता से कहा था :

"ये आदमी न इज्जत रखते हैं, न मानवीय हृदय, इनका व्यवहार पशुओं जैसा है, तो भी ये नीच यह कहने की धृष्टता करते हैं कि वे महान रूसी राष्ट्र को प्लेखानोफ और लेनिन, बेलिन्स्की और चेर्नीशेवस्की, पुश्किन और तालस्ताय, गिलका और चेकोव्स्की, गोर्की और चेखोव, सेचेनोफ और पावलोफ, रेपिन और सुरिकोफ, सुबारोफ और कतुजोफ की जाति को नाम शेष कर देंगे।"...

स्तालिन ने अपने भाषण में जिन महापुरुषों का नाम लिया था, वे दुनिया के राजनीति और आदर्शवाद के विशारद, साहित्य, संगीत, कविता, विज्ञान, ललितकला और युद्ध विद्या में अद्वितीय थे। और सचमुच ही, लोगों ने अपने पूर्वजों के खून को एक बार फिर बड़ी तेजी के साथ अपनी नसों में दौड़ते हुए पाया; और पिछले ढाई हजार वर्षों से चली आने वाली अपनी वीरता के नये-नये उदाहरण युद्ध क्षेत्र में प्रदर्शित किये। स्तालिन ने कहा :

"अगर आक्रमणकारी जर्मन सोवियत समाजवादी गणसंघ के लोगों के विरुद्ध सर्वसंचारी युद्ध चाहते हैं, अगर जर्मन सर्वनाशी लड़ाई पसन्द करते हैं, तो वह उन्हें दी जायेगी।

"हमारा उद्देश्य न्यायोचित है, हमारी विजय होकर रहेगी!"

2. मॉस्को के लोहे के चने : अगले दिन, 7 नवम्बर को लाल मैदान में लाल सेना की सालाना परेड हुई। और हर साल की तरह, स्तालिन ने लेनिन

समाधि मन्दिर पर खड़े होकर भाषण दिया। उन्होंने अपनी सेना और जनता के हर क्षेत्र में वीरतापूर्ण युद्ध की प्रशंसा करते हुए कहा :

"इस युद्ध में हमें आज अलेक्सान्द्र, नेवस्की, दिमित्री दोन्स्की, कुज्मा मीनिन, दिमित्री, पझास्की, अलेक्सान्द्र सुवारोफ और मिखाइल कतुजोफ जैसे महान पूर्वजों की वीर मूर्तियाँ प्रेरणा दें। महान लेनिन का विजय-ध्वज हमारे हृदयों में शक्ति भर दें।"

साथी स्तालिन ने स्वयं मॉस्को की रक्षा का संचालन किया, उन्होंने लालसेना की सैनिक कार्रवाइयों की बागडोर अपने हाथ में ली; राजधानी में आने वाले रास्तों की मोर्चेबन्दी की देखरेख भी उन्होंने स्वयं ही की। उनकी इस निर्भीकता, अदम्य उत्साह और दूरदर्शिता ने हर एक सैनिक और सेनापति में जान फूँक दी थी।

स्तालिन का हर एक काम गणित की तरह, बिल्कुल नपा-तुला होता था। वह अपने गुरु की तरह ही, परिस्थिति को तौलने में सेर-छटाँक नहीं, बल्कि रत्ती-माशे का भी अन्तर नहीं रहने देते थे। इसीलिए तो कमाण्डरों की माँग आने पर भी, उन्होंने बिना रिजर्व सेना के ही मुकाबला करने की आज्ञा दी थी। 6 दिसम्बर 1941 को आखिर वह समय आ गया, जब अपार क्षति उठाकर थकी-माँदी जर्मन सेनाएँ मॉस्को के पड़ोस में आयीं और उसी समय, पहले से ही तैयार रिजर्व सेना उस पर बिजली की तरह टूट पड़ी।

मॉस्को की विजय ने ढुलमुलयकीनों को भी यह मानने के लिए मजबूर कर दिया कि हिटलरी सेना अजेय नहीं है। हिटलर के ढलवाये हुए ढेर-के-ढेर विजय के तमगे बेकार गये। 23 फरवरी 1949 में अपने 55वें दैनिक आदेश में, स्तालिन ने आठ महीनों के युद्ध के परिणामों का विश्लेषण करते हुए बतलाया :

"जर्मन फासिस्ट सेना के लिए अचानक और एकाएक आक्रमण करने से जो अपने अनुकूल सैनिक स्थिति प्राप्त हुई थी, वह अब खत्म हो गयी है। अब युद्ध का फैसला अचानक आक्रमण के सुभीते के बल पर नहीं, बल्कि लगातार की जाने वाली सैनिक कार्रवाइयों पर ही निर्भर करेगा, जो मोर्चे के पीछे की दृढ़ता, सेना का नैतिक बल, सैनिक डिवीजनों का परिमाण और योग्यता, सेना के हथियार और साधन तथा सेना के कमाण्डरों की संगठन की योग्यता ही है।"

स्तालिन ने द्वितीय विश्वयुद्ध में अपने को एक श्रेष्ठ सैनिक कमाण्डर और सैनिक प्रतिभा के धनी के रूप में साबित किया। सैनिक विज्ञान भी अब उनके लिए हस्तामलक हो गया था और वह अपने प्रतिभाशाली तरुण सेनानायकों को आगे बढ़ाते हुए, उसमें नयी सूझें निकाल रहे थे। उन्होंने इस युद्ध में अचानक आक्रमण का सुभीता और लगातार सैनिक कार्रवाई के उपयोग को दिखलाते हुए,

लकीर पीटने वाले सैनिक विज्ञानियों की कितनी ही धारणाओं को झूठा साबित कर दिया।

अजेय स्तालिन के वचन और उदाहरण से उत्साहित होकर सारी सोवियत जनता ने युद्ध के लिए हरएक क्षेत्र में काम करना शुरू किया, जिसका फल भी जल्दी ही दिखायी पड़ा। मॉस्को में फासिस्टों को हराने के बाद, सन 1942 के मई दिवस के महोत्सव के सम्बन्ध में आदेश देते हुए, स्तालिन ने बतलाया कि लाल सेना के पास अब वे सारी चीजें मौजूद हैं, जिनसे वह दुश्मन को हराकर सोवियत भूमि से बाहर खदेड़ सकती है। उसके पास "केवल एक चीज की कमी है, वह है जिन प्रथम श्रेणी के सैनिक साधनों को हमारा देश तैयार कर रहा है, शत्रु के विरुद्ध उनको पूरी तौर से काम में लाने की क्षमता। इसलिए लाल सेना, उसके आदमियों, उसके मशीनगनधारियों, उसके तोपचियों, उसके मॉर्टरचियों, उसके टैंकचियों, उसके वैमानिकों और उसके सवारों के सामने युद्ध की कला को सीखना, मेहनत के साथ सीखना पहला काम है। अपने हथियारों के कल-पुर्जों को पूर्णतया समझना और इस प्रकार सीखकर, अपने काम में विशेषज्ञ बनकर शत्रु के ऊपर अचूक प्रहार करना है। केवल यही रास्ता, यही तरीका है, जिससे शत्रु को हराने की कला सीखी जा सकती है।"

स्तालिन ने अफसरों को भी एक नये प्रकार के अफसर की बात बतलाते हुए, कहा था कि लाल सेना के अफसरों को ऐसा होना चाहिए कि वह अपने साधारण सैनिक के हरएक काम को खुद कर सकें। जो चीज, जो काम तुम खुद नहीं कर सकते, तुम अपने सिपाही से भी उसको करने की आशा नहीं रख सकते। युद्ध के दिनों में इसका उदाहरण एक अमरीकी पत्र संवाददाता को मिला था। वह मोटर में बैठा मोर्चे के पास की भूमि में घूम रहा था; किसी जगह गाड़ी का पहिया कीचड़ में धँस गया और ड्राइवर ने निकालने की पूरी कोशिश की, किन्तु वह नहीं निकला। इसी समय एक रूसी सैनिक ने आकर कीचड़ को हटाकर गाड़ी को बाहर ढकेल दिया। जब संवाददाता ने उसे ठीक से देखा, तो मालूम हुआ कि वह लाल सेना का मेजर था। उसको कभी आशा नहीं हो सकती थी कि पश्चिमी राज्यों का कोई सैनिक अफसर इस तरह के काम के लिए तैयार हो सकता है और सो भी जब वह गोला-गोली की वर्षा से दूर हो!

3. स्तालिनग्राद की विजय : सन 1942 की वसन्त बीत गयी, गर्मी भी आ गयी, लेकिन अभी भी पश्चिमी सहयोगी द्वितीय मोर्चा खोलने के लिए तैयार नहीं थे। यद्यपि उन्होंने देख लिया था कि उनकी इच्छा के अनुसार, फासिस्टों द्वारा सोवियत खत्म होने की सम्भावना नहीं है। उनको इस तरह रोड़ा अटकाते देखकर, हिटलर ने निश्चिन्त होकर पश्चिमी मोर्चे की सेनाओं तथा अपनी सारी

रिजर्व सेना को लाकर सोवियत के खिलाफ पूर्वी मोर्चे पर लगा दिया। अब हिटलर के सेनापतियों ने सीधे राजधानी तथा रूस के मर्म पर प्रहार करने का ख़याल हटाकर अपनी सेनाओं को काकेशस की ओर बढ़ाया। वस्तुतः यह उनकी चाल थी, जिसे भाँपने में स्तालिन को देर नहीं लगी। उस समय हल्ला मचा हुआ था कि जर्मन सेनाएँ अब बाकू और ग्रोज्नी के महान तेल क्षेत्रों को दखल करने के लिए बढ़ रही हैं। आगे उनका लक्ष्य ईरान से भारत पहुँचकर, जापानियों से मिलने का है। लेकिन, स्तालिन ने समझ लिया था कि फासिस्ट पश्चिम और दक्षिण से राजधानी को घेरने में असफल होकर, अब अपने घेरे को लम्बा करके वही काम पूर्व से करना चाहते हैं और इस प्रकार, उनकी मंशा है कि वोल्गा और उराल के औद्योगिक क्षेत्रों में सोवियत को वंचित करके मॉस्को पर आक्रमण कर, इसी साल लड़ाई को विजयपूर्वक समाप्त कर दें। इस चाल के बारे में स्तालिन ने सोवियत कमाण्डरों को हिदायत कर दी। जुलाई के मध्य में, सचमुच ही जर्मन ईरान और हिन्दुस्तान जाने का रास्ता छोड़कर वोल्गा की ओर मुड़ गये और स्तालिनग्राद पर आक्रमण कर दिया। लेकिन, स्तालिन ने कच्चा दूध नहीं पिया था। स्तालिनग्राद की रक्षा के लिए, वहाँ पहले से ही सेनाएँ तैयार थीं। स्तालिन पहले से ही जान लेते थे कि मोर्चे के किस भाग को मुख्य और किसको गौण मानना चाहिए। स्तालिनग्राद पर आक्रमण होते ही, क्रान्ति-विरोधियों से भूतपूर्व जारित्सीन की रक्षा करने वाले, स्तालिन ने आदेश दिया कि जो भी हो स्तालिनग्राद की, वोल्गा के इस महत्वपूर्ण नगर की रक्षा करनी होगी। 5 अक्टूबर 1942 को वहाँ के कमाण्डर को उन्होंने जो आदेश दिया था, उसकी कुछ पंक्तियाँ थीं : "मैं माँग करता हूँ कि तुम स्तालिनग्राद की प्रतिरक्षा के लिए सभी उपाय करो। स्तालिनग्राद को शत्रु के हाथों में समर्पण नहीं करना होगा।"

स्तालिनग्राद का ऐतिहासिक युद्ध शुरू हुआ। यह जिस तरह इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण और बड़ी विजय है, वैसे ही यहाँ की लड़ाई भी संसार की सबसे भयंकर लड़ाई थी। लाल सेना ने बड़ी बहादुरी के साथ अपने नेता के नाम की नगरी की रक्षा की। सन 1918 की जारित्सीन वाली युद्ध परम्परा फिर दोहरायी गयी। सोवियत सैनिकों को अपनी विजय पर पूरा विश्वास था। लड़ाई जब अपनी चरम सीमा पर पहुँची हुई थी, उसी समय स्तालिनग्राद के मोर्चे के सैनिकों, सेनापतियों और राजनीतिक अफसरों ने अपने महान नेता के पास एक चिट्ठी भेजकर प्रतिज्ञा की थी :

"...अपनी युद्ध ध्वजाओं और सारे सोवियत देश के सामने, हम शपथ लेते हैं कि हम रूसी बाहुबल की कीर्ति को धब्बा नहीं लगायेंगे और अन्तिम क्षण तक लड़ते रहेंगे। आपके नेतृत्व में हमारे पिताओं ने जारित्सीन की लड़ाई को जीता

था और अब हम भी आपके नेतृत्व में स्तालिनग्राद के महान युद्ध को जीतकर रहेंगे।"

यह शपथ उस समय ली जा रही थी, जब फासिस्ट सेनाएँ स्तालिनग्राद और काकेशस के पर्वतसानुओं में घुस आयी थीं। इसी समय, सोवियत संघ क्रान्ति का पच्चीसवाँ वार्षिकोत्सव मना रहा था। हमेशा की तरह, अब भी उस दिन (6 नवम्बर 1942) स्तालिन ने अपनी जनता के लिए भाषण दिया था। पिछले साल के कामों की चर्चा की और विजय में पूरा विश्वास प्रकट करते हुए आगे के कार्य को बताया था। मोर्चे के पीछे जनता कितनी दृढ़ है और वह किस तरह सैनिक कारखानों, कोलखोजों और दूसरे स्थानों में अदम्य उत्साह के साथ काम कर रही है इसे बतलाते हुए, उन्होंने कहा था : "यह मानना पड़ेगा कि हमारे देश में इतना मजबूत और इतना संगठित पृष्ठ भाग पहले कभी नहीं था।" उन्होंने फिर इसे दोहराया कि इन गर्मियों में हिटलरियों को जो सफलता हुई, उसका कारण है यूरोप में दूसरे मोर्चे का अभाव। आँकड़े बताते हुए, उन्होंने कहा था कि प्रथम महायुद्ध में जब जर्मनी दोनों मोर्चों पर लड़ रहा था; जर्मनी ने अपने मित्रों के डिवीजनों को लेकर कुल 127 डिवीजन रूस के विरुद्ध भेजे थे। लेकिन आज की लड़ाई में, जबकि हिटलर को केवल एक मोर्चे पर लड़ना पड़ रहा है, उसने प्रथम महायुद्ध से करीब-करीब दूने - 240 डिवीजनों से सोवियत पर हमला किया है। पश्चिमी साम्राज्यवादियों की नीयत स्पष्ट थी। उनके पास एक मित्र की साफ नीयत नहीं थी, बल्कि वह मित्र बनकर पीठ में छुरी घुसेड़ने का उपक्रम कर रहे थे। स्तालिन और सोवियत की जनता को मालूम हो गया कि इस लड़ाई को केवल अपने ही बल पर जीतना है। स्तालिन ने अपनी वीर जनता के कार्यों की प्रशंसा करते हुए, उस वक्त कहा था :

"मैं समझता हूँ कि कोई भी दूसरा देश या दूसरी सेना जर्मन फासिस्ट लुटरों और उसके सहयोगी बर्बर गुण्डों के आक्रमण से अपने को नहीं बचा सकती थी। केवल हमारा सोवियत देश और केवल हमारी लाल सेना ही है, जो ऐसे प्रहार को रोककर उसके प्रहार के सामने खड़ी ही नहीं रह सकती, बल्कि शत्रु को दबोच भी सकती है।"

अगले दिन 7 नवम्बर 1942 के दैनिक आदेश में प्रतिरक्षा जन कमीसार (स्तालिन) ने कहा था :

"रोस्तोफ, मॉस्को और तिखविन में लाल सेना के प्रहार के बल को शत्रु पहले ही चख चुका है। वह दिन दूर नहीं है, जब लाल सेना के प्रहार के बल को शत्रु फिर से अनुभव करेगा। हमारी बारी भी आकर रहेगी।"

यह भविष्यवाणी जल्दी ही पूरी होने जा रही थी। ठीक समय पर 19 नवम्बर

1942 को स्तालिनग्राद के बाहरी हिस्सों में लाल सेना ने प्रतिरक्षा के तरीके को छोड़कर आक्रमण की नीति अपनाते हुए, शत्रु के दोनों पक्षों पर पहले आक्रमण किया – इतना जबर्दस्त आक्रमण कि आग पर जलते रेशम के धागे की तरह, वह सिमटकर अस्त–व्यस्त होकर पीछे की ओर हटा। इसी समय, लाल सेना ने पीछे से भी आक्रमण कर दिया। यह व्यूह रचना और आक्रमण का दाँव–पेंच स्तालिन ने स्वयं निश्चित किया था और उन्हीं के संचालन में उसे कार्यरूप में परिणत किया गया था। जर्मन भी जानते थे कि स्तालिनग्राद के युद्ध का फैसला उनके भाग्य का फैसला होगा, इसलिए वह भी सर्वस्व की बाजी लगाये हुए थे। लेकिन, उससे कोई फायदा नहीं हुआ। तीन लाख फासिस्ट सेनाओं को एक जगह घेरना मामूली बात नहीं थी, लेकिन लाल सेना ने सिर्फ घेरा ही नहीं डाला, बल्कि उसने कितने ही भाग को नष्ट भी कर दिया और बाकी को बन्दी बनाकर, स्तालिनग्राद की जबर्दस्त विजय प्राप्त की। स्तालिनग्राद की सफलता के महत्व के बारे में, बाद में (सन 1946 में) स्तालिन ने कहा था : "स्तालिनग्राद से जर्मन फासिस्ट सेना के पतन का आरम्भ होता है। यह सभी लोग जानते हैं कि स्तालिनग्राद की घोर मारकाट के बाद जर्मन फिर प्रकृतिस्थ नहीं हो सके।" स्तालिनग्राद की विजय के बाद तो सचमुच ही हिटलरी सेना में भगदड़ मच गयी थी; और वह आगे–आगे भागी जा रही थी, पीछे पीछे लाल सैनिक उनको खदेड़ते हुए, अपने देश को स्वतन्त्र करते जा रहे थे।

फासिस्टों की पराजय

आगे की सफलताओं का जिक्र करते हुए, स्तालिन ने 23 फरवरी 1943 के दैनिक आदेश में सोवियत सेना और सोवियत जनता की वीरता और सफलता के बारे में कहा था : "हमारे लोग सैवस्तॉपोल और ओदेसा की वीरतापूर्ण प्रतिरक्षा, मॉस्को के नजदीक की जबर्दस्त लड़ाई, काकेशस के पर्वतों, र्ज़्झेफ इलाके और लेनिनग्राद के समीप के युद्धों एवं हमेशा के इतिहास में सबसे बड़े युद्ध स्तालिनग्राद के सबसे बड़े युद्ध को हमेशा याद रखेंगे। इन महान युद्धों में हमारे वीर योद्धा, सेनापति और राजनीतिक शिक्षकों ने लाल सेना की पताकाओं को अचल कीर्ति से शोभित कर दिया है और जर्मन फासिस्ट सेना पर विजय प्राप्त करने की सुदृढ़ नींव रख दी है।" यह कहते हुए, स्तालिन ने बेकार के अभिमान के खतरे में भी सावधान करते हुए और लेनिन की सूक्ति का स्मरण दिलाते हुए कहा था :

"पहली मुख्य चीज यह है कि विजय से मतवाला नहीं होना चाहिए और न घमण्ड से गाल बजाना चाहिए। दूसरी चीज यह है कि विजय को सुप्रतिष्ठित

करना; और तीसरी चीज है – शत्रु पर उसे समाप्त करने वाला प्रहार करना।"

4. मातृभूमि की मुक्ति : सन 1942–43 के जाड़ों में लाल सेना का अभियान जर्मनों के हाथ से सोवियत के उन इलाकों को भी छीनने में सफल हुआ, जिन्हें युद्ध के आरम्भ में ही उन्होंने ले लिया था। इस सफलता के लिए, सोवियत राज्य ने अपने कमाण्डर इन चीफ (मुख्य सेनापति) को 6 मार्च 1943 को 'सोवियत संघ के मार्शल' की उपाधि प्रदान की।

अभी भी, चर्चिल और उसके साथियों ने द्वितीय मोर्चा खोलने का इरादा नहीं किया था, यद्यपि वह हिटलरी सेना की भीषण पराजय देख चुके थे। यह हिटलर को सीधी मदद देना था, इसमें सन्देह नहीं। सोवियत के कर्णधार उनकी इस हरकत को खून का घूँट पीकर बर्दाश्त कर रहे थे। इससे हिटलर को फिर हिम्मत हुई और सन 1943 की गर्मियों में उसने ओरेल और बेलगोरद से कुर्स्क के क्षेत्र में सोवियत की सेनाओं पर भीषण प्रत्याक्रमण किया। उनके ख़याल में यह मॉस्को पर आक्रमण का श्रीगणेश था। इससे पहले ही, 2 जुलाई को स्तालिन ने इस क्षेत्र के कमाण्डरों को सूचित कर दिया था कि जर्मन 3 और 6 जुलाई के बीच उन पर आक्रमण करने वाले हैं। शत्रु की गतिविधि जानकर, लालसेना पहले से ही तैयार थी। जब 5 जुलाई को नाजियों ने ओरेल–कुर्स्क और बेलगोरद के क्षेत्र पर आक्रमण किया, तो सोवियत सेना के सामने उनकी एक न चली और हिटलरी योजना व्यर्थ गयी। इसके बाद तो अब सारे युद्ध क्षेत्र में लाल सेना ने प्रतिरक्षा छोड़कर, आक्रमण की नीति अख्तियार कर ली। जर्मनों के इस आक्रमण के विफल होने के बाद, 24 जुलाई को स्तालिन ने घोषित किया : "इस फासिस्टी टाँय–टाँय फिस्स ने उस पोवाड़े को झूठा साबित कर दिया है, जिसमें कहा जाता था कि गर्मियों में जर्मन हमेशा आक्रमणात्मक सैनिक कार्रवाई में सफल होते हैं और सोवियत सेनाएँ पीछे हटने के लिए मजबूर होती हैं।" सफलता के बाद, लाल सेना शत्रुओं को नष्ट करती–भगाती बराबर आगे बढ़ती रही। 5 अगस्त को उसने अपने हाथ में ओरेल और बेलगोरद ले लिये, जिसके सम्मान में राजधानी में बहादुर सेना को तोपों की सलामी दी गयी। इसके बाद तो हर एक महत्वपूर्ण विजय पर राजधानी में तोपें दगने लगीं, जिसे सुन–सुनकर राजधानी की जनता फूली नहीं समाती थी। स्तालिन ने कहा था : "अगर स्तालिनग्राद का युद्ध जर्मन फासिस्ट सेना के पतन की भविष्यवाणी करता है, तो कुर्स्क के युद्ध ने फासिस्टों को सर्वनाश के मुँह पर पहुँचा दिया है।"

नवम्बर सन 1943 तक, जर्मनों के हाथों से दो–तिहाई सोवियत को फिर से मुक्त कर दिया गया। स्तालिन अच्छी प्रकार जानते थे कि यह मुक्ति अस्थायी नहीं है। इसीलिए, लाल सेना एक तरफ नये भू–भागों को जर्मनों से मुक्त करती

जा रही थी और दूसरी तरफ साधारण जनता एक निश्चित योजना के अनुसार, पुनर्वास और पुनर्निर्माण के काम में लगी थी। 19वीं सदी के आरम्भ में, रूस ने सुवारोफ जैसे महान सेनापति को जन्म दिया था, जिसकी विजयवाहिनी के घोड़ों की टापें इटली और आल्प्स पर भी सुनायी दी थीं। उसके युद्ध–विज्ञान का सोवियत काल में पूरी तौर से सम्मान हुआ और, अंग्रेज़ों के विक्टोरिया क्रास की तरह, 'सुवारोफ तमगे' को वीरता का भारी पारितोषिक बनाया गया। 6 नवम्बर 1943 को यह तमगा बड़े सम्मानपूर्वक स्तालिन को प्रदान किया गया।

शत्रु भाग रहे थे, लेकिन वह भागकर फिर संगठित होने का मौका न पायें, इसलिए जगह–जगह गोरिल्ला उन पर भीषण प्रहार करके, उनकी अपार क्षति कर रहे थे। स्तालिन ने उन्हें आदेश दिया था कि शत्रु की पाँतों में गोरिल्ला युद्ध की आग भड़का देनी चाहिए, उसके सैनिक अड्डों को नष्ट करके, जर्मन फासिस्ट गुण्डों का सर्वनाश कर देना चाहिए। गोरिल्ला युद्ध अब और भी प्रचण्ड हो उठा, जिसके कारण फासिस्ट सेना किंकर्तव्यविमूढ़ हो गयी। उसको हर जगह अपने शत्रुओं का खतरा दिखायी पड़ता था।

अब इसमें जरा भी शुबहा नहीं रह गया था कि इंग्लैण्ड और अमरीका चाहे द्वितीय मोर्चा न भी खोलें, सोवियत सेना अकेली ही यूरोप से फासिस्टों को खत्म करने के लिए पर्याप्त है। साम्राज्यवादी उसकी इस तरह की पराजय को कभी पसन्द नहीं कर सकते थे, क्योंकि यदि लाल सेना सारे यूरोप को फासिस्टों से मुक्त करती, तो उसके साथ–साथ रोम, पेरिस, बर्लिन और दूसरी राजधानियों में भी जनवादी मुक्ति के झण्डे फहर जाते। इसीलिए 1943 में, अब पश्चिमी सहयोगियों ने भी तत्परता दिखानी शुरू की। और साथ ही, उनके बमवर्षकों ने जर्मनी के युद्ध सम्बन्धी औद्योगिक केन्द्रों पर आक्रमण करने शुरू कर दिये। फासिस्ट शक्ति के ध्वंस का पहला जबर्दस्त परिचय उस समय देखने को मिला, जबकि सितम्बर सन 1943 में इटली ने बिना शर्त आत्मसमर्पण कर दिया। अब हिटलरी सेना पश्चिम में अकेली रह गयी। पूर्व में अपने फासिस्ट–बन्धुओं की सहायता के नाम पर, अपने चिरपोषित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए जापान अब भी बड़े जोर–शोर के साथ लड़ रहा था। भारत अब भी उसके खतरे से बाहर नहीं था। बर्मा, इण्डोनेशिया तक ही नहीं, बल्कि चीन का भी अधिकांश भाग उसके हाथ में था।

5. तेहरान कांफ्रेंस और पुनर्निर्माण का आरम्भ (1943) : लाल सेना की सफलताओं ने पश्चिम साम्राज्यवादियों के सिर से एक भय के भूत को दूर कर दिया था, लेकिन साथ ही दूसरा भूत उनके सिर पर सवार हो गया – कहीं बोल्शेविज्म सारे यूरेशिया को उदरसात न कर ले। इससे बचने के लिए,

उन्होंने नवम्बर सन 1943 में तेहरान में कांफ्रेंस की, जहाँ स्तालिन, अमरीका के प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट और इंग्लैण्ड के प्रधानमन्त्री चर्चिल ने मिलकर, आपस में बातचीत की और जर्मनी के विरुद्ध लड़ने तथा युद्धोपरान्त सहयोग के सम्बन्ध में तीनों शक्तियों ने एक समझौता किया।

हम यह बतला चुके हैं कि सोवियत राष्ट्र युद्ध के आखिरी वर्षों में केवल लड़ाइयाँ लड़कर विजय ही प्राप्त नहीं कर रहा था, बल्कि इसी समय फासिस्टों द्वारा ध्वस्त कल-कारखानों, लोहे के भट्ठों, पन-बिजली स्टेशनों की लगातार मरम्मत करके उनको फिर से चालू करने में भी लगा था। इसी लड़ाई के समय, चेलियाबिन्स्क और उज्बेकिस्तान में नये फौलाद के कारखाने तथा तगिल, मगनितोगोर्स्क और दूसरे स्थानों में नये धौंकू भट्ठे अधिक लौह उत्पादन के लिए खड़े किये गये। स्तालिन्स्क में अल्मोनियम का नया कारखाना स्थापित होकर, काम करने लगा। स्तालिन्स्क, चेलियाबिन्स्क आदि में नये पन-बिजली स्टेशन काम करने लगे। स्तालिन जिस तरह सम्मान और बढ़ावा देकर सैनिकों में नयी रूह फूँक रहे थे, उसी तरह उद्योग क्षेत्र के कर्मठ सैनिकों को भी वह परम सम्मान का पात्र समझते थे। युद्ध की कठिन परिस्थिति में भी एक विशाल धौंकू भट्ठे को मगनितोगोर्स्क के कमकरों ने बहुत जल्दी खड़ा कर दिया था, उसके लिए भी उन्होंने दिसम्बर सन 1943 में उन्हें बधाई भेजी थी। उन्होंने येनाकियेवो के लौह फौलाद के कारखानों के मजदूरों को भी इसी तरह का अभिनन्दन भेजा। स्तालिन ने मुक्त होने वाले भूभागों का आर्थिक तौर से फिर से निर्माण करने की ओर खास ध्यान दिया। उनकी प्रेरणा से पार्टी की केन्द्रिय कमेटी और राज्य की जन कमीसार परिषद ने अगस्त सन 1943 में जर्मन अधिकार से मुक्त किये गये इलाकों के आर्थिक पुनर्वास के लिए आवश्यक उपायों को अख्तियार करने का निश्चय किया, जिससे पुनर्निर्माण और पुनर्वास का काम बहुत तेजी से बढ़ा। सोवियत जनता हर तरह से सहयोग करने के लिए तैयार थी। जिस तरह प्रतिरक्षा के उद्योग को उसने आगे बढ़ाया, उसी तरह अब साथ-साथ पुनर्वास के काम को भी हाथ में लिया। पुनर्वास का काम समाजवादी व्यवस्था में जितनी आसानी से किया जा सकता है, उतना पूँजीवादी व्यवस्था में करना सम्भव नहीं है। भारत इसका अच्छा उदाहरण है। आज 6 वर्ष बाद भी, पाकिस्तान से आये हुए अपने विस्थापितों का हम ठीक से प्रबन्ध नहीं कर पाये हैं, जबकि हमारे देश ने युद्ध की ध्वंस-लीला भी नहीं देखी और हमारे सभी आर्थिक साधन सुरक्षित रहे हैं। तो भी देश-विभाजन के कारण सन 1947 के अन्त में भीषण समस्या उठ खड़ी हुई। सोवियत जनता का सामूहिक स्वार्थ वैयक्तिक स्वार्थ से अलग नहीं, बल्कि सामूहिक स्वार्थ का अभिन्न अंग होने से व्यक्ति समाज के हितों में ही अपने हितों

को मानता है। यही कारण था कि वहाँ के लोग सामूहिक स्वार्थों की रक्षा के लिए ढिलाई नहीं दिखा सकते थे। हिटलर ने जिन इलाकों पर अधिकार किया था, वहाँ पर उसने चाहा था कि किसान कोलखोजों की जगह फिर वैयक्तिक तौर से अपनी खेती करें, इसी तरह दूसरे व्यवसायों में भी वैयक्तिक स्वार्थों को उसने पुनः स्थापित करने की कोशिश की थी। जब उसमें उसे सफलता नहीं हुई, तो उसने लोमड़ी के खट्टे अँगूर की तरह, यह कहना शुरू किया कि इन लोगों में आन्तरिक बढ़ावा और अध्यवसाय की भावना ही नहीं है। वैयक्तिक बढ़ावा और अध्यवसाय से सामाजिक बढ़ावा और अध्यवसाय व्यक्ति के लिए भी सबसे अधिक हित की बात है, यह सोवियत के नागरिक अपने सत्ताईस वर्षों के जीवन से अच्छी तरह समझ गये थे। कोलखोजों का समृद्ध जीवन क्या वैयक्तिक किसानी से कभी प्राप्त हो सकता था? क्या वैयक्तिक किसान गाँवों में बिजली की रोशनी और जीवन के आधुनिक सुभीतों के पाने का स्वप्न भी देख सकते थे?

स्तालिनी संविधान ने सोवियत गणसंघ को सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र गणों का संघ मानते हुए, उन्हें अधिकार दे रखा था कि वह स्वेच्छापूर्वक संघ से सम्बद्ध हैं और जब चाहें तब उनको संघ से अलग होने का अधिकार है; लेकिन सोवियत आर्थिक ढाँचे, सांस्कृतिक नवनिर्माण तथा जातियों के प्रति स्तालिन की दूरदर्शितापूर्ण नीति ने उनके दिल से अलग होने के ख़याल को ही निकाल दिया था। मार्च सन 1944 में सोवियत सरकार ने एक और बड़ा कदम उठाया, जबकि संघ के सोलहों गणराज्यों को प्रतिरक्षा और वैदेशिक विभाग के अपने-अपने मन्त्रालय रखने की इजाजत दे दी। युद्ध ने सोवियत की भिन्न-भिन्न जातियों को और भी घनिष्ठता से एक-दूसरे के साथ सम्बद्ध कर दिया। पिछड़ी हुई जातियों में पंचवार्षिक योजनाओं ने जिस तरह हजारों की तादाद में इंजीनियर, विशेषज्ञ आदि पैदा कर दिये थे, वहाँ अब इन जातियों के सैकड़ों जवान 'सोवियत संघ वीर' के सर्वोच्च वीरतासूचक सोने के पचकोने तारे वाले तमगों को अभियान के साथ धारण कर रहे थे, उनमें कितने ही ऊँचे-ऊँचे अफसरों के पदों पर पहुँचे थे।

6. बर्लिन की ओर : सन 1944 के नवम्बर में, जब सोवियत की जनता अपनी महान क्रान्ति का 27वाँ वार्षिकोत्सव मना रही थी, स्तालिन ने अपने भाषण में बतलाया कि सोवियत की सारी भूमि जर्मन फासिस्टों से मुक्त की जा चुकी है। यही नहीं, बल्कि सोवियत सेना अब जर्मनी और उसके सहयोगियों के देश में घुसकर दुश्मनों का सफाया कर रही है। इससे पहले, 20 जून (सन 1944) को 'मॉस्को प्रतिरक्षा तमगा' सबसे पहले मार्शल स्तालिन को प्रदान किया गया।

26 जुलाई 1944 को 'विजय तमगा' भी स्तालिन को दिया गया। स्तालिन की नीति ने सोवियत को अमर विजय प्रदान की थी, क्या यह कहने की आवश्यकता है? सन 1944 में फासिस्टों के सहयोगी देशों – रूमानिया, फिनलैण्ड और बुल्गारिया ने आत्मसमर्पण करके ही सन्तोष नहीं किया, बल्कि उन्होंने अपनी बन्दूकों की नलियों को हिटलरी सेनाओं की ओर फेर दिया। इसी साल, हंगरी भी अब–तब कर रहा था। सोवियत सेना, जर्मनी को एक धक्के में गिराकर के फ्रांस तक के देशों को मुक्त कर, अटलान्तिक के तट पर पहुँचने के लिए बिल्कुल सक्षम थी। अब चर्चिल को दूसरे मोर्चे को और अधिक रोके रखना भारी खतरे की बात मालूम होने लगी। इस प्रकार, जून सन 1944 में दूसरा मोर्चा खोलते हुए अमरीकी और अंग्रेज़ सेनाएँ उत्तरी फ्रांस के तट पर उतरीं। जर्मन फासिस्ट अब दोनों ओर से पिटने लगे। स्तालिन ने 6 नवम्बर 1944 के क्रान्ति महोत्सव सम्बन्धी अपने भाषण में ही पुकार की – "बर्लिन की ओर!" लाल सेना ने अब बड़ी तेजी के साथ बर्लिन का रास्ता पकड़ा, पोलैण्ड की राजधानी (वारसा) को मुक्त कर दिया। लाल सेना पूर्वी प्रशिया के भीतर घुसी। सारे मोर्चे पर जर्मन फासिस्ट बुरी तौर से पिटने लगे। अन्तिम विजय नजदीक दीख पड़ रही थी। इसी समय फरवरी सन 1945 में, तीनों देशों के प्रमुख नेता याल्टा (क्रीमिया) में मिले, जिसमें हिटलरी जर्मनी को शीघ्रातिशीघ्र पराजित करने के लिए सैनिक तरीकों की योजना के बारे में विस्तृत विचार हुआ। इसी सम्मेलन में यह भी निश्चय हुआ कि सोवियत संघ जापान के विरुद्ध भी युद्ध में सम्मिलित होगा।

23 फरवरी 1945 को जिस वक्त लाल सेना का 27वाँ जन्मोत्सव मनाया जा रहा था, उस वक्त तक उसने कई बड़ी–बड़ी विजयें प्राप्त की थीं। जनवरी और फरवरी के चालीस दिनों में, बिजली की चाल से चलने वाले अपने आक्रमणों द्वारा सोवियत सेना ने सारे पोलैण्ड को मुक्त कर दिया; चेकोस्लोवाकिया का अधिकांश भाग भी मुक्त हो गया और जर्मन सिलेसिया के अतिरिक्त, पूर्वी प्रशिया का भी बहुत सा भाग लाल सेना के हाथों में था। हंगरी के रूप में, हिटलर का अन्तिम यूरोपीय साथी भी अब आत्मसमर्पण कर चुका था। 23 फरवरी 1945 के दैनिक आदेश में साथी स्तालिन ने कहा था : "जर्मनों पर पूर्ण विजय की प्राप्ति अब बिल्कुल नजदीक है।" लाल सेना ने वियना (आस्ट्रिया) पर अधिकार करके जर्मनी के दक्षिणी दुर्ग को खत्म कर दिया। इसी समय ओडर पार करती हुई, लाल सेना बर्लिन के पास पहुँचने लगी। स्तालिन ने कहा :

"अपने विजय–ध्वज को बर्लिन पर फहराओ!"

आखिरी प्रहार होने ही वाला था। इसी समय 21 अप्रैल 1945 को

पोलैण्ड–सोवियत मित्रता–सन्धि पर स्तालिन ने हस्ताक्षर किये। पश्चिमी साम्राज्यवादी पोलैण्ड को अब भी पिछले महायुद्ध की तरह, अपने हाथ की कठपुतली बनाकर सोवियत विरोधी अड्डे के रूप में इस्तेमाल करना चाहते थे और उन्होंने कितने ही समय तक इस मित्रता को न होने देने के लिए कोशिश भी की। प्रतिगामियों की भगोड़ी सरकार को लन्दन में शरण देकर, चर्चिल उनकी पीठ ठोकता रहा; लेकिन अन्त में उसे सफलता नहीं मिली। सोवियत के लिए यह सन्धि एक बड़ी जबर्दस्त राजनीतिक विजय थी। इसी समय भाषण देते हुए, साथी स्तालिन ने कहा था :

"स्वतन्त्रता–प्रेमी जातियाँ खासकर स्लाव जातियाँ बहुत समय से अधीरतापूर्वक इस सन्धि की प्रतीक्षा कर रही थीं। यह सन्धि यूरोप में समान शत्रु के विरुद्ध संयुक्त मोर्चे के दृढ़ होने की सूचना देती है।"

महान विजय

7. हिटलर का अन्त : 2 मई 1945 को महान कमाण्डर–इन–चीफ के दैनिक आदेश को प्रसारित करते हुए, मॉस्को रेडियो ने कहा था कि सोवियत सेना ने "बर्लिन की जर्मनी सेनाओं को पूर्ण तौर से पराजित कर दिया और आज 2 मई को जर्मन साम्राज्यवाद के केन्द्र और जर्मन आक्रमण की पीठ जर्मनी की राजधानी बर्लिन पर अधिकार कर लिया है।" लाल सेना ने स्तालिन की आज्ञा को पूरा किया। बर्लिन पर अपनी विजय ध्वजा फहरा दी। इस समय तक हिटलर अपने गिने–चुने अनुयायियों के साथ अपने तहखाने में आत्महत्या कर चुका था। जर्मनी के लिए अब दूसरा रास्ता नहीं था, इसलिए 8 मई 1945 को जर्मन सेना के उच्च प्रतिनिधियों ने बिना शर्त आत्मसमर्पण कर दिया। 9 मई के दिन को स्तालिन ने विजय दिवस घोषित किया। उस दिन स्तालिन ने अपने लोगों को सम्बोधित करके, कहा था :

"जर्मनी पर विजय का महान दिवस आ गया है। लाल सेना और हमारे सहयोगियों की सेनाओं के प्रहार से मजबूर होकर, फासिस्ट जर्मनी ने घुटने टेककर बिना शर्त के आत्मसमर्पण कर दिया है।... अब यह कहने के लिए पूरा कारण है कि जर्मनी की अन्तिम पराजय का ऐतिहासिक दिन, जर्मन साम्राज्यवाद पर हमारी जनता की महान विजय का दिन आ गया है।

"मेरे प्यारे देशबन्धुओ और देशबहिनो! विजय के लिए अभिनन्दन!"

सोवियत जनता ही नहीं, बल्कि सारी मानवता ने उस दिन सुख की साँस ली, जब दुनिया के रेडियो स्टेशनों ने जर्मनी की पूर्ण पराजय को घोषित किया। इस पराजय का सबसे अधिक श्रेय स्तालिन और उनकी जनता को ही है। उन्होंने इस

युद्ध के समय अपनी सर्वांगीण प्रतिभा का पूर्ण उपयोग किया था। पंचवार्षिक योजनाओं की तरह, इस समय भी कितनी ही नयी-नयी सैनिक प्रतिभाओं को खोज निकालना स्तालिन का ही काम था। इस युद्ध से पहले बुल्गानिन, वासीलेव्स्की, कोनेफ, गवरोफ, जुकोफ, वतूनिन, चेर्न्याखोवस्की, अन्तोनोफ, सोकोलोव्स्की, मेरेत्स्तोफ, मालिनोव्स्की, वरोनोफ, तोल्बुखिन, याकोव्लेफ, मालिनिन, गलित्स्की, त्रोफिमेन्को, गोर्बातोफ, श्तेमेन्को, कुरोसोफ, वेरशिनिन, गलोवानोफ, फदोरेंको, रिबालंको, बगदानोफ, कतुकोफ, लेल्युशेंको आदि अनेक प्रतिभाशाली सेनापतियों को कौन जानता था? उन्हें अपना जौहर दिखलाने का मौका स्तालिन ने जितनी आसानी से दिया, क्या पूँजीवादी राष्ट्र वैसा कर सकते थे? उनके यहाँ तो ये पैंतीस-चालीस वर्ष के छोकरे अभी मेजर और कर्नल तक ही पहुँचने के अधिकारी थे; जनरल और मार्शल होने के लिए तो साठ के नजदीक होना जरूरी था।

स्तालिन के आदेश के अनुसार 24 जून 1943 को मॉस्को के लाल मैदान में विजय परेड हुई। इस समय लाल सेना के विजय ध्वजों और पराजित फासिस्टों की पताकाओं के साथ जो विशाल सैनिक प्रदर्शन हुआ, वह मेरे और सभी दर्शकों के लिए अद्वितीय था। लेनिन समाधि मन्दिर पर खड़े, इस प्रदर्शन को देखते हुए स्तालिन कितने मुग्ध हुए होंगे, इसे आसानी से समझा जा सकता है। सोवियत जनता और उसका एक-एक बच्चा जानता था कि इस विजय प्रदर्शन को रूप देने में सबसे बढ़कर जिनका हाथ है, वह महान स्तालिन ही हैं। सोवियत जनता और सरकार अपने महान नेता का सम्मान करते नहीं थकती थी। परेड के दो दिन बाद, 26 जून को राज्य ने मार्शल स्तालिन को एक और 'विजय तमगा' प्रदान किया और अगले दिन (27 जून को) उन्हें 'जनरलस्सिमो' (परम सेनापति) की उपाधि दी।

8. जापान हारा : फासिस्ट जर्मनी की पूर्ण पराजय हुई। जापान अब भी अमरीका और इंग्लैण्ड को परेशान किये हुए था। उन्हें दिखायी नहीं पड़ रहा था कि कैसे भारत की सीमा तक डटी जापानी सेना को हटाया जाये। इसी समय (जुलाई सन 1945) त्रिदली सम्मेलन हुआ। ट्रूमैन, चर्चिल और स्तालिन की बातचीत हुई। अमरीकी प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट के अकस्मात मर जाने से उनके सहकारी ट्रूमैन अब अमरीका के राष्ट्रपति थे। अमरीका और इंग्लैण्ड ने जापान से बिना शर्त हथियार रखने की माँग पेश की थी, लेकिन उसने ऐसा करने से इंकार कर दिया था। दोनों राष्ट्र समझने लगे थे कि यदि सोवियत ने हस्तावलम्ब न किया, तो जापान अभी भी टेढ़ी खीर बना रहेगा। सोवियत ने जापान के विरुद्ध युद्ध में शामिल होना स्वीकार किया और उसके साथ साम्राज्यवादियों ने भी लम्बी

बाँहों को समेटने का वचन दिया।

9 अगस्त 1945 के सवेरे सोवियत स्थल और नोसैना ने जापान के साथ लड़ाई छेड़ दी। सोवियत के मुकाबले के लिए ही लड़ाई के भी पहले से जापान की मशहूर 'क्वान्तुड' सेना मंचूरिया में रखी गयी थी। उसकी भी वही हालत हुई जो लालसेना के सामने पश्चिम में हिटलरी सेना की हुई थी। सोवियत सेना ने मंचूरिया, दक्षिणी सखालिन, उत्तरी कोरिया और कुरिल द्वीपपुंजों से जापानी सेना को मार भगाया। जापान के लिए बिना शर्त आत्मसमर्पण के सिवा और कोई रास्ता नहीं रह गया। वह वैसा करने ही जा रहा था कि इससे पहले चर्चिल के समर्थन से टूमैन ने सोवियत से बिना पूछे ही हिरोशिमा (6 अगस्त) और नागासाकी (9 अगस्त) पर अणुबम गिरा दिया। जब जापान की पराजय निश्चित थी, तो ऐसे नरसंहारी अस्त्र का दो बड़े-बड़े नगरों की साधारण जनता पर गिराना यही बतलाता है कि साम्राज्यवाद कहाँ तक आततायी बन सकता है। साथ ही, जनता के हितों की परवाह न करते हुए, उसने सोवियत के विरुद्ध शीत युद्ध आरम्भ भी कर दिया। उसी समय दोनों शहरों में स्त्री-बच्चों-बूढ़ों सहित पचास-पचास हजार आदमी काल के गाल में चले गये और कुछ ही महीनों बाद उतनी ही संख्या में और भी आदमी बुरी तौर पर मरे। इस आततायीपन को मानवता और जापानी भी कभी नहीं भूल सकते। क्या टूमैन और चर्चिल हिटलर के विरुद्ध भी अणुबम का प्रयोग कर सकते थे? हरगिज नहीं; क्योंकि वे जानते थे कि ऐसा करने पर हिटलर के उड़न्तू बम भारी परिमाण में विषैली गैसों और कीटाणुओं को इंग्लैण्ड पर गिरायेंगे, जिससे लन्दन जैसे शहरों में कोई रोने वाला भी नहीं बच पायेगा।

अन्त में 2 सितम्बर 1945 को जापानी सेना ने भी बिना शर्त के आत्मसमर्पण कर किया।

इस समय भी स्तालिन ने शान्ति पर ही जोर दिया और रेडियो द्वारा घोषित किया : "अब से हम अपने देश को पश्चिम में जर्मन और पूर्व में जापान के आक्रमण के भय से मुक्त समझ सकते हैं। सारी दुनिया के लोगों के लिए चिरप्रतीक्षित विजय आज आ गयी है!"

अध्याय - दस

महामानव (सन 1945–53)

1. पुनर्निर्माण : युद्ध के समय सोवियत समाजवादी व्यवस्था ने अपने को पूँजीवादी व्यवस्था से कहीं श्रेष्ठ साबित कर दिया था। स्तालिन के शब्दों में :

"युद्ध के तजर्बे ने सिद्ध कर दिया है कि सोवियत व्यवस्था केवल शान्तिपूर्ण निर्माण के समय ही देश के आर्थिक और सांस्कृतिक विकास के संगठन के लिए सर्वश्रेष्ठ व्यवस्था नहीं है, बल्कि युद्ध के समय शत्रु के साथ प्रतिरोध करने के लिए, जनता की सारी शक्ति को संचालित करने के लिए भी यही सर्वश्रेष्ठ व्यवस्था है।... अक्टूबर क्रान्ति से उत्पन्न समाजवादी व्यवस्था ने हमारे लोगों और हमारी सेनाओं को बल प्रदान कर महान और अजेय बना दिया है।"

कृषि के हथियारों, उपयोगी पशुओं तथा दूसरे साधनों का इतने भारी परिमाण में नष्ट होना और 70 लाख नर–नारियों का युद्ध में मारा जाना तथा 2 करोड़ का हताहत होना बतलाता है कि सोवियत भूमि को यह विजय कितनी महँगी पड़ी थी। युद्ध के कारण, परती पड़ गयी करोड़ों एकड़ जमीन जोतने के लिए आदमियों का अकाल था। अगर वैयक्तिक खेती का बोलबाला होता तो देहात के पुनर्वास में एक युग लग जाता, लेकिन सोवियत में पंचायती खेती की व्यवस्था थी। नयी मशीनों की सहायता से उजड़े गाँवों को आबाद करने के लिए सामूहिक श्रम तैयार था। जैसे–जैसे युद्ध की आवश्यकताएँ कम हुईं, वैसे–ही–वैसे युद्ध के लिए माल तैयार करने वाले कारखाने अब शान्ति के समय के उपयोग की चीजों को पैदा करने में लग गये और पुनर्निर्माण का काम और जोरों से चल पड़ा।

इसके लिए चतुर्थ पंचवार्षिक योजना तैयार की गयी, जिसके बारे में स्तालिन ने 9 फरवरी 1946 को अपने निर्वाचन–क्षेत्र मॉस्को के वोटरों के सामने भाषण करते हुए कहा था कि इसका लक्ष्य टूटे–फूटे की मरम्मत करना ही नहीं, बल्कि अपने देश के उद्योग तथा कृषि–सम्बन्धी उपज को युद्धपूर्व के तल से भी आगे बढ़ाना है। अन्त में 18 मार्च 1946 को महासोवियत (पार्लामेण्ट) ने चतुर्थ

पंचवार्षिक योजना (सन 1946–50) को स्वीकृति दी। इसके सम्बन्ध में पार्लामेण्ट में भाषण देते हुए, योजना कमीशन के अध्यक्ष ने कहा था :

"...हमारी पंचवार्षिक योजना का लक्ष्य है – वर्गहीन समाजवादी समाज का निर्माण और देश को क्रमशः आर्थिक समाजवाद में परिवर्तित करना। उसका लक्ष्य है – सोवियत संघ के मूलभूत आर्थिक कर्तव्य को पूरा करना, यानी प्रधान पूँजीवादी देशों के, वहाँ की जनसंख्या के प्रतिपुरुष औद्योगिक उत्पादन के, तल पर पहुँचना ही नहीं बल्कि आगे बढ़ जाना। सोवियत संघ की कृषि और कल-कारखानों, राष्ट्रीय अर्थनीति की पुनः स्थापना की यह पंचवार्षिक योजना उक्त दिशा में एक और कदम है। हमारा झण्डा मार्क्स-एंगेल्स-लेनिन-स्तालिन के वैज्ञानिक साम्यवाद का झण्डा है। इस झण्डे के नीचे साम्यवाद की ओर बढ़ते हुए, हम नयी विजय प्राप्त करेंगे।"

प्रकृति का कायाकल्प

लेकिन, युद्धोत्तर पंचवार्षिक योजना के चार वर्षों और तीन महीनों में ही पूरी हो जाने से, युद्ध से विध्वंस्त सोवियत के पश्चिमी भाग के पुनर्निर्माण से ही स्तालिन सन्तुष्ट नहीं थे। उनकी निगाहें समय के क्षितिज पर दूर कम्युनिस्ट समाज के उदय पर लगी हुई थी, उनका मस्तिष्क कम्युनिस्ट समाज की स्थापना की मंजिलें पूरी करने का पथ निश्चित करने में और उसकी नीवें मजबूत करने में व्यस्त था। उसके लिए उत्पादन शक्तियों और साधनों के विशालतम प्रसार की आवश्यकता थी और इस विशालतम प्रसार के लिए जरूरी था कि उत्पादन और उत्पादन के साधनों के विकास के आड़े आने वाली प्राकृतिक बाधाओं पर विजय प्राप्त की जाये, प्रकृति के नियमों का मानवता के हित में उपयोग किया जाये और उनसे शक्ति हासिल की जाये, इसी शक्ति से प्रकृति का कायाकल्प किया जाये।

यह विचार एकदम नया नहीं था। विज्ञान की प्रगति के साथ-साथ, जैसे-जैसे मानव कुदरत के नियमों से परिचित होता आया है, वैसे-वैसे इन्हीं नियमें के उपयोग के द्वारा प्रकृति का कायाकल्प करने की उनकी कल्पनाओं में रंग भरते चले गये हैं, उनमें वास्तविकता आती गयी है। लेकिन सदैव ही, समाज की वर्ग व्यवस्था और शासक वर्गों के यथार्थ उनके विकास पर एक बेड़ी बनते रहे हैं। आज अमरीका का शासक वर्ग जैसे वैज्ञानिकों को मौत की कुर्सियों पर बैठा रहा है, बुद्धिजीवियों और लेखकों को अपना शिकार बना रहा है और समाज के निर्माण की जगह विश्व-संहार की योजनाएँ बनाकर मानव सभ्यता और संस्कृति का दुश्मन बन गया है, इसी प्रकार हर एक शासक वर्ग एक समय मौत के पंजे

की तरह अपने समकालीन समाज पर जकड़ता रहा है। इसीलिए मानवता के इन सपनों को मूर्त रूप देने के लिए सबसे पहला महान काम था – वर्ग शोषणहीन समाजवादी राज्य की स्थापना। लेनिन और स्तालिन के नेतृत्व में इसे सम्पन्न किया जा चुका था। स्तालिन के नेतृत्व में इस समाजवादी राज्य को सुदृढ़ बना लिया गया था। वह जमीन तैयार हो चुकी थी और अब प्रश्न था – मानवता के उन चिरपोषित सपनों को मूर्त रूप देने का। यह एक नया और युगान्तरकारी कदम था। स्तालिन इसी की योजना बनाने में व्यस्त थे।

2. युगान्तरकारी महान निर्माण योजनाएँ : अठारहवीं सदी के अन्त में, एक रूसी इंजीनियर ग्लूखोवस्की ने जार के सामने दो योजनाएँ रखी थीं। पहली योजना थी – आमूदर्या नदी की उजबोई नदी की नहर से मिलाकर, कास्पियन सागर की ओर मोड़ देने की। दूसरी योजना थी – बाल्तिक, कास्पियन और अरल सागरों को एक–दूसरे से सम्बद्ध कर देने की। अलेक्सान्द्र बोईकोफ ने कहा था कि रेगिस्तानों की सिंचाई करके मनुष्य पेड़–पौधे उगा सकता है, फसलों की पैदावार बढ़ा सकता है। वासिली दोकुचायेफ ने नदियों के बहाव की दिशा बदलकर, उसकी नमी का उपयोग करने की योजना रखी थी। जनता की उन दिनों यह धारणा बन गयी थी कि हर तीन सालों के बाद एक सूखा पड़ता ही है। इसके विरुद्ध, क्लीमैन्त तिमिरियाजेफ ने गेहूँ की एक बाल की जगह दो बालें उपजाने की एक योजना रखी थी। इवान मिचूरिन ने कहा था : "हम प्रकृति की कृपा पर निर्भर नहीं रह सकते, उसे हमें प्रकृति के हाथों से छीन लेना चाहिए।" और, जार ने इन सबको 'पागल स्वप्नवादी' घोषित कर दिया था, उनकी योजनाओं पर अमल करने का तो कोई प्रश्न ही नहीं था।

पर, स्तालिन उनके महत्व को जानते थे और उनको सम्पन्न करने के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ भी समाजवादी समाज के रूप में उनके नेतृत्व में तैयार हो चुकी थीं। स्तालिन ने इन योजनाओं और योजनाकारों को उचित सम्मान दिया और उनके आधार पर वैसी ही और नयी योजनाओं को प्रस्तावित किया। सन 1924 में ही, स्तालिन ने स्टेपीज के अर्द्ध–रेगिस्तानों और दक्षिण पूर्व के रेगिस्तानों के सूखे प्रदेश की सिंचाई की योजना रखते हुए, कहा था :

"वोल्गा प्रदेश में बिल्कुल स्थायी अन्नभण्डार के एक ऐसे आधार के बिना हम कुछ नहीं कर सकते, जो मौसमों की निरंकुशता से कतई स्वतन्त्र हो और बाजार के लिए लगभग, 3,60,00,00,000 सेर अनाज की पूर्ति कर सके।"

लेनिन ने कहा था : "सोवियत शासन+सारे देश का विद्युतीकरण=कम्युनिज्म।"

सोवियत सरकार का सारा निर्माण–कार्य इसी राह पर चलकर हुआ है। सन 1950 में, मन्त्रियों की काउंसिल ने पाँच विशालतम पन–बिजली के केन्द्र बनाने

का फैसला लिया था। इन केन्द्रों का निर्माण सन '57 तक पूरा होने की योजना है। इनके अलावा, प्रकृति के कायाकल्प के लिए सिंचाई और कृत्रिम वनों की पेटियों की योजनाएँ भी बनायी गयीं।

वोल्गा पन-बिजली शक्ति केन्द्र

वोल्गा यूरोप की सबसे बड़ी नदी है। उसका महत्व सोवियत संघ के लिए उतना ही है, जितना कि हमारी सभ्यता के विकास में गंगा का। सदियों से वहाँ की जनता वोल्गा का पूरा-पूरा उपयोग करने का स्वप्न देख रही थी। पर, वह समाजवादी समाज में ही, स्तालिन के नेतृत्व में ही सम्भव हो सका है।

इस योजना के अन्तर्गत दो पन-बिजली शक्ति केन्द्र बनेंगे। पहला कुई विशेफ पन-बिजली केन्द्र और दूसरा, स्तालिनग्राद केन्द्र होगा। इन दोनों के फलस्वरूप, मॉस्को को लगभग 10 अरब किलोवाट बिजली मिलेगी और मॉस्को संसार का सबसे बड़ा बिजली शक्ति का केन्द्र बन जायेगा। दोनों केन्द्रों में लगभग 20 अरब किलोवाट बिजली बनेगी, जिसमें से बाकी 10 अरब कुई विशेफ प्रदेश के औद्योगीकरण तथा मध्य वोल्गा प्रदेश की सिंचाई के काम आयेगी। इसी योजना के अन्तर्गत वोल्गा और उराल पर्वत के बीच 508 मील लम्बी मुख्य नहर और 2,812 मील लम्बी एक-दूसरे को मिलाने वाली अगल-बगल की छोटी-छोटी नहरें बनेंगी।

इसके फलस्वरूप, अर्द्ध-रेगिस्तानी और रेगिस्तानी सूखे प्रदेशों की जलवायु ही बदल जायेगी। लगभग 40,00,000 एकड़ खेतों और 3,00,00,000 एकड़ चरागाहों को पानी मिलेगा। इस सिंचाई के द्वारा अस्त्राखान प्रदेश में लगभग 56 लाख मन कपास 16 करोड़ 80 लाख मन गेहूँ और 22 करोड़ 40 लाख मन भूसा उपजेगा। स्टेपीज में 20-25 गुनी अधिक घास पैदा होने लगेगी। कास्पियन सागर के उत्तरी भाग में रेगिस्तानी रेत का हमला रुक जायेगा। इसका असर पूरी अर्थ-व्यवस्था और भौगोलिक परिस्थिति पर पड़ेगा। आज रेलों के यातायात से जितना माल एक जगह से दूसरी जगह जा पाता है, उसका लगभग 40 गुना माल इन जलमार्गों से आ-जा सकेगा। अकूत श्रमशक्ति, कोयले और यातायात पर होने वाले खर्च की बचत होगी।

तुर्कमान नहर

आमू दर्या मध्य एशिया की सबसे बड़ी नदी है। यह पामीर और हिन्दूकुश की पर्वत श्रेणियों में बहती है। सदियों से यहाँ के लोग इस नदी का उपयोग करने

की सोचते थे, परन्तु यह एक बड़ी अनियन्त्रित और वेगमती नदी है। यदि मोटे तौर पर हिसाब लगाया जाये तो इसका लगभग 80 लाख वर्ग गज जल व्यर्थ ही समुद्र में पहुँच गया है और उसी के किनारे सदियों से लोग सूखे और अनावृष्टि के कारण भूखों मरते रहे हैं।

स्तालिन की प्रेरणा और नेतृत्व के कारण, इस पर नहर बनाने की योजना कार्यान्वित की गयी है। ये नहरें लगभग 467 से 533 वर्ग गज जल काराकुम और तुर्कमान के दक्षिणी रेगिस्तानों में जायेंगी। इनके कारण, रेगिस्तानों में नखलिस्तान बनने लगेंगे और लगभग 30,00,000 एकड़ की फसलों को पानी मिल सकेगा। कपास की पैदावार 7-8 गुनी बढ़ जायेगी। वहीं फलों की पैदावार होने लगेगी। रेशम के कीड़े पाले जा सकेंगे। लगभग 1,70,00,000 एकड़ चरागाहों की सिंचाई हो सकेगी। खेतिहर जानवरों की संख्या दुगुनी हो जायेगी। लगभग 13,00,000 एकड़ के क्षेत्र में हरियाली की ऐसी पेटियाँ बन जायेंगी, जो रेगिस्तानों से आने वाली गर्म हवाओं और रेत को रोककर खेती की रक्षा करेंगी। सूती कपड़े की मिलों की सालाना पैदावार लगभग 5 करोड़ 60 लाख मन हो जायेगी। वनस्पतियों के तेल का परिमाण 11-12 गुना बढ़ जायेगा। यातायात की सुविधा हो जायेगी।

लम्बाई में इस नहर की तुलना, चीन की विशालतम नहर को छोड़कर, संसार की और किसी नहर से नहीं की जा सकती।

उक्रइन और क्रीमिया में स्तालिनी योजनाएँ

बोरिस मार्गुनेंकोफ ने लगभग चालीस वर्षों पहले जार के सामने नीपर नदी के पानी को सिंचाई के काम में लाने की योजना रखी थी। लेकिन, उसे स्तालिन के नेतृत्व में ही कार्यरूप में परिणत किया जा सका है। इसका निर्माण-कार्य सन 1951 में शुरू हुआ है और 1956 में समाप्त होगा।

इस योजना के अन्तर्गत दो विशाल बाँध, पानी के नियन्त्रण के लिए दो 'लॉक' और एक पन-बिजली शक्ति केन्द्र बनेगा। बाँधों में क्रमशः 19,00,00,00,000 और 8,00,00,00,000 वर्ग गज पानी जमा रखने का इन्तजाम होगा। पन-बिजली केन्द्र से लगभग 1 अरब 20 करोड़ किलोवाट विद्युत शक्ति उपलब्ध होगी। लगभग 40 लाख एकड़ जमीन की सिंचाई हो सकेगी। कपास की पैदावार 5-6 गुनी बढ़ जायेगी। उक्रइन और क्रीमिया दोनों मिलाकर कुल 22 करोड़ 40 लाख मन कपास, 5 करोड़ 60 लाख मन गेहूँ और लगभग 11 करोड़ 20 लाख मन भूसा आज से अधिक पैदा कर सकेंगे। खेतों की रेगिस्तानों की रेतों से रक्षा करके, काली भूमि की उपज शक्ति बढ़ायी जा सकेगी।

इसके बनाने में स्वेज नहर से लगभग 4 गुनी अधिक भूमि को खोदना पड़ेगा।

जहाजरानी का वोल्गा–दोन जल–मार्ग

इसका निर्माण–कार्य युद्ध से पहले ही आरम्भ कर दिया गया था। फिर युद्ध के बाद सन 1947 से शुरू कर दिया गया था। सन 1952 की वसन्त में नियत अवधि के दो वर्षों पहले ही वह पूरी हो चुकी है।

इसके अन्तर्गत सोवियत की दो सबसे बड़ी नदियों – वोल्गा और दोन – को एक विशाल नगर के जरिये मिलाया गया है; इसके द्वारा सोवियत संघ के यूरोपीय हिस्से के सभी समुद्र श्वेत, बाल्तिक, कास्पियन, अजोव और काला सागर एक–दूसरे से सम्बन्धित हो गये हैं। यह एक इतना बड़ा जल–मार्ग बन गया है कि कृत्रिम समुद्र कहा जाने लगा है। इसमें बड़े–बड़े जहाज चल सकते हैं और इसी को सुगम बनाने के लिए, इसमें 13 लॉक और 3 बाँध बाँधे गये हैं।

सोवियत संघ के यूरोपीय हिस्से के यातायात की ये सभी समस्याएँ सुलझा देता है। इसके द्वारा लगभग 15,00,000 एकड़ अर्द्ध–रेगिस्तानी खित्तों की सिंचाई होगी, लगभग 40,00,000 एकड़ चारागाहों को पानी पहुँचेगा। सभी ओर यथेष्ट मात्रा में पानी उपलब्ध होगा। सभी को सस्ती बिजली मिल सकेगी।

यह आधुनिक युग का विशालतम निर्माण है। यह वोल्गा प्रदेश की प्राकृतिक भौगोलिक परिस्थिति में एक आधारभूत परिवर्तन ला देगा। वहाँ की जलवायु बदल देगा।

वृहत्तम वनीय क्षेत्रों की योजना

स्तालिन की यह महानतम योजना सुनने में ऐसी लगती है, जैसे कोई दन्तकथा हो! सचमुच महान स्तालिन ने मानव जाति के सामने कितनी विशाल सम्भावनाओं के द्वार खोल दिये हैं, उन्हें कार्यरूप में परिणत भी कर दिया है। स्तालिन की यह योजना है : राज्य की ओर से कृत्रिम जंगलों की आठ अत्यन्त विशाल पेटियाँ उगायी जायें, जिनका प्रसार पूरे देश में हजारों मीलों तक आर–पार फैला हुआ हो।

इनमें से प्रत्येक पेटी 22 गज चौड़ी और 121/2 लाख मील लम्बी होगी। इनका कुल क्षेत्रफल 1,20,00,000 एकड़ से भी ज्यादा होगा। इन पेटियों में पानी इकट्ठा रखने के लिए बड़ी–बड़ी नहरें बनायी जायेंगी। ये नहरें इतनी बड़ी होंगी कि इनके द्वारा यातायात भी हो सके। प्रदेशों की आवश्यकता के अनुसार ही, इन जंगलों में बोने के लिए पेड़ों की किस्मों का चुनाव किया जायेगा।

इनसे कल्पनातीत लाभ होंगे। फसलें बोने के त्रावोपोलीय नियम के अनुसार एक निश्चित क्रम में फसलें बोने के कारण, जमीन की ऊपरी परत अधिक उर्वर हो जायेगी। जमीन में नमी भी बढ़ जायेगी। रेगिस्तानों से आने वाली गर्म हवा और रेत से जमीन की रक्षा हो सकेगी। हवा की निचली पर्तों की शुष्कता कम हो जायेगी और उसका तापक्रम कभी भी 60 या 70 अंश सेण्टीग्रेड से ज्यादा नहीं हो सकेगा। हवा की नमी में रहने वाली ऑक्सीजन का अंश सेण्टीग्रेड से ज्यादा नहीं हो सकेगा। हवा की नमी में रहने वाली ऑक्सीजन और कार्बन डाईऑक्साइड के वर्तमान अनुपात में अन्तर आ जायेगा। ऑक्सीजन का अंश बढ़ जायेगा, मतलब यह कि जलवायु अधिक स्वास्थ्यकर हो जायेगी और साथ ही, कार्बन डाईऑक्साइड भी अधिक बनने लगेगी; क्योंकि हम सभी जानते हैं कि पेड़–पौधों के हरे पत्ते ही उसका निर्माण करते हैं।

और, इसकी सबसे प्रमुख बात यह है कि स्तालिन की यह योजना उस समस्या का भी समाधान करती है, जिसका हल ढूँढ़ने में आज संसार के वैज्ञानिक जुटे हुए हैं। वह समस्या है सूर्य के अकूत भण्डार से धरती को नित्य मिलने वाली सौर–शक्ति का उपयोग। स्तालिन की योजना के अन्तर्गत उगाये गये इन विशालतम जंगलों के हरियाले प्रसार में, हरे–हरे पौधों में यह सौर–शक्ति अर्जित की जायेगी और फिर, जहाँ भी आवश्यकता होगी, उसे खाद्य, ईंधन, औद्योगिक कच्चे माल आदि के रूप में प्रयुक्त किया जायेगा। इस सौर–शक्ति का सबसे महत्वपूर्ण उपयोग हम जान ही चुके हैं – पन–बिजली–शक्ति के केन्द्रों के रूप में। पानी से उत्पन्न की जाने वाली पन–बिजली शक्ति और कुछ नहीं है, प्रकृति के द्वारा तब्दील कर दी गयी सौर–शक्ति ही है, जिसका अर्जन जल कर लेता है।

इस प्रकार, महान स्तालिन ने वह राह दिखायी है जिस पर चलकर समूची मानवता सभी प्राकृतिक शक्तियों का उपयोग अपने हित में कर सकेगी, प्रकृति का कायाकल्प कर सकेगी।

महान योजनाओं पर एक तुलनात्मक दृष्टिपात

इन योजनाओं और इनके निर्माण काल के ऐतिहासिक महत्व को, महान स्तालिन के महामानव कहलाने के औचित्य को हम तब तक पूरी तौर पर नहीं समझ सकते, जब तक पूँजीवादी व्यवस्था के निर्माणों की तस्वीर भी हमारे सामने न हो।

संक्षेप में, मानवता ने अपने पूरे इतिहास में समूची धरती के रेगिस्तानों का सिर्फ दो फीसदी भाग ही – 3,65,00,000 वर्गमील ही खेती के काम में लगा

पाया है। युद्ध, फसाद, भूमि के प्रबन्ध की शोषक व्यवस्थाएँ औपनिवेशिक प्रथा, दास-प्रथा आदि के फलस्वरूप हरे-भरे विशाल जनसंख्याओं वाले प्रदेश भी उजड़ गये हैं, बंजर पड़ गये हैं, रेगिस्तानी बनते जा रहे हैं। पूँजीवादी अर्थशास्त्री चीख रहे हैं कि रेगिस्तान एक दिन समूची धरती को लील लेगा, लीलता जा रहा है। सचमुच पूँजीवाद उसके आगे असमर्थ ही है। नतीजा सामने है कि अपने देश में जोतने योग्य जमीन का 70 फीसदी भाग बेकार पड़ा है। पिछले बीस सालों में, हमारी प्रति एकड़ जमीन की गेहूँ की पैदावार 8 से लेकर 9 तक गिर गयी है। जोत की जमीन का रकब लगभग 50,00,000 एकड़ कम हो गया है। प्रति वर्ष लगभग 6,00,000 आदमी भूख से मरते हैं। अकाल कभी देश से विदा नहीं होता; आज बंगाल में है, तो कल मद्रास, फिर महाराष्ट्र, फिर गुजरात में।

इसी प्रकार, नील की घाटी की संसार प्रसिद्ध कपास की पैदावार और किस्म भी उजाड़ मिश्र में दिन-दिन गिरती ही जा रही है। अफ्रीका में कई परित्यक्त उजाड़ प्रदेश पड़े हुए हैं। स्वयं अमरीका में 80,00,00,000 एकड़ से अधिक जमीन सूखे की शिकार हो गयी है। इसमें से 4,00,00,000 एकड़ तो पूरी तौर से बेकार हो चुकी है। उपजाऊ शक्ति 30-40 फीसदी घट गयी है। लगभग 5,00,000 किसान स्वयं अपने लिए भरपेट खाना जुटा सकने में असमर्थ हैं। और बूढ़े पूँजीवादी इंग्लैण्ड में? टेम्स नदी की बाढ़ों से नगरों की रक्षा नहीं की जा सकती। इसलिए कि बाँधों की मरम्मत नहीं की जा सकती, क्योंकि कोष ही नहीं है : सब युद्ध की तैयारी पर खर्च हो जाता है!

इतना ही नहीं पूँजीवाद ने जो थोड़ा-बहुत निर्माण-कार्य कभी किया भी था, उसकी रफ्तार की जरा समाजवादी निर्माण से तुलना कीजिए। नीपर पन-बिजली केन्द्र 1,500 दिनों में, कुई विशेफ केन्द्र पाँच सालों में, स्तालिनग्राद केन्द्र पाँच सालों में 1,400 मील लम्बी तुर्कमान नहर 7 सालों में, वोल्गा-दोन नहर एक कृत्रिम समुद्र 6-7 सालों में; जबकि नील पर एक बाँध बाँधने में 68 वर्ष, टैनेंसी नदी की अमरीकी योजना में 35 वर्ष, 103 मील लम्बी स्वेज नहर में 10 वर्ष और 516 मील लम्बी पनामा नहर के बनने में 35 वर्ष लगे थे! समूची मानवता के इतिहास में, जहाँ अब तक कुल लगभग 16,00,00,000 एकड़ भूमि की सिंचाई का प्रबन्ध किया जा सकता था, वहाँ सोवियत संघ में महान स्तालिन के नेतृत्व में 5-6 वर्षों के दौरान में ही लगभग 5,60,00,000 एकड़ की सिंचाई हो सकेगी!

लेकिन, इन महान निर्माणों के लिए सबसे पहले शर्त क्या है? विश्व शान्ति। अपने अन्तिम क्षणों तक महामानव स्तालिन ने शान्ति का पथ प्रकीर्ण किया और हर मौके पर जंगखोरों को धूल चटाई है।

स्थायी शान्ति के अग्रदूत

साम्राज्यवादी जंगबाज और उनके टुकड़खोर पत्रकार, आज से नहीं सोवियत के जन्मकाल से ही, महान लेनिन और स्तालिन को खूँखार, साम्राज्यवादी, निरंकुश आदि कहकर कीचड़ उछालते रहे हैं। आज जब युद्ध ही साम्राज्यवादियों को अधिकतम मुनाफा कमाने का एकमात्र जरिया नजर आ रहा है, तब वे और भी बौखला उठे हैं और सोवियत संघ तथा महान स्तालिन पर लाँछन लगाने की सिर तोड़ कोशिशें कर रहे हैं। परन्तु उनका प्रचार सूर्य पर थूकने के समान ही होता जा रहा है। हर मोर्चे पर वे चारों खाने चित्त पड़ते जा रहे हैं। सारे संसार की जनता दिन–ब–दिन समझती जा रही है कि महान स्तालिन ने द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से ही नहीं, सदैव से ही जनता के लिए एक निर्माणशीला शान्ति का नारा बुलन्द किया है।

3. शान्ति का स्तालिनीय पक्ष : 8 नवम्बर 1917 को सत्ता हाथ में लेते ही, सोवियत सरकार ने जो पहला आदेश निकाला था, वह शान्ति की स्थापना का ही था। सन 1919 में, सोवियतों की कांग्रेस में लेनिन ने घोषणा की थी : "सोवियत प्रजातन्त्र सभी देशों के साथ शान्तिपूर्वक रहकर अपनी सारी शक्ति घरेलू निर्माण पर केन्द्रित कर देना चाहता है।" एक मुलाकात के दौरान में, उन्होंने कहा था – "हम निश्चयपूर्वक अमरीका, सभी देशों पर खासतौर पर अमरीका, के साथ आर्थिक समझदारी बढ़ाने के पक्षपाती हैं।" दिसम्बर सन 1922 में सोवियत के वैदेशिक मन्त्री श्चेरिन ने कहा था : "...आज के इस ऐतिहासिक युग में, पूँजी की पुरानी और नवजात व्यवस्थाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले राष्ट्रों में परस्पर आर्थिक सहयोग होना, संसार व्यापी आर्थिक निर्माण के लिए, सबसे आवश्यक है।"

महान स्तालिन का नेतृत्व शान्ति के इसी पथ पर आगे बढ़ता रहा है। इसी पथ को प्रकीर्ण करता रहा है। देखिए, किस तरह उन्होंने इसका क्रमशः विकास किया है।

दिसम्बर सन 1927 में, पार्टी की पन्द्रहवीं कांग्रेस में स्तालिन ने इसी का समर्थन करते हुए कहा था : "पूँजीवादी देशों के साथ हमारे सम्बन्धों का आधार है – दो विरोधी व्यवस्थाओं के एक साथ रहने की सहमति। अमल ने इसे पक्की तौर पर सही सिद्ध कर दिया है।"

सन 1936 में, राय होवार्ड से भेंट करते हुए, स्तालिन ने कहा था : "अमरीकी प्रजातन्त्र और सोवियत व्यवस्था एक–दूसरे के साथ शान्तिपूर्ण रह सकते और होड़ कर सकते हैं।"

सन 1936-39 के अरीब-करीब, जब युद्ध की अफवाहें गर्म होने लगीं, धमकियाँ दी जाने लगीं और सारे वातावरण में तनातनी आ गयी थी, तब स्तालिन ने संसार के सामने 'शान्ति अविभाज्य है' और 'सामूहिक सुरक्षा' की घोषणा की थी। सन 1938 में, पार्टी की अठारहवीं कांग्रेस में उन्होंने सोवियत की शान्तिपूर्ण नीति की घोषणा इस प्रकार की थी : "हम शान्ति के हामी हैं। हम सभी देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध दृढ़ करने के हामी हैं। हमारी यह नीति है और हम इसी नीति पर तब तक दृढ़ रहेंगे, जब तक सोवियत संघ के साथ दूसरे देश इसी तरह के सम्बन्ध बनाये रखेंगे और जब तक वे हमारे देश के हितों का उल्लघंन नहीं करेंगे।"

9 फरवरी 1946 को अपने निर्वाचकों के समक्ष बोलते हुए, उन्होंने कहा था : "यह सोचना गलत होगा कि दूसरा विश्वयुद्ध एक आकस्मिक घटना या किसी खास राजनीतिज्ञ की गलतियों का परिणाम था। नि:सन्देह, गलतियाँ तो तमाम की गयी थीं। पर वास्तव में, युद्ध उन संसारव्यापी और आर्थिक और राजनीतिक शक्तियों के विकास का लाजिमी नतीजा था, जो आधुनिक एकाधिकारवादी पूँजीवाद के आधार पर विकसित हो रही थीं।... असलियत यह है कि पूँजीवादी देशों के असमान विकास के फलस्वरूप समय-समय पर, बहुधा पूँजीवादी संसार की व्यवस्था के सन्तुलन में हिंसापूर्ण गड़बड़ियाँ होने लगती हैं।... इसका नतीजा होता है - पूँजीवादी संसार का दो शत्रु खेमों में बँट जाना और उनके बीच युद्ध।... इस प्रकार, पहला विश्वयुद्ध (सन 1914-18) संसारव्यापी पूँजीवादी व्यवस्था के पहले आर्थिक संकट का परिणाम था और दूसरा विश्वयुद्ध (सन 1939-45) उसके एक दूसरे आर्थिक संकट का।... इसका यह अर्थ नहीं है कि दूसरा विश्वयुद्ध पहले युद्ध की बिल्कुल एक कापी ही था।"...

हर कदम पर वह साम्राज्यवादी युद्धखोरों को पर्दाफाश करते गये। 13 मार्च, 1946 को चर्चिल की फुल्टन स्पीच के बारे में, स्तालिन ने 'प्राव्दा' के प्रतिनिधि के उत्तर में कहा था : "मैं उसे एक खतरनाक कारनामा मानता हूँ, जिसका नियोजित अर्थ है - मित्र शक्तियों में फूट के बीज बोना और उनके साहकार्य को रोकना।... ध्यान देने की एक बात यह है कि इस सिलसिले में मि. चर्चिल और उनके दोस्तों तथा हिटलर और उसके दोस्तों में बड़ी समानता है!.. लेकिन, भीषण युद्ध के पाँच सालों के दौरान में, राष्ट्रों ने अपनी आजादी और अपनी स्वतन्त्रता की खातिर ही अपना खून बहाया था, इसलिए नहीं कि हिटलरों के बजाय चर्चिलों का आधिपत्य कायम हो जाये। इसलिए, यह कतई मुमकिन है कि गैरअंग्रेजी भाषा-भाषी राष्ट्र जो दुनिया की जनसंख्या के बहुमत में हैं, एक नयी गुलामी के सामने सिर नवाने को राजी नहीं होंगे।... यह बिल्कुल साफ है

कि मि. चर्चिल की यह स्थिति ब्रिटेन और सोवियत संघ के बीच हुई मैत्रीपूर्ण सन्धि से मेल नहीं रखती। ...सन्धि की अवधि काल के बढ़ाये जाने का कोई मतलब नहीं होता, यदि दोनों में से एक सन्धि का उल्लंघन करता है और उसे कोई मान्यता ही नहीं देता।... मैं नहीं समझता कि दूसरे विश्वयुद्ध के बाद चर्चिल और उसके दोस्त लोग पूर्वी यूरोप के खिलाफ एक नया सशस्त्र प्रयाण संगठित करने में सफल हो सकेंगे या नहीं। लेकिन, यदि वह सफल भी हो गये, हालाँकि उसकी अधिक सम्भावना नहीं है क्योंकि लाखों–लाख साधारण मनुष्य शान्ति के हितों की रक्षा के लिए कटिबद्ध हैं, तो यह विश्वासपूर्वक कहा जा सकता है कि वह कुचल दिये जायेंगे, ठीक उसी तरह जैसे वह 26 वर्षों पहले एक बार कुचल दिये गये थे।

22 मार्च 1946 को एडी गिलमोर–एसोसियेटेड प्रेस के प्रतिनिधि से मुलाकात करते समय राष्ट्र संघ के बारे में उसके एक प्रश्न के उत्तर में, स्तालिन ने कहा था : मैं संयुक्त राष्ट्र संघ को बड़ा महत्व देता हूँ, इसलिए कि वह शान्ति और अन्तरराष्ट्रीय सुरक्षा कायम रखने का एक गम्भीर साधन है।... यदि संयुक्त राष्ट्र संघ भविष्य में भी समानता के अधिकार को कायम रखने में सफल रहा, तो निःसन्देह ही वह विश्वव्यापी शान्ति और सुरक्षा की गारण्टी करने में एक बड़ी क्रियात्मक भूमिका अदा कर सकेगा। यह जरूरी है कि जनता और राज्यों के शासक नये युद्ध के प्रचारकों के खिलाफ बड़े पैमाने पर एक विरोधी प्रचार का संगठन करें, साथ ही शान्ति कायम रखने के लिए प्रयास करें।...

एक बार फिर सोवियत संघ की वैदेशिक नीति को स्पष्ट करते हुए लाल सेना के नाम अपने 1 मई सन 1946 के आदेश में, स्तालिन ने कहा था : "समूचे संसार को न सिर्फ सोवियत संघ की शक्ति, बल्कि सभी जगहों की जनता की समानता की मान्यता और उनकी आजादी तथा स्वतन्त्र सत्ता की भावना के आदर पर आधारित सोवियत संघ की नीति की विशेषता देखने और समझने का एक मौका मिल चुका है। अब इसमें सन्देह करने की कोई गुंजाइश ही नहीं है कि भविष्य में भी सोवियत संघ अपनी नीति शान्ति और सुरक्षा की नीति, तमाम जनता की समानता और मित्रता की नीति के प्रति वफादार रहेगा।"

24 सितम्बर 1946 को 'लन्दन सण्डे टाइम्स' के संवाददाता एलेक्जेण्डर बर्थ ने उनसे 'नये युद्ध' के खतरे के बारे में कुछ सवाल किये थे। स्तालिन ने परिस्थिति का गहरा विवेचन करते हुए, पूरी समस्या का एक–एक धागा अलग–अलग निकालकर रख दिया था : "मैं एक 'नये युद्ध' के वास्तविक खतरे में यकीन नहीं करता। जो भी 'नये युद्ध' के बारे में शोरगुल मचा रहे हैं, उनमें कुछ सैनिक राजनीतिक गुप्तचर और नागरिकों में से कुछ उनके पिछलग्गू हैं।..."

उनको इस शोरगुल की जरूरत इसलिए थी कि कुछ अपने दलाल दूसरे देशों के शासकों को भड़काकर अपने देश के शासकों के लिए भारी सुविधाएँ प्राप्त करने, युद्धकालीन बजट को कायम रखने और फौजों को भंग न करके बेकारीन फैलने देने में उन्हें इससे सहायता मिलती है। आगे चलकर, स्तालिन ने और भी स्पष्टतया कहा था कि आज जो युद्ध के बारे में शोरगुल हो रहा है, उसमें और 'नये युद्ध' के एक वास्तविक खतरे में, जो आज नहीं है, साफ फर्क करना चाहिए। उसी मुलाकात में, उन्होंने एटम बम के बारे में कहा था : "कुछ राजनीतिज्ञ जानबूझकर भी एटम बम को जितनी अहम शक्ति सोचते हैं, मैं उसमें यकीन नहीं करता। एटम बम दुर्बल हृदयों को धमकाने के मतलब के हैं, लेकिन वे युद्ध का परिणाम निश्चित नहीं कर सकते। एटम बम इसके लिए नाकाफी हैं। हाँ, एटम बम के रहस्य का एकाधिकारी स्वामित्व एक धमकी अवश्य पैदा करता है, लेकिन उसके खिलाफ भी दो इलाज मौजूद हैं – (अ) एटम बम का एकाधिकारी स्वामित्व अधिक दिनों तक नहीं रह सकता; (ब) एटम बम का प्रयोग निषिद्ध कर दिया जायेगा।"

और महान स्तालिन ने फिर दृढ़विश्वास से घोषित किया था : "मैं सहयोग की 'शान्तिपूर्ण' सम्भावनाओं में सन्देह नहीं करता। कम होने के बजाय, वह बढ़ भी सकती है। 'एक देश में कम्युनिज्म' कतई मुमकिन है, खास तौर पर सोवियत संघ जैसे देश में।"

28 अक्टूबर 1946 को 'यूनाइटेड प्रेस' के अध्यक्ष ह्यू बैली से स्तालिन ने कहा था कि अणु शक्ति को नियन्त्रित करने का सबसे अच्छा तरीका है – "अन्तरराष्ट्रीय नियन्त्रण और यह जरूरी भी है।"

21 दिसम्बर 1946 को अमरीकी प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट के पुत्र इलियट रूजवेल्ट के प्रश्नों के उत्तर में, कहा था : "हाँ, कतई। यह (दोनों व्यवस्थाओं का शान्तिपूर्वक रहना) सम्भव ही नहीं है, बुद्धिमत्तापूर्ण भी है और हासिल भी किया जा सकता है। युद्ध के कड़े दिनों में सरकारों के बीच के भेदों ने हमारे दोनों राष्ट्रों के एक–दूसरे से मिलकर अपने दुश्मन को शिकस्त देने में कोई रुकावट नहीं डाली। इसलिए, अब... मैं सोचता हूँ कि एक ही नहीं, कई मीटिंगें (तीन बड़ों की) होनी चाहिए। उनसे बड़ा लाभ होगा।... विश्व के व्यापार का प्रसार हमारे दोनों देशों के बीच अच्छे सम्बन्धों के विकास के लिए कई क्षेत्रों में हितकारक होगा।"

9 अप्रैल 1947 को हैरोल्ड स्टासेन से मुलाकात के दौरान में, स्तालिन ने कहा था : "जहाँ तक सहयोग का सवाल है, उनके (दोनों व्यवस्थाओं के) बीच का फर्क महत्वपूर्ण नहीं है। जर्मनी और अमरीका की आर्थिक व्यवस्थाएँ समान ही

थीं, फिर भी दोनों में लड़ाई ठन गयी थी। अमरीका और सोवियत संघ की व्यवस्थाएँ भिन्न-भिन्न हैं, फिर भी दोनों ने एक-दूसरे के खिलाफ लड़ाई नहीं छेड़ी; और सोवियत संघ उसका कोई इरादा भी नहीं रखता।... सहयोग की सम्भावना तो हमेशा ही रहती है, लेकिन सहयोग करने की इच्छा हमेशा मौजूद नहीं रहती। यदि एक पक्ष सहयोग करने की इच्छा नहीं रखता तो नतीजा होगा - टकराव, युद्ध।... हम अपनी व्यवस्थाओं की परस्पर आलोचना न करें। प्रत्येक को यह अधिकार है कि वह जो भी व्यवस्था चाहे, कायम रखे। कौन-सी अच्छी है, यह इतिहास बता देगा। हमें जनता द्वारा चुनी हुई व्यवस्थाओं की इज्जत करनी चाहिए।... हमें इस ऐतिहासिक सत्य से बात शुरू करनी चाहिए कि संसार में जनता द्वारा समर्थित दो व्यवस्थाएँ हैं। सिर्फ इसी बिना पर सहयोग सम्भव है।"

17 मई 1948 को हैनरी वालेस की खुली चिट्ठी के जवाब में, उन्होंने फिर घोषित किया : "सोवियत संघ की सरकार का यह यकीन है कि आर्थिक व्यवस्थाओं और सैद्धान्तिक फर्कों के बावजूद इन दोनों व्यवस्थाओं का एक साथ रहना और सोवियत संघ तथा अमरीका के बीच के मतभेदों का शान्तिपूर्वक निपटारा करना सम्भव ही नहीं, बल्कि विश्वव्यापी शान्ति के हित में परम आवश्यक भी है।"

27 जनवरी 1949 को 'इण्टरनेशनल न्यूज सर्विस' के प्रतिनिधि किंगस्बरी स्मिथ के साथ मुलाकात में, कहा था : "सोवियत सरकार एक ऐसी घोषणा निकालने के बारे में विचार करने को तैयार है (कि अमरीका और सोवियत संघ दोनों एक-दूसरे के खिलाफ युद्ध नहीं छेड़ना चाहते)... स्वभावतः सोवियत संघ की सरकार ऐसे शान्ति समझौते को कार्यान्वित करने के लिए कदम उठाने में अमरीकी सरकार के साथ सहयोग कर सकती है, जिसके द्वारा धीरे-धीरे निःशस्त्रीकरण हो सके।... (तीन बड़ों की) मीटिंग के लिए, मैं पहले ही कह चुका हूँ, कोई आपत्ति नहीं है।"

इस प्रकार, स्तालिन सदैव ही शान्ति का हाथ बढ़ाते रहे, पर साम्राज्यवादियों ने तीसरा विश्वयुद्ध छेड़ने के लिए सोवियत संघ के सामने हर प्रकार के उकसावे पेश किये, मैत्रीपूर्ण सन्धियों को तोड़ा, गन्दा और भ्रामक प्रचार किया, शान्ति को खतरे में डालने के लिए ही शान्ति की बातें चलाने का पाखण्ड किया। पर स्तालिनीय पथ, चाहे वह समाजवाद के निर्माण का हो या विश्व-शान्ति का, सदैव ही आम जनता के लिए, आम जनता को ध्यान में रखकर ही तय किया जाता है; चन्द सिरफिरे निहित स्वार्थी दलाल शासकों या बुद्धिजीवियों के कुछ करने या ना करने पर इसका दारोमदार नहीं रहता। वह किसी राज्य के चन्द शासकों के चेहरों और उनकी वकृताओं में उस राज्य की नीति नहीं ढूँढ़ा करते

थे। उनकी अद्वितीय मार्क्सवादी दृष्टि से कुछ भी छिपा नहीं रहता था। वे सिखाते थे कि जनता की शक्ति अजेय है और जिस काम को जनता अपने हाथों में ले लेती है, उसे सम्भव होने से ब्रह्मा भी नहीं रोक सकता।

इसीलिए 16 फरवरी 1951 को 'प्राव्दा' के प्रतिनिधि के प्रश्नों का उत्तर देते हुए, उन्होंने कहा था : "नहीं! कम-से-कम मौजूदा समय के लिए तो नया विश्वयुद्ध अवश्यम्भावी नहीं माना जा सकता।... यह सही है कि अमरीका में, ब्रिटेन में और फ्रांस में भी आक्रमणकारी शक्तियाँ हैं, जो नये युद्ध की पिपासित हैं। उनको अतिरिक्त मुनाफों के लिए, दूसरे देशों को लूटने-खसोटने के लिए युद्ध की जरूरत है।... वे, यही आक्रमणकारी शक्तियाँ, प्रतिक्रियावादी सरकारों पर कब्जा जमाये रहती हैं ओर उनको चलाती हैं। पर साथ ही, वे अपनी उस जनता से खौफ खाती हैं, जो एक नया युद्ध नहीं चाहती और शान्ति की रक्षा के पक्ष में है। इसीलिए, जनता को झूठ में जकड़ देने के लिए, वे उसको धोखा देने के लिए और नये युद्ध को रक्षणात्मक तथा शान्ति-प्रेमी देशों की शान्तिपूर्ण नीति को आक्रमणकारी बताने के लिए, प्रतिक्रियावादी सरकारों का उपयोग करने की कोशिश कर रहे हैं।...

"इन आक्रमणकारी और शान्ति-प्रेमी शक्तियों के बीच चलने वाले इस संघर्ष का फल क्या होगा? यदि तमाम जनता शान्ति की रक्षा के ध्येय को अपने हाथों में ले लेगी और अन्त तक उसकी रक्षा करेगी, तो शक्ति कायम रहेगी और सुदृढ़ होगी। यदि जंगबाज आम जनता को झुठलाने, धोखा देने और नये युद्ध में खींच लाने में सफल हो जाते हैं, तभी युद्ध अवश्यम्भावी बन सकता है।

"इसीलिए, जंगबाजों की मुजरिमाना साजिशों का भण्डाफोड़ करने तथा शान्ति की रक्षा करने के लिए, आज एक विशाल आन्दोलन की परम आवश्यकता है।"

यही नहीं, शान्ति आन्दोलन के बीच उठने वाली भ्रान्तियों को भी स्तालिन ने नजरअन्दाज नहीं किया। फरवरी 1952 को उन्होंने अपनी अन्तिम महान पुस्तक 'सोवियत संघ में समाजवाद की आर्थिक समस्याएँ' (पृष्ठ 39) में शान्ति आन्दोलन के क्षेत्र और ध्येय को पूरी तौर से स्पष्ट कर दिया था : "...इससे नतीजा निकलता है कि पूँजीवादी देशों के बीच युद्धों की अनिवार्यता कायम रहती है। कहा जाता है कि लेनिन की इस स्थापना को, कि साम्राज्यवाद लाजिमी तौर से युद्ध को जन्म देता है, अब पुरानी पड़ चुकी समझना चाहिए; क्योंकि शान्ति की रक्षा के लिए और नये विश्वयुद्ध के खिलाफ ताकतवर जन-शक्तियाँ सामने आ चुकी हैं। यह सत्य नहीं है।

"मौजूदा शान्ति-आन्दोलन का उद्देश्य है कि शान्ति की हिफाजत के लिए नये विश्वयुद्ध को रोकने के लिए, आम जनता को जगाया जाये। इसलिए, इस

आन्दोलन का उद्देश्य पूँजीवाद को खत्म करना नहीं है – वह अपने को शान्ति कायम रखने के जनवादी लक्ष्य तक सीमित रखता है। इस लिहाज से मौजूदा शान्ति आन्दोलन पहले महायुद्ध के वक्त साम्राज्यवादी युद्ध को गृह–युद्ध में बदलने के लिए चलाये गये आन्दोलन से भिन्न है, क्योंकि वह आन्दोलन और आगे बढ़ा था और समाजवादी उद्देश्यों को लेकर चला था।

"यह मुमकिन है कि परिस्थितियों के किसी निश्चित योग में, शान्ति के लिए संघर्ष जहाँ–तहाँ समाजवाद के लिए संघर्ष में विकसित हो जाये। लेकिन, तब वह आज का शान्ति–आन्दोलन न रह जायेगा; वह पूँजीवाद को परास्त करने का आन्दोलन होगा। जिस बात की सबसे ज्यादा सम्भावना है, वह यह है कि मौजूदा शान्ति–आन्दोलन, शान्ति की रक्षा के लिए एक आन्दोलन की हैसियत से, अगर वह कामयाब होगा, तो किसी खास लड़ाई को रोक लेगा, उसे अस्थायी रूप से मुल्तवी करा देगा, अस्थायी रूप से किसी खास शान्ति को कायम रखेगा, किसी जंगबाज सरकार को पदच्युत कराके उसकी जगह दूसरी सरकार बिठा देगा, जो अस्थायी रूप से शान्ति कायम रखने के लिए तैयार हो। अवश्य ही, यह अच्छा होगा। बल्कि बहुत अच्छा होगा। लेकिन तो भी, आम तौर से पूँजीवादी देशों के बीच युद्धों की अनिवार्यता खत्म करने के लिए वह काफी न होगा। वह इसलिए काफी न होगा कि शान्ति आन्दोलन की तमाम सफलताओं के बावजूद साम्राज्यवाद कायम रहेगा, चालू रहेगा – और फलतः युद्धों की अनिवार्यता भी बनी रहेगी।

"युद्ध की अनिवार्यता को खत्म करने के लिए, यह जरूरी है कि साम्राज्यवाद को ही खत्म कर दिया जाये।"

इस तरह महान स्तालिन ने शान्ति के विरुद्ध चलने वाले सम्राज्यवादी जंगखोरों के कुत्सित प्रचार का सदैव के लिए क्रियाकर्म कर दिया। इस तरह महान स्तालिन ने नेक इरादों वाले समूचे मानवों के लिए शान्ति–आन्दोलन के द्वार खोल दिये और शान्ति–आन्दोलन की सम्भावना तथा उसकी व्यापकता का अधिकतम विकास कर दिया है। यह बिल्कुल स्पष्ट कर दिया है कि दोनों व्यवस्थाओं का शान्तिपूर्वक एक साथ रहना मानवता के हित में है।

शान्ति प्रयत्नों का समर्थन

इतना ही नहीं, समूची मानव जाति के लिए शान्ति के सिद्धान्तों का विकास करने और उसके सुदृढ़ बनाने के लिए अनथक प्रयास करने के साथ ही साथ, जहाँ–जहाँ, जब–जब भी शान्ति की स्थापना के लिए किसी ने प्रयत्न किया, तो उसे महान स्तालिन ने आगे बढ़कर अपना समर्थन भी दिया।

13 अक्टूबर 1949 को उन्होंने जर्मन जनतान्त्रिक प्रजातन्त्र के अध्यक्ष और प्रधानमन्त्री को बधाई भेजते हुए कहा था : "...इस प्रकार एक संयुक्त, जनतान्त्रिक और शान्ति-प्रेमी जर्मनी की नींव डालकर, आप साथ-ही-साथ सारे यूरोप के लिए एक बड़ा कार्य कर रहे हैं - उसकी स्थायी शान्ति की गारण्टी कर रहे हैं। इस नये और वैभवशाली पथ पर, मैं आपकी सफलता की कामना करता हूँ।"

15 जुलाई 1950 को उन्होंने अपने देश के प्रधानमन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू को कोरिया में शान्ति की स्थापना के लिए उनके प्रयत्नों पर बधाई भेजी थी : "शान्ति के लिए आपकी पहल का मैं स्वागत करता हूँ।..."

1 अक्टूबर 1951 को उन्होंने अध्यक्ष माओ-त्से-तुङ को चीनी जनतन्त्र की वर्षगाँठ पर अभिनन्दन भेजते हुए, कहा था : ..."चीन के जनवादी जनतन्त्र और सोवियत संघ की महान मित्रता एक ऐसी मित्रता हो जो सुदूर पूर्व में शान्ति और सुरक्षा की सुदृढ़ गारण्टी बने; और यह दृढ़तर ही होती जाये!"

शान्ति पुरस्कार

इस समर्थन के साथ-ही-साथ महान स्तालिन के शान्ति-प्रयत्नों के सम्मान में उनकी 70वीं वर्षगाँठ से, सोवियत संघ की सुप्रीम सोवियत के अध्यक्षमण्डल ने 20 दिसम्बर 1949 को राज्यों के बीच शान्ति सुदृढ़ करने के लिए, "अन्तरराष्ट्रीय शान्ति पुरस्कार" देना शुरू किये हैं।

हर साल 5 से लेकर 10 तक पुरस्कार दिये जाते हैं। यह बिना किसी भेदभाव के, संसार के किसी भी नागरिक को मिल सकते हैं, जिसने भी संसार में शान्ति की सुरक्षा और स्थापना के लिए बहुमूल्य काम किया हो। पुरस्कार-विजेता को एक उपाधि-पत्र, स्तालिन के चित्र से अंकित एक स्वर्ण का तमगा और एक लाख रूबल का नकद इनाम दिया जाता है।

अभी तक जिनको ये पुरस्कार मिल चुके हैं, उनके नाम इस प्रकार हैं : सन! 1950 में - फ्रेडरिक जोलियो क्यूरी (वैज्ञानिक फ्रांस), मादाम सन यात सेन (चीन), ह्यूलेट जॉनसन-डीन ऑफ कैण्टरबरी (इंग्लैण्ड), यूजेन कॉटन (फ्रांस) विशप आर्थर मोल्टन (अमरीका), पाक देन एइ (कोरिया) और हैरीबेरितो जारा (मैक्सिको); सन 1951 में - को मोजो (चीन), पेट्रो नैनी (इटली), याकू ओयामा (जापान), मोनिका फैल्टन (ब्रिटेन), अन्ना सेवर्स (जर्मनी), जार्ज एमाडो (ब्राजील); सन 1952 में - डा. सैफुद्दीन किचलू (भारत), वेइस फार्ज (फ्रांस), पॉल राबसन (अमरीका), एलिसा ब्रॉको (ब्राजील), जॉनेन्स बेचर (जर्मन जनतन्त्र), जेम्स एण्डी कॉट (कनाडा) और इलिया इहरेनबुर्ग (सोवियत संघ)।

शान्ति का कानून

महान स्तालिन की प्रेरणा से, सोवियत संघ की सुप्रीम सोवियत ने 12 मार्च 1951 को शान्ति की रक्षा के लिए यह कानून जारी किया था :

"1. युद्ध की लिए प्रचार, वह चाहे किसी भी रूप में किया जाये, शान्ति के ध्येय को हानि पहुँचाता है और एक नये युद्ध का खतरा पैदा करता है और इसी कारण वह मानवता के प्रति एक भयंकरतम अपराध है।

"2. युद्ध के लिए प्रचार करने के दोषी लोगों पर जघन्यतम अपराधी की तरह मुकदमा चलाया जायेगा।" यह है – शान्ति और निर्माण का स्तालिनीय पथ!

मानवता के भावी पथ की रूपरेखा

कम्युनिज़्म के प्रगति-पथ पर बढ़ती हुई समूची मानवता के सामने जो-जो मुख्य समस्याएँ उठती जाती थीं, उन्हें महान स्तालिन हल करते जाते थे। अद्वितीय सेनानी की भाँति, वह हर मोर्चे पर सफलता प्राप्त करते जाते थे।

सन 1899 में लेनिन ने कहा था : "हम कभी भी मार्क्स के सिद्धान्त को अपने-आप में पूर्ण और अनुल्लंघनीय नहीं मानते। इसके विपरीत, हमारा विश्वास है कि इस सिद्धान्त ने उस विज्ञान की नींव डाल दी है जिसके आधार पर समाजवादियों को, यदि वह जिन्दगी से पिछड़ना नहीं चाहते तो, हर दिशा में अनवरत रचना करते जाना चाहिए।"

"हर दिशा में अनवरत रचना करना" – ठीक यही है जो महान स्तालिन ने किया है और इसीलिए वह सदैव जिन्दगी की राह का निर्देशन ही करते रहे, कभी भी पिछड़े नहीं थे। 65 वर्षों की आयु होने पर भी, उनका अदम्य उत्साह वैसा ही था। वह विश्व की हर महत्वपूर्ण समस्या पर सोचते थे।

4. भाषाशास्त्र का प्रश्न : भाषाशास्त्र राजनीति और अर्थनीति से अलग विषय समझा जाता है और उसकी तरफ स्तालिन का ध्यान जाना उतना स्वाभविक न था। लेकिन क्रान्ति के बाद, इस क्षेत्र में इतनी धाँधली चली कि प्रथम श्रेणी के भाषाविदों और भाषाशास्त्रियों को पैदा करने का श्रेय होने पर भी, रूस में इसके विषय में एक तरह का गतिरोध-सा आ गया था। न. ई. मार एक बहुत उच्चकोटि के भाषाशास्त्री थे, जो जन्मना गुर्जी थे। और योग्यताओं के रहते हुए भी, प्रतिभाशाली पुरुषों में पायी जानेवाली एक सनक उनके सिर पर भी सवार थी। वह चाहते थे कि भाषाशास्त्र के क्षेत्र में द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का प्रयोग करके एक नयी खोज और देन का श्रेय लें। भाषाशास्त्र के क्षेत्र में वह किस तरह द्वन्द्वात्मक भौतिक दर्शन का प्रयोग कर रहे हैं, इसे ऊपर के नेताओं

ने नहीं देखा और टुटपुँजिये भाषाशास्त्री – मार – की जयजयकार करके मनमानी करते रहे। इन पँक्तियों के लेखक का अपना अनुभव है कि डाक्टर श्चेर्वात्स्की पश्चिम में संस्कृत और भारतीय दर्शन के 'न भूतो न भविष्यति' जैसे अद्वितीय विद्वान थे; लेकिन वह भी मार के विरुद्ध एक शब्द भी बोलने का साहस नहीं रखते थे। वस्तुत: वह अपने विषय में लीन रहने वाले विद्वान थे। राजनीति में वह कोई दखल नहीं देना चाहते थे। मार की महिमा सुनकर, इन पंक्तियों के लेखक ने अपने सहयोगियों द्वारा प्रस्तुत साहित्य पढ़ने के बाद अपने विचारों को स्पष्ट प्रकट किया कि यह कोई विज्ञान नहीं हैं, बल्कि रहस्यवाद है। इस पर मेरे सहयोगियों ने "चुप-चुप!" कहा। इसी से मालूम होगा कि भाषा-विज्ञान के क्षेत्र में कितनी लबड़धोंधों चल रही थी और लोगों को खुलकर बहस करने का भी साहस नहीं होता था।

देर से ही सही, किन्तु अन्त में, सन 1950 में इस ओर स्तालिन का ध्यान खींचा गया। और, उन्होंने अपनी स्वाभविक नम्रता प्रदर्शित करते हुए, इस विषय में जो बातें कहीं और मार के जाल से भाषा-विज्ञान को बाहर निकाला, वह इस क्षेत्र की एक बहुत महत्वपूर्ण घटना है। स्तालिन के इस विषय के कुछ विचारों को उन्हीं के शब्दों में पढ़िए :

"नौजवान साथियों के एक दल ने मेरे सामने यह प्रस्ताव रखा है कि भाषाशास्त्र से सम्बन्धित बातों – खासकर भाषाशास्त्र से सम्बन्धित मार्क्सवाद की समस्याओं – के बारे में मैं अपनी राय पत्रों में प्रकट करूँ। मैं भाषाशास्त्री नहीं हूँ, इसलिए मैं साथियों को पूर्ण रूप से सन्तुष्ट नहीं कर सकता। लेकिन, जहाँ तक भाषाशास्त्र के सम्बन्ध में मार्क्सवाद की बात है, उससे भी दूसरे समाज-विज्ञानों की तरह मेरा सीधा सम्बन्ध है। यही वजह है कि मैं साथियों के पूछे हुए कई प्रश्नों का जवाब देने के लिए राजी हो गया हूँ।...

"समाज के विकास की निश्चित मंजिलों में, उसकी आर्थिक व्यवस्था उसकी नींव का काम देती है। उसका ऊपरी ढाँचा समाज के कानून, राजनीति, धर्म, दर्शन-सम्बन्धी विचारों और उनके अनुरूप राजनीतिक, कानूनी और दूसरी संस्थाओं का होता है। हर नींव का उसके अनुरूप ही अपना ऊपरी ढाँचा होता है।... आधार को बदल या खत्म कर दिया जाये तो उसके बाद, उसका ऊपरी ढाँचा भी बदल या खत्म हो जाता है। इस मामले में भाषा ऊपरी ढाँचे से मौलिक रूप में भिन्नता रखती है; उदाहरणार्थ रूसी समाज और रूसी भाषा को ले लीजिए। पिछले तीस वर्षों के भीतर, पुरानी पूँजीवादी नींव मिटा दी गयी और उसकी जगह एक नयी समाजवादी नींव तैयार की गयी है। इसी के अनुसार, पूँजीवाद आधार के ऊपरी ढाँचे को मिटाकर समाजवादी आधार के अनुसार, एक

नये ऊपरी ढाँचे की सृष्टि की गयी है। फलतः पुरानी राजनीतिक, कानून-सम्बन्धी तथा दूसरी संस्थाओं का स्थान नयी समाजवादी संस्थाओं ने लिया है। लेकिन इसके होते हुए भी, रूसी भाषा मूलतः वैसी ही बनी रही जैसी कि वह अक्टूबर की उथल-पुथल के पहले थी।... इस काल में, रूसी भाषा में क्या परिवर्तन हआ है? एक हद तक रूसी भाषा का शब्दकोश बदल गया है; ... जहाँ तक रूसी भाषा के बुनियादी शब्दकोश और भाषा के आधारभूत व्याकरण के ढाँचे का सम्बन्ध है, पूँजीवादी नींव के नष्ट हो जाने के बाद, उनकी जगह एक नये आधारभूत शब्दकोश और व्याकरण के नये ढाँचे के आ जाने की बात तो दूर रही, बिना किसी गम्भीर परिवर्तन के आधुनिक रूसी भाषा के आधार ज्यों-के-त्यों बने रहे हैं।"

उन्होंने आगे कहा : "...उसकी (भाषा की) उत्पत्ति समाज के सदियों के इतिहास के पूरे युग से पैदा होती है। उसकी सृष्टि किसी अकेले वर्ग द्वारा नहीं बल्कि पूरे समाज द्वारा, समाज के सारे वर्गों द्वारा, सैकड़ों पीढ़ियों की कोशिशों द्वारा होती है... इस बात को देखते हुए, भाषा का काम जनता के बीच बातचीत और सम्बन्ध स्थापित करने के साधन के रूप में दूसरे वर्गों को नुकसान पहुँचाकर किसी एक वर्ग की सेवा करना नहीं, बल्कि उसे समान रूप से सारे समाज और उसके सारे वर्गों की सेवा करनी होती है।... (जीवन की) आवश्यकताओं को प्रत्यक्षतः प्रतिबिम्बित करने वाली भाषा अपने शब्दकोश में नये शब्दों को जोड़ती तथा अपने व्याकरण के ढंग को सुधारती जाती है। इस तरह : (1) कोई भी मार्क्सवादी भाषा को नींव के ऊपर का ऊपरी ढाँचा नहीं मान सकता, और (2) भाषा का ऊपरी ढाँचे के साथ घपला करना एक भारी गलती है।

"...वे (कुछ साथी) कहते हैं कि समाज बँटा हुआ है, अब एक संयुक्त समाज नहीं, बल्कि सिर्फ वर्ग हैं। इसलिए समाज के लिए एक सम्मिलित भाषा, एक जातीय भाषा की जरूरत नहीं है। समाज बँटा होने से अब जनता की कोई जातीय भाषा नहीं रह गयी है। तो फिर रह क्या जाता है? वर्ग और वर्ग-भाषाएँ ही रह जाती हैं। यह स्पष्ट है कि प्रत्येक वर्ग-भाषा का अपना वर्ग-व्याकरण होगा – अर्थात् एक सर्वहारा व्याकरण और दूसरा पूँजीवादी व्याकरण पर, दुनिया में ऐसे व्याकरणों का कहीं भी कोई अस्तित्व नहीं देखा गया। तो भी, इन साथियों को कोई परेशानी नहीं होती। वे विश्वास रखते हैं कि ऐसे व्याकरण पैदा होंगे। एक समय हमारे भीतर ऐसे मार्क्सवादी भी थे, जो जोर देकर कहते थे कि अक्टूबर क्रान्ति के बाद जो रेले रह गयी थीं, वे पूँजीवादी थीं जिनका इस्तेमाल करना हम मार्क्सवादियों के लिए अच्छा नहीं। उन्हें खत्म करके, हमें नयी सर्वहारा-रेलों का निर्माण करना चाहिए।... हमारे साथी यहाँ गलती करते हैं। वह संस्कृति और

भाषा के भेदों को नहीं देखते और न इस बात को समझते हैं कि समाज के विकास के हर नये काल के साथ विषय–वस्तु की दृष्टि से संस्कृति बदलती है, लेकिन भाषा बहुत–से कालों तक मौलिक आधार के रूप में वही बनी रहती है तथा नयी और पुरानी दोनों संस्कृतियों की समान रूप से सेवा करती है। इस प्रकार (1) बातचीत और सामाजिक सम्बन्ध के रूप में, भाषा सदा ही समाज के लिए एक जैसी उसके व्यक्तियों की सम्मिलित भाषा रहती आयी हैं और अब भी है। (2) बोलियाँ और लोकोत्तियाँ एक निश्चित प्रकार के सभी लोगों की सम्मिलित भाषा के अस्तित्व से इन्कार नहीं, बल्कि उसे स्वीकार करती हैं कि वे किस भाषा की शाखाएँ हैं और किसके अधीन हैं। (3) वर्ग–स्वभाव वाला भाषा का सूत्र गलत और अमार्क्सवादी है।"...

भाषा की कुछ विशेषताओं के बारे में बताते हुए, स्तालिन ने आगे कहा : "भाषा एक ऐसी सामाजिक वस्तु है, जो समाज के अस्तित्व के सम्पूर्ण काल में बराबर (एक–सा) काम करती रहती है। समाज के जन्म के साथ उसका जन्म और विकास के साथ उसका विकास होता रहता है। समाज की मौत के साथ, वह भी खत्म हो जाती है। समाज के बाहर भाषा का कोई अस्तित्व नहीं है। यही कारण है, जो एक भाषा और उसके नियमों को केवल तभी समझा जा सकता है जब कि उसका अध्ययन समाज के इतिहास के साथ, उस जनता के इतिहास से उसके अटूट सम्बन्ध को देखते हुए ही किया जाये, जिस जनता की वह भाषा है और जो जनता उस भाषा की संस्थापक और उसे आगे ले जाने वाली है।..."

विरोधी–समागम द्वारा एक बिल्कुल नयी भाषा के पैदा होने के मार के मत का खण्डन करते हुए, स्तालिन ने आगे कहा : "...कहा जाता है कि इतिहास में भाषाओं के जो पारस्परिक समागम हुए हैं, उनसे हमें यह मान लेना पड़ता है कि इस समागम की क्रिया में एक नयी भाषा एकाएक फूट निकली और पुराने गुणों से एक नये गुण का अचानक आ जाना एक नयी भाषा के जन्म का कारण बना। यह बात बिल्कुल गलत है। भाषाओं के समागम को एक निर्णायक प्रभाव डालने वाला ऐसा अकेला काम नहीं माना जा सकता, जिसका फल चन्द ही वर्षों में देखा जा सके। भाषाओं का समागम एक लम्बी क्रिया है, जो सैकड़ों वर्षों तक चलती है। इस प्रकार, यहाँ पर विस्फोटों की कोई बात नहीं की जा सकती। इसके अतिरिक्त, यह सोचना बिल्कुल ही गलत होगा कि दो भाषाओं के समागम के फलस्वरूप एक नयी, तीसरी भाषा पैदा हो जाती है – ऐसी भाषा जो समागम में आयीं दोनों भाषाओं के साथ कुछ भी मेल नहीं खाती अर्थात जो अपने गुण में उनमें से हर एक से भिन्न है। वस्तुतः समागम होने पर, हमेशा उन दोनों में से ही एक भाषा विजयी हो जाती है। वह अपने व्याकरण–सम्बन्धी ढाँचे और

आधारभूत शब्दकोश को बनाये रखती है, अपने विकास के आन्तरिक नियमों के अनुसार आगे बढ़ती जाती है, जबकि दूसरी भाषा धीरे-धीरे अपना गुण खोती हुई कालान्तर में लुप्त हो जाती है। इसलिए समागम किसी प्रकार की एक नयी तीसरी भाषा को पैदा नहीं करता बल्कि दोनों भाषाओं में से एक को ही बनाये रखता है, उसके व्याकरण-सम्बन्धी ढाँचे और शब्दकोश को कायम रखता है और उस भाषा को अपने विकास के आन्तरिक नियमों के अनुसार विकसित होने में समर्थ बनाता है। यह सच है कि इस प्रक्रिया के समय पराजित भाषा को नुकसान पहुँचकर विजयी भाषा के शब्द-भण्डार की कुछ पूर्ति होती है। लेकिन, ऐसा होने से भाषा कमजोर नहीं बल्कि उलटे मजबूत होती है।"

भाषाशास्त्र के सम्बन्ध में विचारों को खुलकर प्रकट करने में जो रुकावटें मार के हौवे ने पैदा कर दी थीं, उनको हटाते हुए, स्तालिन ने कहा : "इस बहस से जिस बात का खास तौर से पता चला है, वह है केन्द्र और प्रजातन्त्र - दोनों में भाषाशास्त्र की कमेटियों में जिस तरह का शासन चल रहा था, वह विज्ञान और वैज्ञानिकों के अनुकूल नहीं था। सोवियत भाषाशास्त्र की स्थिति के बारे में जरा-सी भी आलोचना करने की हल्की-से-हल्की कोशिश को भी प्रमुख भाषाशास्त्री मण्डलियाँ दमन करतीं, रोक देती थीं।... यह बात सभी मानते हैं कि विचारों के संघर्ष के बिना, स्वतन्त्र आलोचना के अभाव में कोई भी विज्ञान न विकसित हो सकता, न फूल-फल सकता है। लेकिन, यहाँ इस सर्वमान्य नियम को सबसे ज्यादा बेपरवाही के साथ उपेक्षित करके पैरों तले कुचला गया।... मार ने वर्ग-भाषा के बारे में एक ओर मिथ्या तथा अमार्क्सवादी विचार का सूत्रपात किया, जिसके द्वारा उसने अपने को भी गड़बड़ घोटाले में डाला और भाषाशास्त्र को भी। सोवियत भाषाओं को ऐसे मिथ्या सूत्र के आधार पर विकसित नहीं किया जा सकता, जो जनता और भाषाओं के इतिहास के पूरे युग के विरुद्ध है। न. ई. मार ने तुलनात्मक ऐतिहासिक शैली को आदर्शवादी बताकर, लम्बे-चौड़े शब्दाडम्बर के साथ दूषित ठहराया। किन्तु, यह कहना पड़ेगा कि तुलनात्मक ऐतिहासिक शैली अपनी कितनी ही गम्भीर कमजोरियों के होते हुए भी... मार के... तत्व विश्लेषण से कहीं बेहतर है।..."

भाषा और भाषाशास्त्र के सम्बन्ध में जिस तरह महान स्तालिन ने पथ-प्रदर्शन किया है, उससे यह भी मालूम हो जाता है कि हर विषय में उनका कितना वैज्ञानिक दृष्टिकोण रहता था। वह किसी भी बात में 'बाबा-वाक्यं प्रमाणं' के मानने के विरोधी थे और चाहते थे कि लोग 'वादे वादे जायेते तत्वबोध:' की सूक्ति पर ही अमल करें।

5. "सोवियत संघ में समाजवाद की आर्थिक समस्याएँ" : इस

महान पुस्तक का प्रकाशन सितम्बर, सन 1952 में, सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की ऐतिहासिक 19वीं कांग्रेस के एक माह पहले हुआ था। अर्थशास्त्र पर एक पाठ्य-पुस्तक के मसौदे और उसके बारे में होने वाली बहस के सिलसिले में, एक आलोचनात्मक टिप्पणी के रूप में स्तालिन ने इसकी रचना की थी।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी और सारी दुनिया की प्रगतिशील मानवता के सैद्धान्तिक विकास में इसका प्रकाशन एक महानतम महत्व की घटना है। यह सारी दुनिया की मेहनतकश जनता को समाज के विकास के नियमों के ज्ञान से लैस करती है; कम्युनिज़्म के निर्माण के पथ को प्रकाशित करती है। यह मार्क्सवाद के खजाने को एक महान देन है।

इस पुस्तक के प्रत्येक शब्द के पीछे पूँजीवादी शोषण के खिलाफ रूस के प्रारम्भिक मजदूर आन्दोलन से लेकर सोवियतों के रूप में मजदूर-किसानों-सैनिकों की पंचायतें बनाने तक, गृह-युद्ध की काली घटाओं से लेकर फासिस्टी दरिन्दों की पराजय तक और गृह-युद्ध के काल के अकाल से भूखों मरती हुई जनता के लिए अनाज हासिल करने से लेकर पाँच पंचवार्षिक योजनाओं के जरिये देश में समाजवाद के निर्माण करने तक का अतुलनीय अनुभव है। इस पुस्तक के प्रत्येक शब्द के पीछे संसार की समूची मेहनतकश जनता के आन्दोलन के नेतृत्व करने का अनुभव है। इस अनुभव को इस पुस्तक से जुदा नहीं किया जा सकता; उसी प्रकार जैसे इस पुस्तक को इस महान अनुभव से अलग करके नहीं देखा जा सकता। सोवियत संघ में समाजवाद के निर्माण के काम से यह अविभाज्य रूप में जुड़ी हुई है। यह बहुत महत्व की बात है। इसीलिए, स्तालिन की यह पुस्तक रचनात्मक मार्क्सवाद की श्रेष्ठतम मिसाल है।

प्राकृतिक और आर्थिक नियमों का फर्क

सोवियत संघ के विद्यार्थियों के लिए अर्थशास्त्र पर जो पुस्तक तैयार की जा रही थी, उसके मसौदे और उस मसौदे पर होने वाली बहस के दौरान में लोगों ने कुछ ऐसी दलीलें दीं, जैसेकि सोवियत संघ में आर्थिक नियमों को तबियत के मुताबिक बदला जा सकता है, ठीक उसी तरह जैसे एक सरकार अपने बनाये हुए कानूनों को जब चाहे रद्द करके नये कानून बना सकती है। जाहिर है कि इस समझ का नतीजा यही निकल सकता था कि सोवियत संघ में आर्थिक नियमों की कोई खास अहमियत नहीं है और उनका गहराई से अध्ययन करना भी जरूरी नहीं है। यह भी स्पष्ट है कि ऐसी समझ के लोग आर्थिक योजनाएँ बनाने के समय भी मनमाने ढंग से, अपनी कल्पना के आधार पर, योजनाएँ बनायेंगे और गलतियाँ करेंगे, जिनसे गड़बड़ी पैदा होगी। इसीलिए, स्तालिन ने आर्थिक नियमों

की समझदारी ठीक कर देना जरूरी समझा।

स्तालिन ने दिखाया है कि जैसे कुदरत के नियम होते हैं, वैसे ही समाज के भी नियम हुआ कहते हैं; जैसे कि प्रकृति में हर काम उसके निश्चित नियमों के मुताबिक ही हुआ करता है (हम उन नियमों को समझते हैं या नहीं, यह दूसरी बात है) उसी तरह समाज में भी हर घटना सामाजिक नियमों के अनुसार ही हुआ करती है। जिस तरह प्रकृति में हर मौसम के आने का समय, सूरज के निकलने-डूबने आदि का समय निश्चित होता है, इसी तरह समाज में भी सब कुछ निश्चित नियमों के अनुसार ही हुआ करता है। न तो समाज में और न प्रकृति में ही, घटनाएँ या परिवर्तन एक मनमाने ढंग से, संयोगवश हुआ करते हैं।

हम सभी समझते हैं कि मनुष्य कुदरत के नियमों को गढ़ नहीं सकता, रच नहीं सकता। यह नियम मनुष्य की चाह से, हमारी अपनी आन्तरिक इच्छा से बनते-बिगड़ते नहीं हैं। उनकी मौजदूगी हमारे मन के अलावा है; उनका अस्तित्व हमारे मन से स्वतन्त्र है। इसी तरह हमारी अपनी चाह और अपनी इच्छा से अलग, सामाजिक नियम भी स्वतन्त्र रूप में काम करते हैं। हम उन्हें गढ़ नहीं सकते। दोनों ही वस्तुगत होते हैं। हाँ, हम उन्हें जान सकते हैं, उनकी खोज कर सकते हैं; वे किस प्रकार काम करते हैं, यह समझ सकते हैं।

प्रकृति के तमाम नियमों की खोज करके, उनको समझकर, हमने तमाम विज्ञानों का विकास किया है - जैसे जीव विज्ञान, रासायनिक विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान, भौतिक विज्ञान आदि। और इन विज्ञानों के सहारे, हम बिल्कुल नपे-तुले तौर पर परिवर्तनों, घटनाओं के घटने के समय तथा किन-किन चीजों के योग से क्या नयी चीज बनेगी या क्या होगा बता सकते हैं। अभी चन्द्र-ग्रहण पड़ा था, तो उसके महीनों पहले अखबारों में आ गया था कि ग्रहण कितने बजकर कितने मिनट पर कहाँ दिखायी देगा। दिन के मौसम की भविष्यवाणी हम रोज ही अखबारों में पढ़ते हैं। इसी प्रकार, हम समाज के आर्थिक नियमों को भी जान सकते हैं, खोज सकते हैं और उनके एक-दूसरे से सम्बन्ध को समझकर समाज के आर्थिक विज्ञान की रचना कर सकते हैं। ठीक भौतिक, रसायनिक या जीव विज्ञान की तरह ही, समाज के अर्थ विज्ञान के द्वारा भी हम आर्थिक घटनाओं और व्यवस्थाओं के नियमों की ठीक-ठीक जानकारी के आधार पर, उनका विश्लेषण कर सकते हैं और उनके बारे में भविष्यवाणी भी कर सकते हैं, जैसे हम मौसमों और चन्द्र-ग्रहणों आदि के बारे में किया करते हैं।

प्राकृतिक नियमों को अपने हित में उपयोग करने के हम आदी हैं, अभ्यस्त हैं। खेती के बोने, काटने और निराई करने के समय हमने मौसमों के आने-जाने के नियम के अनुसार ही तय किये हैं। इसी प्रकार, अपने रोजाना के जीवन में

हम अपने हित में प्रकृति के नियमों का उपयोग करते हैं। हम उन नियमों को बदलते नहीं हैं, बदल नहीं सकते। उनकी जानकारी हासिल करके, उनका उपयोग करते हैं। ठीक इसी तरह आर्थिक नियमों की जानकारी हासिल करके भी, हम उन्हें अपने हित के लिए उपयोग में ला सकते हैं, बदल नहीं सकते, रद्द नहीं कर सकते।

कुछ लोग यह तर्क दे सकते हैं कि 'हम नियमों को बदल नहीं सकते' – यह जानकारी मनुष्य को भाग्यवादी बना देगी, वे अपने–आपको नियमों का दास समझने लगेंगे। लोग इसके लिए हिन्दुस्तान के गरीब किसानों की भाग्यवादिता का उदाहरण भी पेश कर सकते हैं। पर, महान स्तालिन हमें सिखाते हैं कि असलियत ऐसी नहीं है। अपने यहाँ के किसानों की भाग्यवादिता के उदाहरण को ही अगर हम गौर से जाँचें तो दृष्टिकोण साफ हो जायेगा। हिन्दुस्तानी किसान में जो भाग्यवादिता आयी है, वह इसलिए नहीं कि वह प्रकृति के नियमों को समझता है, बल्कि इसलिए कि वह उन्हें समझते हुए भी उन नियमों का पूरा उपयोग नहीं कर पाता। समाज की जोंकें, सामन्ती शक्तियाँ उसे जकड़े हुए हैं और उसे उन नियमों का पूरा उपयोग नहीं करने देतीं। वह जानता है कि खाद देने से धरती की उपजाऊ शक्ति बढ़ सकती है, वह जानता है सिंचाई से अच्छी फसल तैयार की जा सकती है; लेकिन उसके पास ये छोटे–से प्रारम्भिक साधन जुटाने के लिए भी पैसा नहीं है। दूसरी ओर, उसी के भाई किसानों ने चीन में – जहाँ सामन्ती जोंकों का क्रियाकर्म कर दिया है, वे भाग्यवादिता को पास फटकने भी नहीं देते; उनका भविष्य उज्ज्वल से उज्ज्वलतर होता जा रहा है। यह सब इसीलिए कि वे प्रकृति के नियमों का अधिक उपयोग करने में समर्थ हैं। सोवियत संघ के किसानों के लिए हम जिस वृहत् वनीय क्षेत्रों की योजना का जिक्र कर चुके हैं, वह भी प्रकृति के नियमों का उपयोग ही करना है, उन्हें रद्द करना नहीं है। इसी प्रकार, हम समाज के आर्थिक नियमों का भी समाज के हित में उपयोग कर सकते हैं। संसार के मेहनतकश वर्ग के, मार्क्स–एंगेल्स–लेनिन और स्तालिन के द्वारा, पूँजीवादी समाज के आर्थिक नियमों को जानकर ही संसार के एक–तिहाई भाग से पूँजीवादी शोषण की प्रणाली को खत्म किया गया है। इन सिद्धान्तों की समझ ने किसी भी प्रकार से उनमें अपने को पूँजीवादी नियमों का गुलाम समझने की भावना पैदा नहीं की। इसलिए, स्तालिन हमें सिखाते हैं कि समाज के नियमों की समझ हमें यह अवसर देती है कि हम समाज की हालतों को बदल सकें और नियमों का समाज के हित में प्रयोग कर सकें।

यह कोई बिल्कुल नयी चीज नहीं है। इतिहास के आरम्भ से ही, इस समाज के नियमों को जानने की कोशिश करते रहे हैं और उनका समाज के हित में

उपयोग करने की चेष्टा करते रहे हैं। इसमें जो नया तत्व है वह यही है कि अब तक के इतिहास में वर्ग रहे हैं और इसीलिए इन नियमों का उपयोग समाज का शोषक वर्ग अपने हित के लिए करता रहा है, परन्तु समाजवादी या जनवादी राज्य बनाने के बाद इन नियमों का उपयोग समाज की समूची जनता के लिए किया जाता है। और, इन नियमों का समाज के हित में उपयोग करने के लिए उन नियमों का समझना सबसे पहली शर्त है।

इस प्रकार, समाज के नियम प्राकृतिक नियमों की तरह ही वस्तुगत होते हैं, जो हमारी चाह या इच्छा से स्वतन्त्र होते हैं, उनको समझा जा सकता है, खोजा जा सकता है और उनके आधार पर समाज का एक विज्ञान, रसायन विज्ञान या जीव विज्ञान की तरह ही, बनाया जा सकता है। उनको समझकर, उनका उपयोग समाज के हित में किया जा सकता है।

परन्तु, स्तालिन हमें सिखाते हैं कि समाज के नियम बिल्कुल प्राकृतिक नियमों की तरह ही नहीं होते। इन समानताओं के साथ-साथ उनमें भेद भी हैं।

पहला भेद यह है कि प्राकृतिक नियम स्थायी होते हैं। सामाजिक नियम बदलते रहते हैं। सामाजिक नियम एक ऐतिहासिक युग के लिए ही होते हैं और दूसरे ऐतिहासिक युग के आने के साथ-साथ, दूसरे सामाजिक नियम लागू हो जाते हैं। दास-प्रथा की सामाजिक व्यवस्था के नियम सामन्ती, पूँजीवादी या समाजवादी व्यवस्था में लागू नहीं हो सकते।

सिर्फ कुछ ही सामाजिक नियम हैं, जो सभी समाज-व्यवस्थाओं में समान रूप से लागू हो सकते हैं - जैसे यह सिद्धान्त कि पैदावार के सम्बन्धों को उत्पादन-शक्तियों के लक्षणों से (तरीके से) मेल खाना ही चाहिए।

दूसरा भेद यह है कि प्राकृतिक नियमों को खोजने और उनको लागू करने का काम बहुत कुछ सीधे-साधे हो जाता है। परन्तु, सामाजिक नियमों को खोजकर उनको लागू करने का काम धीरे-धीरे नहीं होता; क्योंकि समाज में जो शक्तियाँ सत्तारूढ़ होती हैं, जिसके हाथों में शक्ति होती है, वे नये नियमों के लागू करने का विरोध करती हैं, क्योंकि उनसे उनके हितों को धक्का लगता है। इसलिए, समाज के नये नियमों को लागू करने में पूरी एक सशक्त, सत्तारूढ़ शक्ति का विरोध सामने आता है। उसको पराजित करके ही, नये नियमों को लागू किया जा सकता है। इसीलिए, उनको लागू करने के लिए एक सशक्त-संगठित ताकत की, संगठन की जरूरत पड़ती है। इसीलिए, हमें जनवादी हिन्दुस्तान के नये सामाजिक नियम लागू होने की परिस्थिति पैदा करने के लिए मेहनतकशों, किसानों और सारी जनता के संगठनों तथा एक कम्युनिस्ट पार्टी की जरूरत पड़ती है।

सामाजिक नियम बदले नहीं जाते, रद्द नहीं किये जाते। नये ऐतिहासिक युग की परिस्थितियों में, पुराने सामाजिक नियम लागू नहीं होते और वह अपनी शक्ति तथा सार्थकता खो बैठते हैं। नये ऐतिहासिक युग में, नये नियम उनकी जगह ले लेते हैं। वे लागू होते हैं, उनकी अपनी शक्ति तथा सार्थकता होती है। पुराने नियम निरर्थक हो जाते हैं।

इस प्रकार महान स्तालिन ने सामाजिक नियमों के सही लक्षणों को समझाकर, हमें सही मायनों में सामाजिक विज्ञान बताकर, उसके स्वरूप और कार्यक्षेत्र को समझकर अपनी नीति को बिल्कुल वैज्ञानिक आधार पर रखने की राह बतायी है। इस महान पुस्तक की रोशनी में, वैज्ञानिक भौतिकवाद की सही समझ के द्वारा अपनी नीति निर्धारित करने में हमें बड़ी मदद मिलेगी। इसीलिए, मालेन्कोफ ने कहा है :

"का. स्तालिन की सैद्धान्तिक रचनाओं का बहुत बड़ा महत्व यह है कि वे हमें सतह पर ही रह जाने के खिलाफ आगाह करती हैं और घटना के मर्म तक गहरे जाकर, समाज के विकास की प्रक्रिया के सार तक पहुँचकर, विकास के गर्भ में ही उस घटना को समझ लेना सिखाती हैं, जो कि आगे आने वाली सभी घटनाओं का स्वरूप निश्चित करेगी। और इस प्रकार, उनकी सीखें मार्क्सवादी पूर्वाभास को सम्भव बना देती हैं।"

समाजवाद में बिकाऊ माल की पैदावार और मूल्य का नियम

इस प्रकार सामाजिक आर्थिक विज्ञान का आधार बनाकर, महान स्तालिन ने बताया कि मार्क्स ने जिस आर्थिक विज्ञान के मूल नियम का पता लगाया था, वह समाजवादी समाज पर भी उतना ही लागू होता है, जितना कि किसी दूसरी सामाजिक व्यवस्था पर। सोवियत संघ में भी उत्पादन के सम्बन्धों को उत्पादक-शक्तियों के लक्षणों के अनुकूल ही होना चाहिए। यह नियम कैसे लागू होता है?

"गल्ले के रूप में टैक्स" और "सहकारी योजना" नामक अपनी रचनाओं में लेनिन ने बताया था कि सोवियत राज्य में गाँवों में छोटे-छोटे उत्पादक थे, जिनको अक्टूबर क्रान्ति के समय तक पूँजीवादी प्रतियोगिता नेस्तनाबूद नहीं कर पायी थी। गाँवों के छोटे-छोटे उत्पादक बिकाऊ माल की पैदावार करते थे। वे अपने पैदा किये हुए माल को शहरो में बेचते थे और उन्हें शहरों के साथ अपना केवल वही सम्बन्ध मंजूर था। इसलिए, दो ही रास्ते थे - या तो उन्हें समाजवादी राज्य का

दुश्मन बनाकर क्रान्ति की सफलता पर पानी फेर दिया जाता, या फिर एक निश्चित अवधि के लिए बिकाऊ माल के उत्पादन को कायम रहने दिया जाता और क्रमशः परिस्थितियाँ बदलकर उन्हें अपनी इच्छा से ही नये सम्बन्धों को अपनाने दिया जाता। लेनिन ने बताया था कि दूसरा रास्ता सही होगा और परिस्थितियों में क्रमशः परिवर्तन लाने के लिए उन छोटे-छोटे उत्पादकों को सहकारी उत्पादक संस्थाओं में संगठित किया जाये। यही सही साबित हुआ। सोवियत संघ में बिकाऊ माल की पैदावार को सुरक्षित रहने दिया गया था।

इस प्रकार, आज भी सोवियत संघ में समाजवादी उत्पादन के दो क्षेत्र बने हैं - राज्य या सामाजिक सम्पत्ति का उत्पादन क्षेत्र और सहकारी खेती के उत्पादन का क्षेत्र। इन दो क्षेत्रों के होने से व्यक्तिगत जरूरत की चीजों को बिकाऊ माल के रूप में पैदा करना आवश्यक हो जाता है।

इस सामाजिक परिस्थिति में, स्तालिन हमें सिखाते हैं कि उन सभी आर्थिक नियमों का चलन भी रहेगा जो इनके अनुकूल हैं। उन नियमों को मंसूख नहीं किया जा सकता। परिस्थितियों में परिवर्तन लाकर ही, नये आर्थिक नियमों को जन्म दिया जा सकता है। पूँजीवादी सामाजिक व्यवस्था से पहले, दास-प्रथा में भी बिकाऊ माल की पैदावार का प्रचलन था। तभी इस पैदावार के तरीके के साथ ही, मूल्य का नियम भी जन्मा था। माल का बेचा जाना तब तक सम्भव नहीं हो सकता था, जब तक कि माल का मूल्य निश्चित न होता। बाजार के लिए माल के उत्पादन के साथ ही, समाज में मूल्य के निधरिण की आवश्यकता पूरे तौर पर उभरकर सामने आ गयी। मूल्य का नियम बना कि हर चीज का मूल्य उसके बनाने में खर्च हुए समय के हिसाब से तय किया जायेगा। इस समय का लेखा-जोखा करने के लिए वही समय का माप माना जायेगा जो उस समाज में आमतौर से उस चीज के बनाने पर खर्च करना जरूरी होगा। यही मूल्य का नियम है और बिकाऊ माल की पैदावार के साथ-साथ, स्वाभाविक रूप से चालू रहता है। सोवियत संघ में बिकाऊ माल की पैदावार को एक निश्चित अवधि तक के लिए सुरक्षित करने के कारण, यह मूल्य का नियम भी चालू है।

बिकाऊ माल की पैदावार के साथ जन्मने वाला, यह मूल्य का सिद्धान्त पूँजीवादी समाज-व्यवस्था में ही अपने चरम विकास पर पहुँचा और यही पूँजीवादी उत्पादन का नियन्त्रण करने लगा। व्यक्तिगत पूँजीपतियों में यह होड़, यह प्रतियोगिता चल पड़ी कि हर तरह से बिकाऊ माल को कम-से-कम लागत मूल्य में तैयार करें और बाजार पर आधिपत्य कायम करके, दूसरे पूँजीपतियों से ज्यादा मुनाफा कमा लें। यह लागत मूल्य कैसे कम किया जा सकता है? लागत मूल्य का अर्थ, जैसा कि हम देख चुके हैं, किसी भी माल के तैयार करने में

लगने वाला सामाजिक रूप से आवश्यक श्रम–समय ही है। इसे कैसे कम किया जा सकता है? नयी से नयी और अधिक विकसित मशीनें लगाकर – जिनसे कि कम समय में अधिक माल पैदा हो सके; मजदूरों की श्रम–शक्ति को कम–से–कम दामों पर खरीदकर – जिससे कि अतिरिक्त मूल्य की मात्रा बढ़ जाये। सारे पूँजीपतियों में इसी के लिए होड़ लग गयी और जिस भी माल के उत्पादन में कम–से–कम लागत मूल्य लगाकर, अतिरिक्त, मूल्य की मात्रा अधिक–से–अधिक बढ़ाकर सबसे ज्यादा मुनाफा कमाने की गुंजाइश दिखती थी, सारे पूँजीपति उसी के उत्पाद में अपनी पूँजी लगाने लगते। एक ओर तो उत्पादन खपत की सम्भावना से कहीं अधिक तैयार हो जाता और दूसरी ओर कम–से–कम दामों में श्रम–शक्ति खरीदने की होड़ के कारण, कम–से–कम तनख्वाह देकर मजदूरों की खरीदने की शक्ति कम–से–कम कर दी जाती। उत्पादित माल ओर जनता की क्रय–शक्ति में इस चौड़ी खाई के बन जाने का नतीजा होता – मन्दी, आर्थिक संकट, गला–काट प्रतियोगिता और युद्ध। चूँकि पूँजीवादी व्यवस्था में ये चीजें आज भी हो रही हैं, दो युद्धों की विभीषिका हमारे दिमागों में इतनी ताजी है और हम जानते हैं कि इन सबकी जड़ में पूँजीवादी उत्पादन का नियन्त्रण करने वाला, बिकाऊ माल के साथ पैदा हुआ, मूल्य का नियम ही है। इसलिए, हम यह सोचकर शंकित हो उठते हैं कि सोवियत संघ में इन दोनों के मौजूद रहने से क्या पूँजीवाद का पुनर्जन्म नहीं हो जायेगा?

महान स्तालिन ने अपनी पुस्तिका में इसका जवाब देते हुए, हमें फिर सीख दी है कि किसी भी आर्थिक नियम के काम करने के तरीके को उसकी वस्तुगत परिस्थितियों से अलग करके नहीं देखना चाहिए, वरना हम हमेशा ही गलतियाँ करेंगे। बिकाऊ माल की पैदावार और मूल्य का नियम दासप्रथा, सामन्ती, पूँजीवादी और समाजवादी – चारों सामाजिक व्यवस्थाओं में पाया जाता है। परन्तु हर व्यवस्था में उसका अमल भिन्न–भिन्न है; क्योंकि हर व्यवस्था की अपनी वस्तुगत परिस्थितियाँ – उत्पादन के लक्षण (तरीके) भिन्न–भिन्न हैं।

उन्होंने समाजवादी समाज की व्यवस्था का गहरा विश्लेषण करके, बताया है कि सोवियत संघ में मूल्य के नियम के जारी रहने से पूँजीवादी नहीं पैदा हो सकता। क्यों? इसलिए कि सोवियत संघ की व्यवस्था में उत्पादन के साधनों पर एक व्यक्ति का नहीं, समाज का अधिकार है। किस चीज का उत्पादन कितना हो, इसका निर्धारण मुनाफे की गुंजाइश – मूल्य का नियत – नहीं, बल्कि जनता की जरूरत करती है। सोवियत संघ में समाजवादी उत्पादन के दो क्षेत्र हैं। मूल्य का नियम केवल गाँवों में सहकारी खेती और शहरों में रोजाना की जरूरत की चीजों के उत्पादन के क्षेत्र और निर्यात के माल पर ही लागू होता है; क्योंकि सिर्फ

यही बिकाऊ माल की पैदावार होती है। इस क्षेत्र में भी मूल्य का सिद्धान्त एक सीमित रूप में ही लागू है क्योंकि वह उत्पादन का नियन्त्रण नहीं करता, सिर्फ सामूहिक खेती की पैदावार और रोजाना की जरूरत की चीजों की खरीद-बेच पर लागू होता है। उसके द्वारा इनकी कीमत तय की जाती है। इस तरह बिकाऊ माल के सीमित क्षेत्र के साथ-ही-साथ, मूल्य के नियम का काम भी सोवियत संघ में सीमित है। वह उत्पादन का नियन्त्रण नहीं करता। पैदावार के साधन - मशीनें, जमीन और श्रम-शक्ति आदि - सोवियत संघ में एक बिकाऊ माल नहीं है। साथ ही मजदूरों की तनख्वाह श्रम-शक्ति की कीमत के आधार पर नहीं, बल्कि मजदूरों की आवश्यकताओं के अनुसार कि वह कितना हिस्सा सीधे-सीधे तनख्वाह के रूप में चाहते हैं, कितना उत्पादन के साधनों को और बढ़ाने पर खर्च करना चाहते हैं और कितना अपनी राज्य-व्यवस्था आदि की मदद में लगाना चाहते हैं - उनकी योजना के अनुसार ही तय होता है। इसलिए, सोवियत संघ में पूँजीवाद का पुनर्जन्म नहीं हो सकता। वहाँ आर्थिक संकट, बेकारी और युद्ध की चाह नहीं भड़क सकती।

सोवियत संघ में मूल्य के नियम का क्षेत्र दिन-दिन सीमित ही नहीं हुआ है, नयी परिस्थितियों के पैदा होने में समाजवादी समाज के सन्तुलित उत्पादन के विकास का नया आर्थिक नियम भी पैदा हुआ है, जो उत्तरोत्तर व्यापक होता जा रहा है।

महान स्तालिन हमें सिखाते हैं कि दूसरे आर्थिक नियमों की तरह, मूल्य का नियम भी अस्थायी है। कम्युनिस्ट समाज के बिकाऊ माल की पैदावार खत्म होने के साथ-साथ, यह नियम भी नहीं रहेगा। और वह परिस्थिति जल्दी-से-जल्दी पैदा हो सके, इसके लिए जरूरी है कि मूल्य के नियम को अमली तौर पर पूरी गहराई के साथ समझा जाये, जिससे योजनाओं में कोई भी गलती न आ सके और जल्दी-से-जल्दी उनको सम्पन्न किया जा सके।

इस पूरी विवेचना के साथ, उन्होंने बताया कि सोवियत के समाजवादी समाज में बिकाऊ माल की पैदावार और मूल्य के सिद्धान्त का मौजूदा होना बताता है कि उत्पादन की शक्तियों के लक्षण और उत्पादन-सम्बन्धों में असंगति है। दोनों में विरोध है, परन्तु दोनों में टकराव नहीं है। दोनों ही समाजवादी व्यवस्था के समाजवादी उत्पादन के अधीन हैं; इसलिए दूसरे वर्ग-समाजों की भाँति, सोवियत संघ में नये आर्थिक नियमों को सत्तारूढ़ वर्ग की शक्ति का प्रतिरोध नहीं करना पड़ता; क्योंकि वहाँ दो विरोधी हितों वाले वर्ग नहीं हैं। वहाँ सोच-समझकर दोनों के बीच की खाई को पूरा करने के लिए सारे समाज द्वारा सचेतन प्रयास किया जाता है। पूर्व नियोजित पंचवार्षिक योजनाओं द्वारा इस काम को सम्पन्न किया

जाता है। वहाँ नये आर्थिक नियम प्राकृतिक नियमों की सरलता से ही लागू हो जाते हैं। उत्पादन बढ़ने की एक निश्चित अवस्था तक पहुँचने पर, यह खाई पाट दी जायेगी और फिर कम्युनिस्ट समाज में दोनों में कोई भी असंगति नहीं रहेगी।

महान स्तालिन की यह विवेचना बताती है कि हमें अपने देश के आर्थिक ढाँचे और आर्थिक नियमों के स्वरूप को किस प्रकार समझने की कोशिश करनी चाहिए कि हमारे देश में क्यों इतनी तबाही मची हुई है। अपने देश ही क्यों, वह हर समाज-व्यवस्था के अध्ययन करने का तरीका बताती है।

आधुनिक पूँजीवादी व्यवस्था के आन्तरिक टकराव

मौजूदा समाजवादी समाज की आर्थिक विवेचना के बाद, उन्होंने आधुनिक पूँजीवादी व्यवस्था के आन्तरिक टकरावों की विवेचना की है; क्योंकि दो-तिहाई संसार जिसके जुए के नीचे कराह रहा है, उसकी साफ और सही समझ के बिना कोई सही नीति निर्धारित नहीं की जा सकती।

उन्होंने द्वितीय महायुद्ध के बाद के पूँजीवादी संसार की मुख्य प्रकृतियों की विवेचना करके, बताया कि उसकी सबसे महत्वपूर्ण बात यह हुई है कि पूरा संसार पहले की तरह एक मिला-जुला बाजार नहीं रह गया है। वह दो भागों में बँट गया है। एक ओर तो पूँजीवादी देशों का बाजार है और दूसरी ओर जनवादी देशों का। इसने पूँजीवादी व्यवस्था के आम संकट को और भी गहरा बना दिया है। संसार के इस एक मिले-जुले बाजार का छिन्न-भिन्न होना असल में उसके गहरे आम संकट का ही फल है। किस प्रकार?

उन्होंने बताया है कि इस आम संकट को हमें शुरू से, उसके ऐतिहासिक रूप में ही देखना चाहिए। उसके पूरे विकास को समझे बिना, हम न तो उसकी गहराई का पूरा अन्दाजा लगा सकेंगे और न उससे सही नतीजे ही निकाल सकेंगे।

इस शताब्दी से पहले भी पूँजीवादी व्यवस्था में आर्थिक संकट, मन्दी आदि के चक्र चलते रहते थे, पर वे आम संकट का रूप धारण नहीं कर पाते थे। वे नियमित रूप से आते रहते थे। यह सही है कि वे सभी आंशिक रूप में इसी विश्वव्यापी आम संकट का रास्त साफ कर रहे थे, पर पूँजीवादी उन पर काबू पा लेता था। वह नये उपनिवेशों के नये बाजारों को खोज कर, उनका समाधान कर लेता था। परन्तु इस सदी की पहली दशाब्दी तक, सारे संसार के बाजार इन साम्राज्यवादी शक्तियों ने आपस में बाँट लिये थे। नये बाजार नहीं रह गये थे। जर्मनी जैसे नये पूँजीवादी देश के विकास के लिए, नये बाजारों की जरूरत थी।

पूँजीवादी व्यवस्था के आन्तरिक विरोधाभासों के कारण, निरन्तर आने वाले आर्थिक संकटों के लिए भी निरन्तर नये बाजारों की जरूरत बनी ही रहती थी। पर, नये बाजार थे ही नहीं। और, नये बाजार नहीं तो पूँजीवादी देशों में मन्दी, बेकारी और आर्थिक संकटों का दौर शुरू हो जायेगा। नये बाजारों का सवाल पूँजीवादी देशों की व्यवस्था की मौत और जिन्दगी का सवाल था। इसीलिए, मौजूरा बाजारों के ही पुनर्विभाजन के लिए युद्ध छेड़ना जरूरी हो गया और सन 1914 में शुरू होने वाला विश्वयुद्ध इस पूँजीवादी आम संकट का प्रारम्भ था।

चले थे छब्बे बनने और दुबे ही रह गये – वाली मसल चरितार्थ हुई। पूँजीवादी व्यवस्था के चौधरियों ने मिलकर नये पूँजीवादी प्रतियोगी देश जर्मनी को दबा लिया, परन्तु दुनिया का एक–छठा भाग पूँजीवादी व्यवस्था के घेरे से बाहर निकल गया। रूस में अक्टूबर की महान क्रान्ति हुई और लेनिन तथा स्तालिन के नेतृत्व में मजदूरों, किसानों और सैनिकों की सोवियतों के समाजवादी राज्य की नींव पड़ गयी। दूसरे शब्दों में, पूँजीवादी बाजार के बन्धन से दुनिया का एक–छठा भाग मुक्त हो गया। वे चले थे बाजारों का पुनर्विभाजन करने और वहाँ उनका बाजार बढ़ना तो दूर और भी सिकुड़ गया। इसने उनके आम संकट को और भी उभार दिया। यह आम संकट की पहली मंजिल थी।

अपने एक सबसे बड़े प्रतिद्वन्द्वी को हराकर, पूँजीवादी गुट ने जो नया बँटवारा किया, उससे कुछ दिनों बड़ी तेजी के साथ, जोर–शोर से चारों ओर फैलना शुरू किया। सन 1916 में, लेनिन ने कहा था कि पूँजीवाद बड़ी तेज रफ्तार से बढ़ रहा है। सन 1927 में, स्तालिन ने भी बताया था कि पूँजीवाद में 'क्षणिक स्थायित्व' का दौर है। लेकिन, मूल समस्या तो बाजारों की थी और उसमें कुल मिलाकर एक–छठे भाग की कमी और भी जुड़ गयी थी। इस बार आम आर्थिक संकट ने और गहरा रूप प्रकट किया। सन 1930 में, स्तालिन ने इस आम संकट की विशेषताएँ बताते हुए, कहा था कि संसार में पूँजीवादी व्यवस्था ही एकमात्र आर्थिक व्यवस्था नहीं रह गयी है, अक्टूबर क्रान्ति की जीत ने उसकी जड़ें हिला दी हैं, पिछड़े हुए देशों में भी नयी पूँजीवादी शक्तियाँ तेजी से प्रतिद्वन्द्विता के मैदान में उतर रही हैं और प्रमुख पूँजीवादी देशों में स्थायी रूप से बेरोजगारी बढ़ती जा रही है। प्रमुख पूँजीवादी शक्तियों ने सोवियत संघ को गुलाम बनाकर फिर इस संकट को टालना चाहा और उसको नेस्तनाबूद करने के लिए साजिशें करने लगे। फिर लगभग बीस वर्षों के अन्दर ही, दूसरा महायुद्ध छिड़ गया। इस बार फिर, पूँजीवादी बाजारों के घेरे को तोड़कर संसार का एक बहुत बड़ा भाग मुक्त हो गया; उसमें जनवादी राज्य कायम हो गये। यह पूँजीवाद के आम संकट की दूसरी मंजिल थी।

जनवाद की बढ़ी हुई ताकत देखकर, पूँजीवादी गुट के पाँवों के नीचे से धरती खिसक गयी। वह एक ओर एटम बम की धमकी दिखाकर धमकाने लगा और दूसरी ओर सारे जनवादी देशों से व्यापार बन्द करके उनकी व्यापारिक नाकेबन्दी शुरू कर दी। इस प्रकार, पहले जहाँ समूचे संसार का एक मिला–जुला बाजार था। वहाँ अब दो समानान्तर बाजार बन गये। इसका नतीजा क्या हुआ? 'विनाश काले विपरीत बुद्धि' – वाली मसल हुई। पूँजीवाद की सारी समस्या ही बाजारों की समस्या थी। इस नाकेबन्दी के कारण, उसने और भी अधिक बाजारों से अपने को वंचित कर लिया। परिणाम ठीक उल्टा ही हुआ। उसका आम संकट और तीव्रतर हो गया है।

एक ओर जनवादी बाजार बन गया, तो जनवादी देशों के पारम्परिक सहयोग के आधार पर दृढ़ता से खड़ा है और जो एक–दूसरे की मदद करते हुए, समानता की बिना पर अपनी सारी जरूरतें पूरी करता है। इतना ही नहीं, अब वह परिस्थिति भी पैदा हो गयी है कि यह जनवादी बाजार अपनी जरूरतों से भी ज्यादा उत्पादन करने लगा है।

दूसरी ओर पूँजीवादी बाजार है, जो एक–दूसरे की लूट–खसोट के आधार पर खड़ा है और जो एक–दूसरे का गला काटते हुए, प्रतियोगिता और मुनाफे की बिना पर एक–दूसरे के आर्थिक जीवन पर कब्जा जमाने की कोशिश में अपने आन्तरिक विरोधाभासों को और तीव्रतम बनाता जा रहा है। उसका उत्पादन गिरता जा रहा है। निर्यात कम होता जा रहा है। जनता में बेरोजगारी फैली हुई है और उसकी खरीदने की शक्ति गिरती ही जा रही है। साथ ही, पिछड़े हुए देशों की जनता स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करके अपनी मुक्ति के द्वारा उसे और भी संकुचित बनाती जा रही है।

दो समानान्तर बाजारों के बनने से पैदा होने वाला, पूँजीवाद का यह आम संकट उसकी पूरी गहराई के साथ समझा जाना चाहिए। यह आम संकट पिछले आर्थिक संकटों और मन्दी के नियमित रूप से आने वाले चक्रों की तरह नहीं है। आम संकट का अर्थ है – हर दिशा में, हर क्षेत्र में संकट होना और सिवाय आत्मविनाश के उससे उबरने का और कोई रास्ता न होना। यदि हम पिछली शताब्दी के अन्तिम चरण से पूँजीवादी उद्योग के विकास की गति का अध्ययन करें, तो इस आम संकट का अर्थ और भी स्पष्ट हा जायेगा।

इससे बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि सन 1913 से शुरू हुए आम संकट के काल से पूँजीवादी उद्योगों के विकास की रफ्तार उत्तरोत्तर कम ही होती जा रही है।

विश्व में पूँजीवादी उद्योग के विकास की वार्षिक गति

काल	प्रतिशत गति
सन 1860 से 1880 तक	3.1 प्रतिशत
सन 1890 से 1913 तक	3.7 प्रतिशत
सन 1913 से 1929 तक	2.4 प्रतिशत
सन 1929 से 1949 तक	1.3 प्रतिशत

साथ ही, मौजूदा पूँजीवादी बाजार को लीजिए। पूँजीवादी देशों का सरगना अमरीका ही है। अमरीका का व्यापार संकुचित होता जा रहा है। आज अमरीका से निर्यात होने वाले गैर फौजी माल में 30 प्रतिशत कमी हो गयी है। पहले सभी पूँजीवादी देश इन देशों के साथ व्यापार किया करते थे। पर आज सन 1937 के मुकाबले में, उनके साथ होने वाला अमरीका का व्यापार लगभग 1/10, इंग्लैण्ड का 1/6 और फ्रांस का 1/4 ही रह गया है। यह पूँजीवादी बाजार की तस्वीर का एक पहलू हुआ।

संकुचित होते हुए बाजार की इसी तस्वीर का दूसरा पहलू यह है कि एक ओर तो अमरीका, इंग्लैण्ड और फ्रांस ने अपने रहे-सहे बाजारों - उपनिवेशों और अर्द्ध-उपनिवेशों का शोषण और भी तीव्र कर दिया है और अमरीकी थैलीशाह दूसरों के बाजारों को छीनने के लिए हर किस्म की साजिशें और खून-खराबा कर रहे हैं; और दूसरी ओर अमरीका, इंग्लैण्ड, फ्रांस और इटली की घरेलू अर्थ-व्यवस्था का गला भी घोंटता जा रहा है, वहाँ की जनता पर शोषण का बोझ बढ़ाता जा रहा है।

इन सबका लाजिमी नतीजा यही हो रहा है कि एक ओर तो अर्द्ध-उपनिवेशों और उपनिवेशों की जनता का मुक्ति-संग्राम तेज हो रहा है और दूसरी ओर इंग्लैण्ड, फ्रांस, इटली, पश्चिमी जर्मनी, जापान आदि की जनता अमरीकी डॉलरशाही से मुक्ति पाने के लिए छटपटा रही है और अपनी सरकारों पर दबाव डाल रही है कि वे अमरीकी प्रभाव से मुक्त होने के लिए कदम उठायें।

इस प्रकार, पूँजीवादी अर्थ-व्यवस्था का आम संकट अधिकाधिक गहरा हो चुका है। उनकी व्यवस्था के विरोधाभास ही एक-दूसरे में टकराव पैदा कर रहे हैं। सिवा एक-दूसरे के रहे-सहे बाजारों की छीन-झपट और दूसरे का गला घोंटने के, उनके सामने कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा है। जनवादी देशों को नेस्तनाबूद करने के लिए, तीसरा विश्वयुद्ध छेड़ने का एक रास्ता उनके लिए हो सकता था और इस प्रकार वहाँ की जनता को गुलाम बनाकर, नये बाजार पाकर वह कुछ

दिनों के लिए अपनी समस्या सुलझा सकते थे। परन्तु द्वितीय विश्वयुद्ध में, उन्होंने सोवियत की अपार शक्ति को जान लिया था। वे यह भी जानते हैं कि उसके बाद जनवादी खेमे की शक्ति दुगुनी और तिगुनी बढ़ गयी है – आधे यूरोप और चीन की महान वीर जनता की शक्ति भी उसमें जुड़ गयी है। फिर, शान्ति आन्दोलन की शक्ति ने उन्हें यह भी बता दिया है कि दुनिया की जनता युद्ध के खिलाफ है। इसीलिए, वह समझ गये हैं कि जनवादी खेमे के खिलाफ युद्ध छेड़ने का अर्थ होगा – संसार में पूँजीवाद का खात्मा। इससे उनके आपसी टकराव और भी बढ़ गये है; और बढ़ते ही जायेंगे।

परिस्थिति के इस विश्लेषण के बाद, महान स्तालिन ने नतीजा निकाला है कि आज सैद्धान्तिक रूप से तो आधुनिक पूँजीवादी खेमे और जनवादी खेमे के विरोध ही सबसे महत्वपूर्ण हैं; लेकिन अमली तौर से पूँजीवादी देश जनवादी खेमे के खिलाफ एक हो ही जायेंगे और उनके बीच आपस में युद्ध नहीं छिड़ सकता। उन्होंने बताया है कि पूँजीवादी देशों के बीच युद्ध की अनिवार्यता का लेनिनवादी सिद्धान्त आज भी उतना ही लागू होता है, जितना कि पहले। द्वितीय महायुद्ध के समय भी, पूँजीवादी खेमे और समाजवादी खेमे का विरोधाभास ही सैद्धान्तिक रूप से सबसे प्रमुख था। पूँजीवादी देशों ने उसकी शुरुआत भी समाजवादी खेमे के खिलाफ साजिशों से की थी। परन्तु, अमली तौर पर उनके अपने विरोधाभास इतने तीव्र हो गये थे कि उनमें आपस में ही युद्ध ठन गया था। आज भी वही हो सकता है। महान स्तालिन ने कहा है कि इन आन्तरिक टकरावों की वजह से, शायह पहले इंग्लैण्ड तथा फ्रांस और बाद में जापान तथा पश्चिमी जर्मनी अमरीका के प्रभाव से मुक्त होने के लिए कदम उठायेंगे।

महान स्तालिन के इस विश्लेषण ने शान्ति आन्दोलन के लिए और भी व्यापक सम्भावनाओं के द्वार खोल दिये हैं, जैसा कि हम देख चुके हैं। उनका यह विश्लेषण हमें अपने देश की सही वैदेशिक नीति निर्धारित करने में मदद दे सकता है कि हम अमरीकी और अंग्रेजी पूँजी के प्रभाव से अपने देश को मुक्त करने की नीति अपनायें और जनवादी खेमे के बाजार के साथ अपने व्यापारिक सम्बन्धों को बढ़ायें, नहीं तो हमारे देश की जनता युद्ध, भुखमारी और बेकारी की शिकार होती जायेगी; क्योंकि हमेशा की तरह आज भी आधुनिक पूँजीवादी देश अपने आर्थिक संकट का सारा बोझ अर्द्ध–उपनिवेशों, उपनिवेशों और उन पर निर्भर रहने वाले देशों पर ही डालने की सिरतोड़ कोशिशें कर रहे हैं।

आधुनिक पूँजीवाद का बुनियादी नियम

उपर्युक्त विश्लेषण से, यह स्पष्ट हो जाता है कि आधुनिक पूँजीवाद वह पूँजीवाद नहीं है जो मार्क्स के काल में था। वह भी नहीं है जो लेनिन के काल में था। तब, उसका बुनियादी नियम क्या है?

किसी भी आर्थिक व्यवस्था का बुनियादी नियम वही होता है जो उस अर्थ–व्यवस्था के अन्तर्गत होने वाले उत्पादन की शक्ति के लक्षणों के सार को व्यक्त कर दे; ऐसा सार जिससे उसकी सभी विशेषताएँ निश्चित होती हैं और उत्पादन के विकास की प्रक्रिया के पूरे गुण पता लग जाते हैं। आधुनिक पूँजीवाद का ऐसा बुनियादी नियम क्या है?

मूल्य का नियम वह बुनियादी नियम नहीं हो सकता; क्योंकि वह पूँजीवादी व्यवस्था से पहले ही दास और सामन्ती व्यवस्थाओं में भी मौजूद था।

मार्क्स ने अपने काल के पूँजीवाद का बुनियादी नियम अतिरिक्त मूल्य का नियम बताया था। तब वह सोलहों आने सही था। यह अतिरिक्त मूल्य का नियम औसत मुनाफे की दर के नियम से सम्बन्धित था। औसत मुनाफे की दर के नियम के अनुसार, पूँजीवादी उत्पादन के सभी क्षेत्रों के मुनाफों में दूसरे क्षेत्रों के मुनाफों के बराबर होने की प्रवृत्ति होती है। इस प्रकार, सभी क्षेत्रों के मुनाफों की एक औसत दर बन जाती है। जिस क्षेत्र में भी मुनाफा उस औसत दर से नीचे होता है, पूँजीपति उत्पादन के उस क्षेत्र को छोड़कर दूसरे क्षेत्र में पूँजी लगाने जाता है। इस प्रकार, सारे क्षेत्रों की पूँजी में उत्पादन के कुछ ही क्षेत्रों में केन्द्रित होते जाने की प्रवृत्ति बनने लगती है और नतीजा होता है – अति उत्पादन, मन्दी, आर्थिक संकट आदि का पूरा चक्र। यह औसत मुनाफे की दर कम होती जाती है। परन्तु, आज की पूँजीवादी व्यवस्था में पूँजीपति आपस में व्यक्तिगत तौर से प्रतियोगिता नहीं करते; आज उनमें एकाधिकारी कम्पनियों, कार्पोरेशनों, कर्टेलों, सिण्डीकेटों और विशालतम एकाधिकारी कम्पनियों की संस्थाएँ मिलकर सारे बाजार पर अधिकार जमा लेती हैं।

मुनाफे की औसत दर के अलावा, अति मुनाफा भी आज के एकाधिकारी पूँजीवाद के लिए पूरा नहीं पड़ता। उपनिवेशों से सस्ते दामों में कच्चा माल तथा श्रम–शक्ति खरीदकर और औसत मूल्य से अधिक कीमत पर पक्का माल बेचकर जो अति मुनाफा पूँजीवादी देश कमाते हैं, वह भी उनकी सर्वभक्षिणी भूख को शान्त नहीं कर पाता।

तब, आधुनिक पूँजीवाद का बुनियादी नियम क्या होना चाहिए? महान स्तालिन ने बताया है कि यह बुनियादी नियम है – अधिकतम मुनाफा प्राप्त

करना। "...अतिरिक्त मूल्य के नियम को और ठोस बनाना चाहिए और इजारेदार पूँजीवाद की परिस्थितियों के अनुसार, उसे और विकसित करना चाहिए। साथ ही, यह ध्यान रखना चाहिए कि इजारेदार पूँजीवाद को हर किसी तरह के मुनाफे की चाह नहीं है। उसे अधिकतम मुनाफा ही चाहिए। आधुनिक पूँजीवाद का वह बुनियादी आर्थिक नियम होगा।" (पृष्ठ 42)

यह सवाल उठ सकता है कि पूँजीपति तो हमेशा से ही अधिकतम मुनाफा प्राप्त करने की चेष्टा करते रहे हैं, तब इनमें नयी बात क्या है? इसको हमें बारीकी से समझना चाहिए। एक पूँजीपति की अधिकतम मुनाफा बटोरने की आन्तरिक इच्छा और अधिकतम मुनाफा चूसने की वस्तुगत आवश्यकता में बहुत बड़ा फर्क है। पहले, पूँजीपति उसी क्षेत्र में पूँजी लगाते थे, जिसमें अधिक मुनाफा मिलता था और उस पर मुनाफे की औसत दर के हिसाब से अधिक मुनाफा कमा लेते थे। इनमें से कुछ पूँजीपति तमाम तिकड़में करके, इस औसत दर से कुछ अधिक मुनाफा भी जुटाने में समर्थ हो जाते थे, परन्तु अधिकांश पूँजीपति इस औसत दर से नीचे ही रहते थे। पर दोनों ही तरह से पूँजीपति कायम रहते थे, हालाँकि और अधिक मुनाफा कमाने की उनकी इच्छा बनी ही रहती थी। परन्तु आधुनिक पूँजीवाद की वह हालत नहीं रही है। आज के जमाने में अधिकतम मुनाफा कमाने की वस्तुगत आवश्यकता का मतलब है कि यदि वे अधिकतम मुनाफा प्राप्त करने में असमर्थ रहते हैं, तो वे अपनी पूँजी सुरक्षित नहीं रख सकते। एक पूँजीपति के रूप में उसकी मौत हो जायेगी। वही कार्पोरेशन या विशाल कार्पोरेशनों की संस्था जिन्दा रह सकेगी, जो अधिकतम मुनाफा कमा सकती है। दूसरी छोटी-मोटी एकाधिकारी कम्पनियाँ मुनाफा कमा ही नहीं सकतीं, उन्हें अपने उद्योग-धन्धे बेच देने पड़ेंगे। वस्तुगत आवश्यकता का अर्थ है अधिकतम मुनाफा या मौत; तीसरा कोई रास्ता नहीं। यही आधुनिक पूँजीवाद का बुनियादी नियम है।

अधिकतम मुनाफा कमाने के लिए, प्रमुख पूँजीवादी देशों में एकाधिकारी पूँजीपतियों के कुछ मुट्ठीभर विशालतम संगठन ही सारा व्यापार हथियाकर, अपने ही देश के छोटे-मोटे पूँजीपतियों तथा उनकी संस्थाओं के मुनाफे की औसत दर कम कर देते हैं; क्योंकि बाजारों पर उनका एकाधिकार कायम हो जाता है और दूसरे उनसे प्रतियोगिता नहीं कर सकते। सन 1948 और '49 के दौरान में अमरीका के 25 विशालतम एकाधिकारी संगठनों ने 13 प्रतिशत अधिक मुनाफा कमाया, जब कि सभी दूसरे पूँजीपति और उनकी छोटी संस्थाओं को 20 प्रतिशत का घाटा रहा था। सन 1933 से '52 तक के बीस वर्षों में, अमरीकी कार्पोरेशन ने 380 अरब डॉलर का मुनाफा कमाया है जो सन '33 में अमेरीका

में लगी हुई कुल पूँजी के बराबर था।

"आधुनिक पूँजीवाद के बुनियादी आर्थिक नियम की मुख्य विशेषताएँ और जरूरतें मोटे तौर से यूँ रखी जा सकती हैं : किसी देश की बहुसंख्यक जनता के शोषण, तबाही और गरीबी के जरिये, दूसरे देशों की जनता, खासकर पिछड़े हुए देशों की जनता की गुलामी और उसकी बाकायदा लूट के जरिये और अन्त में, युद्ध और राष्ट्रीय व्यवस्था की फौजबन्दी के जरिये जिससे अधिकतम मुनाफा हासिल किया जाता है – अधिकतम पूँजीवादी मुनाफा प्राप्त करना।" (पृष्ठ 42)

फिर उपनिवेशों, अर्द्ध–उपनिवेशों तथा कम विकसित पूँजीवादी देशों के बाजारों के पुनर्विभाजन के लिए, वह युद्ध की तैयारियाँ करते हैं, फौजबन्दी करते हैं, राष्ट्रीय बजट का अधिकांश भाग युद्ध के लिए शस्त्रों और फौजों पर खर्च करते हैं और इसके लिए अपने यहाँ की जनता पर टैक्सों की भरमार करते जाते हैं। कुछ मुट्ठीभर एकाधिकारी विशालतम संगठनों को, जनता की कीमत पर, टैक्सों में भारी सुविधाएँ देते हैं और युद्ध का सामान आदि बनाने के लिए मनमाने ठेके दिया करते हैं। युद्ध के जमाने में इन मुट्ठीभर एकाधिकारी महाप्रभुओं को 175 अरब डॉलर के और सन '52 में 73 अरब डॉलर के ठेके मिले थे। इन ठेकों में अमरीकी एकाधिकारी महाप्रभुओं ने पहले विश्वयुद्ध से 25 अरब, दूसरे विश्वयुद्ध से 100 अरब और कोरिया के युद्ध से 123 अरब डॉलर मुनाफे के रूप में कमाये थे। ब्रिटेन के बजट का एक तिहाई भाग युद्ध की तैयारी पर खर्च होता है।

यही एकाधिकारी पूँजी के महाप्रभु उपनिवेशों, अर्द्ध–उपनिवेशों और कम विकसित देशों के बाजारों पर कब्जा जमा लेते हैं। उनकी लूट–खसोट, तबाही–बर्बादी और शोषण करते हैं। उनकी जनता के साथ–ही–साथ, अपने घर की जनता का भी शोषण अधिकतम कर देते हैं। आज अमरीका की जनता पर सन 1937–38 की तुलना में 12 गुना टैक्स और बढ़ गया है। अमरीकी मजदूर अपनी तनख्वाह का एक तिहाई टैक्सों में दे देता है। रोजाना की जरूरत की चीजों की कीमतें जो सन '39 में सिर्फ 99.4 थीं, सन '52 में आसमान पर चढ़कर 189.6 तक पहुँच गयी हैं। सारे संसार के बचे–खुचे बाजारों पर, खासतौर पर अर्द्ध–औपनिवेशिक और कम विकसित देशों के बाजार पर, छा जाने की प्रवृत्ति के लिए अमरीका द्वारा बाजारों तक खर्च की जाने वाली पूँजी का अनुपात देखना ही काफी होगा।

मार्शल योजना के बाहर रहने	7.6 प्रतिशत
वाले यूरोपीय देशों पर कनाडा पर	14.0 प्रतिशत
मार्शल योजना के अन्तर्गत आने वाले देशों पर	14.5 प्रतिशत

अमरीकी प्रजातन्त्रों पर	17.4 प्रतिशत
मार्शल योजना के अन्तर्गत	20.0 प्रतिशत
उपनिवेशों पर मध्यपूर्व के देशों पर	31.3 प्रतिशत

आधुनिक पूँजीवाद का अधिकतम मुनाफा प्राप्त करने का यही तरीका है। इस अधिकतम मुनाफे के बिना वह पनप नहीं सकता और अधिकतम मुनाफा प्राप्त करने का इसके सिवा दूसरा रास्ता नहीं है। इस रास्ते पर चलने से उसके आन्तरिक टकराव और तीव्रतर होते जाते हैं, उनका आम आर्थिक संकट और भी गहरा होता जाता है। उसका पूरा अस्तित्व खतरे में है। इसलिए, आधुनिक पूँजीवाद आज खतरे भरे कदम उठाने का दु:साहस भी कर बैठता है। परन्तु, उससे उसके आन्तरिक विरोधों में और भी विस्फोट होने लगता है।

इस प्रकार, महान स्तालिन द्वारा प्रतिपादित आधुनिक पूँजीवाद का अधिकतम मुनाफे का बुनियादी नियम हमें आधुनिक पूँजीवाद के आम संकट की गहराई और सभी क्षेत्रों पर पड़ने वाले उसके असर की व्यापकता को समझने में मदद देता है। और, यह समझ भारत को आर्थिक सहायता देने के अमरीकी ढोंग का पर्दाफाश कर देती है। हमें अपने राष्ट्रीय हितों के लिए पैदा होने वाले खतरों के खिलाफ आगाह करती है। यह समझ हमें रास्ता दिखाती है कि अधिकतम मुनाफे के भूखे आधुनिक पूँजीवाद के खिलाफ सभी अर्द्ध–औपनिवेशिक और कम विकसित देशों का एक संयुक्त मोर्चा बनाकर, अपने राष्ट्रीय प्रभुत्व और हितों की रक्षा की जाये, युद्ध छेड़ने की उसकी दु:साहसिक चेष्टाओं को दफना दिया जाये।

समाजवाद का बुनियादी नियम

दूसरी ओर समाजवाद का बुनियादी आर्थिक नियम क्या है? सोवियत संघ में अर्थ–व्यवस्था के सन्तुलित विकास का नियम भी काम करता है। हम देख चुके हैं। पर, क्या वह समाजवाद का बुनियादी आर्थिक नियम बन सकता है? महान स्तालिन ने बताया है कि नहीं; क्योंकि यह सन्तुलित विकास किस दिशा में, किस उद्देश्य से होता है, उसे यह नियम नहीं बताता। असल में यह बुनियादी आर्थिक नियम का प्रतिफल या प्रतिबिम्ब ही हो सकता है। स्वयं बुनियादी नियम नहीं बन सकता। तब वह बुनियादी नियम क्या है?

उन्होंने समाजवादी अर्थ–व्यवस्था की विवेचना करके, बताया है कि वह बुनियादी आर्थिक नियम है – समाज की लगातार बढ़ती हुई भौतिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं की अधिकतम पूर्ति करना। समाज की आवश्यकताओं की यह अधिकतम पूर्ति उच्चतर कौशल के आधार पर, समाजवादी पैदावार के

निरन्तर प्रसार और पूर्णता के जरिये की जाती है। समाजवादी पैदावार के सन्तुलित विकास का नियम इसी बुनियादी आर्थिक नियम पर आश्रित होकर, इसी के अन्तर्गत काम करता है।

एक ओर जहाँ आधुनिक पूँजीवाद का बुनियादी आर्थिक नियम अधिकतम मुनाफों के लिए समूची मानवता पर आम आर्थिक संकट, बेरोजगारी, भुखमरी, बेशुमार टैक्स, शोषण और युद्ध की बलाएँ थोपता है; दूसरी ओर वहीं समाजवाद का बुनियादी आर्थिक नियम समाज की बढ़ती हुई भौतिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं की अधिकतम पूर्ति करके जनता की खुशहाली, तनख्वाहों में बढ़ती, चीजों की कीमतों में आम कमी, समृद्धि तथा समानता के आधार पर सभी देशों के साथ सहयोग और शान्ति को बढ़ावा देता है। सोवियत संघ की चौथी पंचवार्षिक योजना सन 1951 में पूरी हुई है। इसके फलस्वरूप, उसकी राष्ट्रीय आय 83 प्रतिशत और बढ़ गयी है। इसका तीन चौथाई भाग मजदूर वर्ग में तनख्वाहों, फण्डों, बोनसों और राज्य द्वारा प्रस्तुत की गयी सेवाओं के द्वारा बाँट दिया जायेगा; बाकी एक चौथाई उत्पादन के साधनों को और भी विकसित करने में लगा दिया जायेगा। पाँचवीं पंचवार्षिक योजना आजकल चल रही है। इसके द्वारा सन 1955 तक राष्ट्रीय आय में 60 प्रतिशत वृद्धि और हो जायेगी। दूसरे विश्वयुद्ध के पहले की पैदावार के मुकाबले में, सारी पैदावार तिगुनी हो जायेगी।

ये दोनों बुनियादी आर्थिक नियम बताकर, महान स्तालिन ने स्पष्ट कर दिया है कि किस ओर नाश, शोषण और मृत्यु है और किस ओर समृद्धि, समानता तथा जीवन है। यह मानवता की सबसे बड़ी सेवा है।

कम्युनिज्म तक संक्रमण की प्राथमिक शर्तें

लेनिन ने अपनी महान रचना *राज्य और क्रान्ति* में 'कम्युनिज्म की आर्थिक परिपक्वता की विभिन्न मंजिलों' के मार्क्स के विश्लेषण की इस विशेषता पर सबसे अधिक जोर दिया है कि वह गैर-स्वप्नवादी है, कि उस विश्लेषण और विभिन्न मंजिलों के निर्देशन का आधार ठोस आर्थिक परिस्थितियाँ ही हैं; मार्क्स की अपनी आन्तरिक इच्छा या स्वप्नवादिता नहीं है। मार्क्स ने विभिन्न वस्तुगत आर्थिक नियमों को समझने के बाद, उनसे पैदा होने वाली परिस्थितियों के लेखे-जोखे के बाद ही उन मंजिलों का निर्देशन किया है।

महान स्तालिन ने भी हमें इस पुस्तिका में यही मार्क्सवादी सत्य सिखाया है कि कम्युनिज्म की स्थापना सरकारी कानून पास कर देने से नहीं, बल्कि उसके लिए आर्थिक नियमों की वस्तुगत समझ के आधार पर सचेतन और नियोजित कदम उठाकर, उस संक्रमण के लिए ठोस परिस्थितियाँ तैयार कर देने पर ही

होगी। वे परिस्थितियाँ क्या हैं?

महान स्तालिन ने सोवियत संघ के समाजवादी अर्थतन्त्र से उसके उच्चतर रूप कम्युनिस्ट अर्थतन्त्र तक संक्रमण की तीन बुनियादी शर्तें बतायी हैं :

1. पैदावार के साधनों के उत्पादन का प्रसार और भी तेज रफ्तार से होता जाये।

2. पंचायती खेतों की सम्पत्ति को सार्वजनिक सम्पत्ति की सतह तक ले जाकर, समाजवादी पैदावार का एक ही क्षेत्र बनाया जाये।

3. चौमुखी सांस्कृतिक विकास की बढ़ती पक्की हो जाये।

ये शर्तें कैसे पूरी की जायेंगी? इनके द्वारा किस प्रकार समाज में यह परिवर्तन आयेगा?

पहली शर्त को लीजिए। पैदावार के साधनों का और भी तेज रफ्तार से प्रसार होते जाने का साफ मतलब है कि समाज की पुनरुत्पादन करने की शक्ति लगातार बढ़ती रहे। यदि यह शक्ति लगातार बढ़ती न रहे, एक सतह पर जाकर उत्पादन के साधनों पर प्रसार यदि रुक जाये तो जाहिर है कि उसका उत्पादन भी एक निश्चित सतह तक ही रह जायेगा। इससे समाज का विकास भी रुक जायेगा। इसीलिए, यह जरूरी है कि उत्पादन करने के साधनों जैसे भारी मशीनें, कारखाने, भूमि, कौशल यानी श्रम-शक्ति की पैदा करने की क्षमता आदि में लगातार वृद्धि होती रहे; तभी इनसे होने वाला पुनरुत्पादन भी बढ़ता रहेगा और समाज की सभी शाखाओं को साज-सामान मिलता रहेगा। रोजाना की जरूरत की चीजों का उत्पादन भी बढ़ते रहने की गारण्टी रहेगी और उनके उत्पादन पर होने वाला खर्च भी कम होता रहेगा, उनकी कीमतें भी घटती ही जायेंगी। समाज की सम्पन्नता बढ़ती जायेगी। सोवियत संघ में सन 1953 के अन्त तक, द्वितीय विश्वयुद्ध के पहले की अपेक्षा, उत्पादन के साधनों में 170 प्रतिशत की वृद्धि हो जायेगी। इसी के आधार पर, सन 1955 तक कुल उत्पादन तिगुना हो सकेगा। हम इसी से समझ सकते हैं कि कम्युनिज्म तक पहुँचने के लिए यह प्रसार कितना आवश्यक है।

दूसरी शर्त है – पंचायती खेती की सम्पत्ति को सार्वजनिक सम्पत्ति की सतह तक ले जाना। दूसरे शब्दों में, इसका अर्थ है – समाजवादी उत्पादन का एक ही राज्य क्षेत्र बनाना। हम देख चुके हैं कि वर्तमान सोवियत समाज में समाजवादी उत्पादन के दो क्षेत्र हैं – राज्य या सामाजिक सम्पत्ति का उत्पादन-क्षेत्र और सहकारी खेती के उत्पादन का क्षेत्र। इन दोनों का एक ही राज्य या सामाजिक सम्पत्ति का उत्पादन-क्षेत्र बनाना पड़ेगा। इन दोनों क्षेत्रों के कायम रहने की वजह भी हम जान चुके हैं। हमने यह भी देख लिया है कि समाज में उत्तरोत्तर विकास होने की सबसे बड़ी शर्त मार्क्स का यही आर्थिक सिद्धान्त है कि समाज की

उत्पादन शक्तियों का लक्षण सामाजिक सम्बन्धों के साथ मेल खाना चाहिए। एक मंजिल पर आकर, समाज की उत्पादन शक्तियों का विकास आगे बढ़ जाया करता है और हमेशा समाज के उत्पादन सम्बन्ध पीछे पड़ जाते हैं। तब उन सम्बन्धों में परिवर्तन करना आवश्यक हो जाता है। उदाहरण के लिए, हम आज के पूँजीवादी समाज को देखें। सारे पूँजीवादी समाज में उत्पादन की शक्तियों का लक्षण (तरीका) सामाजिक यानी सामूहिक है, यानी आगे बढ़ गया है। किसी भी बिकाऊ माल का उत्पादन आज सामन्ती काल के तरीके से, व्यक्तिगत तौर पर करके, मुनाफे के साथ नहीं बेचा जा सकता; क्योंकि मशीनें कम समय और अधिक मात्रा में उसे तैयार करके सस्ते दामों में बेच सकती हैं। परन्तु दूसरी ओर, उत्पादन के सम्बन्ध पीछे पड़ गये हैं, यानी उत्पादन के साधनों पर साज का नहीं, व्यक्तियों का अधिकार है। आज आधुनिक पूँजीवाद में आर्थिक संकटों और तबाही का यही मूल कारण है। जहाँ-जहाँ मानवता ने इस मूल विरोधाभास को दूर कर दिया है, वहाँ हम देख रहे हैं कि उत्पादन का चौमुखी विकास हो रहा है।

इसी को समझाते हुए, महान स्तालिन ने इस पुस्तिका में बताया है कि समाजवादी उत्पादन में यह क्षेत्र सुरिक्षत रखने की वजह उस समय की आर्थिक परिस्थिति थी। जाहिर है कि पूँजीवादी उत्पादन के तरीके से यह सामूहिक खेती के द्वारा उत्पादन करने का तरीका एक और ऊँची समाजवादी मंजिल थी और इसीलिए, समाज के विकास में इसने एक बड़ा भारी योग दिया था और अभी काफी समय तक देती भी रहेगी। पर, इसके कारण यह भूल जाना घातक होगा कि इन दो क्षेत्रों के उत्पादन के तरीकों में असंगति है, जो यदि आगे चलकर दूर न की गयी तो समाज के विकास में एक रोड़ा बन जायेगी। जब सोवियत की उत्पादन शक्तियों का विकास एक निश्चित सतह तक पहुँच जायेगा, तब शहर के सामाजिक सम्पत्ति वाले क्षेत्र और सामूहिक खेती के उत्पादन के क्षेत्र का आपस में बिकाऊ माल के आधार पर खड़ा करने वाला सम्बन्ध पिछड़ जायेगा और उसे बदलना ही पड़ेगा। तभी कम्युनिस्ट अर्थतन्त्र तक पहुँचा जा सकेगा।

यह कैसे किया जा सकेगा? आज दोनों क्षेत्रों का सम्बन्ध बिकाऊ माल के उत्पादन पर निर्भर है, यानी सहकारी खेतों में जितना उत्पादन होता है, उसमें से अपनी जरूरत या गाँवों में रखकर, बाकी शहर में बेच दिया जाता है। उससे मिली हुई रकम से अपनी रोजाना की जरूरत की चीजें शहर से खरीद ली जाती हैं। इससे मूल्य का नियम इस सीमित क्षेत्र में लागू होने लगता है। यह हम देख चुके हैं। अब इस सम्बन्ध को मिटाने का तरीका क्या है? तरीका यह है कि सहकारी खेती से होनेवाली पैदावार के गाँवों की जरूरत से बचे हुए हिस्से को बिकाऊ

माल के चलन से अलग कर दिया जाये। गाँवों की सामूहिक संस्थाएँ शहरों की उत्पादक संस्थाओं को अपनी अतिरिक्त पैदावार बेचकर उनसे अपनी जरूरत की चीजें हासिल न करें, बल्कि वे एक–दूसरे की उपज को आपस में विनिमय कर लें। सामूहिक खेतों की संस्थाएँ और राज्य उद्योगों की संस्थाएँ अपनी–अपनी जरूरत के मुताबिक अपनी–अपनी उपज की अदला–बदली कर लें।

लेकिन, यह सरकार की ओर से कानून बना देने से नहीं हो जायेगा। इसके लिए दो चीजें जरूरी हैं – पहली तो यह कि राज्य के उद्योग–क्षेत्र का उत्पादन इतना अधिक बढ़ जाये कि वह गाँवों की जनता की जरूरत की चीजें काफी तादाद में और कम कीमत पर पैदा करने लगे; दूसरी यह कि सामूहिक खेती का क्षेत्र भी इतना अधिक अनाज और खेतिहर कच्चा माल पैदा करने लगे कि वह शहर की जनता और कारखानों की जरूरत पूरी कर सके। दोनों से ही एक–दूसरे का फायदा होगा। दोनों में से एक के न होने से जरूरत के मुताबिक पैदावार की अदला–बदली, उपज विनिमय का ढंग चल ही नहीं सकता।

उपज विनिमय से क्या होगा? बिकाऊ माल की पैदावार और इसीलिए मूल्य के नियम का क्षेत्र दिन–दिन सिकुड़ता जायेगा। समाज में जरूरतों की चीजें कम होने पर ही, यह जरूरत खड़ी होती है कि चीजों का मूल्य उनमें लगे हुए सामाजिक रूप से आवश्यक श्रम–समय के आधार पर तय किया जाये। जब उत्पादन इतना बढ़ जायेगा कि सभी की जरूरतें पूरी हो सकती हैं; तो यह मूल्य का नियम बेमतलब हो जायेगा। हम अपनी–अपनी जरूरतों के आधार पर ही चीजों का महत्व आँकेंगे। फिर, आज जो राष्ट्रीय योजना बनायी जाती है, उसमें सहकारी खेतों की मूल सम्पत्ति का शुमार नहीं किया जा सकता। उस समय इसका शुमार भी किया जा सकेगा। यह अड़चन मिट जायेगी और अधिक व्यापक योजना बनायी जा सकेगी। इसके फलस्वरूप, गाँवों और शहरों के बीच का भेद मिट जायेगा; क्योंकि एक ओर तो अधिकाधिक रूप में गाँवों के रहन–सहन का स्तर शहरों के बराबर होता जायेगा और दूसरी ओर तमाम बड़े–बड़े नये शहर उठ खड़े होंगे।

सहकारी खेती की सम्पत्ति का राष्ट्रीकरण करना, सिर्फ एक आरम्भिक कदम होगा। सोवियत के समाजवादी समाज में राज्य तभी तक रहेगा, जब तक वह चारों ओर से पूँजीवादी संसार से घिरा रहता है। जब सारे संसार में समाजवाद कायम हो जायेगा, तब वहाँ राज्य जैसी संस्था बेमतलब हो जायेगी और सारी सम्पत्ति सार्वजनिक संस्थाओं के हाथों में दे दी जायेगी। वही कम्युनिज्म का पूर्ण रूप होगा।

इस उपज विनिमय के लिए, आज के सोवियत समाज में प्राथमिक संगठन

मौजूद हैं। वहाँ आज भी खेतिहर उपज की सौदागरी होती है। यह उपज विनिमय ही है। इसी को सारे उत्पादन के क्षेत्र में फैलाने की आवश्यकता है।

इस प्रकार, दूसरी शर्त को तब तक पूरा नहीं किया जा सकता, जब तक कि पहली शर्त पैदावार के साधनों के उत्पादन का तेज होती हुई रफ्तार से प्रसार पूरी नहीं हो जाती। तब तक उपज विनिमय और सरकारी खेतों की सम्पत्ति को सामाजिक सम्पत्ति के स्तर तक ऊँचा उठाने का आर्थिक आधार तैयार नहीं हो सकता।

तीसरी शर्त है – चौमुखी सांस्कृतिक विकास की गारण्टी। इस सांस्कृतिक विकास के लिए, समाज के सभी सदस्यों की शारीरिक और मानसिक शक्तियों का चौमुखी विकास होना आवश्यक है। यह तभी हो सकता है, जब उन्हें इतनी शिक्षा मिल जाये कि वे 'सामाजिक विकास के सक्रिय कार्यकर्ता' बन सकें, यानी समाज के उत्पादन के विकास में पूरी समझदारी से और क्रियात्मक ढंग से योग देने लगें। इसके लिए, यह भी जरूरी है कि वे अपने पेशे अपनी ही इच्छा से चुन सकें और जब किसी दूसरे पेशे को भी अपनाना चाहें तो अपने पहले पेशे को छोड़कर, उसे अपना सकें। यानी जिन्दगी–भर एक ही पेशे से बँधे रहने की अनिवार्यता न हो। यह कैसे हो सकता है?

यह तभी हो सकता है, जब काम करने के घण्टे पाँच या छः से ज्यादा न हों। दूसरे शब्दों में, उत्पादन के साधनों का विकास हो जाये कि समाज के हर सदस्य के द्वारा पाँच या छह घण्टे रोज काम करने से ही सारे समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने लायक उत्पादन हो सके। समाज के सभी सदस्य अपना बाकी फुर्सत का समय – लगभग दस या ग्यारह घण्टे रोज अपने सांस्कृतिक विकास में लगा सकें; अपनी रुचि के विषयों और पेशों का अध्ययन करने में लगा सकें। उसके लिए सार्वजनिक लाजमी पोलीटेक्निकल (बहुकौशली) शिक्षा चालू की जाये और वह उससे फायदा उठाने के योग्य हों। यह भी जरूरी है कि उनकी तनख्वाह कम–से–कम दुगुनी कर दी जाये और मकानों की व्यवस्था में बुनियादी सुधार हो सकें।

तभी सांस्कृतिक विकास सम्भव होगा और समाज के प्रत्येक सदस्य के लिए उच्चतर कौशल प्राप्त करना सम्भव हो सकेगा। मानसिक और शारीरिक श्रम का भेद भी तभी मिट सकेगा।

ड्यूरिंग मतखण्डन में एंगेल्स ने बताया था कि श्रम को एक बोझ के रूप में खत्म करने और उसे जिन्दगी की एक प्रथम आवश्यकता बनाने के लिए, समाज को मनुष्य की श्रम के विभाजन से बँधे रहने की गुलामी मिटानी पड़ेगी। मार्क्स ने कहा था कि यह तभी हो सकेगा, जबकि व्यक्तियों के चौमुखी विकास

के साथ-साथ, सामाजिक उत्पादन की शक्तियाँ भी विकसित हो जायेंगी और सामाजिक सम्पदा के सारे स्रोत स्वतन्त्रता से प्रवाहित होंगे। महान स्तालिन की इन तीनों शर्तों में ये सभी उपकरण आ जाते हैं। इन तीनों शर्तों के पूरा होने पर ही, यह मुमकिन होगा कि 'हरएक से उसकी योग्यता के अनुसार और हरएक को उसके काम के अनुसार' के इस समाजवादी सूत्र से आगे बढ़कर, 'हरएक से उसकी योग्यता के अनुसार और हरएक को उसकी जरूरत के अनुसार' के कम्युनिस्ट सूत्र तक पहुँचा जा सकेगा। तभी यह बुनियादी संक्रमण सम्भव होगा।

और, सोवियत संघ तेजी से इस ओर बढ़ा जा रहा है। युद्ध के पहले के काल की उपेक्षा, वहाँ रोजाना की जरूरत की चीजों का उत्पादन 60 फीसदी, असल तनख्वाह 35 फीसदी, सहकारी खेतों के सदस्यों की आमदनी 40 फीसदी और श्रम-शक्ति की उत्पादक शक्ति 50 फीसदी बढ़ चुकी है। युद्ध के बाद से आज तक कीमतो में पाँच कटौतियाँ हो चुकी हैं।

इसी साल 1 सितम्बर को मॉस्को विश्वविद्यालय की 32 मंजिली इमारत का उद्घाटन समारोह हुआ है। इसमें 57 जातियों के लगभग 17,000 विद्यार्थी शिक्षा पा रहे हैं। इस इमारत के हॉल में 1,500 लोगों के बैठने लायक स्थान है। 148 शिक्षा भवनों, विज्ञान की शिक्षा के लिए 1,000 शिक्षा भवनों और विद्याथियों के निवास के लिए 5,754 कमरों के साथ-साथ एक विशाल पुस्तकालय भी है, जिसमें 12,00,000 ग्रन्थ हैं।

इस प्रकार ठोस आर्थिक आधार बनाकर, समाज की परिस्थिति में बुनियादी परिवर्तन करने और नये उच्चतर समाज के निर्माण करने के महान स्तालिन के इस मार्क्सवादी तरीके से हमें काफी शिक्षा मिलती है। हमें वह सही तरीका मिलता है जिसके द्वारा हम अपने देश की हालातों में भी बुनियादी आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन करने का काम शुरू कर सकते हैं। इससे हमारी सरकार की उस पंचसाला योजना की निस्सारिता समझ में आ जाती है, जो सामन्तवाद का खात्मा किये बिना, बुनियादी आर्थिक परिवर्तन करके किसानों को जमीन दिये बिना ही देश की कृषि में युगान्तरकारी विकास करने की डींग मारती है; जो मजदूरों और किसानों की आमदनी और रहन-सहन में कोई परिवर्तन किये बिना ही, उनको अध्ययन के लिए अवकाश दिये बिना ही सार्वजनिक शिक्षा और संस्कृति में व्यापक प्रसार की बातें करके जनता को धोखे में डालती है। महान स्तालिन की यह पुस्तिका हमें सीख देती है कि जब तक हम अपने देश की उत्पादन की शक्तियों के लक्षण और उत्पादन के पिछड़े हुए सम्बन्धों के टकराव को खत्म नहीं कर देते, तब तक कोई भी सांस्कृतिक या आर्थिक विकास असम्भव है। सबसे पहले हमें सामन्तवादी सम्बन्धों का क्रियाकर्म करके, जमीन

किसानों को देनी चाहिए; विदेशी और अपने देश की एकाधिकारी पूँजी को राज्य की सम्पत्ति बनाकर, कृषि और भारी उद्योग–धन्धों के विकास की योजना बनानी चाहिए।

पुस्तिका की देन

महान स्तालिन की यह पुस्तिका मार्क्सवादी–लेनिनवादी विज्ञान को एक और ऊँची सतह पर ले जाती है। संसार के मजदूर वर्ग के हाथों में एक अमोघ सैद्धान्तिक अस्त्र देती है। यह आज के काल का समाजवादी अर्थ–व्यवस्था से कम्युनिस्ट अर्थ–व्यवस्था की उच्चतर मंजिल तक संक्रमण के काल का मार्क्सवाद है।

इस पुस्तिका में महान स्तालिन ने तमाम कठिनतम सामाजिक समस्याओं का वैज्ञानिक समाधान पेश किया है, जैसे शहरों तथा गाँवों, मानसिक तथा शारीरिक श्रम और उद्योग–धन्धे तथा कृषि के विरोध की समस्याएँ। उन्होंने इनके आपसी टकरावों को मिटाने की राह बतायी है। इस तरह, यह पुस्तिका मार्क्सवादी विज्ञान में एक नया और शानदार अध्याय जोड़ती है।

इस पुस्तिका में महान स्तालिन ने मार्क्स और एंगेल्स की कई धारणाओं का संशोधन किया है और कई नयी धारणाएँ प्रस्तावित की हैं। समाजवादी उत्पादन के दो क्षेत्रों की समस्या पर मार्क्स और एंगेल्स ने विचार नहीं किया था।

इस पुस्तिका में वर्तमान युग की सभी मूलभूत समस्याओं का समाधान किया गया है। और, जब–जब मार्क्सवाद ने किसी नये युग की मूल सैद्धान्तिक समस्याओं का समाधान किया है, तब–तब सामाजिक विकास को एक नयी स्फूर्ति मिली है; क्योंकि जब सैद्धान्तिक समस्याएँ उलझी रहती हैं, तब वह सामाजिक विकास में एक रोड़ा बन जाती हैं। इसीलिए, यह पुस्तिका जहाँ एक ओर सोवियत संघ और जनवादी शान्तिप्रिय देशों के निर्माण–कार्य को एक नयी स्फूर्ति देती है, वहीं दूसरी ओर सारे संसार के मजदूरों को शान्ति, जनवाद और समाजवाद के अपने संघर्ष में एक नया बल और विश्वास देती है। यह हमें बताती है कि भावी संसार की सम्भावित रूपरेखा कैसी होगी।

महान स्तालिन की पुस्तिका के बिना, इसके वैज्ञानिक ज्ञान के बिना, सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 19वीं कांग्रेस पूरे सोवियत संघ को कम्युनिज्म की उच्चतर मंजिल पर ले जाने के कार्यक्रम को इतने वैज्ञानिक तरीके पर नहीं बना सकती थी।

6. उन्नीसवीं कांग्रेस और अन्तिम सन्देश : महान स्तालिन ने 28 सितम्बर 1952 को अपनी पुस्तिका पूरी की थी। उसके लगभग एक सप्ताह बाद

ही सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की कांग्रेस अक्टूबर के दूसरे सप्ताह में हुई। इस कांग्रेस में 44 दूसरे देशों की बिरादर कम्युनिस्ट पार्टियों के प्रतिनिधि भी मौजूद थे। इस प्रकार, यह कांग्रेस संसार के मजदूरों की एकता और उनकी बढ़ती हुई शक्ति की प्रतीक बन गयी थी।

इस कांग्रेस में कॉ. मालेन्कोफ ने अपनी रिपोर्ट पेश की थी। इस रिपोर्ट में महान स्तालिन की पुस्तक के द्वारा प्रस्तुत किये गये वैज्ञानिक मार्क्सवाद की रोशनी में अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति का विवेचन किया गया था। उसमें बताया गया था कि कैसे फासिस्टों की हार के कारण, साम्राज्यवादियों की सारी योजनाएँ धूल में मिल गयी हैं और समाजवाद तथा जनवाद के खेमे की शक्ति और अधिक बढ़ गयी है; किस प्रकार उपनिवेशों और अर्द्ध-उपनिवेशों की जनता में जनवाद की स्थापना और मुक्ति के लिए एक नया उभार आया है। चीन में जनवाद की जीत के साथ-साथ, दुनिया की एक तिहाई जनता जनवाद और शान्ति के खेमे में आ गयी है। साम्राज्यवादियों का खेमा आम संकट के भँवर में फँसकर नाश की ओर बढ़ रहा है और जनवाद का खेमा महान निर्माणकारी योजनाएँ कार्यान्वित कर रहा है। सोवियत संघ की जनता कम्युनिज्म के निर्माण की ओर अग्रसर हो रही है। उन्होंने सारी दुनिया के सामने युद्धखोरों को बेनकाब करके, सारे संसार के जनसाधारण को शान्ति के लिए क्रियाशील बनाने का काम रखा।

इस कांग्रेस ने सोवियत की जनता के सामने कम्युनिज्म की उच्चतर मंजिल तक पहुँचने की परिस्थितियाँ पैदा करने के लिए अगली पंचसाला योजना का मसविदा भी पेश किया।

इस कांग्रेस ने शान्ति और मुक्ति के मानवता के भावी पथ को प्रकाशित किया।

अन्तिम सन्देश

इसी कांग्रेस के अन्त में 14 अक्टूबर 1952 को हमारे युग के सबसे बड़े महापुरुष स्तालिन ने मानवता को अपना यह अन्तिम सन्देश दिया :

"साथियो! मुझे इजाजत दीजिए कि मैं अपनी कांग्रेस की तरफ से उन सभी बिरादराना पार्टियों और दलों के प्रति उनके मित्रतापूर्ण अभिनन्दन के लिए, सफलता की उनकी कामनाओं के लिए और उनके विश्वास के लिए आभार प्रदर्शित करूँ, जिनके प्रतिनिधियों ने अपनी उपस्थिति से हमारी कांग्रेस की इज्जत बढ़ायी है या जिन्होंने कांग्रेस के लिए अभिनन्दन के सन्देश भेजे हैं।

"उनका यह विश्वास हमारे लिए विशेष रूप से मूल्यवान है। यह इस बात का प्रतीक है कि जनता के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारी पार्टी के संघर्ष में,

जंग के खिलाफ संघर्ष में और शान्ति कायम रखने के संघर्ष में वे हमारी पार्टी का समर्थन करने को तैयार हैं।

"यह सोचना गलत होगा कि चूँकि हमारी पार्टी अब एक शक्तिशाली ताकत बन गयी है, इसलिए उसे समर्थन की जरूरत नहीं रही। यह बात सही नहीं है। बाहरी देशों को बिरादराना जनता के विश्वास, सहानुभूति और समर्थन की हमारे देश को हमेशा जरूरत रही है और जरूरत रहेगी।

"इस समर्थन की विशेषता यह है कि जब कोई बिरादराना पार्टी हमारी पार्टी की शान्तिमय आकांक्षाओं का समर्थन करती है, तो साथ–ही–साथ यह, शान्ति कायम रखने के संघर्ष में स्वयं उनकी जनता का समर्थन भी हो जाता है। सन 1918–19 में, जब ब्रिटेन के पूँजीपति वर्ग ने सोवियत संघ पर हथियारबन्द हमला किया था, तो ब्रिटेन के मजदूरों ने 'रूस में दखलन्दाजी बन्द करो' का नारा बुलन्द करके, उस जंग के खिलाफ संघर्ष का संगठन किया था। उनका यह समर्थन, सबसे पहले शान्ति के लिए ब्रिटेन की जनता के संघर्ष का समर्थन था और साथ ही, वह सोवियत संघ का समर्थन भी था। कामरेड थोरे या कामरेड तोगलियाती जब ऐलान करते हैं कि उनके देशों की जनता सोवियत संघ की जनता के खिलाफ लड़ाई न लड़ेगी तो, यह ऐलान सबसे पहले शान्ति के लिए संघर्ष करने वाले फ्रांस और इटली के मजदूरों और किसानों का समर्थन करना होता है और साथ ही, यह सोवियत संघ की शान्तिमय आकांक्षाओं का समर्थन भी होता है। पारस्परिक समर्थन की इस विशेषता का कारण यह है कि हमारी पार्टी के हित, न सिर्फ शान्ति–प्रेमी जनता के हितों के खिलाफ नहीं जाते, बल्कि उसके विपरीत, उनके हितों के साथ एकरूप हो जाते हैं। जहाँ तक सोवियत संघ का सवाल है, उसके हित विश्व शान्ति के ध्येय से एकदम ही अभिन्न हैं।

"स्वाभाविक है कि हमारी पार्टी बिरादराना पार्टियों की ऋणी नहीं रह सकती और उसे अपनी ओर से उनका और स्वतन्त्रता के उनके संघर्ष में, शान्ति कायम रखने के उनके संघर्ष में, उनके देशों की जनता का भी समर्थन करना ही चाहिए। सन 1917 में, जब हमारी पार्टी ने राज्यसत्ता पर कब्जा कर लिया और जब पूँजीपतियों व जमींदारों के उत्पीड़न के खात्मे के लिए कारगर कदम उठा लिया था तो बिरादराना पार्टियों के प्रतिनिधियों ने हमारी पार्टी के साहस और कामयाबियों की प्रशंसा में उसे दुनिया के क्रान्तिकारी आन्दोलन और मजदूर आन्दोलन की 'तूफानी पलटन' की उपाधि दी। इस तरह उन्होंने यह आशा प्रकट की कि 'तूफानी पलटन' की सफलताओं से, पूँजीवादी जुए के नीचे कराह रही जनता को राहत पाने में मदद मिलेगी। मेरे विचार में हमारी पार्टी ने इन आशाओं को पूरा किया है, खासतौर से दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान में जब जर्मन और जापानी

फासिस्टी आतंक का अन्त करके, सोवियत संघ ने यूरोप और एशिया की जनता को फासिस्टी गुलामी के खतरे से मुक्त किया।

"जब हमारी यह 'तूफानी पलटन' एकमात्र और अकेली थी, जब उसे इस नेतृत्व की भूमिका को करीब-करीब अकेला ही पूरा करना पड़ रहा था, तब बेशक इस गौरवशाली उद्देश्य को पूरा करना बहुत ही मुश्किल काम था। लेकिन, यह तो बीते जमाने की बात है। आज हालात बिल्कुल ही भिन्न हैं। आज जब चीन और कोरिया से लेकर चेकोस्लोवाकिया और हंगरी तक जनता के जनवादी देशों के रूप में नयी 'तूफानी पलटनें' सामने आ गयी हैं – तो हम-हमारी पार्टी के लिए संघर्ष करना ज्यादा आसान हो गया है और सचमुच में काम बड़े मजे में आगे बढ़ रहा है।

"वे कम्युनिस्ट, जनवादी, मजदूर और किसान पार्टियाँ जिनके हाथों में अब तक भी सत्ता की बागडोर नहीं आयी है और जो अभी भी पूँजीपति वर्ग के तानाशाही कानूनों के बूटों के नीचे काम कर रही हैं, उनकी ओर खास ध्यान देने की जरूरत है। बेशक, उनके लिए काम करना ज्यादा मुश्किल है। फिर भी, उनके लिए काम करना उतना कठिन नहीं है जितना कि हमारे रूसी कम्युनिस्टों के लिए जारशाही जमाने में था, जब थोड़े आगे बढ़े हुए आन्दोलन को भी भयानक अपराध करार दे दिया जाता था। फिर भी, रूसी कम्युनिस्ट दृढ़तापूर्वक डटे रहे, वे मुश्किलों से नहीं डरे और उन्होंने विजय हासिल की। इन पार्टियों के बारे में भी ऐसा ही होगा।

"आखिर इन पार्टियों के लिए काम करना उतना ही कठिन क्यों नहीं रहा है, जितना कि वह जारशाही जमाने में रूसी कम्युनिस्टों के लिए था?

"एक तो इसलिए कि उनके सामने संघर्ष और सफलताओं की वे मिसालें मौजूद हैं, जिन्हें सोवियत संघ और जनता के जनवादी देशों ने पेश किया है। इस कारण, वे न देशों की गलतियों व सफलताओं से सीख सकती हैं और इस तरह अपना काम आसान बना सकती हैं।

"और, दूसरे इसलिए कि स्वाधीनता आन्दोलन का खास दुश्मन पूँजीपति वर्ग स्वयं बदल गया है, बहुत काफी बदल गया है। वह और ज्यादा प्रतिक्रियावादी हो गया है। वह जनता से अलग हो गया है और इस तरह उसने अपने को कमजोर बना लिया है।

"स्वाभाविक है कि यह परिस्थिति भी, क्रान्तिकारी और जनवादी पार्टियों के काम को आसान बनायेगी ही।

"पहले पूँजीपति वर्ग उदारवादी होने का शौक कर सकता था, पूँजीवादी-जनवादी स्वतन्त्रताओं का समर्थन कर सकता था और ऐसा करके वह जनता के बीच

लोकप्रियता हासिल कर सकता था। अब तो उस उदारवाद का एक चिन्ह भी बाकी नहीं रह गया है। तथाकथित 'व्यक्ति की आजादी' अब नहीं रह गयी है। अब व्यक्ति के अधिकार सिर्फ उन्हीं के लिए माने जाते हैं, जिनके पास पूँजी है; दूसरी ओर बाकी तमाम नागरिकों को सिर्फ शोषण के योग्य इंसानी कच्चा माल माना जाता है। मनुष्यों और देशों के समान अधिकारों के सिद्धान्त को पैरों तले रौंदा गया है। उसकी जगह, यह सिद्धान्त कायम किया गया है कि अल्पमत शोषकों को तो तमाम अधिकार हैं और बहुमत शोषितों को कोई अधिकार नहीं है। "पूँजीवादी–जनवादी स्वतन्त्रताओं के झण्डे को उठाकर फेंक दिया गया है। यदि आप जनता की बहुसंख्या को अपने इर्द–गिर्द संगठित करना चाहते हैं तो मेरे विचार से आपको ही, कम्युनिस्ट और जनवादी पार्टियों के प्रतिनिधियों को ही, इस झण्डे को उठाना होगा और आगे ले चलना होगा। दूसरा और कोई नहीं है जो इसे उठा सके।

"पहले पूँजीपति वर्ग को राष्ट्र का अगुआ माना जाता था। उसने राष्ट्र के अधिकारों और आजादी को सबसे ऊपर मानकर उनका समर्थन किया था। अब 'राष्ट्रीय सिद्धान्त' का एक भी चिन्ह बाकी नहीं रह गया है। अब पूँजीपति वर्ग डॉलरों के लिए राष्ट्र के अधिकारों और आजादी को बेच देता है। राष्ट्रीय आजादी और राष्ट्रीय स्वाधीनता का झण्डा उठाकर फेंक दिया गया है। यदि आप अपने देश के देशभक्त होना चाहते हैं, यदि आप राष्ट्र की अगुआ शक्ति बनना चाहते हैं, तो इस बात में जरा भी शक नहीं है कि आपको ही, कम्युनिस्ट और जनवादी पार्टियों के प्रतिनिधियों को ही, इस झण्डे को उठाना होगा और आगे ले चलना होगा। दूसरा और कोई नहीं है जो उसे उठा सके।

"आज की स्थिति ऐसी ही है। स्वाभाविक है कि इन तमाम परिस्थितियों से उन कम्युनिस्ट और जनवादी पार्टियों के काम में आसानी होगी, जिनके हाथों में अभी तक भी सत्ता की बागडोर नहीं आयी हे।

"फलस्वरूप, जहाँ अभी भी पूँजी का बोलबाला है, उन देशों की हमारी बिरादर पार्टियों की सफलता और विजय पर भरोसा करने का हर कारण मौजूद है।

"हमारी बिरादर पार्टियाँ जिन्दाबाद!

"बिरादर पार्टियों के नेता दीर्घजीवी हों और स्वस्थ रहें!

"राष्ट्रों के बीच शान्ति जिन्दाबाद!

"जंगबाजों का नाश हो!"

महान स्तालिन का यह अन्तिम सन्देश हमारे देश के लिए विशेष महत्व का है। हमारे देश में हर मनुष्य कहता है कि राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी ने पन्द्रह अगस्त

के अपने सभी वायदों को तोड़ दिया है, और उन सभी सिद्धान्तों के खिलाफ खड़ी हो रही है, जिनके लिए एक जमाने में वह साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ा करती थी। महान स्तालिन ने बताया है कि अब उन सिद्धान्तों की रक्षा करने का काम भारतीय मजदूरों और किसानों की कम्युनिस्ट और दूसरी जनवादी पार्टियों को ही करना पड़ेगा। यह सीख हमें अपने देश की स्वतन्त्रता, प्रभुता और नागरिक अधिकारों की रक्षा के लिए सभी जनवादी पार्टियों का एक संयुक्त मोर्चा बनाने की राह बताती है।

अध्याय - ग्यारह

महाप्रयाण (सन 1953)

19वीं कांग्रेस ने नयी पंचवार्षिक योजना तथा दूसरी बातों पर अपने निर्णय करते समय नहीं सोचा था कि पार्टी कांग्रेस में महान नेता की यह अन्तिम उपस्थिति है।

आखिर क्रान्ति का पैंतीसवाँ वार्षिकोत्सव आया। 6 नवम्बर को बोल्शोई नाट्यशाला की बैठक में, स्तालिन मार्शल की वर्दी में स्वस्थ दीख पड़ते थे। उन्होंने दृढ़तापूर्वक कदम बढ़ाते हुए, दूसरी पंक्ति के बीच में अपना स्थान ग्रहण किया। उनके साथ पोलिट ब्यूरो के सदस्य और दूसरे नेता भी थे। अगले दिन हर साल की तरह लाल मैदान में अक्टूबर क्रान्ति का महान महोत्सव बड़े जोश-खरोश के साथ मनाया गया। उस समय भी स्तालिन मार्शल की वर्दी में आकर, लेनिन-उपाधि की छत पर खड़े हुए। लोगों ने अपने प्रिय नेता के दर्शन से गद्गद हो हर्ष-ध्वनि की। प्रधान भाषण मार्शल तिमोशेंको ने किया। कोई दु:शंका नहीं थी। यद्यपि समय-समय पर उनके स्वास्थ्य के सम्बन्ध में चिन्ताजनक खबरें भी उड़ा करती थीं, लेकिन साम्राज्यवादियों की झूठ से अघाये हुए लोग उन्हें कोई महत्व नहीं देते थे।

अन्त में 1953 का सन आया। 7 फरवरी को अर्जेन्तीना के राजूदत ब्रावो ने स्तालिन से मुलाकात करने का सौभाग्य प्राप्त किया। उसने 24 मिनटों तक मुलाकात की और उत्सुक जनता ने बहुत सन्तोष की साँस ली, जब ब्रावो ने बतलाया : "वह शारीरिक तौर से बहुत ही स्वस्थ और बातचीत में असाधारण तौर से सजग दिखायी पड़े।" 17 फरवरी की रात को भारतीय राजदूत क.प.स. मैनन ने भी स्तालिन से क्रैमलिन में आधे घण्टे तक मुलाकात की। उन्होंने भी अर्जेन्तीना के राजदूत की तरह ही उनके स्वास्थ्य के बारे में खुशखबरी दी। लेकिन, 73 वर्षों तक कर्मठ शरीर कितने दिनों तक साथ देता?

1. निधन

आखिर 1 मार्च का वह शोचनीय दिन आ गया, जब हृदय के धड़कते रहते भी मस्तिष्क ने विश्राम लेना शुरू किया। उस दिन रात को वह बेहोश हुए, तो फिर होश में नहीं आये। 5 मार्च को उन्होंने अपनी जीवन-यात्रा समाप्त की। महान स्तालिन की बीमारी और मृत्यु के बारे में सूचना देते हुए, डाक्टरों ने निम्न बुलेटिन निकाला :

"1 मार्च की रात को खून का दबाव बढ़ जाने तथा रक्त की नालियों की दीवारों के मोटे और कड़े पड़ जाने के कारण, यो.वि. स्तालिन के मस्तिष्क के अन्दर बायें अर्द्धवृत्त में रक्तस्राव हो गया। फलस्वरूप, शरीर के दाहिने हिस्से में लकवा मार गया और उनकी चेतना शक्ति का लगातार ह्रास शुरू हो गया। बीमारी के ठीक पहले दिन ही, स्नायु केन्द्रों की क्रियाओं में गड़बड़ी के लक्षण पाये गये। दिन-प्रतिदिन यह गड़बड़ी बढ़ती ही गयी। लम्बे विराम के साथ, रुक-रुककर आने वाली साँसों के रूप में यह गड़बड़ी बढ़ती ही गयी। 2 मार्च की रात को साँस लेने की क्रिया में गड़बड़ी जब-तब भयानक रूप धारण करने लगी। बीमारी शुरू होने के समय से ही, हृदय और रक्त संचार-प्रणाली में भारी विकार पाये गये; खून का ऊँचा दबाव, नाड़ी की निरन्तर असमान धड़कन तथा दिल का फैल जाना। साँस लेने की क्रिया तथा रक्त-संचार में गड़बड़ी के बढ़ते जाने के कारण, 3 मार्च के दिन से ऑक्सीजन की कमी शुरू हो गयी थी। बीमारी के पहले दिन से तापमान अत्यन्त बढ़ गया था और रक्त के श्वेतकणों में वृद्धि हो गयी थी, जो फेफड़ों में सूजन की बढ़ती की सूचक हो सकती थी।

"बीमारी के आखिरी दिन शरीर की सामान्य स्थिति तेजी से बिगड़ गयी, दिल और रक्त-संचार-प्रणाली में गहरे और भीषण ह्रास (शरीर-पात) के बार-बार आक्रमण होने लगे। बिजली के जरिये दिल की धड़कनों का चार्ट लेने से पता चला कि हृदय की मांसल दीवारों के और कड़े हो जाने से, वर्तुलाकार धमनियों के अन्दर रक्त संचार में भारी गड़बड़ी आ गयी।

"5 मार्च को दोपहर के बाद, रोगी की हालत तेजी से बेहद बिगड़ गयी : साँस उखड़ गयी, उसकी गति अत्यन्त विकृत हो गयी, नाड़ी की धड़कन प्रति मिनट 140-150 तक पहुँच गयी, नाड़ी का फैलाव गिर गया।

"हृदय, रक्त संचार क्रिया तथा साँस में उत्तरोत्तर बढ़ती के साथ नौ बजकर पचास मिनट (भारतीय समय - रात के एक बजकर बीस मिनट) पर यो. वि. स्तालिन की मृत्यु हो गयी।"

सोवियत की जनता अपने महान नेता को कितना प्यार करती थी, किस तरह

उन्हें पिता, त्राता और महामानव के रूप में देखती थी, इसका पता उनके सम्मान में की गयी परेड, अर्थी की यात्रा और उनके जन्मस्थान गोरी में व्यक्त हुए जनता के उद्‌गारों से लगता है। इसीलिए, हम यहाँ अलेक्सेह सुरिकोफ द्वारा लिखित वर्णन और 'प्राव्दा' के लेखों से उद्धरण दे रहे हैं।

2. सम्मान गारद

रात और दिन, बिना किसी विराम के, लगातार तीन दिनों तक मॉस्को के बाजारों में लोगों के प्रेम और शोक का सजीव सागर उमड़-उमड़कर स्तम्भ-सदन की ओर प्रवाहित होता रहा। जिसके भी वक्ष में सोवियत देशभक्त का हृदय धड़का है, ऐसा हरएक व्यक्ति इन दिनों नेता और शिक्षक की अर्थी के पास तक पहुँचने की कोशिश कर रहा था, ताकि वह अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर सके, स्तालिन के प्रति अपनी पितृभक्ति को व्यक्त कर सके। उनके लक्ष्य के प्रति, उनकी पार्टी के प्रति वफादारी की शपथ ले सके। नेता को अन्तिम श्रद्धांजलि देने का यह क्रम अगर सालभर तक चलता रहता, तब भी यह सजीव मानव-सागर इसी प्रकार अन्तहीन बना रहता, जिस प्रकार कि इन उन्तीस सालों से वह अनन्त सजीव सागर ग्रेनाइट पत्थर से बनी लेनिन की समाधि के सामने उमड़ता रहा है।

हर कोने से स्तम्भ-सदन में लाये गये फूलों और हारों का ढेर लोगों के प्रेम की अभिव्यक्ति का केवल एक ही रूप है। लेकिन, इन फूलों की मूक भाषा कितनी अर्थपूर्ण है! हारों के साथ लगे स्याह हाशिये वाले लाल फीतों पर सुनहरी अक्षरों में रूसी और बन्धु जातियों की भाषाओं में शुभ्रतम, अत्यन्त सच्चे, कोमलतम और साहस से पूर्ण शब्द अंकित हैं।

सोवियत जनता के प्रेम और शोक को मुखर करने वाले हारों के साथ-साथ, हमारे देश की सीमाओं से बाहर शान्ति और समाजवाद के संघर्ष में योग देने वाले हमारे मित्रों के हार भी शामिल हैं। महान चीन संघर्षरत कोरिया, जनता के जनतन्त्रों और पूँजीवादी देशों की बिरादराना कम्युनिस्ट तथा मजदूर पार्टियों के एक के बाद एक प्रतिनिधि-मण्डलों ने शव-शय्या के चरणों में अपने हार अर्पित किये। इनमें से एक पर, ये शब्द अंकित हैं : "एक कृतज्ञ और निस्सीम परमभक्त शिष्य मौरिस थोरेज की ओर से!"

इन तीन दिनों में कई-कई घण्टों तक, दिन और रात उमड़ते-बढ़ते अबाध मानव-सागर के तटों पर मैं खड़ा रहा। लगता था, जैसे सामने से गुजरने वाले हरएक भाई और हरएक बहिन के हृदय ने आँखों की चमक से अनुभव किया

अन्तर से निकले उन शब्दों की सच्चाई को वे शब्द जो मेरे देशवासियों के मुँह से महान विदाई के इन क्षणों में प्रकट हुए हैं।

मॉस्को–निवासी इस किशोर को देखिए, जिसके सिर पर घने लाल बाल छाये हैं। अनायास ही उसके पाँव धीमे पड़ जाते हैं और वह एक लम्बी गहरी नजर से स्तालिन के रूप को देखता है – ठीक बड़े लोगों की भाँति! अपने ऊर्ध्वमुखी और उज्ज्वल समूचे भावी जीवन के लिए, वह महान स्तालिन की छवि को, उनकी अमिट स्मृति को अपने हृदय में उतार लेना चाहता है।

सोवियत अफसरों और तोपखाना एकेदमी के छात्रों की पाँतें, एक के बाद एक महान जनरल स्सिमो के सामने से गुजरती हैं। चौड़े कन्धों के ये प्रतापी युवक, मालूम होता है, खासतौर के मजबूत इस्पात से ढाले गये हैं। आकृति सम्बन्धी कुछ अलक्षित चिह्नों में उनमें रूसियों, उक्रेनियों और उज्बेकों को और हमारी शानदार मातृभूमि में बसने वाली अन्य जातियों की सन्तानों को पहचाना जा सकता है। हमारे देश की जनता की शानदार स्तालिन–पीढ़ी के इन किशोर प्रतिनिधियों की प्रतिभापूर्ण आँखों में कितना अक्षय पितृप्रेम और सैनिकों जैसी वफादारी हिलोरें ले रही हैं।

नेता की अर्थी के निकट अभी–अभी दो सामूहिक किसान महिलाओं ने 'सम्मान गारद' में स्थान ग्रहण किया है – इनमें एक बुजुर्ग महिला है और दूसरी फुर्तीली तपे चेहरे की एक किशोरी। दोनों के वक्षों पर 'समाजवादी श्रम वीर' के सोने के तारे दिखायी दे रहे हैं। साम्यवाद के प्रतिभाशाली शिल्पकार की महान विदाई के इन क्षणों में सोवियत जनता की सभी पीढ़ियों की स्तालिनी एकता के ये मूर्तिमान रूप हैं।

तीन दिनों तक महान और बुद्धिमान स्तालिन की अर्थी के सामने जनता के प्रेम और शोक का अक्षय और अनन्त जीवित सागर उमड़ता रहा। तीन दिनों तक सभी कालों और सभी लोगों के महानतम सेनानी की अर्थी के चरणों के पास सैनिक गारद बदलते रहे। स्तालिनी सैनिकों के वीरतापूर्ण खिले हुए किशोर चेहरे, 'प्रोजेक्टरों' के प्रकाश में चमकती हुई संगीनों की इस्पाती नोकें, दुनिया की परम विजयिनी सेना और शान्ति तथा निर्माण–सम्बन्धी श्रम के निःस्वार्थ रखवारों की सेना, अपनी शक्ति और अमर गौरव के रचयिता की अर्थी के सामने शोकपूर्ण सम्मान में खड़ी थी।

तीन दिनों तक अर्थी के 'सम्मान गारद' बदलते रहे।

पार्टी–कर्मियों, मन्त्रियों, सोवियत सेना के प्रसिद्ध मार्शलों और जनरलों, नौसेना के एडमिरलों सभी ने बारी–बारी से अर्थी के निकट 'सम्मान गारद' में अपना स्थान ग्रहण किया।

मेहनतकश लोगों के लक्ष्य के प्रति असीम भक्ति की भावना में साथी स्तालिन द्वारा पाले-पोसे गये, सोवियत देश के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों, जन-कलाकारों और साहित्यकारों, श्रेष्ठतम शिक्षकों, डॉक्टरों, इंजीनियरों, डिजाइनरों, आविष्कारकों, समाजवादी सोवियत के बुद्धिजीवियों के प्रतिनिधियों के बारी-बारी से विज्ञान के महान प्रकाशपुंज की अर्थी के निकट 'सम्मान गारद' में अपना स्थान ग्रहण किया।

करोड़ों सोवियत जवानों की सशक्त सेना के नेताओं और सामान्य सैनिकों ने, मजदूर सभाओं के नेताओं और सामान्य कार्यकर्ताओं ने, उद्योग की अग्रणी विभूतियों और नये समाजवादी देहातों के निर्माताओं ने, एक के बाद एक 'सम्मान-गारद' में स्थान ग्रहण किया।

जनता के इन सन्देश-वाहकों ने नेता की अर्थी के सम्मुख केवल भारी शोक और दु:ख ही प्रकट नहीं किया, बल्कि सबसे बढ़कर यह कि उन्होंने लेनिन और स्तालिन के लक्ष्य के प्रति वफादार रहने की, कम्युनिस्ट पार्टी और उसकी केन्द्रीय कमेटी के प्रति वफादार रहने की अटूट शपथ ग्रहण की।

'सम्मान-गारद' में दुनिया के पहले समाजवादी राज्य के मेहनतकश लोगों के साथ-साथ जनता के जनतन्त्रों की सरकारों के अध्यक्षों, प्रतिनिधि-मण्डलों के सदस्यों, अन्तरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट और मजदूर आन्दोलन के प्रमुख नेताओं ने बारी-बारी से स्थान ग्रहण किया।

चेकोस्लोवाकिया जनतन्त्र के अध्यक्ष क्लीमन्त गोतवाल्द, पोल जनता के जनतन्त्र की मन्त्रिपरिषद के अध्यक्ष बोलेस्लवि बीरूत, पोलैण्ड के मार्शल रोकास्सोवस्की, चीनी जनता के जनतन्त्र की राजकीय प्रशासन-परिषद के महामन्त्री और पर-राष्ट्रमन्त्री चाउ-एन-लाई, रूमानियन जनता के जनतन्त्र की मन्त्रिपरिषद के अध्यक्ष गेओर्गे गेओर्गीयू देज, बुल्गारी जनता के जनतन्त्र की मन्त्रिपरिषद के अध्यक्ष विल्को चेर्वेन्कोफ, मगयार जनता के जनतन्त्र की मन्त्रिपरिषद के अध्यक्ष मथाइअस राकोसी, जर्मनी समाजवादी एकता पार्टी के प्रधानमन्त्री वाल्टर उलब्रिख्त, जर्मन जनवादी जनतन्त्र के प्रधानमन्त्री ओटो ग्रोटावाल्ड, मंगोल जनता के जनतन्त्र के प्रधानमन्त्री चेदेन्बल ने बारी-बारी से 'सम्मान-गारद' में स्थान ग्रहण किया।

'सम्मान-गारद' में स्थान ग्रहण करने वालों में इटली की जनता के नेता पाल मीरो तोगलियात्ती, स्पेन की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की प्रधानमन्त्रिणी दोलोर इबारुरी, ब्रिटेन की कम्युनिस्ट पार्टी के प्रधानमन्त्री हैरी पौलिट, आस्ट्रिया की कम्युनिस्ट पार्टी के अध्यक्ष को प्लेनिंग, फिनलैण्ड की कम्युनिस्ट पार्टी के अध्यक्ष विल्ले पेस्सी और इटली की सोशलिस्ट पार्टी के मन्त्री पिएत्रो नेन्नी भी थे।

सुबह के दो बजे महान स्तालिन के वफादार शिष्यों और सहकर्मियों साथी ग.म. मालेन्कोफ, व.म. मोलोतोफ, क.य. वारोशिलोफ, न.स. बुल्गारिन, ल.म. कगानोविच, अ.ई. मिकोयान, म.ज. साबुरोफ और म.ग. पेर्बुखिन ने 'सम्मान गारद' ग्रहण किया।

इसके बाद 'सम्मान गारद' में न.म. श्वेर्तिक, म.अ. मुस्लोफ, प.क. पोनोमरेन्को, न.अ. मिखाइलोफ, अ.अ. अन्द्रेयेफ, अ.म. वसीलेव्स्की और ग.क. झुकोफ ने स्थान ग्रहण किया।

सुबह के ढाई बजे मजदूर सभा-सदन के स्तम्भ भवन में प्रवेश बन्द कर दिया गया। महान नेता के प्रति अन्तिम श्रद्धांजलि देते हुए, सोवियतों के देश के लोगों ने साथी स्तालिन द्वारा लिखित 'सोवियत संघ में समाजवाद की आर्थिक समस्याएँ' और सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की उन्नीसवीं कांग्रेस में दिये गये उनके भाषण 'अन्तिम सन्देश' में वर्णित साम्यवाद के पथ के प्रति वफादार रहने की शपथ ग्रहण की।

स्तालिन हम सोवियत लोगों के लिए, हमारे नेताओं – अपने शिष्यों और सहकर्मियों के लिए, एक समृद्ध और गौरवपूर्ण दायभाग छोड़ गये हैं। पार्टी की उन्नीसवीं कांग्रेस में कहे गये, ग.म. मालेन्कोफ के ये शब्द सोवियत जनता में गहरे देशभक्तिपूर्ण गर्व का संचार करते हैं :

"हमारा शक्तिशाली देश अपनी शक्ति के शिखर पर पहुँच, सफलता पर सफलताएँ पाता हुआ आगे बढ़ रहा है। हमारे पास पूर्ण साम्यवादी समाज के निर्माण के लिए आवश्यक प्रत्येक चीज है। सोवियत संघ प्राकृतिक निधियों का अक्षय भण्डार है। हमारा राज्य इन व्यापक निधियों को मेहनतकशों के काम में लाने की अपनी योग्यता को प्रदर्शित कर चुका है। सोवियत जन एक नये समाज का निर्माण करने और विश्वास के साथ सामने भविष्य की ओर देखने की अपनी क्षमता को प्रदर्शित कर चुके हैं।

"लड़ाइयों में परखी, कसौटी पर खरी उतरी, फौलादी बनी हुई तथा लेनिन-स्तालिन की नीति का अडिग अनुसरण करने वाली हमारी पार्टी सोवियत संघ की जनता की अगुआ है।"

इसी में हमारी शक्ति निहित है। इसी में आने वाली सुबह में हमारे विश्वास का अक्षय स्रोत निहित है। इसी में यह गारण्टी निहित है कि दुनिया के मेहनतकश मानव-सुख के निर्माण में हमारे अनुभवों से सीखते हुए, प्रतिदिन अधिकाधिक संख्या में उसी पथ को ग्रहण करेंगे, जिस पर कि हम लेनिन और स्तालिन के विजयी झण्डे के नीचे आगे बढ़ रहे हैं।

3. स्तालिन की जन्मभूमि – गोरी

उस रात को लोग कभी नहीं भूलेंगे। गोरी कस्बे की आँखें जरा भी नहीं झपकीं। पौ फटते ही हजारों लोग स्तालिन प्रांगण में जमा हो गये। उनकी आँखों में अकथनीय शोक और दु:ख भरा था। योसेफ विस्यारियोनोविच के निधन का समाचार मुँह–मुँह सारे कस्बे में फैल गया था।

"हमारी कितनी इच्छा थी कि साथी स्तालिन अपने जन्मस्थल गोरी में एक बार और आते और देखते कि यहाँ की प्रत्येक चीज में कितना अद्‌भुत परिवर्तन हो गया है। हम चाहते थे कि हमारे साथ वह हमारी खुशी में शामिल होते। और, अब...।" स्कूल के एक बहत्तर वर्षीय वृद्ध शिक्षक के मुँह से ये शब्द निकले थे। उनके इन शब्दों में गोरी के प्रत्येक निवासी की आकांक्षा व्यक्त हुई थी।

स्तालिन प्रांगण उस मामूली घर के पास पहुँचा देता है, जिसमें नेता ने जन्म लिया था। दुनिया के सभी हिस्सों से आये हुए, अनगिनत लोग इस घर की यात्रा कर चुके हैं और आगे भी स्तालिन की प्रतिभा के अमर गौरव के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए, अनगिनत लोग इस घर की यात्रा करेंगे। उस दिन यहाँ शोक से पूर्ण लोगों की एक अनन्त धारा उमड़ पड़ी। इस घर के सामने, जहाँ महान जीवन का उदय हुआ था – एक ऐसे जीवन का जिसने अपने रक्त की आखिरी बूँद तक मेहनतकश लोगों की सेवा की – वे नंगे सिर निस्तब्ध और निश्चल खड़े थे। गोरी के निवासियों के साथ आसपास के खिदिस्तावी, तिनिखिदी, स्वेनेती, खेत्लूबानी और दूसरे गाँवों के सामूहिक किसान भी यहाँ आये थे। छोटे घर के ऊपर बने संगमरमरी पण्डाल के खम्भों पर काले हाशियों से युक्त, आधे झुके हुए फरहरे फहरा रहे थे।

स्मारक म्यूजियम में उन्नीस बड़ी जिल्दें रखी हैं, जिनमें आगन्तुकों की भावनाएँ दर्ज हैं। ये योसे विस्सारियोनोविच स्तालिन के प्रति समूची प्रगतिशील मानव जाति के असीम प्रेम, भक्ति और कृतज्ञता का हृदयस्पर्शी चित्र पेश करती हैं।

आइए आखिरी पलों को पलटकर एक नजर देखें, जिन पर मार्च सन 1953 की तारीखें पड़ी हैं। यहाँ पर आखाल्त्सीने जिले के सामूहिक किसान बगरात दव्नोसादर्जे के, महान कौमी युद्ध के एक सैनिक के जिसने अपने दो बेटों के साथ तुआप्से से बर्लिन तक अभियान किया था – शब्द अंकित हैं : "प्रिय साथी स्तालिन, एक सैनिक के रूप में, एक जनसेवक के रूप में, एक से अधिक बार मैंने आपकी सराहना प्राप्त की थी। आज शान्तिपूर्ण नागरिक जीवन में, मैं इस तरह काम कर रहा हूँ कि अब भी आपके सन्तोष का पात्र बन सकूँ। मैं आपको अपना

वचन देता हूँ कि भविष्य में भी साम्यवाद की जीत के लक्ष्य के लिए अपनी शक्तियों को लगाने में, मैं उसी प्रकार कोई कसर नहीं उठा रखूँगा, जिस प्रकार कि जनता की खुशहाली के लिए अपनी शक्तियाँ लगाने में आप कोई कसर नहीं उठा रखते।"

इस लिखावट पर दो मार्च की तारीख पड़ी है। नेता की खतरनाक बीमारी की खबर मिलने से पहले की यह आखिरी लिखावट है। इसके बाद की लिखावटें साथी स्तालिन के जीवन के प्रति आशंकाओं से भरी हैं और उस आह्वान का देशभक्तिपूर्ण जवाब हैं, जो पार्टी तथा सरकार ने साम्यवाद के निर्माण के लिए अपनी पाँतों को और भी ज्यादा एकजुट बनाने के लिए किया था।

"आज 4 मार्च को, इस महान पवित्र स्थल में, कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार से प्रतिज्ञा करते हैं कि हम और भी ज्यादा निःस्वार्थ भाव से काम करेंगे, हम और भी ज्यादा सतर्क रहेंगे और हम स्तालिन द्वारा निर्धारित कामों को सम्मान के साथ पूरा करेंगे।" – इस लिखावट के नीचे दस्तखत हैं : 'शोतोद्जे, चगुरिया।'

मार्च के इन दिनों में बाहर से आये हुए अतिथियों की अनेक लिखावटें भी इसमें मौजूद हैं : "फ्रांस के सूती कपड़ा मजदूरों का प्रतिनिधि–मण्डल जिसने इस घर के दर्शन किये हैं, जहाँ कि साथी स्तालिन ने जन्म लिया था – अन्तरराष्ट्रीय सर्वहारा के प्रिय नेता की अडिग इच्छा और साहस की सराहना में अपना मस्तक झुकाता है।"

6 मार्च को नयी पंक्तियाँ, मेहनतकश लोगों के दुख और शोक से पूर्ण पंक्तियाँ, आगन्तुकों के इस रजिस्टर में दर्ज हुई हैं : "यहाँ, जहाँ नेता ने पालने में जीवन बिताया है, मैं उनके निधन का शोक मनाता हूँ।" कवि इराकली अबाशिद्जे ने लिखा।

"मुझे यकीन नहीं होता कि हमारे प्यारे स्तालिन की छवि को काले हाशिये ने घेर लिया है।" एक सैनिक अफसर की पत्नी ओल्गा तिनियाकोवा ने लिखा।

बावजूद इसके कि उनका शोक गहरा था, सोवियत नर–नारियों ने साहस, दृढ़ता और अपनी ताकत में विश्वास से भरपूर पंक्तियाँ लिखीं। इस साहस, दृढ़ता और विश्वास का स्रोत सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति उनके गहरे प्रेम में, पार्टी की बुद्धिमत्तापूर्ण नीति में, उनके असीम भरोसे में निहित है।

"साथी स्तालिन की सीख के मुताबिक, हम जियेंगे और काम करेंगे। पार्टी के नेतृत्व में, हम स्तालिन द्वारा निर्देशित पथ पर, साम्यवाद के पथ पर आगे बढ़ना जारी रखेंगे।" यही वह शपथ है, जो इस घर के दर्शन करने वाले तमाम सोवियत नर–नारियों ने ग्रहण की। यही शपथ अत्यधिक शक्तिशाली रूप में, गोरी की फैक्ट्रियों, दफ्तरों और स्कूलों में हुई शोक–सभाओं में गूँजी।

युद्ध के बाद की पहली पंचवार्षिक योजना के काल में स्थापित सूती कपड़ा मिल जिसने अब मजदूरों की बड़ी बस्ती से युक्त भारी-भरकम कारखाने का रूप धारण कर लिया है – के भीमाकार बुनकर विभाग के शान्त साँचों पर मिल के तमाम मजदूर और कर्मचारी जमा हुए। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी और सोवियत सरकार को भेजे गये, अपने तार में उन्होंने अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करते हुए लिखा है : "हम अपनी प्रिय कम्युनिस्ट पार्टी के चारों ओर पाँतों को और भी ज्यादा घनिष्ठ रूप में एकजुट करेंगे, अपनी समाजवादी मातृभूमि की महान विजयों की हम सदा से और भी ज्यादा जागरूकता के साथ रक्षा करेंगे; उसकी ताकत को मजबूत बनाने के लिए हम सदा से और भी ज्यादा निःस्वार्थ भाव से काम करेंगे, ताकि साम्यवाद विजयी हो।"

4. अर्थी की अन्तिम यात्रा

9 मार्च को, लेनिन के संघर्षों के साथी और उनके लक्ष्य को आगे ले जाने वाले महापुरुष, दुनिया के बुद्धिमान नेता और शिक्षक, योसेफ विस्सारियोनोविच स्तालिन की अन्तिम यात्रा के समय सोवियत जनता और सारी प्रगतिशील मानव जाति उनका साथ दे रही थी।

मजदूर संघ सदन का स्तम्भ भवन। विदा की अन्तिम घड़ियाँ। वातावरण मातमी संगीत की उदास धुन में डूबा हुआ है। नेता की अर्थी के समीप केवल उनके सम्बन्धी और मित्र, पार्टी और सरकार के प्रमुख सदस्य, मन्त्री और दूसरे देशों की बिरादर कम्युनिस्ट मजदूर पार्टियों के नेता खड़े हैं। योसेफ विस्सारियोनोविच स्तालिन के अन्तिम संस्कार में शामिल होने के लिए आये हुए विदेशी सरकारों के प्रतिनिधि-मण्डल और दूतावासों तथा विदेशी मिशनों के प्रमुख – जिन्हें उनकी सरकारों ने अन्तिम संस्कार के समय मौजूद रहने का आदेश दिया है, – अब अर्थी के समीप शोक से खड़े हैं। हर दो-दो, तीन-तीन मिनटों बाद 'सम्मान-गारद' बदल रहे हैं।

सुबह के दस बजे। अर्थी के सम्मुख गारद के रूप में महान स्तालिन के वफादार शिष्य और उनके सहकर्मी साथी, सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार के नेता शोक में खड़े होते हैं।

दस बजकर पाँच मिनट। साथी ग.म. मालेन्कोफ, व.म. मोलोतोफ, न.स. खुरुश्चेफ, न.अ. बुलगानिन, ल.म. कगानोविच और अ.ई. मिकोयान योसेफ विस्सारियोनोविच स्तालिन की अर्थी को सावधानी से उठाये, धीरे-धीरे बाहर के दरवाजे की ओर बढ़ते हैं। मजदूर संघ सदन से शोक मालाएँ उठा ली गयीं।

सोवियत संघ के मार्शल और जनरल लाल मखमल के कुशनों पर रखे हुए स्तालिन के उपाधि–चिह्न और तमगे हाथों पर उठाये, आगे बढ़ने लगे। ओखेत्नीर्याद और मानेझनया चौक के किनारे–किनारे फौजी सन्तरी पाँव बाँधे खड़े हैं।

साथी स्तालिन की अर्थी धीरे–से तोप–गाड़ी पर रख दी गयी। अर्थी के ऊपर सिरे की तरफ, सोवियत संघ के परम सेनापति (जनरलस्सिमो) की टोपी रखी है।

दिवंगत पुरुष के परिवार के सदस्य, महान नेता के संघर्षों के निकटतम साथी, पार्टी और सोवियत सरकार के नेता, सोवियत सेना के मार्शल, जनरल, दूसरे देशों और उनकी सरकारों के प्रतिनिधि–मण्डलों के नेता, कूटनीतिक दलों और दूतावासों के वे सब प्रमुख, जिन्हें उनकी सरकारों ने योसेफ विस्सारियोनोविच स्तालिन के अन्तिम संस्कार में भाग लेने का आदेश दिया था तथा बाहरी देशों के दूसरे प्रतिनिधि अर्थी के साथ–साथ चल रहे हैं।

मातमी संगीत की उदास धुन बज रही है। संघीय गणतन्त्रों, स्वायत्त गणतन्त्रों, क्षेत्रों और प्रदेशों के प्रतिनिधि–मण्डल मौजूद हैं। महान चीनी जनता और जनता के जनतन्त्रों के प्रतिनिधि, दूसरे देशों के प्रतिनिधि–मण्डल और प्रतिनिधि भी मौजूद हैं।

दूतावासों के सदस्य लाल मैदान के चबूतरे पर निस्तब्ध मुद्रा में खड़े हैं। लाल मैदान में मॉस्को के सैनिक–रक्षक पाँत बाँधे मूर्तिवत् निश्चल खड़े हैं।

दस बजकर पैंतीस मिनट। अर्थी समाधि के सामने आकर रुकती है। सैनिक झण्डे झुका दिये जाते हैं – झण्डे जो महान राष्ट्रीय युद्ध में सोवियत सेना की अमर जीतों के गौरव से मण्डित हैं, उन जीतों के गौरव से जिन्हें सोवियत सेना ने सभी कालों और राष्ट्रों के महानतम सेनापति, साथी यो. वि. स्तालिन के नेतृत्व में प्राप्त किया था। तोपगाड़ी से उठाकर, अर्थी को एक ऊँचे चबूतरे पर रख दिया जाता है। चबूतरा लाल और काले कपड़ों से ढँका है। पार्टी और सोवियत सरकार के नेता, दूसरे देशों और उनकी सरकारों के प्रतिनिधि–मण्डलों के नेता, कूटनीतिक दलों और दूतावासों के प्रमुख, बाहरी देशों की बन्धु कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियों के नेता – सब समाधि के चबूतरे पर खड़े हैं।

दस बजकर बावन मिनट। अन्त्येष्टि कमीशन के अध्यक्ष साथी न.स. खुरुश्चेफ सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी और मन्त्रिमण्डल की ओर से शोक–सभा को शुरू करते हैं। सोवियत संघ के मन्त्रिमण्डल के अध्यक्ष, सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के मन्त्री और सोवियत संघ के जनरलस्सिमो योसेफ विस्सारियोनोविच स्तालिन के शोक में

सभा शुरू होती है।

ग्यारह बजकर चौवन मिनट। साथी न.स. खुरुश्चेफ सभा समाप्त करते हैं।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार के नेता और बाहर के देशों की बन्धु कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियों के नेता समाधि से नीचे उतर आते हैं। अर्थी को उठाकर धीरे-धीरे समाधि के भीतर ले जाया जाता है – उस समाधि के भीतर, जिसके द्वार पर दो अत्यन्त ही प्रिय नाम अंकित हैं : 'लेनिन, स्तालिन'।

तोपें तीस गोलों की सलामी देती हैं। उनकी गरज से जमीन काँप उठती है। क्रैमलिन के स्पास्की घण्टाघर में बारह बजता है। तीन मिनटों के लिए मॉस्को और समस्त सोवियत भूमि का वातावरण कारखानों, इंजनों और जहाजों की सीटियों और भोपुओं की आवाजों से गूँज उठता है – महान पिता और जनता के शिक्षक को मातृभूमि सलामी देती है। बाल्तिक के तट से लेकर कुरील द्वीपसमूह तक, सारी सोवियत भूमि में तमाम कल-कारखाने पाँच मिनटों के लिए काम रोककर निस्तब्ध हो जाते हैं। चलती हुई रेलें, जहाज और मोटर सब जहाँ के तहाँ खड़े हो जाते हैं।...

देश महान क्षति पर शोक प्रकट कर रहा है, किन्तु स्तालिन का नाम और उनका उद्देश्य अमर है। जनता के हृदयों में और कम्युनिज्म के लिए किये जाने वाले उनके कामों में स्तालिन हमेशा के लिए जीवित रहेंगे।

अन्तिम संस्कार के बाद, सोवियत संघ के राष्ट्र-गीत के राजसी गम्भीर स्वर वायु में गूँज उठते हैं।

पार्टी और सरकार के नेता फिर समाधि के चबूतरे पर खड़े हो जाते हैं। समाधि के सामने से दृढ़तापूर्वक मार्च करती हुई फौज की टुकड़ियाँ गुजरती हैं। बहुत ऊँचे, आकाश में, चौक के ऊपर सुव्यवस्थित आकार में वायुयान उड़ रहे हैं। महान नेता और सेनानायक योसेफ विस्सारियोनोविच को अन्तिम सैनिक श्रद्धांजलि अर्पित की जा रही हे।

5. कुछ श्रद्धांजलियाँ

सोवियत सरकार और केन्द्रीय कमेटी की श्रद्धांजलि : प्यारे साथियो और दोस्तो! सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी, सोवियत संघ की मन्त्रिपरिषद और सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत का अध्यक्ष-मण्डल गहनतम शोक के साथ, सोवियत संघ की पार्टी के सदस्यों और तमाम मेहनतकश जनता को सूचित करता है कि 5 मार्च की रात 6 बजकर 50 मिनट (भारती समय रात के 1 बजकर 20 मिनट) पर खतरनाक बीमारी के बाद, सोवियत संघ

के मन्त्रिपरिषद के अध्यक्ष और सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के केन्द्रीय कमेटी के महामन्त्री योसेफ विस्सारियोनोविच स्तालिन का देहान्त हो गया है।

लेनिन के सहकर्मी, उनके उद्देश्यों को आगे ले जाने वाले, प्रतिभा–पुंज, कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत जनता के बुद्धिमान नेता और शिक्षक, योसेफ विस्सारियोनोविच स्तालिन के हृदय की धड़कन बन्द हो गयी है।

स्तालिन का नाम हमारी पार्टी के लिए, सोवियत जनता के लिए, तमाम दुनिया के मेहनतकशों के लिए, अत्यन्त प्यारा नाम है। लेनिन के साथ मिलकर, साथी स्तालिन ने कम्युनिस्टों की शक्तिशाली पार्टी खड़ी की, उसे पाला–पोसा और फौलादी बनाया। लेनिन के साथ–साथ, साथी स्तालिन ने अक्टूबर के महान समाजवादी क्रान्ति को प्रेरणा दी, उसका नेतृत्व किया, दुनिया में सबसे पहले समाजवादी राज्य की स्थापना की। लेनिन के अमर उद्देश्य को आगे बढ़ाते हुए, साथी स्तालिन ने हमारे देश में समाजवाद को युगान्तरकारी जीतें हासिल करने में सोवियत जनता की अगुवाई की। साथी स्तालिन ने दूसरे महायुद्ध में फासिज्म के खिलाफ विजय पाने में हमारे देश का नेतृत्व किया, जिसने समूची अन्तरराष्ट्रीय स्थिति में आमूल परिवर्तन कर दिया। साथी स्तालिन ने सोवियत संघ में कम्युनिज्म के निर्माण के महान और स्पष्ट कार्यक्रम से पार्टी और समूची जनता को लैस किया।

साथी स्तालिन जिन्होंने कि अपना सारा जीवन कम्युनिज्म की नि:स्वार्थ सेवा के महान उद्देश्य में अर्पित कर दिया था – की मृत्यु पार्टी के, सोवियत संघ और सारी दुनिया की मेहनतकश जनता के लिए एक अत्यन्त गम्भीर क्षति है।

हमारे देश के मजदूरों, कोलखोजी किसानों, बुद्धिजीवियों और तमाम मेहनतकशों के दिलों में, हमारी बहादुर सेना और नौसेना के वीरों के दिलों में, दुनिया के सभी देशों की करोड़ों मेहनतकश जनता के दिलों में साथी स्तालिन की मृत्यु की खबर गहरी पीड़ा का संचार करेगी।

शोक में डूबे हुए इन दिनों में हमारे देश में बसी सभी जातियों के लोग, लेनिन और स्तालिन की जन्माई तथा बड़ी की हुई, कम्युनिस्ट पार्टी के परखे और कुन्दन बने नेतृत्व में अपने महान भ्रातृत्वपूर्ण परिवार के अन्दर और भी घनिष्ठता के साथ एकजुट हो रहे हैं।

सोवियत जन खुद अपनी कम्युनिस्ट पार्टी में अटूट विश्वास रखते हैं और उसके प्रति उनमें ज्वलन्त प्रेम के भाव हैं; क्योंकि वे जानते हैं कि पार्टी की सारी कार्रवाइयों का सर्वोच्च उद्देश्य जनता के हितों की सेवा करना ही है।

मजदूर, कोलखोजी किसान, सोवियत बुद्धिजीवी, हमारे देश की समूची मेहनतकश जनता, अविचल रूप से हमारी पार्टी द्वारा बतायी हुई नीति पर चलती

है। यह नीति मेहनतकश जनता के बुनियादी हितों के अनुकूल है और इसका उद्देश्य हमारी समाजवादी जन्मभूमि की शक्ति को और मजबूत बनाना है। कम्युनिस्ट पार्टी की नीति की सच्चाई दसियों सालों के संघर्ष में परखी हुई सच्चाई है। उसने सोवियत देश की जनता का समाजवाद की ऐतिहासिक विजयों के पथ पर नेतृत्व किया है। इस नीति से अनुप्राणित हो, सोवियत संघ की सारी जनता के नेतृत्व में अपने देश में कम्युनिज्म के निर्माण में नयी से नयी सफलताएँ प्राप्त करने के लिए विश्वासपूर्ण आगे बढ़ रही है।

हमारे देश की जनता जानती है कि आजादी के सभी अंशों – मजदूरों, कोलखोजी किसानों, बुद्धिजीवियों की भौतिक समृद्धि और समुन्नति, सारे समाज की बराबरी बढ़ती हुई भौतिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्णतम पूर्ति कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार के विशेष ध्यान का केन्द्र रही है, और है।

सोवियत जनता जानती है कि सोवियत राज्य की रक्षा की क्षमता और शक्ति बढ़ती और बराबर मजबूत होती जा रही है। सोवियत सेना, नौ सेना और अन्तरंग सुरक्षा–संगठनों को पार्टी हर तरह से मजबूत बना रही है, ताकि किसी भी हमलावर को मुँहतोड़ जवाब देने की हमारी तैयारी में निरन्तर वृद्धि होती रहे।

कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत संघ की सरकार की परराष्ट्र नीति हमेशा से शान्ति की रक्षा तथा मजबूती की, दूसरे युद्ध की तैयारी और उसे छेड़ने के खिलाफ संघर्ष की, अन्तरराष्ट्रीय सहयोग और सभी देशों से व्यापारिक सम्बन्धों के विकास की अन्तिम नीति रही है, और है।

सर्वहारा अन्तरराष्ट्रीय के झण्डे की वफादार, सोवियत संघ की जनता महान चीनी जनता तथा सभी जनवादी देशों की मेहनतकश जनता के साथ बन्धुतापूर्ण दोस्ती को और शान्ति, जनतन्त्र और समाजवाद के लिए लड़ती हुई पूँजीवादी तथा औपनिवेशिक देशों की मेहनतकश जनता के साथ मित्रता के सम्बन्धों को मजबूत बनाती हुई आगे बढ़ी है।

प्यारे साथियो और दोस्तो! दूसरी कम्युनिस्ट पार्टी कम्युनिज्म के निर्माण में सोवियत जनता के संघर्ष का पथ–प्रदर्शन और निर्देशन करने वाली महान शक्ति है। पार्टी के पाँतों की व्रज एकता और अखण्ड एकबद्धता पार्टी की शक्ति और बल का मुख्य आधार हैं।

हमारा कर्तव्य है कि पार्टी की एकता की आँख की पुतली की भाँति रक्षा करें, पार्टी की नीति और फैसलों को अमल में लाने के लिए कम्युनिस्टों को सक्रिय राजनीतिक योद्धाओं के रूप में तैयार करें, तमाम मेहनतकश जनता के साथ मजदूरों, कोलखोजी किसानों, बुद्धिजीवियों के साथ पार्टी के सम्बन्ध को

और भी ज्यादा मजबूत बनायें; क्योंकि जनता के साथ इसी अटूट सम्बन्ध में हमारी पार्टी की अजेयता और शक्ति निहित है।

ऊँची राजनीतिक जागरूकता की भावना में, भीतरी तथा बाहरी दुश्मनों के खिलाफ संघर्ष में निर्ममता और अंगद की भाँति डटे रहने की भावना में, कम्युनिस्टों और तमाम मेहनतकश जनता को दीक्षित करना पार्टी अपना एक कर्तव्य मानती है।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी, सोवियत संघ की मन्त्रिपरिषद और सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत का अध्यक्ष-मण्डल शोक से भरे इन दिनों में पार्टी और जनता को सन्देश देता हुआ, अपना यह दृढ़विश्वास प्रकट करता है कि हमारे देश में पार्टी और जनता केन्द्रीय कमेटी और सोवियत सरकार के चारों तरफ और भी घनिष्टता से एकजुट होगी और हमारे देश में कम्युनिज्म के निर्माण के महान उद्देश्य में अपनी सारी ताकतें और रचनात्मक सामर्थ्य लगा देगी।

स्तालिन का अमर नाम सोवियत जनता तथा सारी प्रगतिशील मानवता के दिलों में सदा जीवित रहेगा।

मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन की महान और सर्वजयी शिक्षा - जिन्दाबाद!

हमारी शक्तिशाली समाजवादी मातृभूमि - जिन्दाबाद!

हमारी बहादुर सोवियत जनता - जिन्दाबाद!

सोवियत संघ की महान कम्युनिस्ट पार्टी - जिन्दाबाद!

5 मार्च 1953

ग.म. मालेन्कोफ की श्रद्धांजलि : प्रिय देशवासियो, साथियो और मित्रो। दूसरे देशों के प्रिय भाइयो, हमारी पार्टी, सोवियत जनता और समूची मानव जाति को गम्भीरतम, कभी न पूरी होने वाली क्षति सहनी पड़ी है। हमारे शिक्षक और नेता, मानव जाति की महानतम प्रतिभा, योसेफ विस्सारियोनोविच स्तालिन की गौरवमय जीवन-यात्रा का अन्त हो गया है।

इन कठिन दिनों में, समूची उन्नत और प्रगतिशील मानव जाति ने सोवियत जनता के गहरे शोक में उसका साथ दिया है। स्तालिन का नाम सोवियत पुरुषों और स्त्रियों को, दुनिया के सभी हिस्सों की व्यापकतम जतना को इतना प्यारा है कि उसकी कोई सीमा नहीं। सोवियत जनता और सभी देशों के मेहनतकश लोगों के लिए साथी स्तालिन ने जो काम किये हैं, उनकी महानता और महत्व अकूत है। स्तालिन का लक्ष्य युग-युग तक जीवित रहेगा और आनेवाली कृतज्ञ पीढ़ियाँ, ठीक हम सब लोगों की भाँति, स्तालिन के नाम का गौरव-गान करेंगी।

साथी स्तालिन ने अपना जीवन शोषकों के उत्पीड़न और गुलामी से मेहनतकश वर्ग तथा तमाम मेहनकश लोगों को मुक्त करने, विनाशकारी युद्धों से मानव जाति को उबारने, मेहनत करने वाले लोगों के वास्ते धरती पर आजाद और खुशहाल जीवन का निर्माण करने के संघर्ष के लिए अर्पित कर दिया है। साथी स्तालिन ने, हमारे युग के इस महान विचारक ने नयी ऐतिहासिक परिस्थितियों में मार्क्सवाद–लेनिनवाद की सीख का रचनात्मक विकास किया है। मानवता के समूचे इतिहास की महानतम विभूतियों के साथ – मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन के साथ – स्तालिन का नाम लिया जाना सर्वथा उचित है।

हमारी पार्टी मार्क्सवाद–लेनिनवाद की महान सीख पर चलती है, जो कि पार्टी और जनता को अजेय शक्ति तथा इतिहास में नयी लीकें डालने की योग्यता प्रदान करती है।

फरारी (अण्डरग्राउण्ड) जीवन की कठिन परिस्थितियों में, लेनिन और स्तलिन ने रूस के लोगों को निरंकुश शासन के जुए से, जमींदारों और पूँजीपतियों के उत्पीड़न से मुक्त करने के लिए अनेक लम्बे सालों तक संघर्ष किया था। लेनिन और स्तालिन की अगुआई में सोवियत जनता ने मानव–जाति के इतिहास में महानतम मोड़ लिया था; पूँजीवादी व्यवस्था को हमारे देश से खत्म कर, एक नये पथ पर – समाजवाद के पथ पर – पाँव रखा था।

लेनिन के लक्ष्य को आगे बढ़ाते हुए, पार्टी तथा सोवियत राज्य के अग्रिम पथ को आलोकित करने वाली लेनिनवादी सीख को बराबर विकसित करते हुए, स्तालिन ने समाजवाद की युगान्तरकारी जीतें हासिल करने में देश की अगुवाई की है। इससे, मानव जाति के हजारों वर्षों के जीवन में पहली बार मानव द्वारा मानव के शोषण का खात्मा सुनिश्चित हो गया है।

लेनिन और स्तालिन ने दुनिया में मजदूरों और किसानों के पहले राज्य की, हमारे सोवियत राज्य की नींव रखी थी। साथी स्तालिन ने सोवियत राज्य को मजबूत बनाने के लिए अनथक काम किया है। हमारे राज्य का ठोसपन और ताकत ही हमारे देश में साम्यवाद के सफल निर्माण का बुनियादी आधार है।

यह हमारा पवित्र कर्तव्य है कि अनथक और हर प्रकार से अपने समाजवादी राज्य को, राष्ट्रों की सुरक्षा और शान्ति के दुर्ग को मजबूत बनाना जारी रखें।

साथी स्तालिन का नाम समाज के इतिहास की एक अत्यन्त पेचीदा समस्या – जातियों के सवाल – के हल के साथ जुड़ा हुआ है। जातियों के सवाल के महानतम सिद्धान्तविद्, साथी स्तालिन ने इतिहास में पहली बार एक सुविस्तृत बहुजातीय राज्य के भीतर युगों के पुराने जातीय वैमनस्यों का पक्की तौर से खात्मा कर दिया है। साथी स्तालिन के निर्देशन में, हमारी पार्टी ने पहले की उत्पीड़ित

जातियों के आर्थिक और सांस्कृतिक पिछड़ेपन को काबू में किया, सोवियत संघ की तमाम जातियों को एक बँधुता के परिवार में संयुक्त किया और जातियों की मित्रता को ढाला है।

हमारा यह पवित्र कर्तव्य है कि सोवियत देश में बसी हुई जातियों की एकता और मित्रता की मजबूती को, बहुजातीय सोवियत राज्य की दृढ़ता को और भी ज्यादा पक्की करें। हमारे देश की जातियों के बीच मित्रता के कायम रहते हुए, हमें भीतरी या बाहरी किन्हीं भी दुश्मनों से डरने की जरूरत नहीं।

साथी स्तालिन के प्रत्यक्ष निर्देशन में ही सोवियत सेना जन्मी, बढ़ी और शक्तिशाली बनी है। साथी स्तालिन की निरन्तर लगन का लक्ष्य देश की रक्षात्मक क्षमता और सोवियत सैन्य बल को मजबूत बनाना था। महान सेनानी, जनरलस्सिमो स्तालिन की ही अगुआई में सोवियत सैन्यबल ने दूसरे विश्वयुद्ध में इतिहास–निर्माणकारी जीत हासिल की और यूरोप तथा एशिया के लोगों को फासिस्टी गुलामी के खतरे से मुक्त किया है।

हमारा यह पवित्र कर्तव्य है कि शक्तिशाली सोवियत सैन्यबल को हर प्रकार से मजबूत बनायें। दुश्मन के किसी भी आक्रमण का मुँहतोड़ जवाब देने के लिए जरूरी है कि उन्हें युद्ध–तत्परता की स्थिति में रखा जायें।

साथी स्तालिन की अनथक कोशिशों के फलस्वरूप, उप–योजनाओं के मुताबिक जो कि उन्होंने बनायी थीं, हमारी पार्टी ने पहले के एक पिछड़े हुए देश को एक शक्तिशाली उद्योग और कलखोजी (सामूहिक) कृषि का राज्य बना दिया है, संकटों और बेकारी से मुक्त एक नयी आर्थिक व्यवस्था का निर्माण किया है।

हमारा यह पवित्र कर्तव्य है कि समाजवादी मातृभूमि की निर्बाध प्रगिति को और भी ज्यादा सुनिश्चित बनायें। जरूरी है कि हम हर प्रकार अपने देश की ताकत और ठोसपन के मुख्य आधार – समाजवादी उद्योग – को विकसित करें। जरूरी है कि हम सामूहिक खेती की व्यवस्था को मजबूत बनायें, सोवियत देश के तमाम कोलखोजों की बेरोक उन्नति और खुशहाली के लिए और भी ज्यादा कोशिश करें। मेहनतकश वर्ग और सामूहिक किसान वर्ग के गठबन्धन को पक्का बनायें।

गृह–नीति में मजदूरों, सामूहिक किसानों, बुद्धिजीवियों, सारे सोवियत जनों की आर्थिक खुशहाली में और भी ज्यादा सुधार के लिए निश्चित गति से कोशिश करना हमारा मुख्य काम है। लोगों की खुशहाली का ध्यान रखना, उनकी आर्थिक और सांस्कृतिक जरूरतों की पूर्णतम पूर्ति करना, हमारी पार्टी और सरकार का कानून है।

लेनिन और स्तालिन ने हमारी पार्टी को कायापलट करने वाली एक महान शक्ति के रूप में रचा और ढाला था। जीवन–पर्यन्त साथी स्तालिन ने हमें सिखाया है कि कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य की उपाधि से ऊँची और कोई भी चीज नहीं है। दुश्मनों के खिलाफ अनवरत संघर्ष में, साथी स्तालिन ने पार्टी की एकता और अखण्ड एकबद्धता को ऊँचा उठाया था।

हमारा यह कर्तव्य है कि हम महान कम्युनिस्ट पार्टी को मजबूत बनाने का काम जारी रखें। हमारी पार्टी की ताकत और अजेयता उसकी पाँतों की एकता और जुड़ाव में, संकल्प और क्रियात्मक एकता में, पार्टी के संकल्प और इच्छाओं के साथ अपने संकल्प और इच्छाओं का विलय करने की पार्टी–सदस्यों की योग्यता में निहित है। हमारी पार्टी की ताकत और अजेयता आम जनता के साथ उसके अटूट नाते में निहित है। पार्टी द्वारा जनता के हितों की निरन्तर सेवा की नींव पर पार्टी और जनता की एकता टिकी है। जरूरी है कि हम पार्टी की एकता की आँख की पुतली की भाँति रक्षा करें, जनता के साथ पार्टी के अटूट नाते को और भी ज्यादा पक्का बनायें, कम्युनिस्टों और तमाम मेहनतकश लोगों को ऊँची राजनीतिक जागरूकता की भावना में, भीतरी और बाहरी दुश्मनों के खिलाफ संघर्ष में दृढ़ता और कभी न झुकने की भावना में शिक्षित करें।

महान स्तालिन के निर्देशन में शान्ति, जनतन्त्र और समाजवाद के एक शक्तिशाली खेमे का निर्माण हो गया है। इस खेमे में सोवियत जनता के साथ–साथ, घनिष्ठ बन्धुतापूर्ण एकता में, चीन की महान जनता, पोलैण्ड, चेकोस्लोवाकिया, बुल्गारिया, हंगरी, रूमानिया, अलबानिया, जर्मन जनवादी जनतन्त्र, मंगोलिया–जनता के सभी गणतन्त्रों के भाईचारे पूर्ण लोग आगे बढ़ रहे हैं। कोरिया की वीर जनता जुझारू लड़ाइयों में अपनी मातृभूमि की आजादी की रक्षा कर रही है। वियतनाम के लोग अपनी आजादी और राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के लिए साहस के साथ संघर्ष कर रहे हैं।

हमारा यह पवित्र कर्तव्य है कि लोगों के – शान्ति, जनतन्त्र और समाजवाद के खेमे के – महानतम लाभ की रक्षा करें और उसे मजबूत बनायें, जनवादी खेमे के देशों के लोगों की मित्रता और एकजुटता के नातों को दृढ़ करें। जरूरी है कि हम हर प्रकार से महान चीनी जनता के साथ, जनता के सारे गणतन्त्रों के मेहनतकश लोगों के साथ, सोवियत संघ की चिरन्तन और अनुल्लंघनीय बन्धुत्वपूर्ण मित्रता के नाते को सुदृढ़ बनायें।

सभी देशों के लोग जानते हैं कि साथी स्तालिन शन्ति के महान अलमबरदार थे। साथी स्तालिन ने सभी देशों के लोगों को ऊँचा उठाने में अपनी प्रतिभा की महानतम कोशिशों को लगाया था। सोवियत राज्य की परराष्ट्र नीति, राष्ट्रों के बीच

शान्ति और मित्रता की नीति, एक दूसरे युद्ध के फूट पड़ने के रास्ते में एक निर्णायक रुकावट है और सभी राष्ट्रों के बुनियादी हितों के साथ मेल खाती है। सोवियत संघ ने शान्ति के लक्ष्य की पूरी हिमायत की है और करता है; क्योंकि उसके हित विश्व–शान्ति के लक्ष्य से अभिन्न हैं। सोवियत संघ ने शान्ति को कायम रखने और मजबूत बनाने की अडिग नीति का, अन्तरराष्ट्रीय सहयोग और सभी देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध विकसित करने की नीति का – एक ऐसी नीति का, जो लेनिन–स्तालिन की इस स्थापना से निकली है कि दो भिन्न व्यवस्थाओं (पूँजीवादी और समाजवादी व्यवस्थाओं) के लम्बे अर्से तक एक साथ बने रहने और शान्तिपूर्ण प्रतियोगिता करने की सम्भावना है – अनुसरण किया है और करता है।

महान स्तालिन ने हमें जनता के हितों की सेवा के प्रति असीम भक्ति की भावना में बड़ा किया है। हम जनता के सच्चे सेवक हैं, जनता शान्ति चाहती है, युद्ध से घृणा करती है। करोड़ों के रक्त की होली को रोकने और खुशहाल जीवन के शान्तिपूर्ण निर्माण की गारण्टी करने की लोगों की इच्छा, हम सबकी पवित्र इच्छा हो!

परराष्ट्र नीति में, एक दूसरे युद्ध को रोकना और तमाम देशों के साथ शान्ति से रहना हमारा मुख्य काम है। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार की नजर में परस्पर विश्वास पर आधारित सभी राष्ट्रों के बीच की शान्ति – जो कि तथ्यों पर आधारित और तथ्यों से पुष्ट एक कारगर नीति है – अत्यन्त सही, जरूरी और न्यायपूर्ण पराराष्ट्र नीति है। जरूरी है कि सरकारें सच्चाई के साथ अपने लोगों की सेवा करें। लोग शान्ति के प्यासे हैं, युद्ध को कोसते हैं। वे सरकारें जो लोगों को धोखा देना चाहेंगी और शान्ति को कायम रखने तथा एक दूसरे विनाश को रोकने की पवित्र इच्छा के खिलाफ जायेंगी, अपराधी होंगी। कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार मानती है कि राष्ट्रों के बीच शान्ति की नीति ही एकमात्र सही नीति है, जो तमाम लोगों के बुनियादी हितों के साथ मेल खाती है।

साथियो, हमारे नेता और शिक्षक महान स्तालिन की विदाई तमाम सोवियत नर–नारियों को कर्तव्यबद्ध करती है कि वे सोवियत जनता के सामने प्रस्तुत शानदार कामों की पूर्ति में अपनी कोशिशों को दुगुना–चौगुना बढ़ायें, साम्यवादी समाज के निर्माण के सामूहिक लक्ष्य में और भी ज्यादा भारी योग दें, हमारी समाजवादी मातृभूति की ताकत और प्रतिरक्षा की क्षमता और भी ज्यादा मजबूत बनायें।

सोवियत संघ के मेहनतकश लोग देखते और समझते हैं कि हमारी

शक्तिशाली मातृभूमि नयी से नयी सफलताओं की ओर बढ़ रही है। पूर्ण साम्यवादी समाज के निर्माण के लिए जरूरी हर चीज हमारे पास है।

अपनी अक्षय ताकतों और क्षमताओं में दृढ़ विश्वास के साथ, सोवियत जनता साम्यवाद के निर्माण के महान लक्ष्य को कार्य में उतार रही है। दुनिया में ऐसी कोई ताकत नहीं है, जो सोवियत समाज की साम्यवाद की ओर प्रगति को रोक सके।

विदा, हमारे शिक्षक और नेता, हमारे प्रिय मित्र, हमारे अपने साथी स्तालिन, विदा!

लेनिन और स्तालिन के महान लक्ष्य की पूर्ण विजय के पथ पर आगे बढ़ो!

माओ त्से-तुङ की श्रद्धांजलि : हमारे युग के महानतम प्रतिभाशाली व्यक्ति साथी योसेफ विस्सारियोनोविच स्तालिन, जो दुनिया के कम्युनिस्ट आन्दोलन के महान शिक्षक और अमर लेनिन के सहयोगी थे, हमसे सदा के लिए बिछुड़ गये हैं।

सिद्धान्त और अमल दोनों ही क्षेत्रों में उनके कार्यों के जरिये हमारे युग को साथी स्तालिन की जो देन रही है, वह अकूत है। स्तालिन हमारे इस पूरे नये युग के प्रतिनिधि हैं। यह उनके कार्यों का ही परिणाम है कि सोवियत जनता और सभी देशों की मेहनतकश जनता ने समूची दुनिया की परिस्थिति बदल दी है। इसका मतलब है कि न्याय, जनवादी लोकतन्त्र और समाजवाद के ध्येय ने दुनिया के एक विशाल भूभाग पर – जिस पर पृथ्वी की एक-तिहाई से ज्यादा आबादी, 80 करोड़ जनता बसती है – विजय प्राप्त कर ली है। जैसे-जैसे दिन गुजरते जाते हैं, वैसे ही वैसे इस विजय का असर पृथ्वी के हर कोने में फैलता जा रहा है।

साथी स्तालिन की मृत्यु से सारी दुनिया की मेहनतकश जनता अथाह शोक में डूब गयी है। सारे संसार के ईमानदार लोगों के दिल दर्द से भर गये हैं। यह बात बताती है कि साथी स्तालिन के ध्येय और उनके विचारों ने सारी दुनिया की विशाल जनता को अत्यधिक प्रभावित किया है और वे एक अजेय शक्ति बन गयी है, जो विजयी देशों की जनता को नयी से नयी विजयों की तरफ ले जा रही है। और जिन देशों की जनता अभी भी पुरानी, कुत्सित पूँजीवादी दुनिया के उत्पीड़न के नीचे कराह रही है, उसे वह इतनी सामर्थ्य देगी कि वह भी अपने दुश्मनों पर हिम्मत के साथ प्रहार कर सके।

लेनिन के निधन के बाद, स्तालिन ने जनता का पथ-प्रदर्शन किया। जिस पहले समाजवादी राज्य को अक्टूबर-क्रान्ति के दिनों में उन्होंने अमर लेनिन के साथ मिलकर जन्म दिया था, उन्होंने उसका निर्माण किया और उसे एक शानदार समाजवादी समाज बना दिया।

सोवियत समाजवादी निर्माण की विजय अकेली सोवियत जनता की विजय नहीं है, वह सारी दुनिया की जनता की भी विजय है। एक तो इस विजय ने जिन्दगी में मार्क्सवाद–लेनिनवाद की पूर्ण सच्चाई को साबित कर दिया है, सारी दुनिया की मेहनतकश जनता को प्रत्यक्ष रूप से सिखा दिया है कि वह सुखी जीवन की तरफ कैसे बढ़े। दूसरे, इस विजय ने मानव जाति को दूसरे विश्वयुद्ध में फासिस्ट राक्षसों पर विजय प्राप्त करने की शक्ति दी है। सोवियत समाजवादी निर्माण की इस विजय के बिना, फासिस्ट–विरोधी युद्ध में विजय प्राप्त की जा सकती थी, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। सोवियत संघ में समाजवादी निर्माण की विजय का और फासिस्ट–विरोधी युद्ध में विजय का मानव जाति के भविष्य से सीधा सम्बध है। और, इन विजयों का श्रेय सचमुच ही महान स्तालिन को है।

साथी स्तालिन ने मार्क्सवाद–लेनिनवाद के सिद्धान्तों का अधिकारपूर्वक और सांगोपांग विकास किया। उन्होंने मार्क्सवाद को एक नयी मंजिल पर पहुँचाया। पूँजीवाद के असमान विकास और एक देश में समाजवाद की विजय की सम्भावना के लेनिनवादी सिद्धान्तों का साथी स्तालिन ने रचनात्मक रूप से विकास किया। पूँजीवादी व्यवस्था के आम संकट के सिद्धान्त को और सोवियत संघ में कम्युनिज्म के निर्माण के सिद्धान्त को साथी स्तालिन ने रचनात्मक रूप से सम्पन्न बनाया। आधुनिक पूँजीवाद के बुनियादी आर्थिक नियम की और समाजवाद के बुनियादी आर्थिक नियम की उन्होंने खोज की और उसे साबित किया। उपनिवेशों की क्रान्ति के सिद्धान्त को उन्होंने समृद्ध बनाया। साथी स्तालिन ने पार्टी के निर्माण के लेनिनवादी सिद्धान्त का भी रचनात्मक तरीके से विकास किया। साथी स्तालिन के इन सब कामों ने सारी दुनिया के मजदूरों को और भी ज्यादा एकजुट किया, सारी दुनिया की सारी उत्पीड़ित जनता को और भी ज्यादा एकजुट किया। इस तरह, उन्होंने दुनिया के मजदूर वर्ग और तमाम उत्पीड़ित जनता को मुक्ति और खुशहाली के संघर्ष के लिए समर्थ बनाया और संघर्ष में उसे अभूतपूर्व विजय प्राप्त हुई।

साथी स्तालिन की सभी रचनाएँ मार्क्सवाद को उनकी अमर देनें हैं। 'लेनिनवाद के मूल सिद्धान्त', 'सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी का इतिहास' और उनकी अन्तिम महान रचना 'सोवियत संघ में समाजवाद की आर्थिक समस्याएँ' – सभी मार्क्सवाद–लेनिनवाद के ज्ञान–कोष हैं। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 19वीं कांग्रेस में उनका भाषण दुनिया के सभी देशों के कम्युनिस्टों के लिए अमूल्य, पवित्र आदेश है। दुनिया के सभी देशों के कम्युनिस्टों की तरह, हम चीनी कम्युनिस्ट भी साथी स्तालिन की महान रचनाओं

के प्रकाश में अपनी विजय का मार्ग पाते हैं।

लेनिन के निधन के बाद से, साथी स्तालिन ही हमेशा दुनिया के कम्युनिस्ट आन्दोलन के मुख्य व्यक्ति रहे हैं। हम उनके इर्द–गिर्द एकजुट हुए। हमने निरन्तर उनकी सलाह ली और बराबर उनकी रचनाओं से सैद्धान्तिक शक्ति प्राप्त की।

साथी स्तालिन के हृदय में पूर्व की उत्पीड़ित जनता के लिए अगाध स्नेह था। 'पूर्व को मत भूलो' – अक्टूबर क्रान्ति के बाद, साथी स्तालिन का यही महान आह्वान था।

सभी लोग जानते हैं कि चीनी जनता के लिए साथी स्तालिन के दिल में गहरा प्रेम था और वह चीनी क्रान्ति की शक्ति को अकूत मानते थे। उन्होंने अपनी महान बुद्धिमता से चीनी क्रान्ति की समस्याओं को सुलझाने में मदद की। लेनिन तथा स्तालिन के सिद्धान्तों पर अमल करके और महान सोवियत संघ तथा दूसरे सभी देशों की सभी क्रान्तिकारी शक्तियों की मदद से ही, कुछ बरसों पहले चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और चीनी जनता ने ऐतिहासिक विजय प्राप्त की है।

अब हमारे महान शिक्षक, हमारे सबसे सच्चे दोस्त साथी स्तालिन हमारे बीच में नहीं रहे। यह कैसा बज्रपात हुआ है! दुर्भाग्य के इस तरह फट पड़ने से, हमें जो दुःख हुआ है उसे व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं हैं।

हमारा कर्तव्य है कि हम इस दुख को शक्ति में बदल दें। अपने महान शिक्षक स्तालिन की स्मृति में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और चीनी जनता तथा सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत जनता के बीच साथी स्तालिन के नाम पर जो महान मित्रता मौजूद है, उसे हम असीम रूप से शक्तिशाली बनायेंगे। अपने देश का निर्माण करने के लिए, चीनी कम्युनिस्ट और चीनी जनता स्तालिन के सिद्धान्तों का और सोवियत विज्ञान तथा कौशल का और भी जोरों से अध्ययन करेगी।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी, जिसे खुद लेनिन और स्तालिन ने बड़ा किया, दुनिया की सबसे आगे बढ़ी हुई, सबसे ज्यादा अनुभवशील और सैद्धान्तिक दृष्टि से सबसे ज्यादा लैस पार्टी है। यह पार्टी हमारे लिए आदर्श थी, अब भी है, भविष्य में भी बनी रहेगी। हमें पूरा विश्वास है कि सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी और सोवियत सरकार, जिसके नेता साथी मालेन्कोफ हैं, कम्युनिज्म के महान ध्येय को आगे बढ़ाने और अधिक शानदार कामयाबियाँ हासिल करने के सम्बन्ध में साथी स्तालिन के आदेशों को पूरा करने में अवश्य सफल होगी।

इस बात में कोई भी सन्देह नहीं है कि सोवियत संघ के नेतृत्व में चलने वाला शान्ति, जनवाद और समाजवाद का विश्व पक्ष और भी अधिक एकजुट तथा और

भी अधिक शक्तिशाली होगा।

पिछले 30 बरसों में, साथी स्तालिन के सिद्धान्तों और सोवियत समाजवादी निर्माण के उदाहरण की बदौलत दुनिया ने जबर्दस्त प्रगति की है। आज सोवियत संघ इतना शक्तिशाली हो गया है, चीनी जन–क्रान्ति ने ऐसी महान विजय हासिल कर ली है, जनता के विभिन्न लोकतन्त्रों ने अपने निर्माण–कार्य में ऐसी महान सफलताएँ प्राप्त कर ली हैं, उत्पीड़न तथा आक्रमण के खिलाफ सारी दुनिया की जनता का आन्दोलन इतनी बुलन्दियों पर पहुँच गया है और मित्रता तथा सहयोग का हमारा मोर्चा इतना शक्तिशाली बन गया है कि हम पूरे विश्वास के साथ कह सकते हैं कि हम किसी भी साम्राज्यवादी हमले से नहीं डरते। हम किसी भी साम्राज्यी हमले को धूल में मिला देंगे, तमाम घृणित उकसावे एकदम असफल साबित होंगे।

चीन और सोवियत संघ की जनता की महान मित्रता अटूट है; क्योंकि उसका आधार मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन के अन्तरराष्ट्रीयता के महान सिद्धान्त है; चीनी जनता, सोवियत जनता, विभिन्न जन लोकतन्त्रों की जनता और दुनिया के सभी देशों में शान्ति, जनवाद तथा न्याय को प्यार करने वाली तमाम जनता की दोस्ती का आधार भी अन्तरराष्ट्रीयता का यही महान सिद्धान्त है; इसीलिए वह अटूट है।

साफ जाहिर है कि इस मित्रता से जन्मी हुई, शक्तियाँ असीम, सक्षम और वास्तव में अजेय हैं। तमाम साम्राज्यी हमलावर और जंगबाज हमारी महान मित्रता के आगे थर–थर काँप रहे हैं।

मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन की शिक्षाएँ जिन्दाबाद!

महान स्तालिन का अमर नाम युग–युग तक चिरंजीवी हो!

श्रीमती सनयात सेन की श्रद्धांजलि : हम उसे खो बैठे हैं, जो महान प्रतिभाशाली क्रान्तिकारी रचयिता था, लम्बे संघर्ष की आग में इस्पात बना था, जिसमें अदम्य भावना शक्ति थी और जो ऊँचे सिद्धान्तों वाला तथा तमाम उत्पीड़कों का कट्टर दुश्मन था। स्तालिन के भीतर जलने वाली क्रान्ति की लौ इतनी प्रखर थी कि उनके लिए जिन्दगी का बस एक ही कानून था – जनता की सेवा करना। इतने बरसों तक क्रैमलिन के अपने कमरे से, उन्होंने न सिर्फ निर्माण करने और सारी मानव जाति के भविष्य की गारण्टी करने में सोवियत जनता का नेतृत्व किया, बल्कि सभी उत्पीड़ितों के लिए भी – फिर वे चाहे कितनी ही दूर क्यों न बसतें हों – गहरी सहानुभूति दिखायी है।

हम उसे खो बैठे हैं, जो शान्ति का सबसे बड़ा झण्डाबरदार था। स्तालिन ने दुनिया को एक नयी जिन्दगी का रास्ता दिखाया – सच्चाई और ईमानदारी की

जिन्दगी का, जो सीधी और स्पष्ट है, आदमियों और औरतों के लिए, तमाम जनता के लिए और तमाम राज्यों के लिए समान है और जो ऐसी जिन्दगी है जिसने राष्ट्रों के बीच के सम्बन्धों को ऐसी मित्रता के आधार पर कायम किया है, जैसी इतिहास में पहले कभी भी मौजूद न थी।

सचमुच हमने बहुत कुछ खो दिया है। मगर, आगे हमारी प्रगति के लिए स्तालिन ने हमें निःशस्त्र नहीं छोड़ा है। उनकी समूची जिन्दगी और काम ने हमें इतना लैस कर दिया है कि उनके पूर्वगामियों और खुद उनकी उच्चतम आशाओं को हम पूरा करें।

उनके ध्येय को आगे बढ़ाना हमारा कर्तव्य है। तमाम प्रगतिशील मानव जाति को जागरूक होना चाहिए। स्तालिन की पार्टी और महान सोवियत जनता के चौगिर्द हमें एकजुट होना चाहिए।

'स्तालिन के लिए' यही वह झण्डा है, जिसके तले अन्तरराष्ट्रीय मजदूर वर्ग की विजय हासिल करनी है।

पण्डित जवाहरलाल नेहरू की श्रद्धांजलि : मार्शल स्तालिन अब नहीं रहे। अभी दो दिन पहले ही, हमने उनकी सख्त बीमारी की खबर सुनी थी। सिर्फ दो या तीन हफ्ते पहले ही, हमारे मॉस्को-स्थित राजदूत ने उनसे मुलाकात की थी और जब हमारे राजदूत द्वारा भेजी हुई इस मुलाकात की रिपोर्ट मैं पढ़ ही रहा था तो मुझे मार्शल स्तालिन की सख्त बीमारी की सूचना मिली। हमारे राजदूत के मिलने पर, उन्होंने अपने-आपको शान्ति का हामी बतलाते हुए, यह ख्वाहिश जाहिर की थी कि दुनिया की शान्ति भंग नहीं होनी चाहिए। उन्होंने हिन्दुस्तान के लिए अपनी सद्भावना प्रकट की थीं; और हमारे मुल्क तथा हममें से कुछ लोगों के लिए अपनी शुभकामनाएँ भी भेजी थीं। यह बात और भी दिलचस्प है कि उन्होंने हमारी बहुत-सी सांस्कृतिक समस्याओं के बारे में भी बातचीत की थी। इस बारे में उनकी काफी जानकारी है, यह देखकर हमारे राजदूत को थोड़ा ताज्जुब भी हुआ; उन्होंने हिन्दुस्तान की भिन्न-भिन्न भाषाओं, उनकी उत्पत्ति, उनके पारस्परिक सम्बन्धों और उनके बोले जाने के क्षेत्रों के बारे में बातचीत की थी।

जब हम मार्शल स्तालिन के बारे में सोचते हैं, तो हमारे, कम-से-कम मेरे दिमाग के सामने कई विचार आ जाते हैं और पिछले पैंतीस वर्षों के इतिहास की घटनावली जैसे आँखों के सामने आ जाती है; हम सब इसी युग की सन्तान हैं और हम पर अनेक प्रकार से इसका असर भी पड़ा है। इस दौरान में हम न सिर्फ अपने देश में ही संघर्ष करके बड़े हुए हैं, दुनिया के दूसरे हिस्सों में होने वाले ताकतवर संघर्षों ने भी हम पर अपना असर डाला है। इन पैंतीस वर्षों की घटनाओं

पर नजर डालने से कई उल्लेखनीय व्यक्तित्व सामने आते हैं; पर, शायद कोई भी ऐसा दूसरा व्यक्तित्व नजर नहीं आता, जिसने मार्शल स्तालिन की तरह इन वर्षों के इतिहास को इतना प्रभावित किया और बनाया हो। धीरे-धीरे वे कथा-कहानियों के नायक की तरह बन गये। कभी यह रहस्यमय व्यक्ति के रूप में और कभी असंख्य लोगों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रखने वाले व्यक्ति के रूप में वे सामने आये। शान्ति और युद्ध दोनों में ही, उन्होंने अपने आपको महान साबित किया; उन्होंने जिस दुर्गम इच्छा-शक्ति और असाधारण साहस का परिचय दिया, कम ही लोगों में होते हैं; जब इस काल का इतिहास लिखा जायेगा तो उनके बारे में तरह-तरह की बातें कही जायेंगी और पता नहीं, आने वाली पीढ़ियाँ क्या राय कायम करेंगी; पर इस बात से तो सभी सहमत होंगे कि मार्शल स्तालिन एक बहुत बड़े व्यक्तित्व वाले आदमी थे, जिन्होंने अपने युग के भाग्य का निर्माण किया। यद्यपि उन्हें लड़ाई में ही काफी सफलता मिली, पर उन्हें सबसे ज्यादा तो इसलिए याद किया जायेगा कि उन्होंने अपने देश को महान बनाया है।

उन्होंने जो कुछ कहा या किया, उसकी इस सच्चाई से कोई इंकार नहीं कर सकता कि उन्होंने रूस को महान बनाया, जो कि एक बहुत बड़ी कामयाबी है; इसके अलावा, वे न सिर्फ अपने मुल्क की मौजूदा पीढ़ी में ही काफी प्रसिद्ध और लोकप्रिय थे, बल्कि वे काफी बड़ी तादाद में दुनिया के इंसानों के साथ घनिष्ठ सम्पर्क भी रखते थे। यह बात बहुत ही कम लोगों के बारे में कही जा सकती है; देश और विदेश के बहुसंख्यक लोग उनसे बड़े ही घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण भाव से सम्बद्ध थे। मैं ऐसे लोगों को भी जानता हूँ जो मार्शल स्तालिन से इस घनिष्ठ सम्बन्ध के बावजूद बहुत-सी बातों और कार्यों में सहमत नहीं थे। उन्होंने मुझे बताया कि जिस घनिष्ठ मैत्री-भाव से वे मार्शल स्तालिन के साथ सम्बद्ध थे, उसके साथ इस तरह का मतभेद बड़ा अरुचिकर लगता था। ऐसे लोगों के रूस और बाहरी देशों के वे लोग भी हैं, जिन्होंने स्तालिन को सिर्फ देखा-भर था और उनके बहुत नजदीक नहीं गये थे; इस तरह स्तालिन एक ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने एक तरफ इतिहास के इस अशान्त समय में से सफलतापूर्वक गुजरने की चेष्टा की और दूसरी तरफ, अगणित मनुष्यों की मुहब्बत और तारीफ भी हासिल की; वे अपने किन कामों में सफल हुए और किनमें उन्होंने गलतियाँ कीं, इस बारे में मुख्तलिफ लोगों की मुख्तलिफ रायें हो सकती हैं, मगर यह तो सभी मंजूर करेंगे कि उनका व्यक्तित्व महान था और वैसी ही बुलन्द उनकी कामयाबियाँ भी थीं।

आज उनके निधन पर, हम उनके प्रति अपनी श्रद्धा का इजहार कर रहे हैं, यह न सिर्फ एक महान व्यक्ति की जिन्दगी के खत्म होने का मौका है, बल्कि

एक तरह से इतिहास के एक युग की समाप्ति भी है। वैसे इतिहास का काम तो जारी ही है और उसे मुख्तलिफ टुकड़ों में बाँटना गलत होगा, जैसा की हमारे इतिहासकार और दूसरे लोग किया करते हैं। इतिहास तो बराबर ही आगे बढ़ता है, पर उसके कुछ खास युग खत्म हो जाते हैं और फिर नये रूप में नये सिरे से जिन्दगी शुरू होती है। पर, जो अत्यन्त महान व्यक्ति अपने आपको युग विशेष का प्रतीक बना लेता है, उसके निधन से ऐसा मालूम होता है, माना वह युग ही खत्म हो गया है; मैं नहीं कह सकता कि भविष्य का फैसला क्या होगा, पर इस बात में कोई शक नहीं कि जो जबर्दस्त असर लोगों के दिलों और दिमागों पर मार्शल स्तालिन का है, वह उनकी मौत के बाद भी कायम रहेगा और लोग उनसे प्रेरणा लेते रहेंगे।

बहुत से लोगों ने, जिनमें से कई ऐसे भी हैं, जो दुनिया में उनके बड़े विरोधियों के रूप में मशहूर हो चुके हैं, भिन्न-भिन्न ढंग से स्तालिन के बारे में अपना मत जाहिर किया है। अक्सर ये बातें परस्पर विरोधी भी होती हैं। कुछ लोगों ने उन्हें बड़ा ही बेतकल्लुफ और भला आदमी बतलाया है, जबकि दूसरों ने बड़ा ही सख्त और बेरहम। हो सकता है, ये सारी बातें उनमें रही हों, पर इनके बावजूद इसमें कोई शक नहीं कि वे एक महान व्यक्ति थे।

हालाँकि संविधानिक रूप से मार्शल स्तालिन सोवियत राष्ट्र के मुखिया नहीं थे, लेकिन वैसे वे राष्ट्र के मुखिया से कहीं अधिक थे। वे अपने अधिकार से ही महान थे, भले ही वे किसी ओहदे पर हों या न हों। मेरा विश्वास है कि उन्होंने अपने असर का इस्तेमाल हमेशा शान्ति के हक में ही किया है; पर जब जंग छिड़ी, तो उसमें भी वे एक महान योद्धा साबित हुए; लेकिन, जहाँ तक मेरी जानकारी है उसके आधार पर, मैं यही कह सकता हूँ कि अशान्ति और संघर्ष की इस दुनिया में उन्होंने अपने प्रभाव का इस्तेमाल हमेशा शान्ति के पक्ष में ही किया। मुझे यह पक्की उम्मीद है कि जिस प्रभाव का इस्तेमाल उन्होंने शान्ति रक्षा के लिए किया, वह उनकी मृत्यु के बाद भी शान्ति के लिए ही काम में लाया जायेगा। ऐसा करने से, मुझे उम्मीद है कि मुख्तलिफ मुल्कों के लोगों के दिमागों में आज जो एक दिमागी तन्हाई की हालत पैदा हो रही है, वह कम होगी; जिस तनाव के साथ आज के मसलों को हल करने की कोशिश की जा रही है, लम्बी-लम्बी बहसें होती हैं, उन मसलों के हल की दिशा में ज्यादा समझदारी और सहयोग की भावना से काम होगा, ताकि मार्शल स्तालिन की मौत हमें इस बात की और ज्यादा प्रेरणा दे सके कि आज की अशान्त दुनिया को पहले से भी कहीं ज्यादा शान्ति की जरूरत है और हम सबको मिलकर, उसे नयी दुर्घटनाओं से बचाना चाहिए।

डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की श्रद्धांजलि : स्तालिन की यह हार्दिक आकांक्षा थी कि मृत्यु के रूप में वे अपने देश से उसी समय विदा लें, जबकि उनका देश किसी खतरे में नहीं, बल्कि पूर्ण शान्ति की अवस्था में हो। कहना न होगा कि उनकी इच्छा सचमुच परिपूर्ण हुई है। मुझे आशा है, स्तालिन के उत्तराधिकारी भी शान्ति-रक्षा के लिए भरसक चेष्टा करेंगे और राष्ट्रों के आपसी सम्बन्धों को अधिकाधिक मैत्रीपूर्ण बनायेंगे। अपने ढाई वर्ष के राजदूत काल में, भारत के राजदूत की हैसियत से मॉस्को में मार्शल स्तालिन से भेंट करने पर उन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कभी भी यह संकेत नहीं किया कि मौजूदा संघर्ष में भारत सोवियत संघ का साथ दे।

तेहरान में हुई चार महान राष्ट्रों के नेताओं की कांफ्रेंस में, चर्चिल ने कहा था कि रूस के इतिहास की महानतम विभूतियों के समकक्ष होने के नाते तो स्तालिन को महान कहना सर्वथा उपयुक्त ही है। भले या बुरे जिस रूप में भी हो, उनके कार्य ने विश्व-इतिहास पर अपनी गहरी छाप डाली है, जिसका प्रभाव हर राष्ट्र महसूस करता है।

मैं यह स्पष्ट कह देता हूँ कि जिन्हें हम नागरिक स्वतन्त्रताएँ कहते हैं, रूस में उनके अभाव की बात से स्तालिन अनभिज्ञ नहीं थे। जब इस बारे में उनसे कोई कुछ पूछता, तो वे यही कहते थे कि उनके देश के वैविध्यपूर्ण इतिहास को देखिये और जिन ऐतिहासिक परिस्थितियों में से उन्हें गुजरना पड़ा है, उन्हें भी देखिए। उन्हीं से इस बात का जवाब मिल जायेगा कि रूस में नागरिक स्वतन्त्रताओं का अभाव क्यों है। फिर, जब पहले शान्ति, समृद्धि और सुरक्षा हो जायेगी, तब नागरिक स्वतन्त्रताएँ तो बाद में भी प्राप्त की जा सकती हैं। जब मैंने उनसे कहा कि यह तो मार्क्सवाद के सिद्धान्तानुसार नहीं है; तो उन्होंने सिर्फ यही कहा कि वे कोई मौखिक कट्टरतावाले मार्क्सवादी नहीं, बल्कि क्रियात्मक मार्क्सवादी हैं।

यदि युद्ध काल में मित्र राष्ट्रों में जो सहयोग सम्बन्ध था, वह युद्ध के बाद भी बना रहता तो आज दुनिया का मानस अधिक स्वस्थ होता। जहाँ तक रूस का सम्बन्ध है, जिस देश के दो करोड़ व्यक्ति हताहत हुए हों और समूचे देश का एक तिहाई भाग शत्रुओं द्वारा नष्ट कर दिया गया हो, वह आसानी से युद्ध की बात नहीं सोचेगा।

स्तालिन का निधन रूस के लिए एक बहुत बड़ी दुर्घटना है। अक्सर दुर्घटनाएँ एक बहुत बड़ा परिवर्तन लाती हैं और मुझे आशा है, यह दुर्घटना भी रूसियों में वह बड़ा परिवर्तन लायेगी, जिससे कि वे दुनिया के विभिन्न राष्ट्रों के साथ भाईचारे और मित्रता का सम्बन्ध स्थपित कर सकेंगे। इस देशव्यापी दुःख, चिन्ता

और संकट के समय हम रूसवासियों के साथ हार्दिक संवेदना और सहानुभूति प्रकट करते हैं और यह आशा करते हैं कि वे अपने देश को सुसंगठित रखते हुए, दूसरे राष्ट्रों से अपने सम्बन्ध सुधारने और शान्ति को कायम रखने की भरसक चेष्टा करेंगे।

हिन्दुस्तानी कम्युनिस्ट पार्टी की श्रद्धांजलि : गहरे शोक के साथ, जिसे आँसू नहीं बता सकते, हम कामरेड स्तालिन की याद को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं; मानव जाति ने अपना सबसे महान प्रतिनिधि खो दिया। मानव–मुक्ति के आन्दोलन ने अपना सबसे बड़ा रहनुमा खो दिया; और, शान्ति के ध्येय ने अपना अथक सूरमा खो दिया।

करोड़ों घरों में मातम छा गया है। सभी देशों के पचासों करोड़ आदमियों और औरतों के दिल दुख से भर गये हैं। जिसके लिए वे सबसे ज्यादा लालायित हैं, जिसे वे सबसे ज्यादा प्यार करते हैं, स्तालिन उसी सबके प्रतीक थे; वे उन सबकी आशाओं और आकांक्षाओं के मूर्त रूप थे।

मानव इतिहास में आज तक दूसरा कोई ऐसा व्यक्ति नहीं हुआ, जिसके हर शब्द का दुनिया के हर देश में ऐसा व्यापक स्वागत हुआ हो, जिसके नाम का इतनी भारी बहुसंख्या के लिए इतना भारी महत्व रहा हो।

सोवियत जनता और सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के लिए, हमारे दिल में गहरी सहानुभूति है। हम उन्हें विश्वास दिलाते हैं कि उनका शोक हिन्दुस्तान की तमाम जनता का शोक है, हर देश के हर नेकनीयत आदमी और औरत का शोक है।

कामरेड स्तालिन मार्क्स, एंगेल्स और लेनिन के वफादार शिष्य थे। उनके वैज्ञानिक और क्रान्तिकारी काम को उन्होंने जारी रखा, आगे बढ़ाया और नयी बुलन्दियों पर पहुँचाया। कम्युनिज्म में संक्रमण करने वाले समाज के वह मेमार और निर्माता थे और वह उस विजय के संगठनकर्ता और प्रेरणा–स्रोत थे, जिसने मानवजाति को बर्बर फासिस्टों की यन्त्रणाओं से बचाया। कामरेड स्तालिन दुनिया के क्रान्तिकारी आन्दोलन के सेनानी थे। उनके ही नेतृत्व में उसने विजय पर विजय प्राप्त की।

औपनिवेशिक और गुलाम देशों की जनता के ध्येय को उन्होंने हमेशा आगे बढ़ाया। आजादी और जनवाद के लिए, उसके संघर्ष में वह अविचल पथ–प्रदर्शक और मित्र थे।

एक–तिहाई मानवजाति गौरवपूर्ण मुक्त दुनिया में रह रही है। समाजवाद, जनवाद और शान्ति का बराबर बढ़ता हुआ आन्दोलन पुरानी दुनिया की नींव हिला रहा है और तमाम देशों की जनता के लिए नयी और खुशहाल जिन्दगी के द्वार

खोल रहा है; ये उनकी याद के जीवित स्मारक हैं; उनके ऐतिहासिक नेतृत्व के महान सबूत हैं।

मानव सिद्धान्त और कार्यनीति के इस महापुरुष की मृत्यु से दुखी, हम मौजूदा पीढ़ी के कम्युनिस्ट इस बात को हमेशा गर्व के साथ याद करेंगे कि हम कामरेड स्तालिन के ही युग में रहे हैं, उन्होंने हमारा पथ प्रदर्शन और नेतृत्व किया और उन्होंने हमें सिखाया कि कैसे अपने खून की आखिरी बूँद तक मजदूर वर्ग और जनता की सेवा करनी चाहिए।

मुश्किलों के दिन, कठिन परीक्षा के दिन, इम्तहानों और कठिनाइयों के दिन आगे आने वाले हैं। उनमें कामरेड स्तालिन की बुद्धिमत्तापूर्ण सलाह, उनका प्रेरणादायक नेतृत्व अब हमें न मिल सकेगा। उनकी मृत्यु से हुई भारी क्षति हर घड़ी खटकेगी; मगर, इस बात में हमें जरा भी सन्देह नहीं है कि स्तालिन के साँचे में ढले हुए व्यक्तियों के नेतृत्व में और स्तालिन द्वारा निर्मित पार्टी के पथ–प्रदर्शन में कम्युनिस्ट आन्दोलन और शक्तिशाली तथा एकजुट होगा; मानव–प्रगति के शत्रुओं की साजिशों को खत्म करेगा और हमारे महान शिक्षक और नेता द्वारा निर्धारित रास्ते पर दुनिया के मजदूर वर्ग और आम जनता की रहनुमाई करता रहेगा।

जिस फरहरे को स्तालिन ने ऊँचा उठाया, उसके नीचे दृढ़तापूर्वक एकजुट होकर; जिस ध्येय के लिए स्तालिन जिये और जिसके लिए उन्होंने वीरगति पायी, उसके प्रति अडिग रूप से वफादार रहकर और स्तालिन द्वारा हमारे लिए छोड़ी गयी सबसे कीमती विरासत के रूप में कम्युनिस्ट पार्टी और अन्तरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन के एके को सुरक्षित रखकर, हम विजय–पथ पर आगे बढ़ेंगे।

कामरेड स्तालिन का अमर नाम हमारे हृदय में अंकित है। अपने ध्येय को प्राप्त करने के लिए, वह हमेशा हमें प्रेरणा देते रहेंगे। इस गम्भीर घड़ी में, हम एक बार फिर प्रतिज्ञा करते हैं कि उन ध्येयों को हासिल करने के लिए हम अपने प्राण तक निछावर कर देंगे।

इलिया एरेनबुर्ग की श्रद्धांजलि : इन कठिन दिनों में, स्तालिन अपनी पूर्णतम महानता के साथ हमारी आँखों के सामने उभरकर आये हमने देखा उन्हें अखिल विश्व के मार्गों पर लम्बे डग भरते हुए, हमारे संकटपूर्ण जमाने की हिलोरों पर शिखर की भाँति छाते हुए; अपनी जन्मभूमि गुर्जी के पहाड़ों को वह लाँघते हैं, दोन और वोल्गा के बीच के युद्ध–क्षेत्र को वह पार करते हैं, निर्माणरत मॉस्को के चौड़े पथों से वह गुजरते हैं, जनरव से पूर्ण शंघाई के बाजारों में वह दिखायी देते हैं, फ्रांस की पहाड़ियों को वह पार करते हैं, ब्राजील के जंगलों से

गुजरते हैं, रोम के प्रांगण में पहुँचते हैं, भारत के गाँवों को पार करते हैं – शिखरों को अपने चरणों से नापते हुए।

स्तालिन की अन्त्येष्टि का समय जब हो आया, तो पेरिस में एक बेरोजगार आदमी गुलाब के हारों से सजे उनके चित्र के पास पहुँचा और वायलेट के फूलों का एक छोटा सा गुलदस्ता उसने अपनी ओर से अर्पित किया – "बजा रोटी खरीदने के, मैंने उनके लिए फूल खरीदे।"... तूरिन में मशीनी औजारों का चलना बन्द हो गया, सिसली के कृषि मजदूर खामोशी में निस्तब्ध खड़े हो गये, गेनोआ के घाट-मजदूरों ने काम बन्द कर दिया। ये सब भी स्तालिन की अर्थी का साथ दे रहे थे। प्राचीन पीकिंग में युवक, बूढ़े लोग और अपने बच्चों को साथ लिए स्त्रियाँ, सँकरे बाजारों को लाँघती हुई मैदान की ओर तेजी से बढ़ रही थीं, जहाँ चीन अपने मित्र के प्रति शोक प्रकट कर रहा था; अर्जेन्तीना की चारागाहों में एक गड़रिये ने किसी राह चलते यात्री को 'शोक'! शब्द कहकर रोका और दोनों ने मिलकर स्तालिन के निधन पर शोक मनाया। कोरिया के खण्डहरों के बीच उन माताओं ने, जो मानव के दुर्भाग्य के लबालब प्याले चख चुकी हैं, अपनी आँखें झुका लीं और स्तालिन के निधन का शोक मनाया। पुलिस, मुखबिरों और दमनकारियों से घिरे हुए न्यूयॉर्क के ईमानदार लोगों ने शोक में भरकर कहा – "शान्ति का मित्र जाता रहा।"

हमारे दुश्मनों ने सोचा था कि इस महान शोक में हमारा कोई साथी नहीं रहेगा। निस्सन्देह, हमारा शोक ऐसा है कि उसे शब्दों में नहीं बताया जा सकता। कमीने लोग, जो हर चीज का मूल्य डॉलरों और सैण्टों में आँकते हैं, कभी नहीं समझ सकते कि ऐसे आदमी को खोने के क्या अर्थ होते हैं। लेकिन इन कठिन दिनों में ही सम्भवतः पहली बार, हमने देखा कि हमारे मित्र कितने हैं, कि हमारा शोक मानव-जाति का शोक बन गया है।

ब्राजील का खेत मजदूर, जो सपने में भी नहीं सोच सकता था कि मॉस्को के बाजारों की शक्ल कैसी है या गाँवों में लोग किस प्रकार जीवन बिताते हैं, रूसियों से वह कभी नहीं मिला है, उसने कभी बर्फ नहीं देखी है, वह नहीं जानता कि छुट्टियों का विश्राम घर कैसा होता है। अनेक सदियों पहले की भाँति, वह सुबह से साँझ तक हाड़ तोड़ता है और उसकी खुशी के दुर्लभ क्षण बहुत ही नगण्य होते हैं। लेकिन हर मेहनत करने वाले की भाँति, उसका हृदय बड़ा है और उसके हृदय पर उस आदमी के बारे में शब्द अंकित हैं, जो दुनिया के दूसरे हिस्से में रहता है और जो सब लोगों के लिए खुशहाली चाहता है। दुबला-पतला, काले रंग का यह खेत मजदूर जानता है कि मॉस्को नाम का एक नगर है और मॉस्को में स्तालिन रहते थे। उससे उसे जीवित रहने में मदद मिली।

उससे उसे अपने कन्धों को सीधा करने में सहारा मिला।

ऐसी पुस्तकें हैं जो हृदय को हिला देती हैं : इटली और फ्रांस के फाँसी पाये हुए कम्युनिस्टों के पत्र फासिज्म के खिलाफ संघर्ष के दिनों में जल्लादों के हाथों पड़ने वाले वीर, जिन्होंने साहस के साथ मौत को गले लगाया था; उनमें से कई अपने जीवन की आखिरी घड़ियों में अपनी पत्नियों, अपनी माताओं या अपने मित्रों के नाम कुछ शब्द भेजने में सफल हो गये थे। किन चीजों के बारे में उन्होंने लिखा था? उन्होंने लिखा था अपने प्रियजनों के बारे में, अपने बच्चों के बारे में और उस आदमी के बारे में, जिसने उन्हें उनकी मृत्यु से पहले की घड़ियों में सहारा दिया था – उन्होंने लिखा था स्तालिन के बारे में। फाँसी पर चढ़ाये जाने से एक घण्टा पहले, रेबेर, जो गेस्टापो की यन्त्रणाओं के कारण हिल तक नहीं सकता था, ने स्तालिन का नाम लिखा था। स्तालिन के नाम को अपने होंठों पर धारण किये, गैब्रील पेरी और दनियल केसानोबा ने बहादुरी के साथ अपनी मौत को गले लगाया था; स्तालिन का नाम था – चीन के उन वीरों की जबान पर जिन्होंने महान अभियान में हिस्सा लिया था, कैण्टन के उन शहीदों की जबान पर, जिन्होंने अपने देश की आजादी के लिए अपने प्राणों की बलि दी थी। स्तालिन का नाम लेकर ही, स्पेन के लोगों ने फासिज्म के खिलाफ संघर्ष में कूदने की शपथ ली थी; थेलमॉन को जब यन्त्रणाएँ दी जा रही थीं, तब स्तालिन के नाम ने ही उन्हें बल दिया था और स्तालिन ही थे जिन्होंने वियतनाम के हृदय में आशाओं को जगाये रखा था।

उनकी बातों को केवल सुना ही नहीं जाता था, केवल दोहराया ही नहीं जाता था, उन्हें प्यार किया जाता था, एक महान मानवीय प्रेम के साथ प्यार किया जाता था; क्योंकि वह जनता को प्यार करते थे, उनकी कमजोरियों और उनकी ताकत को पहचानते थे, क्योंकि वह उस माँ के आँसुओं का मर्म समझते थे जो युद्ध में अपने बेटे को खो चुकी है, क्योंकि वह खान मजदूर और ईंट–साज के श्रम की कद्र करते थे। उनके शब्दों को सभी समझते थे – मॉस्को में और कैण्टन में, पेरिस में और रियो द जनेरो में। उनकी जड़ें हमारे इतिहास में, हमारी जन्मभूमि में गहरी जमी थीं, लेकिन वह वास करते थे हमारे देश की सीमाओं से परे, बहुत दूर–दूर के लोगों के हृदयों में।

उन दिनों जब फासिज्म संस्कृति के अस्तित्व मात्र को आतंकित कर रहा था, मानव की प्रतिष्ठा और जीवन के लिए खतरा बन गया था – स्तालिन ने मुक्ति–सेना को युद्ध में उतारा। उन्होंने यूरोप और एशिया के लोगों की रक्षा करने वाली सेनाओं का नेतृत्व किया। गुलाम देशों के वीरों को लीमूसीन, पिएमौन्त, पोलैण्ड और स्लोवाकिया के गुरिल्ला सैनिकों को प्राग और ओसलों की, एथेन्स

और तिराना की बहादुर सन्तानों को – उन्होंने आगे बढ़ाया; विजय के गौरव को लोगों ने पहचाना। इसका कारण यह था कि खुद स्तालिन ने युद्ध में उनकी अगुवाई की थी; और, जब फासिस्टी कैदखानों और कन्सैण्ट्रेशन कैम्पों के दरवाजे खोले गये तो यूरोप के सभी देशों के पुरुषों और स्त्रियों ने खुशी के आँसू बहाते हुए, स्तालिन के नाम को दोहराया। योसेफ विस्सारियोनोविच के जन्म की सत्तरवीं वर्षगाँठ के अवसर पर, उनके पास बहुमूल्य उपहार भेजे गये – युद्ध में काम आये सैनिकों की माताओं ने पारिवारिक स्मृति–चिन्ह भेजे : यन्त्रणाएँ देकर गेस्टापो द्वारा मारी गयी लड़की का हैट, लड़ाई में मारे गये बेटे को मिला युद्ध का पदक। फ्रांस के लोगों ने स्तालिन को एक कलश भेजा, जिसमें ब्लेरिएन के उस किले की मिट्टी रखी थी, जहाँ देशभक्तों को गोलियों से उड़ा दिया गया था और जहाँ वीरों ने अपने देश की जय के साथ, जीवन की जय के साथ, स्तालिन की जय के साथ अपनी मौत को गले लगाया था।

वह महान सेनापति थे, जो युद्ध से घृणा करते थे। वह उस शोक से अच्छी तरह परिचित थे, जो युद्ध में आम लोगों के सिर पर फूटता है। वह सेनापति थे एक ऐसी सेना के, जो युद्ध के वर्षों में शान्ति के लिए लड़ी, जिसने स्तालिनग्राद के खण्डहरों में शपथ ली कि भयानक कत्लेआम की आग लगाने वालों का अन्त करके ही वह दम लेगी। सभी जानते हैं कि वह कौन था, जिसने लोगों की विजय को कलंकित किया, वह कौन था जिसने फिर से युद्ध का हल्ला शुरू किया। उस छाया को हम कभी नहीं भूलेंगे, जो स्तालिन के चेहरे पर उस समय पड़ गयी थी, जबकि समुद्र के उस पार से नये रक्तपात के पहले आह्वान हम तक पहुँचे थे।

स्तालिन ने कहा कि लोग, सभी देशों के साधारण पुरुष और स्त्रियाँ, युद्ध को रोक सकते हैं और इसके जवाब में शान्ति की एक अभूतपूर्व सेना का उदय हो गया। एक मामूली–सी स्त्री फौजी गाड़ी को रोकने के लिए रेल की पटरी पर लेट गयी। एक अन्य स्त्री दौड़कर परेड के मैदान में पहुँची और उसने सैनिकों का आह्वान किया कि वे अपने भाइयों के खिलाफ हाथ न उठायें। घाट मजदूरों ने अपनी बाँहों को समेट लिया और हमलावरों के हथियारों को लादने या उतारने से इंकार कर दिया। अपने खेतों को विदेशी हवाई अड्डों के रूप में परिवर्तित करने के खिलाफ, किसान अपने खेतों के लिए लड़े। शान्ति की माँग करते हुए, लोग बाजारों में निकल आये। विराट कांग्रेस का आह्वान किया गया, जिनमें सभी देशों के प्रतिनिधि पुरुषों और स्त्रियों ने, सभी विचारों और सभी धर्मों के लोगों ने शान्ति के झण्डे को ऊँचा उठाने की शपथ ली। करोड़ों लोगों ने अपीलों पर अपने हस्ताक्षर किये। ये अपीलें नहीं, बल्कि वचन–पत्र थे। इतिहास में पहले

कभी लोगों की चेतना इतनी जागृत नहीं हुई थी, पहले कभी इतनी आशा का संचार नहीं हुआ था।

आज, इन दु:खपूर्ण दिनों में, शान्ति के सारे समर्थकों ने – वे चाहे जिस देश के भी रहने वाले हों, वे चाहे जैसे भी विचार रखते हों – देखा है कि वे स्तालिन के कितने ऋणी हैं। वही है जिसने लोगों को एक दूसरे युद्ध को रोकने में मदद की, वही है जिसने करोड़ों बच्चों और हजारों नगरों की रक्षा की।

लोगों से इस छोर से उस छोर तक भरे, रोम के प्राँगण में टार्चों के प्रकाश से आलोकित स्तालिन का चित्र लगाया गया। और, देर तक जोरों से ये शब्द गूँजते रहे : "स्तालिन ही शान्ति हैं।" मिसीसीपी राज्य के एक छोटे से कस्बे में एक नीग्रो मजदूर ने मुझे बताया – "वे हमें कत्ल करने के लिए ले जाना चाहते हैं, लेकिन स्तालिन यह नहीं होने देंगे।" डेनमार्क में एक सीधी-सादी, पाँच बच्चों की माँ ने कहा – "मुझे अपने बच्चों के लिए डर नहीं है। स्तालिन उनकी रक्षा करेंगे।"

चीन के गाँवों में मैंने स्तालिन के चित्रों को देखा और इन चित्रों की ओर इशारा करते हुए, चीन के पुरुषों और स्त्रियों ने कहा – "वह हमारे घर की रक्षा कर रहे हैं।" पेरिस में घरों की दीवारों पर दो शब्द अंकित थे, जो लोगों के मस्तिष्क में एक-दूसरे से मिलकर एक हो गये हैं : 'स्तालिन और 'शान्ति'।

स्वभावत: शान्ति की सेना में अनेक, बहुत-से कम्युनिस्ट हैं। ठीक वैसे ही जैसे कि फासिज्म से मानव जाति को मुक्त करने वाली सेना में कितने ही बहुत से कम्युनिस्ट थे, लेकिन अकेले कम्युनिस्ट ही शान्ति को ऊँचा नहीं उठा रहे हैं; सभाओं में, सम्मेलनों और कांग्रेसों में कितने की विश्वासों के लोगों ने – कैण्टबरी के डीन ह्यूलेट जॉनसन, एबैट बौलियर, रीख के भूतपूर्व चान्सलर बर्थ और इटली के उदारदली नेता नित्ति ने – स्तालिन की बुद्धिमत्ता और शान्ति-प्रेम का जिक्र किया है। शान्ति के महान रखवारे की अन्त्येष्टि में भारत की राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य डाक्टर किचलू ने हिस्सा लिया, फ्रांस के प्रगतिशील नेताओं – येव फार्ज और पिथरे कोत ने हिस्सा लिया। मानव-जाति के दुश्मन शान्ति के अन्य समर्थकों से कम्युनिस्टों को अलग करने के लिए व्यर्थ ही जोड़-तोड़ लगा रहे हैं। व्यर्थ ही वे सोवियत संघ, चीन और जनता के जनतन्त्रों को शान्ति के लक्ष्य की रक्षा करने वाली पश्चिमी यूरोप, अमरीका और एशिया की जनप्रिय ताकतों से अलग करने की सोचते हैं। स्तालिन के ये शब्द कि भिन्न व्यवस्थाएँ, भिन्न दुनियाएँ एक साथ रह सकती हैं और शान्तिपूर्ण प्रतियोगिता कर सकती हैं, मानव जाति की चेतना में समा गये हैं। इन शब्दों ने लोगों को संयुक्त बनाया है, उन्होंने एक ऐसी ताकत को जन्म दिया है, जिसे कुत्सित युद्ध-प्रेमी

कुचल नहीं सकते।

स्तालिन ने एक से अधिक बार राष्ट्र के आजादी के अधिकार के पक्ष में आवाज उठायी है। अब राष्ट्र समझ गये हैं कि अगर आजादी नहीं, तो सुरक्षा भी नहीं; गुप्त या खुले आधिपत्य के खिलाफ, विदेशी, अड्डों के खिलाफ और नये हमलावर कृत्यों के लिए सभी प्रकार के 'विदेशी सैनिक दलों' के खिलाफ संघर्ष में स्तालिन के शब्द उन्हें प्रेरणा देते हैं।

दिसम्बर के अन्त में, एक अमरीकी पत्रकार को स्तालिन ने जवाब देते हुए कहा था कि संयुक्त राज्य अमरीका और सोवियत संघ के बीच युद्ध को अनिवार्य नहीं माना जा सकता और यह कि दोनों देश आगे भी शान्ति के साथ रह सकते हैं। ये स्तालिन के आखिरी शब्द थे, जो समूचे भूमण्डल में व्याप्त हुए थे। ये दुनिया में सबसे ज्यादा मजबूत और सबसे ज्यादा शान्तिप्रिय राज्य के अध्यक्ष के शब्द थे। सारी दुनिया के आम लोगों की रक्षा के लिए, रक्तचाप के खिलाफ, स्तालिन ने शान्ति के पक्ष में आवाज उठायी थी।

शान्ति के महान रखवारे के निधन का समाचार सुनकर, हर जगह के लोगों पर छा जाने वाला शोक कितना स्वाभाविक है; लेकिन, हर कोई जानता है कि स्तालिन मर नहीं सकते। वह केवल अपनी कृतियों में ही जीवित नहीं हैं, केवल सोवियत राज्य की शक्ति और बढ़ती में ही जीवित नहीं हैं, बल्कि वह करोड़ों लोगों के मस्तिष्क में जीवित हैं – रूसियों और चीनियों के पोलों, और जर्मनों के, फ्रांसीसियों और विएतनामियों के, इटालियनों और ब्राजीलियनों के, कोरियनों और अमरीकियों के। जब स्तालिन का हृदय धड़कना बन्द हुआ, तो मानव जाति का शोक–सन्तप्त हृदय और भी ज्यादा जोरों से धड़कने लगा। साधारण पुरुषों और स्त्रियों ने अनुभव किया कि स्तालिन की स्मृति ने, स्तालिन के आदेशों ने, शान्ति और मानव जाति की खुशहाली के लिए संघर्ष ने, उन्हें और भी ज्यादा घनिष्ठ सूत्र में बाँध दिया है।

स्तालिन की अर्थी पर, ये शब्द गूँजकर चारों ओर फैल गये : "हम जनता के सच्चे सेवक हैं और जनता शान्ति चाहती है, युद्ध से घृणा करती है। करोड़ों के रक्त की होली को रोकने और खुशहाल जीवन के निर्माण की गारण्टी करने की लोगों की इच्छा, हम सबकी पवित्र इच्छा हो!" ये शब्द साथी स्तालिन के विचारों, चिन्ताओं और उनके इरादों के मूर्त रूप थे और इन शब्दों को उनके सहकर्मी, सोवियत सरकार के अध्यक्ष ने उच्चारित किया था। ये शब्द हर कहीं और हर जगह सर्वसाधारण पुरुषों और स्त्रियों के पास पहुँचेंगे और हमारे साथ मिलकर, वे कहेंगे – "स्तालिन जीवित हैं!"

6. स्तालिन सम्बन्धी कविताएँ

चिरकाल से जनगण अपने वीरों की गाथाएँ गाता आया है, लेकिन स्तालिन तो सोवियत की जनता के लिए गाथाओं के वीरों से बहुत विलक्षण थे। उन्होंने अपने कार्यों से उनके जीवन में अद्‌भुत परिवर्तन किया है। स्तालिन ने उन्हें अत्याचारों और भूख से मुक्त किया, अगाध अन्धकार से निकालकर प्रकाश में रखा, उनकी सभी तरह की बेड़ियाँ काट फेंकीं और कुछ ही वर्षों में उनके सामने ऐसा सुखमय संसार ला दिया, जिसकी वह कल्पना भी नहीं कर सकते थे। स्तालिन के बारे में, जनसाधारण ने अपनी-अपनी भाषाओं में अनेक गीत बनाये और उन्हें गाकर साइबेरिया के तेगा, तुन्द्रा, पामीर और काकेशस के हिमाच्छादित शिखरों, किजिलकुम और कराकुम के रेगिस्तानों, उक्रइन और रूस की शस्य श्यामला भूमि को प्रतिध्वनित किया है। इन गीतों में बहुतों के रचयिताओं का भी पता नहीं है। हम यहाँ सोवियत में जनप्रसिद्ध ऐसे पाँच गीतों को ही दे रहे हैं। अन्त में, हिन्दी और उर्दू की भी एक-एक कविता है।

अज्ञात कवि

यदि होते दो हृदय मेरे सीने में,
चढ़ घोड़े पर मैं,
ले आता उन्हें मॉस्को।
पुर-द्वार उतरता अदब से,
लेता निकाल कटिबन्द रेशमी,
रखता उस पर दो ज्वलित हृदय।
देता रख सुघड़ पॉवड़ों पर,
कहता पुकार दरबानों से :
"उपहार स्तालिन के लिए एक रेशमी पोटलि का।"
पोटलि से हृदय द्वय जल उठते;
जल उठते, जैसे महाहृदय
जगमग करता क्रैमलिन में।

अज्ञात कवि

ऊपर-ऊपर - घाटी के
गिरि-शिखर तुंग।
ऊपर-ऊपर शिखरों के
है नभ महान।
किन्तु स्तालिन के आगे,
है सर्व गगन।
चमक तेरे सन्मुख।
रवि-किरण लुत्फ होती,
रजनी के सन्मुख,
पर बुद्धि पार कर उसे चमकती।
यह लौह कठिन,
पर धातु कल्पना की तेरी
है कठिन, कठिनतर।
तू है नभ से अतिमहान
सम्मानित है इससे ही
तू इन सभी पर्वतों से भी।
औरों के ऊँचे-ऊँचे
नभचुम्बी सुविचारों को,
ऊँचे पर्वत के वासी,
लाते मन में नहीं।
जन-नेत्र चमत्कृत होते उन
गिरबाजों से,
सम हैं, तेरे सम केवल
वे उच्च विचार।
ऊँचे उगते हैं नभ में
तारे और रजनीपति।
तो सन्मुख तारे होते मलिन, किन्तु
वह रवि भी होता मलिन,
जब शब्द पहुँचते तेरे,
आदेश हमें देने को।
शब्द जो तेरे सुनता है,

नहीं उसे बिसर वह सकता।
जो कोई अवगम करता
तेरी उस हित–शिक्षा को,
जय–शिक्षा पाता है, वह
हारेगा कभी न रण में।
उत्सुक हैं सारे जनगण
ऊँचे पर्वत–पुंजों में दे दें दिल
ह्रदय अपने
तेरी सच्ची शिक्षा में।
मुँह फेर, जरा तो देखो,
शत–शत हैं पीछे तेरे अनुयायी वे
हैं तेरे, क्योंकि सत्पथ है तेरा।
बनता जो अनुचर तेरा,
नहीं वह मरने से डरता – स्तालिन!

दागिस्तानी कवि सुलेमान स्तालस्की

जीवन बढ़ता है आगे,
दल करता है, नेतृत्व।
श्रमिकों का महाप्रयाण,
साथ तुम्हारे उसका ध्वज।
– स्तालिन! ।। 1 ।।
नव तरुणायी में चमकी,
ज्योति दिखाती पथ श्रमिकों को,
नेतृत्व जहाँ, तब शोक नहीं,
जीवन है सुखमय
– स्तालिन! ।। 2 ।।
वर्षों बीते और कभी नहीं
आया दुर्भग वत्सर कोई,
जब से हमको त्राण दिया।
उत्तुंग शिखर से तुमको,
हैं साफ दीखते दूर क्षितिज
– स्तालिन! ।। 3 ।।

अरिभुज को तुमने भग्न किया,
दृढ़ किया हमारी भुज को और
पूर्ण विजय-माला को
रख दिया शीश दुर्बल के।
एक कुंजी नव जीवन की।
- स्तालिन! ।। 4 ।।

तेरा ओ मेरे युग-प्रसिद्ध!
जिसका है नाम,
है सुन्दर कृतियों की संज्ञा,
तेरा कि जिसने शब्द सुने,
औ' समझे मन दुखियों के;
तेरा गाता हूँ मैं यश
- स्तालिन! ।। 5 ।।

मिखाइल इन्युश्किन

भू-सीमा से सीमा तक, घाटी वन और पर्वत में -
जहाँ बाज परम अभिमानी मँडराता केवल ऊपर।
अति प्रेम-पात्र स्तालिन सुचतुर के गुण-गौरव को लेकर,
जनता के हृदयों से उठता संगीत।
द्रुततर बाजों की गति से, यह गीत उड़ रहा है नभ में,
कम्पित हैं अत्याचारी सब इसके भय-भैरव से।
कंटकित-तार-संरक्षित औ' दुर्ग-गुप्त सीमाएँ,
अवरुद्ध न कर सकती हैं संगीत सतत-प्रसरण को।
नहिं गोली और न कोड़ा चुप रह सकता है इसको,
यह साभिमान लाँघ जाता खाई औ' मोर्चा-बन्दी।
रिक्शों के चलते पहियों और होंठों से कुलियों के,
हलवाहों के हल से भी है गीत निकलता इसका।
जयकर्ता-ध्वज-सा इसको ऊँचे स्वर से वह गाते,
जनता का संयुत-संगर बढ़ रहा प्रबल पाँती में।
ऊँचे और ऊँचे स्वर में साहस और ताप बढ़ाता,
बढ़ रहा, हटाता अत्याचारी को अपने मग से।
कर प्राप्त विजय हम यों सब, अब साभिमान हैं गाते,
स्तालिन के युग को मिल कर हम सम्मानित हैं करते।

सुखमय अद्‌भुत नवजीवन को गाते हैं हम अपने,
अपनी पायी विजयों के गाते सुख के गीतों को।
भू-सीमा से सीमा तक, घाटी, वन औ' पर्वत में,
घहराता यान गगन का, मोटर गर्जन करती जहाँ,
जनता के अतिशय प्रेम का भाजन जो है स्तालिन,
यह विजयी जनता सारी उस सुचतुर के यश गाती।

चेरकास स्वायत्त प्रजातन्त्र की जुरियत् शकोवा रचित - लोरी

लाउ-लाउ-लाउ-ला।
रात आयीं मेरे बच्चे सो जा।
सो जा मेरे छोटे, भूरी आँखों
वाले, मैं गाती हूँ तेरे लिए।
बड़े दिन होंगे।
तेरा भाग्य, ओ मेरे प्रसिद्ध!
खेत और जंगल, सरिता और
गिरिवर, जो कुछ देखता है मेरे
धनी, सब तेरे। मेरे छोटे, भूरी
आँखों वाले! रात आयीं,
हो गये राजपथ सूने,
तू होगा सम्मानित अपने कामों
में, तू पिछड़ेगा नहीं संगर में।
कौन तुझसे हाथ मिलायेगा?
हमारे स्तालिन! मिलायेंगे वह छोटे
हाथों से।
खेतों का काम बन्द हुआ,
सुनता है घर आने के गीत,
दूर से ट्रैक्टर-ड्राइवरों के।
जल्दी ही मेरे बच्चे तू होगा
बड़ा जब बढ़ के तू युवा होगा,
तू भी पुत्र, कम्बाइन चलायेगा,
हाँ, मेरे छोटे, भूरी आँखोंवाले!

तू सिद्ध करेगा अपने को मेरा
पुत्र, बढ़ने को हैं तेरे समाजवादी,
संवत्सर। तेरे सीने पर अच्छे
कामों के लिए, चमकेंगे रंग
पदक के। लाउ-लाउ-लाउ-ला।
सो जो कोमल औ' गहरी नींद
ओह! कैसा चमकीला यश तेरे
लिए रक्खा है, कैसा सुन्दर और
यशस्वी जीवन!

श्री नरेन्द्र शर्मा

जागरुक प्रहरी धरती का, जनता का अभिभावक!
लौह और हिम का तन धर कर आया था ज्यों पावक!
हिटलर-से हिरनाकुस मारे बन-बन कर नर-नाहर,
खेल सके फिर धरती की फुलवारी में मनु-शावक!
निर्भर अभय-स्वरूप कि जिससे जन का भय भगता था!
गहन मौन जिसका रिपु को हुँकार सदृश लगता था!
नपी-तुली संयत वाणी में उत्स नये जन-मन का,
उसके दो नयनों में शतमुख स्वप्न-दीप जगता था!
उसकी उँगुली के इंगित पर स्वयम् काल भी नाचा,
रक्त मांस का मनुज बना दुर्दान्त क्रान्ति का ढाँचा!
अन्तर में करुणा, कराल कर स्वार्थों के संहारक,
कोमल मोम लिये सीने में वह इस्पाती साँचा!
पूँजीवादी चक्रव्यूह का द्वार तोड़ने वाला,
अधोगामिनी सरिताओं की धार मोड़ने वाला,
सदियों के भूखे बंजर को दिया बीज का दाना -
नित्य नये नौतोड़ जोत कर भूमि गोड़ने वाला!
निश्चित नियत योजनाओं से नियति प्रकृति को कीला,
क्रान्ति विपथगा उसके बल-कौशल से बनी सुशीला!
सबल राष्ट्र का सार्थवाह वह पहुँच चुका मंजिल तक,
उसके लिए सोच क्योंकर हो? क्यों हो आँचल गीला!
अपने लिए न जीने वाले मर कर भी कब मरते?
हर घर में वह दीपक बनते, हर दिल में घर करते!

सौ-सौ भाग्य बिगड़ते जग में एक स्वार्थ के कारण,
एक अमर निःस्वार्थ भाव से सौ-सौ भाग सँवरते!
अमर हो गया है मर कर भी वह अरुणध्वज-धारी!
लड़ा सर्वहारा के हित में, कभी न हिम्मत हारी!
आशा का उद्धार किया युग-युग के अन्धकूप से,
अर्थपिशाचों से स्वतन्त्र की मानवता सुकुमारी!
वह सुकुमारी, थी जो कामुक सामन्तों की दासी,
जिसकी सुन्दरता ही जिसकी बनी गले की फाँसी!
वह सुकुमारी, जो अब भी क्रय-विक्रय की सामग्री,
जो बल-सम्बल की भूखी है और शान्ति की प्यासी!
मुक्त किया उस सुकुमारी को, दिया शान्ति-शीतल जल!
जन-बल धन-बल की भूखी को दिया श्रमिक का सम्बल!
अब न बवण्डर उड़ा सकेंगे धरती को अम्बर में,
भँवर धरा को दिखा सकेगी अब न दिनान्ध रसातल!
जन-नेता के चरण-चिन्ह अब दीप-स्तम्भ बनेंगे,
चरण-चरण पर मुक्तचरण यश के कवि गीत रचेंगे!
उसके सुफल मनोरथ सबके सम्बल बन जायेंगे,
उसकी सुध को हम भी धुँधली होने कभी न देंगे!

श्री जाँ निसार अख्तर

उफक[1]-वक्त से खुर्शीदे-दरख्शाँ[2] टूटा,
कौन खुर्शीदे-दरख्शाँ वो मेरा स्तालिन!
दफअतन[3] चीख-सी एक सीनये-गेती[4] से उठी
दफअतन दिल की पुकारों से जहाँ गूँज उठा।
नालए-दर्द से काशानये-जाँ गूँज उठा।
दश्तो-दर[6] गूँज उठे - कौन मेरा स्तालिन!
बहरो-बर[7] गूँज उठे - कौन मेरा स्तालिन!
कल्बे[8]-गुलशन से जुनूखेज पुकारें निकलीं
चाक करती हुई दामन को बहारें निकलीं
बाल खोले हुए खेतों से हवाएँ लपकीं
कारखानों से दिल-अफगार[9] सदाएँ लपकीं
बादबानों[10] से लरज़ती हुई आहें दौड़ीं
थरथराती हुई तारों की निगाहें दौड़ीं

एक लम्हे के लिए छा-गयी दहर[11] पै रात
रौशनी चीख उठी - कौन मेरा स्तालिन!
एक लम्हे के लिए रुक-सी गयी नब्ज़े-हयात[12]
जिन्दगी चीख उठी - कौन मेरा स्तालिन!
साथियो, जादए-मंज़िल पै हमारा रहबर
जिन्दगी भर की मशक्कत से थका सोता है
जर्रे-जर्रे को फरोगे-महो-अंजुम[14] देकर
आसमाँ सीनये-गेती से लगा सोता है
दोस्तो, बारगह[15]-अज़्मते-आदम है यही
पाये-रफ्तार[16] को आदाब[17] सिखा दो, ठहरो
दिल हमारे हैं उसी के तो खिलाये हुए फूल
उसके कदमों पै यही फूल चढ़ा दो, ठहरो

1. काल का क्षितिज, 2. चमकीला सूरज, 3. एकदम, 4. धरती का सीना, 5. प्राण का प्रासाद, 6. जंगल और घर, 7. भूमि और समुद्र, 8. उपवन का हृदय, 9. दिल चीरनेवाली, 10. पालों, 11. दुनिया, 12. जिन्दगी की नब्ज, 13. मंजिल की देहरी, 14. चाँद-तारों की चमक, 15. मनुष्यता का महानतम स्थान, 16. गति के पैरों को, 17. आचार।

सरबखम[1] अज़्मते-कौनेन[2] हुई जाती है
साथियो, परचमे-गुलरंग[3] झुका दो, ठहरो
तुझमें ये परचमे-गुलरंग अदा किसकी है?
सुर्ख तारे तेरे सीने में जिया[4] किसकी है?
चीन किस अब्र[5] का परतौ[6] तेरे गुलज़ार[7] पै है?
रंग किसका ये तेरे बाग की दीवार पै है?
तेरे झूमे हुए धानों में लहक है किसकी?
माओ के नर्म तबस्सुम[8] में झलक है किसकी?
कोरिया अज़्म[9] है किसका तेरे जाँबाजों में?
किसकी ललकार छुपी है तेरी आवाजों में?
वीतमिन्ह ये तेरे शोले में लपक किसकी है?
तेरे बढ़ते हुए कदमों में धमक किसकी है?
आग ये किसकी मलाया तेरे बागात में है?
कौन-सा सुर्ख निशाँ देख तेरे हाथ में है?

मिस्र, ये धूम है क्या तेरे खरीदारों में?
आ गया कौन-सा यूसुफ* तेरे बाज़ारों में?
वादिये-नील पे है लालफिशानी[10] किसकी?
छा गयी अर्ज़े[11] जुलेखा पे जवानी किसकी?
खाके-ईरान तेरे दिल में लगी है किसकी?
आग ये तेल के सीने में दबी है किसकी?
हिन्द, ऐ मेरे वतन, मेरे हिमाला की ज़मीं
मेरे फिरदौस[12], मेरे ताजो-अजन्ता की ज़मीं
जुल्फे-बंगाल में ये खम, ये अदा किसकी है?
ये दकन पर तेरे गुलनार[13] घटा किसकी है?
सुर्ख है किससे जबीं तेरे तेलंगाने की?
किसकी ममनून[14] है सुर्खी[15] तेरे अफसाने[16] की?

1. नतमस्तक, 2. सृष्टि की महत्ता, 3. लाल गुलाब जैसे रंग का, 4. रोशनी, 5. बादल, 6. छाया, 7. बाग, 8. मुस्कराहट, 9. निश्चय, 10. लाले के फूलों की बारिश, 11. जुलेखा का देश, 12. स्वर्ग, 13. सुर्ख, 14. कृतज्ञ, 15. शीर्षक, 16. कथा।

[यूसुफ का सौन्दर्य अद्वितीय था और उन्हें मिस्र के बाजार में एक दास की तरह बेचा गया था। उनके सौन्दर्य के कारण, मिस्र के प्रभु वर्ग का हर आदमी उन्हें खरीदने को लालायित था। मिस्र की रानी जुलेखा ने उन्हें सबसे अधिक दाम देकर खरीद लिया था।

एशिया, तेरे गुलिस्ताँ को सजानेवाला
इक नयी आबोहवा देके गया है तुझको
अर्ज़े-मशरिक तेरी ज़ीनत[1] का बढ़ानेवाला
सुर्ख फूलों की कबा[2] देके गया है तुझको
उम्र-भर तेरे लिए जान खपानेवाला
अपनी मेहनत का सिला देके गया है तुझको
जाते-जाते भी तेरा नाज उठानेवाला
तोहफए-अमनों-बका[3] देके गया है तुझको
हाँ, बढ़े चल कि तेरा राह बतानेवाला
तेरी मंजिल का पता देके गया है तुझको

स्तालिन, तेरी साहब-नज़री[4] बाकी है
दीदावर देख तेरी दीदावरी[5] बाकी है
राहबर अब भी तेरी राहबरी बाकी है
अज़्मे-मोहकम[6] है तेरा नाम ज़माने के लिए
जेहदे-पैहम[7] है तेरा नाम ज़माने के लिए
एक परचम है तेरा नाम ज़माने के लिए
साथियो दोश[8] पै गुलरंग निशा[9] लेके चलो
इक जहाँ लेके उठो, एक जहाँ लेके चलो
स्तालिन अभी ज़िन्दा है हमारे दिल में
हर कदम एक नया अज़्मे-जवाँ[10] लेके चलो
ज़िन्दगानी के खज़ाने कहीं लुट सकते हैं?
ज़िन्दगानी से नयी ताबो-तबाँ[11] लेके चलो
सैले-रफ्तार में दरिया की रवानी खो जाये
अपनी ठोकर में हर इक कोहे-गरां[12] लेके चलो
जगमगा जाये सितारों से ज़मीं दूर नहीं
अपने कदमों में कोई कहकशाँ[13] लेके चलो
जुल्मते[14]-आखिरे-शब भी न रहेगी बाकी
और दो-चार कदम मिशअले[15] जाँ लेके चलो
साथियो, हौसलए-शौक को महमेज़[16] करो
हाँ, कदम तेज़ करो, तेज़ करो, तेज़ करो
इर्तिका[17] वक्त का फर्मान सुनाता है चलो
हर कदम माओ हमें राह दिखाता है चलो
स्तालिन हमें मंज़िल पै बुलाता है चलो।

1. सजावट, 2. लिबास, 3. शान्ति और जीवन, 4. दार्शनिक दृष्टि, 5. व्यापक दृष्टि, 6. दृढ़ निश्चय, 7. निरन्तर संघर्ष, 8. कन्धा, 9. ध्वजा, 10. जवान निश्चय, 11. शक्ति, 12. भारी पहाड़, 13. आकाश गंगा, 14. रात के पिछले पहर का अँधेरा, 15. जीवन ज्योति, 16. ऐड़ लगाओ, 17. विकास।

परिशिष्ट

स्तालिन का वर्ष-पत्र

सन		स्थान	घटना विवरण
1879,	दिसम्बर, 21	गोरी	स्तालिन का जन्म
1888,	सितम्बर	गोरी	पुरोहित स्कूल में प्रवेश
1894,	सितम्बर, 2	तिफलिस	आर्थोडक्स धर्मशास्त्रीय सेमिनरी में प्रवेश
1895		तिफलिस	स्तालिन की कविता छपी
1896-98		तिफलिस	मार्क्सीय अध्ययन-चक्र स्थापित किया
1898,	अगस्त	तिफलिस	क्रान्तिकारी संस्था के सदस्य बने
	अगस्त	तिफलिस	हड़ताल का संगठन
1899,	मई, 29	तिफलिस	स्तालिन सेमिनरी से निकाले गये
1900,	अप्रैल, 23	तिफलिस	मई दिवस पर भाषण
1901,	नवम्बर, 11	तिफलिस	समाजवादी कमेटी के सदस्य
	नवम्बर	बातूम	मजदूरों में काम आरम्भ
	दिसम्बर, 31	बातूम	अध्ययन-चक्र-कांफ्रेंस
1902,	मार्च, 8	बातूम	मजदूर-प्रदर्शन का संगठन
	मार्च, 9	बातूम	मजदूरों के प्रदर्शन पर गोली चली
	अप्रैल, 5	बातूम	स्तालिन की प्रथम गिरफ्तारी
1903,	फरवरी	बातूम	काकेशीय पार्टी कांग्रेस
	जुलाई, 9	कुतैस	साइबेरिया में तीन वर्ष का निर्वासन-दण्ड
	नवम्बर, 27	कुतैस	साइबेरिया पहुँचे
	दिसम्बर	कुतैस	लेनिन का प्रथम पत्र
1904,	जनवरी, 5	कुतैस	स्तालिन साइबेरिया से गायब

	जनवरी, 6	काकेशिया	स्तालिन का प्रथम विवाह
	दिसम्बर, 13–31	बाकू	हड़ताल का नेतृत्व
1905,	फरवरी, 13	बाकू	खूनी परिवार के विरुद्ध पर्चा
	जुलाई, 15	बाकू	'हथियारबन्द विद्रोह और हमारे दाँव-पेच' लेख प्रकाशित
	अक्टूबर, 18	बाकू	जार की सुधार-घोषणा पर भाषण
	नवम्बर	बाकू	काकेशीय चतुर्थ सम्मेलन का संचालन
	दिसम्बर	मॉस्को	प्रथम रूसी क्रान्ति
1905,	दिसम्बर 12–17	तमरकोर्स	लेनिन से प्रथम मुलाकात
1906,	अप्रैल, 15	तिफलिस	गुप्त छापाखाना पकड़ा गया
	अप्रैल, 10–25	स्टॉकहोम	पार्टी की चौथी कांग्रेस में
	जून, 21	तिफलिस	'अराजकतावाद या समाजवाद?' लेख छपा
1907,	अप्रैल, 30	लन्दन	पंचम पार्टी कांग्रेस में
	अगस्त, 12	बाकू	'गुदांक' का प्रकाशन
	सिम्बर, 29	बाकू	'खानलार की घटना' लेख छपा
	अक्टूबर, 25	बाकू	बाकू पार्टी कमेटी के सदस्य चुने गये
1908,	मार्च, 9	बाकू	'तेल के मालिक' लेख छपा
	मार्च, 25	बाकू	स्तालिन गिरफ्तार
	नवम्बर, 9	वलोग्दा	निर्वासन-दण्ड
1909,	जून, 24	वलोग्दा	भाग निकले
1910,	मार्च, 23	वलोग्दा	स्तालिन तीसरी बार गिरफ्तार
	अगस्त, 27	वलोग्दा	काकेशिया से पाँच साल के लिए निष्कासित
	सितम्बर, 23	वलोग्दा	निर्वासित, नजरबन्द
1911,	जून, 1	वलोग्दा	अनुपस्थिति में केन्द्रीय कांफ्रेंस की संगठन कमेटी के सदस्य चुने गये
	सितम्बर, 6	वलोग्दा	निर्वासन से निकल भागे
	सितम्बर, 9	पीटर्सबर्ग	चौथी गिरफ्तारी
	दिसम्बर, 14	वलोग्दा	तीन वर्ष के लिए निर्वासित
1912,	फरवरी, 29	वलोग्दा	नजरबन्दी से भागे
	अप्रैल, 22	पीटर्सबर्ग	पाँचवीं गिरफ्तारी
	जुलाई, 2	नारिम	साइबेरिया में निर्वासित

	सितम्बर, 1	नारिम	निर्वासन से भागे
1913,	फरवरी, 23	पीटर्सबर्ग	छठी गिरफ्तारी
1914,	सितम्बर	यूरोप	प्रथम विश्वयुद्ध घोषित
1915,	ग्रीष्म	साइबेरिया	बोल्शेविकों की सभा में
1917,	फरवरी	साइबेरिया	बुर्जुआ-क्रान्ति
	मार्च, 12	पीटर्सबर्ग	स्तालिन पहुँचे
	मई	पीटर्सबर्ग	पोलित ब्यूरा के सदस्य चुने गये
	जुलाई, 26	पीटर्सबर्ग	छठी पार्टी कांग्रेस का संचालन
1917,	अगस्त-अक्टूबर	पीटर्सबर्ग	केन्द्रीय पत्रों 'प्रालितारी' और 'रबोची' का सम्पादन
	अक्टूबर, 24	पीटर्सबर्ग	स्थायी सरकार को उलटने (6 नवम्बर) का आह्वान
	अक्टूबर, 25	पीटर्सबर्ग	महाक्रान्ति (7 नवम्बर)
1918,	मार्च	पीटर्सबर्ग	ब्रेस्तलितोवस्क-सन्धि
	मई, 26	पीटर्सबर्ग	खाद्य-विभाग के प्रधान संचालक
	अगस्त	मॉस्को	समाजवादी-क्रान्तिकारियों का विद्रोह
	अगस्त	मॉस्को	स्तालिन वारित्सीन में
1919	मार्च	पीटर्सबर्ग	राजनियन्त्रण लोककमीसार नियुक्त
	जून-जुलाई	पीटर्सबर्ग	पेत्रोग्राद की रक्षा
	मई-अक्टूबर	उक्रइन	दक्षिणी मोर्चे पर
1920,	नवम्बर	उक्रइन	पोल और रेंगल की पराजय
1921,	मार्च	मॉस्को	मॉस्को दसवीं पार्टी कांग्रेस
	मार्च	मॉस्को	नवीन आर्थिक नीति
1922,	मार्च-अप्रैल	मॉस्को	11वीं पार्टी कांग्रेस - स्तालिन पार्टी के महामन्त्री चने गये
	दिसम्बर, 30	मॉस्को	सोवियत समाजवादी गण संघ की स्थापना
1923,	अप्रैल	मॉस्को	12वीं पार्टी-कांग्रेस
1924,	जनवरी, 2	गोर्की	लेनिन का निधन
	मई	गोर्की	13वीं पार्टी-कांग्रेस
1925,	दिसम्बर	मॉस्को	14वीं पार्टी-कांग्रेस
1927,	दिसम्बर	मॉस्को	15वीं पार्टी-कांग्रेस
1929,	दिसम्बर, 21	मॉस्को	स्तालिन की 50वीं वर्षगाँठ
1930,	मार्च, 15	मॉस्को	'सफलता से चकाचौंध' लेख

	अप्रैल, 3	मॉस्को	'कोलखोजी साथियों को जवाब' लेख
1930	जून	मॉस्को	16वीं पार्टी-कांग्रेस
1933,	दिसम्बर, 11	मॉस्को	निर्वाचन भाषण
	नवम्बर, 3	मॉस्को	पत्नी नादेज्दा का देहान्त
1934	जनवरी	मॉस्को	17वीं पार्टी-कांग्रेस
	जनवरी, 28	मॉस्को	लेनिन संस्मरण सभा में भाषण
	दिसम्बर, 1	मॉस्को	किरोफ की हत्या
1936,	मार्च, 1	मॉस्को	राय होवार्ड से मुलाकात
1936,	दिसम्बर, 5	मॉस्को	सोवियत संविधान स्वीकृत
1937,	दिसम्बर, 12	मॉस्को	महासोवियत का चुनाव
1939,	मार्च	मॉस्को	18वीं पार्टी कांग्रेस
1941,	जून, 22	मॉस्को	हिटलर का सोवियत पर आक्रमण
	जुलाई, 3	मॉस्को	देश की नाजुक स्थिति पर भाषण
	जुलाई	मॉस्को	प्रतिरक्षा जनकमीसार नियुक्त
	दिसम्बर, 19	मॉस्को	राजधानी के घिरावे की घोषणा
1942,	फरवरी, 23	मॉस्को	आठ महीनों के युद्ध का विश्लेषण
	दिसम्बर	स्तालिनग्राद	जर्मनों की पराजय का आरम्भ
1943,	मार्च 6	मॉस्को	'मार्शल' की उपाधि
	नवम्बर	मॉस्को	दो-तिहाई भूमि की मुक्ति तेहरान कांफ्रेंस में
1944,	जुलाई, 26	मॉस्को	विजय-तमगा प्राप्ति
1945,	जनवरी-फरवरी	मॉस्को	सारे पोलैण्ड की मुक्ति
	मई, 2	बर्लिन	जर्मन राजधानी पर अधिकार
	मई, 8	बर्लिन	जर्मनी का बिना शर्त आत्मसमर्पण
	मई, 9	मॉस्को	विजय दिवस
	जुलाई, 17	मॉस्को	बर्लिन कांफ्रेंस
	अगस्त, 9	मॉस्को	जापान के विरुद्ध युद्ध-घोषणा
	सितम्बर, 2	मॉस्को	जापान का आत्मसमर्पण
1946,	सितम्बर	मॉस्को	संवाददाता अलैक्जेण्डर वर्थ से मुलाकात
1947,	अप्रैल		अमरीकन स्टासेन से मुलाकात
1948		मॉस्को	वॉलेस को जवाब
1950		मॉस्को	भाषा का प्रश्न
1951,	दिसम्बर, 31	मॉस्को	जापानी जनता के नाम सन्देश

1952,	अक्टूबर, 5	मॉस्को	19वीं पार्टी कांग्रेस
1953,	फरवरी, 7	मॉस्को	अर्जेन्तीना के राजदूत से मुलाकात
	फरवरी, 17	मॉस्को	भारतीय राजदूत से मुलाकात
	मार्च, 1	मॉस्को	स्तालिन बेहोश हुए
	मार्च, 5	मॉस्को	स्तालिन का निधन
	मार्च, 9	मॉस्को	अन्त्येष्टि, 'सम्मान-गारद'

• • •

स्तालिन का नाम...तमाम दुनिया के मेहनतकशों के लिए अत्यन्त प्यारा नाम है। लेनिन के साथ मिलकर, साथी स्तालिन ने कम्युनिस्टों की शक्तिशाली पार्टी खड़ी की, उसे पाला-पोसा और फौलादी बनाया। लेनिन के साथ-साथ, साथी स्तालिन ने अक्टूबर की महान समाजवादी क्रान्ति को प्रेरणा दी, उसका नेतृत्व किया, दुनिया में सबसे पहले समाजवादी राज्य की स्थापना की। लेनिन के अमर उद्देश्य को आगे बढ़ाते हुए, साथी स्तालिन ने समाजवाद को युगान्तरकारी जीतें हासिल करने में सोवियत जनता की अगुवाई की। साथी स्तालिन ने दूसरे महायुद्ध में फासिज्म के खिलाफ विजय पाने में अपने देश का नेतृत्व किया, जिसने समूची अन्तरराष्ट्रीय स्थिति में आमूल परिवर्तन कर दिया।

(इसी पुस्तक से)

राहुल
फ़ाउण्डेशन

ISBN 978-81-87728-25-2
ISBN 81-87728-25-6
9788187728252
मूल्य : रु. 150.00

बेहतर ज़िन्दगी का रास्ता
बेहतर किताबों से होकर जाता है!

जनचेतना

सम्पूर्ण सूचीपत्र
2021

हम हैं सपनों के हरकारे
हम हैं विचारों के डाकिये

आम लोगों के लिए
ज़रूरी हैं वे किताबें
जो उनकी ज़िन्दगी की घुटन
और मुक्ति के स्वप्नों तक
पहुँचाती हैं विचार
जैसे कि बारूद की ढेरी तक
आग की चिंगारी।
घर-घर तक चिंगारी छिटकाने वाला
तेज़ हवा का झोंका बन जाना होगा
ज़िन्दगी और आने वाले दिनों का सच
बतलाने वाली किताबों को
जन-जन तक पहुँचाना होगा।

तीन दशक से भी पहले प्रगतिशील, जनपक्षधर साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने की मुहिम की एक छोटी-सी शुरुआत हुई, बड़े मंसूबे के साथ। एक छोटी-सी दुकान और फुटपाथों पर, मुहल्लों में और दफ़्तरों के सामने छोटी-छोटी प्रदर्शनियाँ लगाने वाले तथा साइकिलों पर, ठेलों पर, झोलों में भरकर घर-घर किताबें पहुँचाने वाले समर्पित अवैतनिक वालण्टियरों की टीम – शुरुआत बस यहीं से हुई। आज यह वैचारिक अभियान उत्तर भारत के दर्जनों शहरों और गाँवों तक फैल चुका है। अपने प्रदर्शनी वाहनों के माध्यम से भी जनचेतना कई राज्यों के सुदूर कोनों तक हिन्दी, पंजाबी, मराठी और अंग्रेज़ी साहित्य एवं कला-सामग्री के साथ सपने और विचार लेकर जा रही है, जीवन-संघर्ष-सृजन-प्रगति का नारा लेकर जा रही है।

यह अपने ढंग का एक अनूठा प्रयास है। एक भी वैतनिक स्टाफ़ के बिना, समर्पित वालण्टियरों और विभिन्न सहयोगी जनसंगठनों के कार्यकर्ताओं के बूते पर यह प्रोजेक्ट आगे बढ़ रहा है।

आइए, आप सभी इस मुहिम में हमारे सहयात्री बनिए।

सम्पूर्ण सूचीपत्र

परिकल्पना प्रकाशन

उपन्यास

नयी

1. **पहला अध्यापक**/चिंगीज़ आइत्मातोव 50.00
2. **तरुणाई का तराना**/याङ मो ...
3. **तीन टके का उपन्यास**/बेर्टोल्ट ब्रेष्ट ...
4. **माँ**/मक्सिम गोर्की 275.00
5. **वे तीन**/मक्सिम गोर्की 75.00
6. **मेरा बचपन**/मक्सिम गोर्की ...
7. **जीवन की राहों पर**/मक्सिम गोर्की ...
8. **मेरे विश्वविद्यालय**/मक्सिम गोर्की ...
9. **फ़ोमा गोर्देयेव**/मक्सिम गोर्की 55.00
10. **अभागा**/मक्सिम गोर्की 40.00
11. **बेकरी का मालिक**/मक्सिम गोर्की 25.00
12. **असली इन्सान**/बोरिस पोलेवोई 260.00
13. **तरुण गार्ड**/अलेक्सान्द्र फ़देयेव (दो खण्डों में) 160.00
14. **गोदान**/प्रेमचन्द ...
15. **निर्मला**/प्रेमचन्द ...
16. **पथ के दावेदार**/शरत्चन्द्र ...
17. **चरित्रहीन**/शरत्चन्द्र ...
18. **गृहदाह**/शरत्चन्द्र ...
19. **शेषप्रश्न**/शरत्चन्द्र ...
20. **इन्द्रधनुष**/वान्दा वैसील्युस्का ...
21. **इकतालीसवाँ**/बोरीस लव्रेन्योव ...
22. **दास्तान चलती है** (एक नौजवान की डायरी से)/अनातोली कुज़्नेत्सोव 70.00
23. **वे सदा युवा रहेंगे**/ग्रीगोरी बकलानोव 60.00
24. **मुर्दों को क्या लाज-शर्म**/ ग्रीगोरी बकलानोव 40.00
25. **बख़्तरबन्द रेल 14-69**/ व्सेवोलोद इवानोव 30.00
26. **अश्वसेना**/इसाक बाबेल 40.00
27. **लाल झण्डे के नीचे**/लाओ श 50.00
28. **रिक्शावाला**/लाओ श 65.00
29. **चिरस्मरणीय** (प्रसिद्ध कन्नड़ उपन्यास)/निरंजन 55.00

30. **एक तयशुदा मौत** (एनजीओ की पृष्ठभूमि पर)/मोहित राय 70.00

31. **Mother**/*Maxim Gorky* 250.00

32. **The Song of Youth**/*Yang Mo* ...

कहानियाँ

1. **श्रेष्ठ सोवियत कहानियाँ** (3 खण्डों का सेट) 450.00
2. **वह शख़्स जिसने हैडलेबर्ग को भ्रष्ट कर दिया** (मार्क ट्वेन की दो कहानियाँ) 60.00

मक्सिम गोर्की

नयी

3. **इटली की कहानियाँ** 150.00
4. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 1) 150.00
5. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 2) 200.00
6. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 3) 150.00
7. **हिम्मत न हारना मेरे बच्चो** 15.00
8. **कामो : एक जाँबाज़ इन्क़लाबी मज़दूर की कहानी** 10.00

अन्तोन चेख़व

9. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 1) 150.00
10. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 2) 150.00

11. **दो अमर कहानियाँ**/लू शुन ...
12. **श्रेष्ठ कहानियाँ**/प्रेमचन्द 80.00
13. **पाँच कहानियाँ**/पुश्किन ...
14. **तीन कहानियाँ**/गोगोल 30.00
15. **तूफ़ान**/अलेक्सान्द्र सेराफ़ीमोविच 60.00
16. **वसन्त**/सेर्गेई अन्तोनोव 60.00
17. **वसन्तागम**/रओ शि 50.00
18. **सूरज का ख़ज़ाना**/मिख़ाईल प्रीश्विन 40.00
19. **स्नेगोवेत्स का होटल**/मत्वेई तेवेल्योव 35.00
20. **वसन्त के रेशम के कीड़े**/माओ तुन 50.00
21. **क्रान्ति झंझा की अनुगूँजें** (अक्टूबर क्रान्ति की कहानियाँ) 75.00
22. **चुनी हुई कहानियाँ**/श्याओ हुङ 50.00
23. **समय के पंख**/ कोन्स्तान्तीन पाउस्तोव्सकी ...
24. **श्रेष्ठ रूसी कहानियाँ** (संकलन) ...
25. **अनजान फूल**/आन्द्रेई प्लातोनोव 40.00
26. **कुत्ते का दिल**/मिख़ाईल बुल्गाकोव 70.00
27. **दोन की कहानियाँ**/ मिख़ाईल शोलोख़ोव 35.00
28. **अब इन्साफ़ होने वाला है** (भारत और पाकिस्तान की प्रगतिशील उर्दू कहानियों का प्रतिनिधि संकलन) (ग्यारह नयी कहानियों सहित परिवर्द्धित संस्करण)/ स. **शकील सिद्दीक़ी** ...
29. **लाल कुरता**/हरिशंकर श्रीवास्तव ...
30. **चम्पा और अन्य कहानियाँ**/ मदन मोहन 35.00

कविताएँ

नयी 1. **कौन देखता है कौन दिखता**/लाल्टू 150.00

नयी 2. **अनिश्चय के गहरे धुएँ में**/ निर्मला गर्ग 100.00

3. **जब मैं जड़ों के बीच रहता हूँ**/ पाब्लो नेरूदा 60.00

4. **आँखें दुनिया की तरफ़ देखती हैं**/ लैंग्सटन ह्यूज़ 60.00

5. **इकहत्तर कविताएँ और तीस छोटी कहानियाँ - बेर्टोल्ट ब्रेष्ट** (मूल जर्मन से अनुवाद : मोहन थपलियाल) 130.00 (ब्रेष्ट के दुर्लभ चित्रों और स्केचों से सज्जित)

6. **उम्मीद-ए-सहर की बात सुनो** (फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ के संस्मरण और चुनिन्दा शायरी, सम्पादक: शकील सिद्दीक़ी) ...

7. **माओ त्से-तुङ की कविताएँ** (राजनीतिक पृष्ठभूमि सहित विस्तृत टिप्पणियाँ एवं अनुवाद : सत्यव्रत) 20.00

8. **मध्यवर्ग का शोकगीत**/ हान्स माग्नुस एन्त्सेन्सबर्गर 30.00

9. **जेल डायरी**/हो ची मिन्ह 40.00

10. **ओस की बूँदें और लाल गुलाब**/ होसे मारिया सिसों 25.00

11. **इन्तिफ़ादा : फ़िलस्तीनी कविताएँ**/ स. रामकृष्ण पाण्डेय 100.00

12. **लोहू और इस्पात से फूटता गुलाब :** फ़िलस्तीनी कविताएँ (द्विभाषी संकलन) **A Rose Breaking Out of Steel and Blood** (Palestinian Poems) ...

13. **लहू है कि तब भी गाता है**/पाश 125.00

14. **समर तो शेष है...** (इप्टा के दौर से आज तक के प्रतिनिधि क्रान्तिकारी समूहगीतों का संकलन) 65.00

15. **पाठान्तर**/विष्णु खरे 50.00

16. **लालटेन जलाना** (चुनी हुई कविताएँ)/ विष्णु खरे 60.00

17. **वाचाल दायरों से दूर**/मलय 125.00

18. **दिन भौंहें चढ़ाता है**/मलय 120.00

19. **देखते न देखते**/मलय 65.00

20. **असम्भव की आँच**/मलय 100.00

21. **इच्छा की दूब**/मलय 90.00

22. **देश एक राग है**/भगवत रावत ...

23. **ईश्वर को मोक्ष**/नीलाभ 60.00

24. **बहनें और अन्य कविताएँ**/असद ज़ैदी 50.00

25. **कविता का जीवन**/असद ज़ैदी 75.00

26. **सामान की तलाश**/असद ज़ैदी 50.00

27. **कोहेकाफ़ पर संगीत-साधना**/ शशिप्रकाश 50.00

28. **पतझड़ का स्थापत्य**/शशिप्रकाश 75.00

29. **सात भाइयों के बीच चम्पा**/ कात्यायनी 120.00

30. **इस पौरुषपूर्ण समय में**/कात्यायनी 120.00

31. **जादू नहीं कविता**/कात्यायनी 150.00

32. **फ़ुटपाथ पर कुर्सी**/कात्यायनी 80.00

33. **राख-अँधेरे की बारिश में**/कात्यायनी 15.00

34. **नगर में बर्बर**/कविता कृष्णपल्लवी 100.00 (अँधेरे समय की कुछ कविताएँ और कुछ क़िस्से)

35. **यह मुखौटा किसका है**/विमल कुमार 50.00
36. **यह जो वक़्त है**/कपिलेश भोज 60.00
37. **बहुत नर्म चादर थी जल से बुनी**/नरेश चन्द्रकर 60.00
38. **इस ढलान पर**/प्रमोद कुमार 90.00
39. **तो**/शैलेय 75.00
40. **पानी है तो फूटेगो**/राजेश सकलानी 100.00
41. **सवालों का कारख़ाना**/सरिता तिवारी (नेपाली कविताएँ) 100.00

नाटक

1. **करवट**/मक्सिम गोर्की 40.00
2. **दुश्मन**/मक्सिम गोर्की 35.00
3. **तलछट**/मक्सिम गोर्की ...
4. **तीन बहनें** (दो नाटक)/अन्तोन चेख़व 45.00
5. **चेरी की बग़िया** (दो नाटक)/अ. चेख़व 45.00
6. **बलिदान जो व्यर्थ न गया**/व्सेवोलोद विश्नेव्स्की 30.00
7. **क्रेमलिन की घण्टियाँ**/निकोलाई पोगोदिन 30.00

संस्मरण

1. **लेव तोल्स्तोय : शब्द-चित्र**/मक्सिम गोर्की 20.00

स्त्री-विमर्श

1. **दुर्ग द्वार पर दस्तक** (स्त्री प्रश्न पर लेख)/कात्यायनी 130.00

ज्वलन्त प्रश्न

1. **कुछ जीवन्त कुछ ज्वलन्त**/कात्यायनी 90.00
2. **षड्यंत्ररत मृतात्माओं के बीच** (साम्प्रदायिकता पर लेख)/कात्यायनी 25.00
3. **इस रात्रि श्यामला बेला में** (लेख और टिप्पणियाँ)/सत्यव्रत 30.00

व्यंग्य

1. **कहें मनबहकी खरी-खरी**/मनबहकी लाल 25.00

नौजवानों के लिए विशेष

1. **जय जीवन!** (लेख, भाषण और पत्र)/निकोलाई ओस्त्रोव्स्की 50.00

वैचारिकी

1. **माओवादी अर्थशास्त्र और समाजवाद का भविष्य**/रेमण्ड लोट्टा 25.00

साहित्य – विमर्श

1. **उपन्यास और जनसमुदाय**/रैल्फ़ फ़ॉक्स 75.00
2. **लेखनकला और रचनाकौशल**/गोर्की, फ़ेदिन, मयाकोव्स्की, अ. तोल्सतोय ...
3. **दर्शन, साहित्य और आलोचना**/बेलिंस्की, हर्ज़ेन, चेर्नीशेव्स्की, दोब्रोल्युबोव 65.00
4. **सृजन-प्रक्रिया और शिल्प के बारे में**/मक्सिम गोर्की 40.00
5. **मार्क्सवाद और भाषाविज्ञान की समस्याएँ**/स्तालिन 20.00

नयी पीढ़ी के निर्माण के लिए

1. **एक पुस्तक माता-पिता के लिए**/अन्तोन मकारेंको ...
2. **मेरा हृदय बच्चों के लिए**/वसीली सुख़ोम्लीन्स्की ...

सृजन परिप्रेक्ष्य पुस्तिका शृंखला

1. **एक नये सर्वहारा पुनर्जागरण और प्रबोधन के वैचारिक-सांस्कृतिक कार्यभार**
   कात्यायनी, सत्यम 25.00

आह्वान पुस्तिका शृंखला

1. **प्रेम, परम्परा और विद्रोह**/कात्यायनी 50.00

——::——

राहुल फाउण्डेशन

नौजवानों के लिए विशेष

1. **नौजवानों से दो बातें**/ पीटर क्रोपोटकिन 15.00
2. **क्रान्तिकारी कार्यक्रम का मसविदा**/ भगतसिंह 15.00
3. **मैं नास्तिक क्यों हूँ और 'ड्रीमलैण्ड' की भूमिका**/भगतसिंह 15.00
4. **बम का दर्शन और अदालत में बयान**/भगतसिंह 15.00
5. **जाति-धर्म के झगड़े छोड़ो, सही लड़ाई से नाता जोड़ो**/भगतसिंह 15.00
6. **भगतसिंह ने कहा...**(चुने हुए उद्धरण)/भगतसिंह 15.00

क्रान्तिकारियों के दस्तावेज़

1. **भगतसिंह और उनके साथियों के सम्पूर्ण उपलब्ध दस्तावेज़** स. सत्यम 350.00
2. **शहीदेआज़म की जेल नोटबुक** भगतसिंह 100.00
3. **विचारों की सान पर**/भगतसिंह 50.00

क्रान्तिकारियों के विचारों और जीवन पर

1. **बहरों को सुनाने के लिए** एस. इरफ़ान हबीब 160.00 (भगतसिंह और उनके साथियों की विचारधारा और कार्यक्रम)
2. **क्रान्तिकारी आन्दोलन का वैचारिक विकास**/शिव वर्मा 25.00
3. **भगतसिंह और उनके साथियों की विचारधारा और राजनीति**/बिपन चन्द्र 25.00
4. **यश की धरोहर**/भगवानदास माहौर, शिव वर्मा, सदाशिवराव मलकापुरकर 50.00
5. **संस्मृतियाँ**/शिव वर्मा 100.00
6. **शहीद सुखदेव : नौघरा से फाँसी तक**/ स. डॉ. हरदीप सिंह 40.00

महत्त्वपूर्ण और विचारोत्तेजक संकलन

1. **उम्मीद एक ज़िन्दा शब्द है** ('दायित्वबोध' के महत्त्वपूर्ण सम्पादकीय लेखों का संकलन) 75.00
2. **एनजीओ : एक ख़तरनाक साम्राज्यवादी कुचक्र** 80.00
3. **डब्ल्यूएसएफ़ : साम्राज्यवाद का नया ट्रोजन हॉर्स** 50.00

ज्वलन्त प्रश्न

1. **'जाति' प्रश्न के समाधान के लिए बुद्ध काफ़ी नहीं, अम्बेडकर भी काफ़ी नहीं, मार्क्स ज़रूरी हैं** / रंगनायकम्मा ...
2. **जाति और वर्ग : एक मार्क्सवादी दृष्टिकोण** / रंगनायकम्मा 100.00

दायित्वबोध पुस्तिका शृंखला

1. **अनश्वर हैं सर्वहारा संघर्षों की अग्निशिखाएँ**/दीपायन बोस 30.00
2. **समाजवाद की समस्याएँ, पूँजीवादी पुनर्स्थापना और महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति**/शशिप्रकाश 30.00
3. **क्यों माओवाद?**/शशिप्रकाश 20.00
4. **बुर्जुआ वर्ग के ऊपर सर्वतोमुखी अधिनायकत्व लागू करने के बारे में**/चाङ चुन-चियाओ 5.00
5. **भारतीय कृषि में पूँजीवादी विकास**/सुखविन्दर 35.00

आह्वान पुस्तिका शृंखला

1. **छात्र-नौजवान नयी शुरुआत कहाँ से करें?** 20.00
2. **आरक्षण : पक्ष, विपक्ष और तीसरा पक्ष** 20.00
3. **आतंकवाद के बारे में : विभ्रम और यथार्थ** 20.00
4. **क्रान्तिकारी छात्र-युवा आन्दोलन** 25.00
5. **भ्रष्टाचार और उसके समाधान का सवाल सोचने के लिए कुछ मुद्दे** 50.00
6. **मार्क्सवाद-लेनिनवाद और राष्ट्रीय प्रश्न** (एक बहस)/शिवानी, अभिनव 150.00

बिगुल पुस्तिका शृंखला

1. कम्युनिस्ट पार्टी का संगठन और उसका ढाँचा/लेनिन 20.00
2. मकड़ा और मक्खी/विल्हेल्म लीब्नेख़्त 5.00
3. ट्रेडयूनियन काम के जनवादी तरीक़े/सेर्गेई रोस्तोवस्की . . .
4. मई दिवस का इतिहास/ अलेक्ज़ैण्डर ट्रैक्टनबर्ग 10.00
5. पेरिस कम्यून की अमर कहानी 20.00
6. अक्टूबर क्रान्ति की मशाल 15.00
7. जंगलनामा : एक राजनीतिक समीक्षा/डॉ. दर्शन खेड़ी 10.00
8. लाभकारी मूल्य, लागत मूल्य, मध्यम किसान और छोटे पैमाने के माल उत्पादन के बारे में मार्क्सवादी दृष्टिकोण : एक बहस . . .
9. संशोधनवाद के बारे में 10.00
10. शिकागो के शहीद मज़दूर नेताओं की कहानी/हावर्ड फ़ास्ट 20.00
11. मज़दूर आन्दोलन में नयी शुरुआत के लिए 20.00
12. मज़दूर नायक, क्रान्तिकारी योद्धा 15.00
13. चोर, भ्रष्ट और विलासी नेताशाही . . .
14. बोलते आँकड़े, चीख़ती सच्चाइयाँ . . .
15. राजधानी के मेहनतकश : एक अध्ययन/अभिनव 30.00
16. फ़ासीवाद क्या है और इससे कैसे लड़ें?/अभिनव 120.00
17. नेपाली क्रान्ति : इतिहास, वर्तमान परिस्थिति और आगे के रास्ते से जुड़ी कुछ बातें, कुछ विचार/ आलोक रंजन 55.00
18. कैसा है यह लोकतंत्र और यह संविधान किनकी सेवा करता है आलोक रंजन/आनन्द सिंह 150.00
19. तीन कृषि विधेयक और मज़दूर वर्ग का नज़रिया/अभिनव 40.00

मज़दूरों का इन्क़लाबी मासिक अख़बार

एक प्रति : 5 रुपये

(डाक व्यय सहित)

सम्पादकीय कार्यालय

69 ए-1, बाबा का पुरवा, पेपर मिल रोड

निशातगंज, लखनऊ-226006

फ़ोन : 0522-4108495

ईमेल : bigulakhbar@gmail.com

मार्क्सवाद

1. **धर्म के बारे में**/मार्क्स, एंगेल्स ...
2. **कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र** मार्क्स-एंगेल्स 50.00
3. **साहित्य और कला**/मार्क्स-एंगेल्स 150.00
4. **फ़्रांस में वर्ग-संघर्ष**/कार्ल मार्क्स 40.00
5. **फ़्रांस में गृहयुद्ध**/कार्ल मार्क्स 20.00
6. **लूई बोनापार्त की अठारहवीं ब्रूमेर**/कार्ल मार्क्स 35.00
7. **उज़रती श्रम और पूँजी**/कार्ल मार्क्स 15.00
8. **मज़दूरी, दाम और मुनाफ़ा**/ कार्ल मार्क्स 20.00
9. **गोथा कार्यक्रम की आलोचना**/ कार्ल मार्क्स 40.00
10. **लुडविग फ़ायरबाख़ और क्लासिकीय जर्मन दर्शन का अन्त**/ फ़्रेडरिक एंगेल्स 20.00
11. **जर्मनी में क्रान्ति तथा प्रतिक्रान्ति**/ फ़्रेडरिक एंगेल्स 30.00
12. **समाजवाद : काल्पनिक तथा वैज्ञानिक**/फ़्रेडरिक एंगेल्स ...
13. **पार्टी कार्य के बारे में**/लेनिन 15.00
14. **एक क़दम आगे, दो क़दम पीछे**/लेनिन ...
15. **जनवादी क्रान्ति में सामाजिक-जनवाद के दो रणकौशल**/लेनिन 25.00
16. **समाजवाद और युद्ध**/लेनिन 20.00
17. **साम्राज्यवाद : पूँजीवाद की चरम अवस्था**/लेनिन 30.00
18. **राज्य और क्रान्ति**/लेनिन ...
19. **सर्वहारा क्रान्ति और ग़द्दार काउत्स्की**/लेनिन ...
20. **दूसरे इण्टरनेशनल का पतन**/लेनिन 15.00
21. **गाँव के ग़रीबों से**/लेनिन 50.00
22. **मार्क्सवाद का विकृत रूप तथा साम्राज्यवादी अर्थवाद**/लेनिन 20.00
23. **कार्ल मार्क्स और उनकी शिक्षा**/लेनिन ...
24. **क्या करें?**/लेनिन ...
25. **"वामपन्थी" कम्युनिज़्म - एक बचकाना मर्ज़**/लेनिन ...
26. **पार्टी साहित्य और पार्टी संगठन**/लेनिन 15.00
27. **जनता के बीच पार्टी का काम**/लेनिन 70.00
28. **धर्म के बारे में**/लेनिन ...
29. **तोल्स्तोय के बारे में**/लेनिन 10.00
30. **मार्क्सवाद की मूल समस्याएँ** जी. प्लेख़ानोव 30.00
31. **जुझारू भौतिकवाद**/प्लेख़ानोव 35.00
32. **लेनिनवाद के मूल सिद्धान्त**/स्तालिन 50.00
33. **सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) का इतिहास** 90.00

34. **माओ त्से-तुङ की रचनाएँ : प्रतिनिधि चयन** (एक खण्ड में) ...

35. **कम्युनिस्ट जीवनशैली और कार्यशैली के बारे में**/माओ त्से-तुङ ...

36. **सोवियत अर्थशास्त्र की आलोचना/** माओ त्से-तुङ ...

37. **दर्शन विषयक पाँच निबन्ध/** माओ त्से-तुङ 70.00

38. **कला-साहित्य विषयक एक भाषण और पाँच दस्तावेज़**/माओ त्से-तुङ 15.00

39. **माओ त्से-तुङ की रचनाओं के उद्धरण** 50.00

अन्य मार्क्सवादी साहित्य

नयी

1. **दर्शन कोई रहस्य नहीं** 50.00 (जब किसानों ने अपने अध्ययन को व्यवहार में उतारा)
2. **राजनीतिक अर्थशास्त्र, मार्क्सवादी अध्ययन पाठ्यक्रम** 300.00
3. **ख़ुश्चेव झूठा था**/ग्रोवर फ़र 300.00
4. **राजनीतिक अर्थशास्त्र के मूलभूत सिद्धान्त** (दो खण्डों में) (दि शंघाई टेक्स्टबुक ऑफ़ पोलिटिकल इकोनॉमी) 160.00
5. **पेरिस कम्यून की शिक्षाएँ** (सचित्र) एलेक्ज़ेण्डर ट्रैक्टनबर्ग 10.00
6. **कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र/** डी. रियाज़ानोव ... (विस्तृत व्याख्यात्मक टिप्पणियों सहित)
7. **द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद/** डेविड गेस्ट ...
8. **इतिहास ने जब करवट बदली/** विलियम हिण्टन 25.00
9. **द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद/** वी. अदोरात्स्की 50.00
10. **अक्टूबर क्रान्ति और लेनिन** अल्बर्ट रीस विलियम्स 90.00 (महत्त्वपूर्ण नयी सामग्री और अनेक नये दुर्लभ चित्रों से सज्जित परिवर्द्धित संस्करण)
11. **सोवियत संघ में पूँजीवाद की पुनर्स्थापना**/मार्टिन निकोलस 50.00

राहुल साहित्य

1. **तुम्हारी क्षय**/राहुल सांकृत्यायन 40.00
2. **दिमाग़ी ग़ुलामी**/राहुल सांकृत्यायन 40.00
3. **वैज्ञानिक भौतिकवाद/** राहुल सांकृत्यायन 65.00
4. **राहुल निबन्धावली/** राहुल सांकृत्यायन 50.00
5. **स्तालिन : एक जीवनी/** राहुल सांकृत्यायन 150.00

परम्परा का स्मरण

1. **चुनी हुई रचनाएँ**/ गणेशशंकर विद्यार्थी 100.00
2. **सलाखों के पीछे से**/ गणेशशंकर विद्यार्थी ...
3. **ईश्वर का बहिष्कार**/ राधामोहन गोकुलजी 40.00
4. **लौकिक मार्ग**/राधामोहन गोकुलजी 20.00
5. **धर्म का ढकोसला**/ राधामोहन गोकुलजी 40.00
6. **स्त्रियों की स्वाधीनता** राधामोहन गोकुलजी 30.00

जीवनी और संस्मरण

1. **कार्ल मार्क्स : जीवन और शिक्षाएँ**/ ज़ेल्डा कोट्स 25.00
2. **फ़्रेडरिक एंगेल्स : जीवन और शिक्षाएँ**/ज़ेल्डा कोट्स 80.00
3. **कार्ल मार्क्स : संस्मरण और लेख** 35.00
4. **अदम्य बोल्शेविक नताशा** (एक स्त्री मज़दूर संगठनकर्ता की संक्षिप्त जीवनी)/ एल. काताशेवा 30.00
5. **लेनिन कथा**/मरीया प्रिलेज़ायेवा 70.00
6. **लेनिन विषयक कहानियाँ** 75.00
7. **लेनिन के जीवन के चन्द पन्ने**/ लीदिया फ़ोतियेवा ...
8. **स्तालिन : एक जीवनी**/ राहुल सांकृत्यायन 150.00

विविध

1. **फाँसी के तख़्ते से**/जूलियस फ़्यूचिक ...
2. **पाप और विज्ञान**/डायसन कार्टर 100.00
3. **सापेक्षिकता सिद्धान्त क्या है?**/लेव लन्दाऊ, यूरी रूमेर ...

——::——

Rahul Foundation

MARXIST CLASSICS

KARL MARX

1. **A Contribution to the Critique of Political Economy** ...
2. **The Civil War in France** ...
3. **The Eighteenth Brumaire of Louis Bonaparte** 80.00
4. **Critique of the Gotha Programme** 50.00
5. **Preface and Introduction to A Contribution to the Critique of Political Economy** 25.00
6. **The Poverty of Philosophy** 80.00
7. **Wages, Price and Profit** 50.00
8. **Class Struggles in France** 50.00

FREDERICK ENGELS

9. **The Peasant War in Germany** 70.00
10. **Ludwig Feuerbach and the End of Classical German Philosophy** 65.00
11. **On Capital** 80.00
12. **The Origin of the Family, Private Property and the State** 100.00
13. **Socialism: Utopian and Scientific** 60.00
14. **On Marx** 30.00
15. **Principles of Communism** 5.00

MARX and ENGELS

16. **Historical Writings** (Set of 2 Vols.) 700.00
17. **Manifesto of the Communist Party** 50.00
18. **Selected Letters** 75.00

V. I. LENIN

19. **Theory of Agrarian Question** 160.00
20. **The Collapse of the Second International** 25.00
21. **Imperialism, the Highest Stage of Capitalism** 80.00
22. **Materialism and Empirio-Criticism** 150.00
23. **Two Tactics of Social-Democracy in the Democratic Revolution** 55.00
24. **Capitalism and Agriculture** 50.00
25. **A Characterisation of Economic Romanticism** ...
26. **On Marx and Engels** 35.00
27. **"Left-Wing" Communism, An Infantile Disorder** 75.00
28. **Party Work in the Masses** 55.00
29. **The Proletarian Revolution and the Renegade Kautsky** 75.00

30. **One Step Forward, Two Steps Back** …
31. **The State and Revolution** 80.00

MARX, ENGELS and LENIN

32. **On the Dictatorship of Proletariat, *Questions and Answers*** 50.00
33. **On the Dictatorship of the Proletariat: *Selected Expositions*** 10.00

PLEKHANOV

34. **Fundamental Problems of Marxism** …

J. STALIN

35. **Marxism and Problems of Linguistics** 25.00
36. **Anarchism or Socialism?** 60.00
37. **Economic Problems of Socialism in the USSR** …
38. **On Organisation** 15.00
39. **The Foundations of Leninism** 70.00
40. **The Essential Stalin** … *Major Theoretical Writings 1905–52* (Edited and with an Introduction by Bruce Franklin)

LENIN and STALIN

41. **On the Party** 30.00

MAO TSE-TUNG

42. **Five Essays on Philosophy** 80.00
43. **A Critique of Soviet Economics** 70.00
44. **On Literature and Art** 80.00
45. **Selected Readings from the Works of Mao Tse-tung** …
46. **Quotations from the Writings of Mao Tse-tung** …

OTHER MARXISM

1. **Political Economy, *Marxist Study Courses*** (Prepared by the British Communist Party in the 1930s) 375.00
2. **Fundamentals of Political Economy** (The Shanghai Textbook) 150.00
3. **Reader in Marxist Philosophy/** *Howard Selsam & Harry Martel* …
4. **Socialism and Ethics/** *Howard Selsam* …
5. **What Is Philosophy?** (A Marxist Introduction)/*Howard Selsam* 100.00
6. **Reader's Guide to Marxist Classics/***Maurice Cornforth* 70.00

George Thomson

7. **From Marx to Mao Tse-tung** 120.00
8. **Capitalism and After** 100.00
9. **The Human Essence** 80.00
10. **Mao Tse-tung's Immortal Contributions/***Bob Avakian* …
11. **A Basic Understanding of the Communist Party** (Written during the GPCR in China) 150.00

12. **The Lessons of the Paris Commune**/*Alexander Trachtenberg (Illustrated)* 15.00

13. **Subversive Interventions** (An Anthology) *Abhinav Sinha* 500.00

BIOGRAPHIES & REMINISCENCES

1. **Reminiscences of Marx and Engels** (Collection) ...
2. **Karl Marx And Frederick Engels:** An Introduction to their Lives and Work/David Riazanov 150.00
3. **Joseph Stalin: A Political Biography** *by The Marx-Engels-Lenin Institute* 80.00

PROBLEMS OF SOCIALISM

1. **How Capitalism was Restored in the Soviet Union, And What This Means for the World Struggle Red Papers 7** 175.00
2. **Preface of Class Struggles in the USSR**/*Charles Bettelheim* 30.00
3. **Nepalese Revolution: History, Present Situation and Some Points, Some Thoughts on the Road Ahead** Alok Ranjan 75.00
4. **Problems of Socialism, Capitalist Restoration and the Great Proletarian Cultural Revolution** *Shashi Prakash* 40.00

ON THE CULTURAL REVOLUTION

1. **Hundred Day War:** The Cultural Revolution At Tsinghua University *William Hinton* ...
2. **The Cultural Revolution at Peking University**/*Victor Nee* with *Don Layman* 30.00
3. **Mao Tse-tung's Last Great Battle** *Raymond Lotta* 25.00
4. **Turning Point in China** *William Hinton* 50.00
5. **Cultural Revolution and Industrial Organization in China** *Charles Bettelheim* 55.00
6. **They Made Revolution Within the Revolution** / *Iris Hunter* 50.00

ON SOCIALIST CONSTRUCTION

1. **Away With All Pests:** An English Surgeon in People's China: 1954–1969
Joshua S. Horn 125.00
2. **Serve The People:** Observations on Medicine in the People's Republic of China / *Victor W. Sidel* and *Ruth Sidel* …
3. **Philosophy is No Mystery** (Peasants Put Their Study to Work) …

ON THE CASTE QUESTION

1. **On the Caste Question:**
Towards a Marxist Understanding
Abhinav Sinha 200.00
2. **Caste and Class:**
A Marxist Viewpoint / Ranganayakamma 60.00

DAYITVABODH REPRINT SERIES

1. **Immortal are the Flames of Proletarian Struggles** / *Deepayan Bose* 30.00
2. **Problems of Socialism, Capitalist Restoration and the Great Proletarian Cultural Revolution** / *Shashi Prakash* 40.00
3. **Why Maoism?** / *Shashi Prakash* 25.00

AHWAN REPRINT SERIES

1. **Where Should Students and Youth Make a New Beginning?** 20.00
2. **Reservation: Support, Opposition and Our Position** 20.00
3. **On Terrorism : Illusion and Reality** / *Alok Ranjan* 20.00

"The books that help you most are those which make you think the most. The hardest way of learning is that of easy reading; but a great book that comes from a great thinker is a ship of thought, deep freighted with truth and beauty."

– Pablo Neruda

BIGUL REPRINT SERIES

1.	**Still Ablaze is the Torch of October Revolution**	30.00
2.	**Nepalese Revolution History, Present Situation and Some Points, Some Thoughts on the Road Ahead** / Alok Ranjan	75.00

WOMEN QUESTION

1.	**The Emancipation of Women** / *V. I. Lenin*	100.00
2.	**Breaking All Tradition's Chains: Revolutionary Communism and Women's Liberation** / *Mary Lou Greenberg*	50.00

MISCELLANEOUS

1.	**Probabilities of the Quantum World** / *Daniel Danin*	…
2.	**An Appeal to the Young** / *Peter Kropotkin*	20.00

The Anvil

A Journal of Marxist Theory

Editor: Shashi Prakash

Editorial Office

69 A-1, Baba ka Purwa
Paper Mill Road, Nishatgunj, Lucknow 226 006, India
Phone: 9560130890, Email: editor.anvil@gmail.com

Website: http://anvilmag.in

FB: facebook.com/anvilmag

अरविन्द स्मृति न्यास के प्रकाशन

1. **इक्कीसवीं सदी में भारत का मज़दूर आन्दोलनः निरन्तरता और परिवर्तन, दिशा और सम्भावनाएँ, समस्याएँ और चुनौतियाँ** (द्वितीय अरविन्द स्मृति संगोष्ठी के आलेख) 40.00
2. **भारत में जनवादी अधिकार आन्दोलनः दिशा, समस्याएँ और चुनौतियाँ** (तृतीय अरविन्द स्मृति संगोष्ठी के आलेख) 80.00
3. **जाति प्रश्न और मार्क्सवाद** (चतुर्थ अरविन्द स्मृति संगोष्ठी के आलेख) 150.00

PUBLICATIONS FROM ARVIND MEMORIAL TRUST

1. **Working Class Movement in the Twenty-First Century: Continuity and Change, Orientation and Possibilities, Problems and Challenges** (Papers presented in the Second Arvind Memorial Seminar) 40.00
2. **Democratic Rights Movement in India: Orientation, Problems and Challenges** (Papers presented in the Third Arvind Memorial Seminar) 80.00
3. **Caste Question and Marxism** (Papers presented in the Fourth Arvind Memorial Seminar) 200.00

जनचेतना इन पुस्तकों की भी मुख्य वितरक है

1. **बच्चों के लिए अर्थशास्त्र (मार्क्स की 'पूँजी' पर आधारित पाठ)**/रंगनायकम्मा 120.00
2. **घरेलू काम और बाहरी काम**/रंगनायकम्मा 40.00
3. **For the Solution of the 'Caste' Question, Buddha is not enough, Ambedkar is not enough either, Marx is a must**/Ranganayakamma 100.00
4. **Economics for Children [Lessons based on Marx's 'Capital']**/Ranganayakamma 150.00
5. **Household Work and Outside Work** 60.00

अनुराग ट्रस्ट

1. **बच्चों के लेनिन** 35.00
2. **Stories About Lenin** 35.00
3. **सच से बड़ा सच**/रवीन्द्रनाथ ठाकुर 25.00
4. **औज़ारों की कहानियाँ** 20.00
5. **गुड़ की डली** /कात्यायनी 20.00
6. **फूल कुण्डलाकार क्यों होते हैं**/सनी 20.00
7. **धरती और आकाश**/अ. वोल्कोव ...
8. **कज़ाकी**/प्रेमचन्द 35.00
9. **नीला प्याला**/अरकादी गैदार 40.00
10. **गड़रिये की कहानियाँ**/ क़यूम तंगरीकुलीयेव 35.00
11. **चींटी और अन्तरिक्ष यात्री**/ अ. मित्यायेव 35.00
12. **अन्धविश्वासी शेकी टेल**/ सेर्गेई मिखाल्कोव 20.00
13. **चलता-फिरता हैट**/ एन. नोसोव, होल्कर पुक्क 20.00
14. **चालाक लोमड़ी** (लोककथा) 20.00
15. **दियांका-टॉमचिक** 20.00
16. **गधा और ऊदबिलाव**/मक्सिम गोर्की, सेर्गेई मिखाल्कोव 20.00
17. **गुफ़ा मानवों की कहानियाँ**/ मैरी मार्स 20.00
18. **हम सूरज को देख सकते हैं**/ मिकोला गिल, दायर स्लावकोविच 20.00
19. **मुसीबत का साथी**/सेर्गेई मिखाल्कोव 20.00
20. **नन्हे आर्थर का सूरज**/ ह्याक ग्युलनज़रयान, गेलीना लेबेदेवा 20.00
21. **आकाश में मौज-मस्ती**/ चिनुआ अचेबे 20.00
22. **ज़िन्दगी से प्यार** (दो रोमांचक कहानियाँ)/जैक लण्डन 40.00
23. **एक छोटे लड़के और एक छोटी लड़की की कहानी**/मक्सिम गोर्की 20.00
24. **बहादुर**/अमरकान्त 15.00
25. **बुन्नू की परीक्षा** (सचित्र रंगीन)/ शस्या हर्ष ...
26. **दान्को का जलता हुआ हृदय**/ मक्सिम गोर्की 10.00
27. **नन्हा राजकुमार**/ आतुआन द सैंतेक्ज़ूपेरी 40.00
28. **दादा आर्खिप और ल्योंका**/ मक्सिम गोर्की 30.00
29. **सेमागा कैसे पकड़ा गया**/ मक्सिम गोर्की 15.00
30. **बाज़ का गीत**/मक्सिम गोर्की 15.00
31. **वांका**/अन्तोन चेख़व 15.00
32. **तोता**/रवीन्द्रनाथ टैगोर 15.00
33. **पोस्टमास्टर**/रवीन्द्रनाथ टैगोर ...
34. **काबुलीवाला**/रवीन्द्रनाथ टैगोर 20.00

35. **अपना-अपना भाग्य**/जैनेन्द्र 15.00
36. **दिमाग़ कैसे काम करता है**/किशोर 25.00
37. **रामलीला**/प्रेमचन्द 15.00
38. **दो बैलों की कथा**/प्रेमचन्द 25.00
39. **ईदगाह**/प्रेमचन्द ...
40. **लॉटरी**/प्रेमचन्द 20.00
41. **गुल्ली-डण्डा**/प्रेमचन्द ...
42. **बड़े भाई साहब**/प्रेमचन्द 20.00
43. **मोटेराम शास्त्री**/प्रेमचन्द ...
44. **हार की जीत**/सुदर्शन ...
45. **इवान**/व्लादीमिर बोगोमोलोव 40.00
46. **चमकता लाल सितारा**/ली शिन-थ्येन 55.00
47. **उल्टा दरख़्त**/कृश्नचन्दर 35.00
48. **हरामी**/मिखाईल शोलोख़ोव 25.00
49. **दोन किहोते** /सर्वान्तेस (नाट्य रूपान्तर - नीलेश रघुवंशी) ...
50. **आश्चर्यलोक में एलिस** /लुइस कैरोल (नाट्य रूपान्तर - नीलेश रघुवंशी 30.00
51. **झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई**/वृन्दावनलाल वर्मा (नाट्य रूपान्तर - नीलेश रघुवंशी) 35.00
52. **नन्हे गुदड़ीलाल के साहसिक कारनामे**/सुन यओच्युन ...
53. **लाखी**/अन्तोन चेख़व 25.00
54. **बेझिन चरागाह**/इवान तुर्गनेव 12.00
55. **हिरनौटा**/द्मीत्री मामिन सिबिर्याक 25.00
56. **घर की ललक**/निकोलाई तेलेशोव 10.00
57. **बस एक याद**/लेओनीद अन्द्रेयेव 20.00
58. **मदारी**/अलेक्सान्द्र कुप्रिन 35.00
59. **पराये घोंसले में**/फ्योदोर दोस्तोयेव्स्की 20.00
60. **कोहकाफ़ का बन्दी**/तोल्सतोय 30.00
61. **मनमानी के मज़े**/सेर्गेई मिखाल्कोव 30.00
62. **सदानन्द की छोटी दुनिया**/ सत्यजीत राय 15.00
63. **छत पर फँस गया बिल्ला**/ विताउते जिलिन्सकाइते 35.00
64. **गोलू के कारनामे**/रामबाबू 25.00
65. **दो साहसिक कहानियाँ**/ होल्गर पुक्क 15.00
66. **आम ज़िन्दगी की मज़ेदार कहानियाँ**/होल्गर पुक्क 20.00
67. **कंगूरे वाले मकान का रहस्यमय मामला**/होल्गर पुक्क 20.00
68. **रोज़मर्रे की कहानियाँ**/होल्गर पुक्क 20.00
69. **अजीबोग़रीब क़िस्से**/होल्गर पुक्क ...
70. **नये ज़माने की परीकथाएँ**/ होल्गर पुक्क 25.00
71. **किस्सा यह कि एक देहाती ने दो अफ़सरों का कैसे पेट भरा**/ मिखाइल सल्तिकोव-श्चेद्रिन 15.00
72. **पश्चदृष्टि-भविष्यदृष्टि** (लेख संकलन) / कमला पाण्डेय 30.00
73. **यादों के घेरे में अतीत** (संस्मरण) / कमला पाण्डेय 100.00
74. **हमारे आसपास का अँधेरा** (कहानियाँ) / कमला पाण्डेय 60.00
75. **कालमन्थन** (उपन्यास) / कमला पाण्डेय 60.00

दो महत्वपूर्ण पत्रिकाएँ

दिशा सन्धान

मार्क्सवादी सैद्धान्तिक शोध और विमर्श का मंच

सम्पादक: कात्यायनी / सत्यम

एक प्रति : 100 रुपये, आजीवन: 5000 रुपये

वार्षिक (4 अंक) : 400 रुपये (100 रु. रजि. बुकपोस्ट व्यय अतिरिक्त)

नान्दीपाठ

मीडिया, संस्कृति और समाज पर केन्द्रित

सम्पादक: कात्यायनी / सत्यम

एक प्रति : 40 रुपये आजीवन: 3000 रुपये

वार्षिक (4 अंक) : 160 रुपये (100 रु. रजि. बुक पोस्ट व्यय अतिरिक्त)

सम्पादकीय कार्यालय :

69 ए-1, बाबा का पुरवा, पेपर मिल रोड, निशातगंज, लखनऊ-226006

फ़ोन: 9936650658, 8853093555

वेबसाइट : http://dishasandhaan.in ईमेल: dishasandhaan@gmail.com

वेबसाइट : http://naandipath.in ईमेल: naandipath@gmail.com

मुक्तिकामी छात्रों-युवाओं का

आह्वान

सम्पादकीय कार्यालय

बी-100, मुकुन्द विहार, करावल नगर, दिल्ली-110094

ईमेल : ahwan@ahwanmag.com, ahwan.editor@gmail.com

वेबसाइट : ahwanmag.com

फ़ेसबुक : facebook.com/muktikamiahwan

एक प्रति : 20 रुपये • वार्षिक : 160 रुपये (डाकव्यय सहित)

हमारे पास आपको मिलेंगे

- विश्व क्लासिक्स
- स्तरीय प्रगतिशील साहित्य
- भगतसिंह और उनके साथियों का सम्पूर्ण उपलब्ध साहित्य
- मक्सिम गोर्की की पुस्तकों का सबसे बड़ा संग्रह
- भारतीय इतिहास के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण क्रान्तिकारी दस्तावेज़
- मार्क्सवादी साहित्य
- जीवन और समाज की समझ तथा विचारोत्तेजना देने वाला साहित्य
- दिमाग़ की खिड़कियाँ खोलने और कल्पना की उड़ानों को पंख देने वाला बाल-साहित्य
- प्रगतिशील क्रान्तिकारी पत्र-पत्रिकाएँ
- सुन्दर, सुरुचिपूर्ण, प्रेरक पोस्टर और कार्ड
- क्रान्तिकारी गीतों के कैसेट
- साहित्यिक व क्रान्तिकारी उद्धरणों-चित्रों वाली टीशर्ट, कैलेण्डर, बुकमार्क, डायरी आदि...

ऐसा साहित्य जो सपने देखने और भविष्य-निर्माण के लिए प्रेरित करता है!

(हिन्दी, अंग्रेज़ी, पंजाबी और मराठी में)

किताबें नहीं,
हम आने वाले कल के सपने लेकर आये हैं
किताबें नहीं,
हम असली इन्सान की तरह
जीने का संकल्प लेकर आये हैं

परिकल्पना प्रकाशन, राहुल फाउण्डेशन, अनुराग ट्रस्ट, अरविन्द स्मृति न्यास और **ऐरण प्रकाशन** की पुस्तकों की 'जनचेतना' मुख्य वितरक है। ये प्रकाशन पाँच स्त्रोतों - सरकार, राजनीतिक पार्टियों, कॉरपोरेट घरानों, बहुराष्ट्रीय निगमों और देशी-विदेशी फ़ण्डिंग एजेंसियों से किसी भी प्रकार का अनुदान या वित्तीय सहायता लिये बिना जनता से जुटाये गये संसाधनों के आधार पर आज के दौर के लिए ज़रूरी व महत्त्वपूर्ण साहित्य बेहद सस्ती दरों पर उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

हमसे पुस्तकें मँगाने के लिए इन बातों का ध्यान रखें

- प्रत्येक पत्र तथा आदेश-पत्र पर अपना पूरा नाम-पता (पिनकोड सहित) और फ़ोन नम्बर साफ़-साफ़ लिखें।
- मनीऑर्डर के पीछे सन्देश वाले स्थान पर अपना पूरा नाम-पता (पिनकोड सहित) साफ़-साफ़ ज़रूर लिखें।
- चेक/ड्राफ़्ट 'जनचेतना पुस्तक प्रतिष्ठान समिति' (JANCHETNA PUSTAK PRATISHTHAN SAMITI) के नाम से लखनऊ में देय भेजें। बैंक खाते की जानकारी :
  खाता सं. 0762002109003796
  पंजाब नेशनल बैंक, निशातगंज, लखनऊ
  IFSC: PUNB0076200
- पुस्तकों पर डाक-व्यय तथा रेल या ट्रांसपोर्ट का भाड़ा अलग से देय होगा।
- पुस्तक विक्रेताओं तथा वितरकों द्वारा पुस्तकें मँगाने की शर्तों के लिए हमसे पत्र, ईमेल अथवा फ़ोन से सम्पर्क करें।

जनचेतना पुस्तक प्रतिष्ठान समिति द्वारा संचालित